लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें सीरीज़–36

कोज़ैक की परियों की कहानियाँ

और लोक कथाऐं

अनुवादक आर निस्बत बैन

1894

हिन्दी अनुवाद सुषमा गुप्ता

2023

Series Title: Lok Kathaon Ki Classic Pustaken Series-36
Book Title: Cossak Ki Pariyon Ki Kahaniyan Aur Lok Kathayen (Cossack Fairy Tales and Folk Tales)

E-Mail: hindifolktales@gmail.com
Website: www.sushmajee.com/folktales/index-folktales.htm

Copyrighted by Sushma Gupta 2022
No portion of this book may be reproduced or stored in a retrieval system or transmitted in any form, by any means, mechanical, electronic, photocopying, recording, or otherwise, without written permission from the author.

Map of Ukraine

विंडसर¸ कैनेडा

2023

Contents

लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें 5

कोज़ैक की परियों की कहानियाँ और लोक कथाऐं 7

1 जंगल का ज़ार ओह 9

2 हवा की कहानी 29

3 खिड़की पर आवाजें 57

4 छोटे ज़ार नोविश्नी, झूठी बहिन और वफादार जानवरों की कहानी 65

5 पिशाच और सेंट माइकिल 106

6 ट्रैमसिन, चिड़िया ज़ार और समुद्र की सुन्दरी नस्तासिया की कहानी 121

7 साँप पत्नी 135

8 बदकिस्मत डैनियल की कहानी 141

9 एक चिड़िया और एक झाड़ी 157

11 लोमड़ी और बिल्ला 164

12 भूसे का बैल 168

13 सुनहरा जूता 177

14 लोहे का भेड़िया 191

15 तीन भाई 199

16 ज़ार और देवदूत 204

17 इवान और सूरज की बेटी की कहानी 217

18 बिल्ला, मुर्गा और लोमड़ी 225

19 साँप राजकुमार और उसकी दो पत्नियाँ 230

20 मोल का जन्म 241

21 दो राजकुमार 243

22 कृतघ्न बच्चे और बूढ़ा पिता जो स्कूल दोबारा गया 253

23 बेवकूफ इवान और सेंट पीटर की बाँसुरी 264

24 जादुई अंडा 276

25 इकतालीसवें भाई की कहानी.. 298
26 बुरे दिनों की कहानी 305
27 इवान गोलिक और साँपों की आश्चर्यजनक कहानी... 310

लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें

लोक कथाऐं किसी भी समाज की संस्कृति का एक अटूट हिस्सा होती हैं। ये संसार को उस समाज के बारे में बताती हैं जिसकी वे लोक कथाऐं हैं। आज से बहुत साल पहले, करीब 100 साल पहले, ये लोक कथाऐं केवल ज़बानी ही कही जातीं थीं और कह सुन कर ही एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को दी जाती थीं इसलिये किसी भी लोक कथा का मूल रूप क्या रहा होगा यह कहना मुश्किल है। फिर इनका एकत्रीकरण आरम्भ हुआ और इक्का दुक्का पुस्तकें प्रकाशित होनी आरम्भ हुई और अब तो बहुत सारे देशों की लोक कथाओं की पुस्तकें उनकी मूल भाषा में और उनके अंग्रेजी अनुवाद में उपलब्ध हैं।

सबसे पहले हमने इन कथाओं के प्रकाशन का आरम्भ एक सीरीज़ से किया था – "देश विदेश की लोक कथाऐं" जिनके अन्तर्गत हमने इधर उधर से एकत्र कर के 2500 से भी अधिक देश विदेश की लोक कथाओं के अनुवाद प्रकाशित किये थे – कुछ देशों के नाम के अन्तर्गत और कुछ विषयों के अन्तर्गत।

इन कथाओं को एकत्र करते समय यह देखा गया कि कुछ लोक कथाऐं उससे मिलते जुलते रूप में कई देशों में कही सुनी जाती है। तो उसी सीरीज़ में एक और सीरीज़ शुरू की गयी – "एक कहानी कई रंग"[1]। इस सीरीज़ के अन्तर्गत एक ही लोक कथा के कई रूप दिये गये थे। इस लोक कथा का चुनाव उसकी लोकप्रियता के आधार पर किया गया था। उस पुस्तक में उसकी मुख्य कहानी सबसे पहले दी गयी थी और फिर वैसी ही कहानी जो दूसरे देशों में कही सुनी जाती हैं उसके बाद में दी गयीं थीं। इस सीरीज़ में अब तक 20 से भी अधिक पुस्तकें प्रकाशित की गयीं। यह एक आश्चर्यजनक और रोचक संग्रह था।

आज हम एक और नयी सीरीज़ प्रारम्भ कर रहे हैं "लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें"। इस सीरीज़ में हम उन पुरानी लोक कथाओं की पुस्तकों का हिन्दी में अनुवाद कर रहे हैं जो बहुत शुरू शुरू में लिखी गयी थीं। ये पुस्तकें तब की हैं जब लोक कथाओं का प्रकाशन आरम्भ हुआ ही हुआ था। अधिकतर प्रकाशन 19वीं सदी से आरम्भ होता है। जिनका मूल रूप अब पढ़ने के लिये मुश्किल से मिलता है और हिन्दी में तो बिल्कुल ही नहीं मिलता। ऐसी ही कुछ अंग्रेजी और कुछ दूसरी भाषा बोलने वाले देशों की लोक कथाओं की पुस्तकें हम अपने हिन्दी भाषा बोलने वाले समाज तक पहुँचाने के उद्देश्य से यह सीरीज़ आरम्भ कर रहे हैं।

इस सीरीज़ में चार प्रकार की पुस्तकें शामिल हैं –

1. अफ्रीका की लोक कथाओं की सारी पुस्तकें
2. भारत की लोक कथाओं की सारी पुस्तकें
3. 19वीं सदी की लोक कथाओं की पुस्तकें
4. मध्य काल की तीन पुस्तकें – डैकामिरोन, नाइट्स औफ स्ट्रापरोला और पैन्टामिरोन। ये तीनों पुस्तकें इटली की हैं।

इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि ये सारी लोक कथाऐं बोलचाल की भाषा में लिखी जायें ताकि इन्हें हर वह आदमी पढ़ सके जो थोड़ी सी भी हिन्दी पढ़ना जानता हो और उसे समझता हो। ये कथाऐं यहाँ तो सरल भाषा में लिखी गयी है पर इनको हिन्दी में लिखने में कई समस्याऐं आयी है जिनमें से दो समस्याऐं मुख्य हैं।

---

[1] "One Story Many Colors"

एक तो यह कि करीब करीब **95** प्रतिशत विदेशी नामों को हिन्दी में लिखना बहुत मुश्किल है चाहे वे आदमियों के हों या फिर जगहों के। दूसरे उनका उच्चारण भी बहुत ही अलग तरीके का होता है। कोई कुछ बोलता है तो कोई कुछ। इसको साफ करने के लिये इस सीरीज़ की सब किताबों में फुटनोट्स में उनको अंग्रेजी में लिख दिया गया हैं ताकि कोई भी उनको अंग्रेजी के शब्दों की सहायता से कहीं भी खोज सके। इसके अलावा और भी बहुत सारे शब्द जो हमारे भारत के लोगों के लिये नये हैं उनको भी फुटनोट्स और चित्रों द्वारा समझाया गया है।

ये सब पुस्तकें "लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें" नाम की सीरीज़ के अन्तर्गत प्रकाशित की जा रही हैं। अब तक इस सीरीज़ में **35** पुस्तकें प्रकाशित की जा चुकी हैं। यह एक मज़ेदार संग्रह है। ये पुस्तकें आप सबका मनोरंजन तो करेंगी ही साथ में दूसरी भाषाओं के लोक कथा साहित्य को हिन्दी में प्रस्तुत करेंगी। आशा है कि हिन्दी साहित्य जगत में इनका भव्य स्वागत होगा।

सुषमा गुप्ता
2023

कोज़ैक की परियों की कहानियाँ और लोक कथाऐं

संसार में सात महाद्वीप हैं – एशिया, अफ्रीका, उत्तरी अमेरिका, दक्षिणी अमेरिका, अन्टार्कटिका, यूरोप और आस्ट्रेलिया – सबसे बड़ा महाद्वीप सबसे पहले और सबसे छोटा महाद्वीप सबसे बाद में। सब महाद्वीपों में अपने अपने देश हैं पर इस यूक्रेन देश की स्थिति बड़ी अजीब सी है। शुरू में यूक्रेन रूस का एक हिस्सा था पर जब 1991 में रूस टूटा तो उस समय कई देश रूस से अलग हो गये थे उनमें से एक देश यूक्रेन भी था। इसने थोड़ी सी साझेदारी अपनी मिलिटरी के बारे में रूस से रखी और शेष यरोप से रखी सो यूक्रेन अब यूरोप और रूस दोनों महाद्वीपों का हिस्सा है।

यूक्रेन देश में रहने वाले कोज़ैक[2] कहलाते हैं। इनकी लोक कथाऐं भी रूस की लोक कथाओं से महत्व में कम नहीं हैं। ये कथाऐं रूथेनियन भाषा[3] में लिखी हुई हैं पर इनके अंग्रेजी हमें अनुवाद कम मिलते हैं। इन लोक कथाओं का एक अंग्रेजी अनुवाद एक वैब साइट पर मिलता है। यूक्रेन की ये लोक कथाऐं उसी पुस्तक से ली गयी हैं।[4] जिसने भी ये कथाऐं अंग्रेजी में अनुवाद की हैं उस अनुवादक का कहना है कि इन कथाओं का अनुवाद अंगेजी में पहले कभी नहीं किया गया। यह इन कथाओं का अंग्रेजी में पहला अनुवाद है। इस संग्रह में कई प्रकार की कथाओं को शामिल किया गया है।

स्लैवोनिक विद्वानों का कहना है कि इन लोक कथाओं में कुछ ऐसी खास और अजीब चीज़ें हैं जो यूरोप के किसी दूसरे देश की लोक कथाओं में नहीं मिलतीं जैसे – जादू का रूमाल जो सामान्य रूप से लोगों को फायदा पहुँचाता है पर यहाँ इवान गोलिक की कहानी में उसे भयानक रूप से नुकसान पहुँचाता है। राक्षसों को भगाने वाले रुई और तारकोल के कोड़े और जादू के जानवरों के अंडे बेखबर लोगों के हाथ में पड़ कर शरारत करने लगते हैं।

इसकी लोक कथाओं के बारे में एक और खास बात है और वह यह कि बहुत सालों तक रूस में मिले रहने की वजह से इसकी लोक कथाओं पर वहाँ की लोक कथाओं का असर बहुत है इसलिये इसमें काई बड़ा आश्चर्य नहीं अगर यूक्रेन की कोई कहानी पढ़ कर तुम्हें ऐसा लगे कि यह कहानी तो तुमने कहीं रूस की कहानियों में भी पढ़ी है। जैसे इस पुस्तक की पहली कहानी कुछ ऐसी ही है।

तो लो पढ़ो ये इतनी सारी लोक कथाऐं यूक्रेन देश की। यह इन कथाओं का पहला हिन्दी अनुवाद है जो पहली बार प्रकाशित हो रहा है। और यह उस अंग्रेजी पुस्तक का पहला हिन्दी अनुवाद है जो स्वयं भी रूथेनियन भाषा से पहली बार किया गया था। जैसा कि देखा जा सकता है कि यह अंग्रेजी अनुवाद 1894 के आस पास किया गया था तो निश्चित रूप से ये कथाऐं 1894 से भी अधिक पुरानी हैं। हिन्दी में भी ये कथाऐं आज इसके पहले अंग्रेजी अनुवाद सवासौ साल के बाद प्रकाशित हो रही हैं।

---

[2] Cossack

[3] Ruthenian language

[4] Cossack Fairy Tales and Folk Tales. Written by various authors. Translated by R Nisbet Bain. George G Harrap. Year Unknown (Another edition – AL Burt Co. 1894). Book available at : https://www.worldoftales.com/European_folktales/Cossack_folktales_preface.html#gsc.tab=0

1 जंगल का ज़ार ओह[5]

पुराना समय वैसा ही नहीं था जैसा कि आज का समय है जिसमें हम रहते हैं। पुराने समय में सब प्रकार की "बुरी शक्तियाँ" चारों तरफ घूमा करती थीं। यह दुनियाँ भी तब वैसी नहीं थी जैसी कि आज है। आजकल हमारे बीच वैसी बुरी शक्तियाँ भी नहीं हैं जैसे पहले थीं। मैं तुमको एक कहानी सुनाता हूँ "जंगल का ज़ार ओह" जिससे तुमको पता चलेगा कि वह आदमी किस तरह का था।

एक बार की बात है कि बहुत पहले, उस समय से भी पहले की की जिस समय के बारे में तुम केवल सोच सको। उस समय से भी पहले की जब तुम्हारे दादा या उनके भी दादा रहे होंगे कि एक गरीब आदमी अपनी पत्नी के साथ रहता था। उनके एक बेटा भी था। पर वह अपने माता पिता का केवल अकेला बेटा ही नहीं था बल्कि वह इतना आलसी था कि बस भगवान ही उसकी सहायता करे।

वह कुछ नहीं करता था। वह कुँए से पानी भर कर भी नहीं लाता था। बस वह अँगीठी पर लेटा रहता या फिर गर्म राख के पास लोटता रहता। अगर वे उसे खाने के लिये कुछ दे देते तो वह उसे खा लेता और अगर वे उसे खाने के लिये कुछ भी नहीं देते तो वह कुछ भी नहीं खाता।

---

[5] Oh: the Tzar of the Forest. (Tale No 1)

उसकी वजह से उसके माता पिता बहुत ही दुखी थे और बहुत दिनों तक दुखी रहे। वे उससे कहते — "हम तेरा क्या करें। तू तो किसी काम का नहीं। दूसरे लोगों के बच्चे घर में रह कर अपने माता पिता की सहायता करते हैं पर तू तो बिल्कुल ही बेवकूफ है। बिना कुछ काम किये ही हमारी रोटी तोड़ता है।"

परन्तु उनके कहने का उस लड़के पर कोई असर नहीं पड़ता। वह कुछ भी नहीं करता। वह फिर भी ॲंगीठी पर लेटा रहता या फिर राख से खेलता रहता।

एक दिन उसकी माँ ने उसके पिता से कहा — "हम अपने बेटे का क्या करें? आप देख रहे हैं न कि वह इतना बड़ा हो गया है और अभी भी हमारी कोई सहायता नहीं करता। और वह बेवकूफ भी इतना है कि हम उसके साथ कुछ कर नहीं सकते।

देखिये अगर हम इसे कहीं दूर भेज सकते हैं तो हमें कहीं दूर ही भेज देना चाहिये। हो सकता है कि हमारी अपेक्षा दूसरे लोग इससे कुछ काम ले सकें। सो माता पिता दोनों इस बात पर राजी हो गये और अगले दिन उसे एक दर्जी की दूकान पर सिलाई सीखने के लिये भेज दिया गया। वहाँ वह तीन दिन रहा पर फिर वह घर भाग आया। वह आ कर फिर से अपनी ॲंगीठी पर लेट गया और राख से खेलना शुरू कर दिया।

उसके पिता ने उसे बहुत मारा और फिर एक चमार के पास जूता बनाना सीखने के लिये भेज दिया। पर वह फिर भाग आया।

उसके पिता ने उसे फिर से बहुत मारा और अबकी बार एक लोहार की दूकान पर लोहे का काम सीखने के लिये भेज दिया। पर वहाँ भी वह अधिक दिनों तक नहीं रहा और घर वापस आ गया।

अब वह बेचारा पिता क्या करे। वह बोला — "ओ कुत्ते के पिल्ले, मुझे पता है कि अब मुझे तेरे साथ क्या करना चाहिये। मैं तुझ आलसी को कहीं दूर ले जाता हूँ, किसी दूसरे राज्य में। शायद बजाय यहाँ के वहाँ वे लोग तुझे कुछ अधिक अच्छी तरह से सिखा सकें। और वह जगह यहाँ से बहुत दूर भी होगी जहाँ से तू इतनी जल्दी नहीं आ सकेगा।" सो उसने उसे साथ लिया और अपनी यात्रा पर निकल पड़ा।

वे चलते रहे चलते रहे। वे थोड़ी दूर गये या फिर बहुत दूर गये यह तो पता नहीं मगर चलते चलते वे एक जंगल में आ गये। वह जंगल इतना घना और अँधेरा था कि उन्हें न तो वहाँ से आसमान दिखायी देता था और न ही जमीन।

वे इस जंगल में से हो कर जा रहे थे कि बहुत थोड़ी ही देर में वे चलते चलते थक गये। पर जब वे एक साफ जगह आये जहाँ पेड़ों के बहुत सारे कटे हुए तने खड़े हुए थे तो पिता ने बेटे से कहा — "मैं बहुत थक गया हूँ अब मैं यहाँ कुछ देर आराम करूँगा।"

ऐसा कहते हुए वह वहाँ खड़े हुए एक पेड़ के कटे हुए तने पर बैठ गया। बैठते बैठते वह बोला "ओह मैं कितना थका हुआ था।"

जैसे ही उसने यह कहा कि उस कटे हुए पेड़ के तने में से न जाने कैसे एक बहुत ही छोटा बूढ़ा निकल आया जिसके शरीर पर बहुत सारी झुर्रियाँ थीं। उसकी दाढ़ी बिल्कुल हरी थी और उसके घुटनों तक पहुँच रही थी।

निकलते ही उसने पूछा – "ओ आदमी, तुम्हें मुझसे क्या चाहिये?"

पिता तो उसे रोशनी में आते देख कर आश्चर्यचकित रह गया। वह बोला – "मैंने तो तुम्हें बुलाया नहीं था। चले जाओ यहाँ से।"

छोटा बूढ़ा आदमी बोला – "तुम यह बात कैसे कह सकते हो जबकि तुम्हीं ने तो वास्तव में मुझे बुलाया।"

पिता ने पूछा – "तब तुम हो कौन?"

छोटा बूढ़ा आदमी बोला – "ओह मैं? मैं तो जंगल का ज़ार[6] हूँ। अब बताओ कि तुमने मुझे क्यों बुलाया था।"

पिता बोला – "चले जाओ यहाँ से। मैंने तुम्हें नहीं बुलाया।"

छोटा बूढ़ा आदमी बोला – "तुमने मुझे बुलाया जब तुमने कहा "ओह"।

---

[6] Tzar or Tsar – pronounced as "Zaar". Tzar was the title of the emperors of Russia before 1917.

पिता बोला — "मैं तो बहुत थका हुआ था इसलिये मैंने ओह कह दिया था।"

ओह ने पूछा — "अच्छा तो तुम यह बताओ कि तुम जा कहाँ रहे हो?"

पिता ने एक लम्बी साँस भर कर कहा कि "मेरे सामने इतनी बड़ी दुनियाँ पड़ी है। मैं अपने खरदिमाग बेटे को किसी दूसरे के पास नौकरी दिलाने जा रहा हूँ। हो सकता है कि बजाय हमारे दूसरे लोग उसके दिमाग में कुछ अधिक अक्ल भर सकें। पर हम इसे कहीं दूर भेजना चाहते हैं जहाँ से यह वापस न आ सके क्योंकि अगर यह घर के पास जाता है तो हमेशा घर भाग आता है।

ओह बोला — "तो तुम इसे मुझे दे दो। मै तुमसे वायदा करता हूँ कि मैं इसको सिखा दूँगा। पर मैं इसे केवल एक शर्त पर लूँगा कि एक साल बाद तुम इसे लेने के लिये वापस आओगे।

उस समय अगर तुम इसे पहचान जाओगे तब तुम इसे ले जा सकते हो पर अगर उस समय तुम इसे नहीं पहचान सके तो फिर यह एक और साल मेरी सेवा में रहेगा।"

पिता ख़ुशी से चिल्ला कर बोला "ठीक है।" दोनों ने हाथ मिलाया। इस समझौते के लिये एक ड्रिंक पिया। पिता अपने घर वापस चला गया और ओह उसके बेटे को ले कर अपने घर आ गया।

ओह उसके बेटे को ले कर दूसरी दुनियाँ में आ गया जो धरती के नीचे थी। वह उसे ले कर एक मकान में आ गया जो टहनियों का बना हुआ था। उसकी हर चीज़ हरी थी। उसकी दीवारें हरी थीं। उसमें पड़ी बैन्चैं हरी थी। यहाँ तक कि ओह की पत्नी भी हरी थी। उसके बच्चे हरे थे। सब कुछ हरा ही हरा था।

ओह के पास काम करने वालियों की जगह जल परियाँ थीं। वे सब भी हरी थीं। उसने अपने नये मजदूर को बैठने के लिये कहा और फिर उसे कुछ खाने के लिये कहा। वे जल परियाँ उसके लिये कुछ खाना ले कर आयीं तो वह भी हरा था। उसने वह खाना खाया।

उसके बाद ओह ने कहा —"मेरे इस नये मजदूर को आँगन में ले जाओ ताकि यह वहाँ लकड़ी काट सके और कुँए से पानी खींच सके। वे उसको आँगन में ले गयीं पर वह वहाँ लकड़ी काटने और पानी भरने की बजाय जा कर लेट गया और सो गया।

ओह यह देखने के लिये बाहर निकल कर आया कि वह कैसा कर रहा था पर वहाँ उसने देखा कि वह तो वहाँ खर्राटे मार कर सो रहा था। ओह ने उसे पकड़ लिया। उसने कुछ लकड़ियाँ मँगवायीं और उसे उन लकड़ियों से बाँध दिया। फिर उसने उन लकड़ियों में आग लगा दी जिससे वह पूरी तरीके से जल कर मर गया।

ओह ने उसकी राख उठायी और उसे चारों तरफ फैला दी। पर उसमें से एक अंगारा कहीं अलग जा पड़ा। इस अंगारे के ऊपर

उसने ज़िन्दगी का पानी डाल दिया तो लो उस जोकर की बजाय तो एक बहुत सुन्दर नौजवान कोज़ैक उठ कर खड़ा हो गया जिसके बारे में न तो सोचा जा सकता है न ही वर्णन किया जा सकता है बस वैसा तो केवल परियों की कहानियों में ही मिलता है।

अब वह लड़का वहाँ एक साल तक रहा। एक साल गुजर जाने के बाद पिता अपने बेटे को लेने के लिये उसी जंगल में आया। फिर वह उसी कटे हुए पेड़ के तने के पास आया और उस पर बैठते हुए बोला "ओह"। लो उसी समय उस तने में से वह जंगल का ज़ार निकला और बोला — "कैसे हो? तुम्हें क्या चाहिये?"

पिता बोला — "मैं अच्छा हूँ तुम कैसे हो। मैं अपने बेटे को लेने आया हूँ।"

ओह बोला — "आओ और देख कर बताओ कि क्या तुम उसे पहचान सकते हो। अगर पहचान सकते हो तो उसे अपने साथ ले जाओ और अगर न पहचान सके तो वह अभी मेरी एक साल और सेवा करेगा।"

सो पिता ओह के साथ गया। वे ओह के मकान तक आये। ओह ने एक मुट्ठी भर बाजरा लिया और उसे बिखेर दिया तो बहुत सारे मुर्गे वहाँ उसे खाने के लिये आ गये। सारे मुर्गे एक जैसे ही थे उनमें कोई अन्तर नहीं था। उसने पूछा — "क्या तुम अब अपने बेटे को पहचान सकते हो?"

पिता इन मुर्गों को घूरता रहा घूरता रहा। वहाँ कुछ भी नहीं था सिवाय मुर्गों के और वे भी सब बिल्कुल एक से थे। वह अपने बेटे को नहीं पहचान सका। ओह बोला — "ठीक है अब तुम्हारा बेटा मेरे पास एक साल और रहेगा।" पिता घर चला गया।

दूसरा साल भी गुजर गया। पिता फिर से ओह के पास गया। वह उसी जंगल में उसी कटे हुए पेड़ के तने पर बैठता हुआ बोला "ओह" और लो जंगल का ज़ार तो वहाँ तुरन्त ही प्रगट हो गया।

वे फिर से ओह के मकान पर गये तो ओह ने कहा — "अबकी बार देखते हैं कि तुम अपने बेटे को पहचान सकते हो या नहीं।"

कह कर वह उसे एक भेड़ों के बाड़े में ले गया जहाँ भेड़ें ही भेड़ें थीं। पिता बेचारा फिर घूरता रहा पर अपने बेटे को न पहचान सका क्योंकि वहाँ सारी भेड़ें ही भेड़ें थीं और वे भी सब एक सी।

ओह बोला — "क्योंकि तुम अपने बेटे को अबकी बार भी नहीं पहचान सके सो अब तुम्हारा बेटा मेरे पास एक साल और रहेगा।" यह सुन कर पिता निराश हो कर चला गया।

इसी तरह से तीसरा साल भी बीत गया। पिता फिर से ओह के पास आया। पर रास्ते में उसे एक बूढ़ा मिला जो दूध की तरह सफेद था और दूध की तरह ही चमक रहा था।

उसने पिता से कहा — "हलो। कहाँ जा रहे हो?"

पिता बोला — "हलो। मैं अपने बेटे को ओह से छुड़ाने के लिये जा रहा हूँ।"

बूढ़े ने पूछा — “कैसे?” तो पिता ने उसे अपनी सारी कहानी बता दी।

बूढ़ा बोला — “अरे वह तो बहुत ही अधर्मी है जिससे तुम्हारा पाला पड़ा है। इस तरह से तो वह तुम्हें तुम्हारी नाक पकड़ कर बहुत दिनों तक घुमाता रहेगा।”

पिता बोला — “हाँ मुझे कुछ ऐसा लग तो रहा है पर मुझे नहीं मालूम कि मैं उसके साथ अब क्या करूँ। फादर क्या आप मुझे यह बतायेंगे कि मैं उससे अपना बेटा वापस कैसे लूँ।”

बूढ़ा बोला — “हाँ मैं बता सकता हूँ।”

पिता बोला — “मैं आपसे विनती करता हूँ कि आप मुझे यह बतायें। मैं आपके लिये भगवान से हमेशा प्रार्थना करता रहूँगा। हालाँकि वह बेटा मेरा बेटा कहने के लायक तो नहीं है फिर भी वह मेरा खून और माँस तो है।”

बूढ़ा बोला — “तसल्ली रखो। तसल्ली रखो। अब जब तुम ओह के पास जाओ वह तुम्हारे सामने बहुत सारी फाख्ताओं को उनके पिंजरे से बाहर निकाल देगा।

पर तुम उनमें से एक भी फाख्ता को मत चुनना। तुम केवल उसी फाख्ता को चुनना जो बाहर न आये और जो नाशपाती के पेड़ के नीचे चुपचाप बैठी हो और अपने पंख चुन रही हो। वही तुम्हारा बेटा है।”

यह सुन कर पिता ने बूढ़े को धन्यवाद दिया और आगे चल दिया। वह फिर से उसी कटे पेड़ के तने के पास आया और बोला "ओह"। तुरन्त ही ओह हाजिर था। पहले की तरह से वे दोनों फिर से ओह के घर गये।

जैसा कि उस सफेद बूढ़े ने कहा था वैसा ही हुआ ओह ने उसके सामने बहुत सारी फाख्ताऐं उनके पिंजरों में से बाहर निकाल दीं। अब तो पिता के सामने इतनी सारी फाख्ताऐं थीं कि उनकी तो गिनती करना मुश्किल था। और सबसे बड़ी बात तो यह थी कि सारी फाख्ताऐं एक जैसी थीं।

ओह ने पूछा — "क्या तुम इनमें से अपना बेटा पहचान सकते हो? अगर तुम उसे पहचान पाये तो वह तुम्हारा नहीं पहचान पाये तो वह मेरा।"

सारी फाख्ताऐं गेहूँ के दाने खा रही थीं पर उनमें से एक फाख्ता नाशपाती के पेड़ के नीचे चुपचाप बैठी अपने पंख नोच रही थी। बस पिता ने उसी की तरफ इशारा करते हुए कहा "यह है मेरा बेटा।"

ओह बोला — "क्योंकि तुमने अपने बेटे को पहचान लिया है इसलिये यह तुम्हारा हुआ तुम इसे अपने साथ ले जा सकते हो।"

पिता ने उस फाख्ता को उठाया तो जैसे ही उसने उसे उठाया तो वह तो एक बहुत सुन्दर नौजवान के रूप में बदल गया जैसा सारी दुनियाँ में कोई नहीं था। पिता उसे देख कर बहुत खुश हुआ।

उसने उसे गले से लगाया उसे चूमा और कहा "चलो बेटा घर चलें।" और दोनों घर चल दिये।

जब वे सड़क के किनारे किनारे जा रहे थे तो बात करते जा रहे थे कि किस तरह से वह ओह के घर में रहा। फिर पिता ने उसे बताया कि उसके पीछे उसने क्या क्या सहा।

पिता ने फिर पूछा — "बोलो बेटा। अब हम क्या करें। मैं भी गरीब हूँ और तुम भी गरीब हो। तुमने ओह की तीन साल तक सेवा तो की पर उससे कुछ कमाया तो नहीं।"

बेटा बोला — "पिता जी, आप दुखी मत होइये। अन्त में सब कुछ ठीक हो जायेगा। देखिये यहाँ कुछ भले लोग लोमड़े का शिकार करने के लिये घूम रहे हैं।

मैं ऐसा करता हूँ कि अपने आपको एक ग्रेहाउन्ड कुत्ते में बदल लेता हूँ और उस लोमड़े को पकड़ लेता हूँ। तब ये भले लोग आपसे मुझे बेचने की विनती करेंगे। तो आप मुझे कम से कम तीन सौ रूबल में बेच देना। बस यह ध्यान रखियेगा कि मुझे आप बिना जंजीर के बेचियेगा। तब हमारे पास बहुत सारा पैसा होगा और हम आराम से रह सकेंगे।

वे चलते रहे चलते रहे पर जंगल की सीमा पर जा कर उन्होंने देखा कि कुछ ग्रेहाउन्ड कुत्ते एक लोमड़े का पीछा कर रहे थे। वे उसके पीछे भागे जा रहे थे भागे जा रहे थे पर लोमड़ा भी उनकी पकड़ से बचता ही जा रहा था। इस तरह वे कुत्ते उसे पकड़ ही

नहीं पा रहे थे। तब उस आदमी के बेटे ने अपने आपको एक कुत्ते में बदला और लोमड़े को मार दिया।

वे भले लोग भागते भागते आये और देखा कि एक अजनबी कुत्ते ने लोमड़े को मार डाला है। उन्होंने चारों तरफ देखा तो उन्हें वहाँ एक आदमी खड़ा नजर आया तो उन्होंने उससे पूछा कि क्या वह कुत्ता उसका था। आदमी ने जवाब दिया कि "हाँ यह मेरा ही कुत्ता है।"

लोगों को वह कुत्ते बहुत पसन्द आया तो उन्होंने उसे खरीदने का सोचा। उन्होंने उस आदमी से पूछा कि "क्या तुम अपने कुत्ते को हमें बेचोगे?"

आदमी ने जवाब दिया "हाँ मैं बेचूँगा।"

"कितने पैसे लोगे?"

"तीन सौ रूबल लूँगा और इसे बिना इसकी जंजीर के बेचूँगा।"

भले लोग बोले – "हमें इसकी जंजीर का क्या करना है हम तो इसके गले में सोने की जंजीर भी डाल सकते हैं। क्या तुम इसके सौ रूबल लोगे?"

"नहीं मुझे इसके तीन सौ रूबल ही चाहिये।"

"ठीक है। यह लो तीन सौ रूबल और इसे हमें बेच दो।" कह कर उन्होंने तीन सौ रूबल उसे गिन दिये और कुत्ता ले कर चल दिये। वे फिर शिकार की खोज में निकले। उन्होंने उसे एक दूसरे

लोमड़े के पीछे भेजा तो वह उसके पीछे भाग तो गया मगर वापस नहीं लौटा। वह फिर से सुन्दर नौजवान बन कर अपने पिता के पास चला गया था।

वे चलते रहे चलते रहे तो पिता ने बेटे से कहा — "अब इस पैसे का हम क्या करेंगे? यह तो केवल हमारे घर चलाने के लिये और घर ठीक करने के लिये ही काफी है।"

बेटा बोला — "आप चिन्ता न करें पिता जी अभी हम और पैसा कमायेंगे। यहाँ कुछ भले लोग अपने बाज़ों के द्वारा बटेरों का शिकार कर रहे हैं। मैं अपने आपको एक बाज़ के रूप में बदल लेता हूँ। आप मुझे बिना हुड के तीन सौ रूबल में बेच देना।"

सो वे फिर आगे मैदान में पहुँचे जहाँ कुछ भले आदमी अपने बाज़ों द्वारा बटेरों का शिकार कर रहे थे। उनके बाज़ उड़ तो बहुत तेज़ रहे थे पर हर बार पीछे रह जाते थे। यह लड़का एक बाज़ बना और इसने कई बटेरों को गिरा दिया।

यह देख कर भले लोग बहुत खुश हुए। यह आदमी पास में ही खड़ा था तो उन्होंने उससे पूछा "क्या यह बाज़ तुम्हारा है?"

आदमी बोला "हाँ यह बाज़ मेरा ही है।"

"क्या तुम इसे हमें बेचोगे?"

"हाँ हाँ बेचूँगा। मैं इसके तीन सौ रूबल लूँगा और इसे बिना हुड के बेचूँगा।"

“हमें तुम्हारा हुड नहीं चाहिये। हमें तो तुम बस बाज़ ही दे दो। उसके लिये हुड तो हम ज़ार जितने पैसे से खुद ही बनवा सकते हैं।” उन्होंने उससे कुछ पैसे की सौदेबाज़ी की पर फिर तीन सौ रूबल दे कर उसे खरीद लिया।

खरीदने के बाद उन्होंने उसे दूसरी बटेरों के पीछे भेज दिया। वह बाज़ बना लड़का बटेरों के पीछे उड़ तो गया पर फिर वापस नहीं लौटा और लड़का बन कर अपने पिता के पास चला गया।

पिता ने फिर कहा — “बेटा अभी भी ये पैसे काफी नहीं हैं। इतने कम पैसे से काम कैसे चलेगा।”

बेटा बोला — “थोड़ा इन्तजार कीजिये पिता जी। अभी हम और पैसा कमायेंगे। जब हम बाजार से हो कर गुजरेंगे तो मैं अपने आपको एक घोड़े में बदल लूँगा। वहाँ आप मुझे बेच दीजियेगा। वे मेरे लिये आपको एक हजार रूबल देंगे। पर आप मुझे वहाँ बिना लगाम के बेचियेगा।”

सो जब वे अगले छोटे से शहर के बाजार में पहुँचे तो यह लड़का एक घोड़े में बदल गया। पिता उस घोड़े को ले कर बाजार में बेचने के लिये खड़ा हो गया। वह घोड़ा देखने में इतना खूँख्वार लगता था कि उसके पास भी जाने की किसी की हिम्मत नहीं होती थी। पिता उसकी लगाम थामे खड़ा था।

घोड़ों की खरीद फ़रोख्त करने वाले लोग उसके पास उस घोड़े को खरीदने के लिये आने लगे। उन्होंने जब उसके दाम पूछे तो वह बोला — "एक हजार रूबल पर बिना लगाम के।"

"हमें इसकी लगाम का क्या करना है हम इसके लिये चाँदी की लगाम बनवा लेंगे। पर हम तुम्हें इसके पाँच सौ रूबल देंगे।"

"नहीं। मैं एक हजार रूबल से कम बिल्कुल नहीं लूँगा।"

तभी एक जिप्सी वहाँ आया और वह उसका सौदा करने लगा — "छह सौ रूबल लगाम के साथ।"

पर उसका पिता किसी और सौदे पर नहीं माना। वह बोला — "नहीं ओ जिप्सी। यह लगाम तो मुझे बहुत प्यारी है। मैं इसे नहीं दे सकता।"

जिप्सी बोला — "मेरे प्यारे भाई। क्या कहीं तुमने बिना लगाम के कोई घोड़ा देखा है। बिना लगाम के कोई उसे कैसे ले जायेगा।"

आदमी बोला — "कुछ भी हो यह लगाम तो मेरी ही है।"

जिप्सी बोला — "देखो मैं तुम्हें इस लगाम के पाँच रूबल और दूँगा पर मुझे इसकी लगाम तो चाहिये ही।"

पिता थोड़ी देर तक सोचता रहा कि इस तरह की लगाम तो केवल तीन सिक्कों में आती है और यह जिप्सी मुझे इसके पाँच रूबल दे रहा है तो मैं इसे यह लगाम दे ही देता हूँ।

सो एक बार फिर पिता ने अपने बेटे का सौदा एक ड्रिंक के साथ कर दिया। पिता अपने पैसे ले कर अपने घर चला गया और जिप्सी अपने घोड़े को ले कर अपने घर चला गया।

लेकिन वह जिप्सी वास्तव में जिप्सी नहीं था। वह ओह था जंगल का ज़ार जिसने जिप्सी का रूप रख कर आदमी से घोड़े का सौदा किया था।

ओह अपने घोड़े पर सवार हो कर चल दिया। घोड़ा भी अपने सवार को जंगल के पेड़ों के ऊपर पर आसमान के बादलों के नीचे उड़ा कर चल दिया। आखिर वे एक जंगल में उतरे और ओह के मकान में आये। ओह ने घोड़े को बाहर मैदान में छोड़ा और खुद वह घर के अन्दर चला गया।

ओह ने अपनी पत्नी से कहा — "यह कुत्ते का पिल्ला मेरे हाथ से इतनी जल्दी बच नहीं सकता।"

सुबह को ओह ने घोड़े को लगाम से पकड़ा और पानी पिलाने के लिये उसे पास की एक नदी के पास ले गया। जैसे ही घोड़ा नदी के पास पहुँचा और उसने पानी पीने के लिये अपना सिर पानी में झुकाया वह एक मछली बन गया और उसमें तैरने लगा।

ओह भी तुरन्त ही एक बड़ी मछली, पाइक मछली, बन गया और उसके पीछे पीछे तैरने लगा। पर जैसे ही पाइक छोटी मछली को पकड़ने वाली थी कि छोटी मछली ने अपने पंख अटका कर

अपनी दुम पाइक की तरफ कर ली जिससे पाइक उसे पकड़ न सके।

जब पाइक छोटी मछली के पास आयी तो वह चिल्लायी — “ओ छोटी मछली। अपना सिर मेरी तरफ करो मैं तुमसे कुछ बात करना चाहता हूँ।”

छोटी मछली बोली — “कहो जो तुम कहना चाहते हो। मैं जैसे हूँ वैसे ही तुम्हारी सब बात सुन सकती हूँ।”

सो पाइक उस छोटी मछली का पीछा करती रही और एक बार फिर उसके पास तक पहुँच गयी पर उससे कोई फायदा नहीं था। आखिर छोटी मछली किनारे की तरफ तैर गयी। वहाँ किनारे पर एक ज़ारेवना[7] खड़ी हुई थी उसके हाथ में एक डंडी थी।

किनारे पर पहुँच कर छोटी मछली ने अपने आपको एक सोने की अंगूठी में बदल लिया जिसमें गार्नेट लगे हुए थे। ज़ारेवना ने यह देखा और अपनी डंडी से उसे निकाल कर उसे खुशी खुशी घर ले गयी और अपने पिता से कहा — “देखिये पिता जी। मुझे कितनी सुन्दर अंगूठी मिली है।”

ज़ार ने उसे चूमा पर ज़ारेवना की समझ में यह नहीं आया कि वह उसे अपनी किस उँगली में पहने।

[7] Tzarevna – the daughter of Tzar

तभी पाइक ने एक सौदागर का वेश बना कर महल में प्रवेश किया और ज़ार से मिलने की इच्छा प्रगट की। ज़ार उससे मिलने के लिये बाहर गया और उससे पूछा — "ओ बूढ़े तुम क्या चाहते हो?"

बूढ़ा सौदागर बोला — "मैं समुद्र में अपने जहाज़ में जा रहा था और एक बहुत सुन्दर गार्नेट जड़ी अंगूठी अपने देश के ज़ार के लिये ले जा रहा था कि वह मेरे हाथ से पानी में गिर पड़ी। क्या आपके किसी नौकर को वह ॲगूठी तो नहीं मिली।"

ज़ार बोला — "मेरे किसी नौकर को तो नहीं हॉ मेरी बेटी को वह ॲगूठी जरूर मिली है।"

सो ज़ार ने अपनी बेटी को बुलवाया तो ओह ने उससे उस ॲगूठी को उसे देने के लिये बहुत विनती की। पर इस सबसे कोई फायदा नहीं वह लड़की तो किसी हालत में उस ॲगूठी को उस सौदागर को देने को तैयार नहीं थी।

तब ज़ार खुद अपनी बेटी से बोला — "नहीं मेरी प्यारी बेटी। ऐसा नहीं करते। कहीं इस ॲगूठी की वजह से इस बेचारे पर कोई मुसीबत न आ जाये इसलिये यह ॲगूठी उसे दो दो।

सौदागर ने उससे कहा — "तुम मुझसे कुछ भी ले लो पर वह ॲगूठी मुझे दे दो। अगर मुझे वह ॲगूठी न मिली तो मैं ज़िन्दा नहीं बचूँगा।"

ज़ारेवना बोली — "यह न मेरी होगी न तुम्हारी होगी।" कह कर उसने वह ॲगूठी जमीन पर फेंक दी।

जैसे ही उसने अँगूठी जमीन पर फेंकी वह बाजरे के दानों में बदल गयी। तुरन्त ही सौदागर एक मुर्गा बन गया और वह बिखरा हुआ बाजरा खाने लगा। वह उन्हें खाता रहा खाता रहा जब तक उसने वह सारा बाजरा नहीं खा लिया।

इस बीच बाजरे का एक दाना ज़ारेवना के पैरों के नीचे खिसक गया जिसे सौदागर देख नहीं पाया। जब उसने सारा बाजरा खत्म कर लिया तो वह खिड़की पर जा बैठा, अपने पंख खोले और वहाँ से उड़ गया।

पर जो अकेला बाजरे का दाना ज़ारेवना के पैरों के नीचे खिसक गया था वह सौदागर के वहाँ से उड़ जाने के बाद एक सुन्दर नौजवान में बदल गया। यह नौजवान इतना सुन्दर था कि जैसे ही ज़ारेवना ने उसे देखा वह उससे प्रेम करने लगी। उसने ज़ार और ज़ारित्सा[8] से विनती की कि वे उसकी शादी उस नौजवान से कर दें।

वह बोली — "मैं कभी किसी और नौजवान के साथ इतनी खुश नहीं रह पाऊँगी जितनी कि इसके साथ। मेरी खुशी तो बस इस अकेले के साथ ही है।"

ज़ार बहुत देर तक इस बारे में सोचता रहा कि वह इस नौजवान को अपनी बेटी दे या नहीं पर आखीर में उसने उन दोनों को अपना आशीर्वाद दे ही दिया। उन्होंने दोनों को दुलहा और

[8] Tzaritsa – means the wife of the king, or the Queen

दुलहिन की मालाऐं पहनायीं। उनकी शादी में दुनियाँ के सब लोगों को बुलाया गया।

मैं भी वहीं था। मैंने भी वहाँ खूब बीयर और शराब पी और जो मैं नहीं पी सका वह मेरी दाढ़ी पर चली गयी। मैं अपने दिल में बहुत खुश था।

2 हवा की कहानी[9]

एक बार की बात है कि एक गाँव में दो भाई रहते थे। उनमें से एक बहुत बहुत अमीर था और दूसरा भाई बहुत बहुत गरीब था। अमीर भाई के पास सब तरह की सम्पत्ति थी और गरीब भाई के पास बहुत सारे बच्चे थे।

एक दिन जब फसल कट रही थी गरीब भाई ने अपनी पत्नी को छोड़ा और अपने छोटे से गेहूँ के खेत की फसल को काटने जा पहुँचा पर हवा उसका सारा अनाज उड़ा कर ले गयी एक दाना भी खेत में नहीं छोड़ा।

गरीब भाई को इस बात पर बहुत गुस्सा आ गया। वह बोला — "अब जो हो सो हो। मैं तो हवा के पास जाऊँगा और उससे कहूँगा कि मैं किन किन दर्दों से हो कर गुजर रहा हूँ। मैंने कितनी मेहनत से अपना गेहूँ उगाया था और वह उसे सारा का सारा उड़ा कर ले गया। यह क्या तरीका है।"

सो गरीब भाई अपने घर गया और हवा के पास जाने के लिये तैयार होने लगा। पत्नी ने देखा कि उसका पति कहीं जाने के लिये तैयार हो रहा है तो उसने पूछा — "प्रिय तुम कहाँ चले।"

गरीब भाई बोला — "मैं हवा को ढूँढने जा रहा हूँ।"

"तो तुम उससे क्या कहोगे?"

[9] The Story of the Wind. (Tale No 2)

गरीब भाई बोला — “मैं उससे कहूँगा कि “ऐसा काम मत करो।”

पत्नी बोली — “यह कहावत तो तुम्हें पता है न कि अगर तुम्हें हवा को ढूँढना है तो उसे खुली जगह में ढूँढो। तुम्हारे हिसाब से तो वह दस दिशाओं में जा सकती है। प्रिय ज़रा इसके बारे में सोचो और उसे ढूँढने न जाओ।”

गरीब भाई बोला — “नहीं मुझे तो जाना ही है सो मैं तो जाऊँगा ही। हो सकता है कि मैं शायद कभी न लौट पाऊँ।” तब उसने अपनी और बच्चों से विदा ली और वहाँ से चल दिया। वह उसे ढूँढने के लिये एक खुले हुए घास के मैदान में जा पहुँचा।

वह आगे चलता रहा चलता रहा जब तक कि उसके आँखों के सामने एक जंगल आया। जंगल के किनारों पर एक झोंपड़ी मुर्गी के चार अंडों पर खड़ी हुई थी। यह आदमी इस मकान में गया तो यह तो उसे देख कर आश्चर्य में पड़ गया। क्योंकि वहाँ पर एक बहुत ही बड़ा और बूढ़ा आदमी लेटा हुआ था। वह बिल्कुल दूध की तरह से सफेद था।

वह अपनी पूरी लम्बाई में लेटा हुआ था। उसका सिर एक तकिये पर रखा हुआ था और चारों हाथ पैर उसके चारों कोनों में फैले हुए थे। उसके सारे बाल खड़े हुए थे। यह और कोई नहीं हवा खुद था। गरीब भाई उस प्राचीन चीज़ को देख कर डर गया क्योंकि अपनी पूरी ज़िन्दगी में उसने कभी कोई ऐसी चीज़ नहीं देखी

थी। वह अपने आप से ही बोला "भगवान आपकी मदद करें ओ बूढ़े बाबा।"

वह प्राचीन आदमी अपनी झोंपड़ी में लेटे ही लेटे बोला — "ओ भले आदमी तू हमेशा तन्दुरुस्त रह।"

फिर उसने बहुत ही दोस्ताना तरीके से उससे पूछा — "ओ भले आदमी तू यहाँ किस वजह से आया है?"

गरीब आदमी बोला — "मैं सारी दुनियाँ में हवा को ढूँढता घूम रहा हूँ। जब मैं उससे मिल लूँगा तो मैं वापस चला जाऊँगा और अगर मुझे वह नहीं मिला तो मैं उसे ढूँढता ही रहूँगा।"

फर्श पर लेटे लेटे ही प्राचीन आदमी ने कहा — "तुझे हवा से क्या काम है? उसने तेरे साथ ऐसा क्या गलत किया है कि तुझे उससे इतना जरूरी मिलना है?"

गरीब भाई बोला — "उसने मेरे साथ क्या गलत किया है तो सुनो ओ प्राचीन आदमी। मैं तुम्हें बताता हूँ कि उसने मेरे साथ क्या गलत किया है।

मैं अपनी पत्नी को छोड़ कर सीधा अपने छोटे से खेत पर उसे काटने गया तो जब मैं उसे काट कर उसमें से दाना निकालने के लिये उसे पीटने लगा तो हवा आया और मेरे उन सब दानों को उड़ा कर ले गया और सबको बिखेर दिया। मेरे खेत में एक भी दाना नहीं बचा। सो अब तुम देखो कि मैं उसे किस बात के लिये धन्यवाद दूँ।

भगवान के नाम पर मुझे बताओ तो कि ऐसा क्यों होना चाहिये था। वह मेरा छोटा सा खेत ही तो बस मेरा सब कुछ था। मैंने उसे अपना पसीना बहा बहा कर जोता था काटा था और पीटा था पर हवा आया और मेरे सब दाने उड़ा कर ले गया। अब उनमें से दुनियाँ भर में किसी भी दाने का कोई पता नहीं है।

तब मैंने अपने मन में सोचा कि "उसे मेरे साथ ऐसा क्यों करना चाहिये था।" फिर मैं अपनी पत्नी के पास गया और उससे कहा कि "मैं हवा को ढूँढने जा रहा हूँ और उससे कहूँगा कि दूसरी बार किसी ऐसे गरीब के खेत पर नहीं आना जिसके पास बस थोड़ा सा ही अनाज हो। और उसे उड़ाना भी नहीं तो उसे बहुत बुरी तरह से पछताना पड़ेगा।"

जमीन पर लेटे हुए आदमी ने कहा — "तुम ठीक कह रहे हो मेरे बेटे। भविष्य में मैं इस बात का ख्याल रखूँगा। भविष्य में मैं किसी ऐसे गरीब का अनाज नहीं उड़ाऊँगा। पर ओ भले आदमी तुम्हें हवा को बाहर घास के खुले मैदान में ढूँढने की कोई जरूरत नहीं है क्योंकि मैं खुद ही हवा हूँ।"

गरीब आदमी बोला — "अगर तुम ही हवा हो तो मेरा अनाज मुझे वापस करो।"

वह आदमी बोला — "नहीं। वह तो मैं नहीं कर सकता क्योंकि जो मर गया तुम उसे वापस नहीं ला सकते। तो भी जो कुछ मैंने तुम्हारे साथ शरारत की है उसके बदले में मैं तुम्हें यह थैला देता

हूँ। इसे तुम अपने साथ घर ले जाओ और जब भी तुम्हें कभी खाना चाहिये तो इससे कहना "थैले थैले मुझे खाने के लिये खाना और शराब चाहिये।" तो तुम्हें इससे भर पेट खाना और शराब मिल जायेगी। सो अब तुम्हारे पास अपनी पत्नी और बच्चों का पेट भरने का साधन है।"

गरीब आदमी तो हवा का बहुत कृतज्ञ हो गया। वह बोला — "मैं तुम्हें बहुत बहुत धन्यवाद देता हूँ ओ हवा। तुम्हें इस थैले को मुझे देने के लिये जो मुझे बिना कुछ किये धरे खाना और शराब देगा।"

हवा बोला — "आलसी लोगों के लिये यह एक दोहरा वरदान है। अब तुम घर जाओ पर ध्यान रखना रास्ते में किसी भी सराय में नहीं रुकना। अगर तुम रुके तो मुझे पता चल जायेगा।"

गरीब भाई बोला — "नहीं मैं नहीं ठहरूँगा।" फिर उसने हवा से विदा ली और अपने घर चल दिया।

वह अभी बहुत दूर नहीं गया होगा कि वह एक सराय के सामने से गुजरा तो उसके दिल में यह जानने की एक ज़ोर की इच्छा पैदा हुई कि हवा ने थैले के बारे में सच कहा था या नहीं।

उसने यह भी सोचा कि बीच में सराय पड़े तो उसमें अन्दर जाये बिना कोई कैसे रह सकता है। मैं इसके अन्दर जाऊँगा और बाहर आ जाऊँगा फिर जो भी होता रहे। हवा को क्या पता चलेगा वह तो देख नहीं सकता।

सो उसने सराय के बाहर एक खूँटी पर अपना थैला टाँगा और सराय के अन्दर चला गया। वह ज्यू जिसकी वह सराय थी उससे बोला — "ओ भले आदमी तुम्हें क्या चाहिये?"

गरीब भाई बोला — "ओ कुत्ते। तुझे इससे क्या मतलब।"

ज्यू भुनभुनाया — "उँह तुम सब लोग एक से होते हो। तुम्हें जो चाहिये तुम वह ले लेते हो और फिर उसका पैसा भी नहीं देते।"

गरीब भाई चिल्लाया — "क्या तुम समझते हो कि मैं तुमसे कुछ खरीदना चाहता हूँ?"

कह कर वह अपने थैले की तरफ घूमा और चिल्ला कर बोला "थैले थैले मुझे खाने के लिये खाना और शराब चाहिये।" उसके यह कहते ही एक मेज सज गयी जिस पर भिन्न भिन्न प्रकार के माँस और शराब लग गये।

यह देख कर सराय के सारे ज्यूज़ वहाँ आ कर इकट्ठे हो गये और उससे पूछने लगे "यह सब क्या है?" "हमने तो ऐसी कोई चीज़ पहले कभी देखी नहीं।"

गरीब भाई बोला — "ओ ज्यूज़। कोई सवाल मत पूछो। बस बैठो और खाओ। सबके लिये बहुत खाना है।"

सो बहुत सारे ज्यू आदमी और स्त्रियाँ वहाँ बैठ गये और उन सबने वहाँ पेट भर कर खाना खाया और खूब शराब पी। उन्होंने कहा — "पियो ओ भले आदमी पियो। जितना चाहो उतना पियो।

उसके बाद तुम फिर हमारी लौज में ठहर सकते हो। हम तुम्हारे लिये एक अच्छा सा बिस्तर बिछवायेंगे। तुम्हें कोई परेशान नहीं करेगा। आओ जो कुछ खाना चाहो वह खाओ और जो पीना चाहो वह पियो।" इस तरह ज्यूज़ ने उसकी नकली प्रशंसा की और शराब के प्याला उसके मुँह से लगा दिया।

वह बेचारा सादा सा आदमी यही नहीं समझ पाया कि वे कितनी चतुराई से उसके साथ बरताव कर रहे हैं। पीते पीते वह अपनी सुध खो बैठा और अपनी जगह से हिल भी नहीं सका। इस बीच ज्यूज़ ने उसका थैला वैसे ही एक और थैले से बदल दिया और उसे वहीं उसी खूँटी पर ही टाँग दिया।

सुबह को उन्होंने उसे उठाया और उससे कहा कि उसके घर जाने का समय हो गया। वे बोले देखो सुबह हो गयी। अब उठो। गरीब भाई उठा अपने सिर का पिछला हिस्सा खुजलाया क्योंकि उसे वहाँ से जाने में बहुत आलस आ रहा था। पर फिर भी उसे जाना तो था ही सो उसने खूँटी पर से अपना थैला उतारा और घर चला गया।

जब वह घर पहुँचा तो ज़ोर से चिल्लाया — "प्रिये दरवाजा खोलो।" पत्नी ने दरवाजा खोला और गरीब भाई घर के अन्दर गया।

अन्दर जा कर उसने अपना थैला एक खूँटी पर टाँग दिया और पत्नी से बोला — "आओ प्रिये मेज पर बैठो और बच्चों तुम भी मेज

पर बैठो। भगवान का लाख लाख धन्यवाद है कि अब हमारे पास बहुत सारा खाना है कि हम पेट भर कर खा भी सकते हैं पी भी सकते हैं और बचा कर भी रख सकते हैं।"

पत्नी ने अपने पति की ओर देखा और मुस्कुरायी। उसे लगा कि उसका पति पागल हो गया है। पर फिर भी वह मेज पर बैठ गयी और उसके बच्चे भी उसके चारों तरफ बैठ गये। अब वह इन्तजार करने लगी कि अब उसका पति क्या गुल खिलायेगा।

पति बोला — "थैले थैले मुझे खाने के लिये खाना और पीने के लिये शराब चाहिये।" पर थैला तो चुपचाप ही उस खूँटी पर टँगा रहा उसने कुछ नहीं किया।

उसने फिर कहा — "थैले थैले मुझे खाने के लिये खाना और पीने के लिये शराब चाहिये।" पर अभी भी थैला चुपचाप खूँटी पर टँगा रहा और उसने कुछ नहीं किया।

अब आदमी को बहुत गुस्सा आ गया। वह बोला — "तूने मुझे सराय में तो कितना सारा खाना और शराब दी थी और अब मैं तुझे बेकार ही पुकार रहा हूँ। तू मुझे कुछ दे भी नहीं रहा और न मेरी कुछ सुन ही रहा है।"

कह कर वह अपनी कुर्सी से उछला और एक डंडा ले कर उससे उसे मारने लगा। वह उसे तब तक मारता रहा जब तक कि उसकी दीवार में एक छेद नहीं हो गया और उस थैले के चीथड़े नहीं उड़ गये। अगले दिन वह हवा के पास जाने के लिये फिर से तैयार

हुआ। उसकी पत्नी घर पर ही रही। वह अपने पति को डॉटती ही रही। आदमी हवा से मिलने चला।

हवा से मिलने पर वह बोला — "हलो हवा।"

हवा बोला — "तुम्हारी तन्दुरुस्ती बनी रहे।"

हवा ने फिर पूछा — "तुम कहॉ से आये हो? क्या तुम वही आदमी नहीं हो जिसे मैंने थैला दिया था? अब तुम्हें और क्या चाहिये?"

आदमी बोला — "वह एक सुन्दर सा थैला? तुम्हारे दिये हुए उस थैले ने तो मेरे साथ बहुत शरारत खेली है।"

हवा ने पूछा — "उसने तुम्हारे साथ क्या शरारत खेली है?"

आदमी बोला — "देखो बाबा। मैं तुम्हें बताता हूँ कि उसने मेरे साथ कौन सी शरारत खेली है। उसने मुझे खाने पीने के लिये कुछ नहीं दिया तो मैंने उसे मारना शुरू कर दिया और उसे दीवार के अन्दर घुसा दिया। अब मैं क्या करूँ? क्या मैं अपनी झोंपड़ी को ठीक कराऊँ? बाबा मुझे कुछ दो।"

पर हवा बोला — "नहीं ओ आदमी। अब तुम्हें उसके बिना ही रहना पड़ेगा। बेवकूफ न तो बोये जाते है और न काटे जाते हैं। वे केवल अपने आप ही उगते हैं। क्या तुम रास्ते में किसी सराय में नहीं ठहरे थे?"

"नहीं मैं तो नहीं ठहरा था।"

हवा बोला — "क्या तुम नहीं ठहरे? झूठ क्यों बोलते हो?"

आदमी बोला — "अच्छा मैं झूठ बोला तो।"

हवा बोला — "अगर तुम कोई नुकसान अपनी गलती से भुगतते हो तो तुम उसके जिम्मेदार खुद हो। और फिर तुम्हें चुप रहना चाहिये।"

आदमी बोला — "फिर भी यह गलती तुम्हारे थैले की ही है कि यह बुराई मेरे सिर आ पड़ी। अगर उसने केवल मेरे लिये ही खाना पीना दिया होता तो मैं तुम्हारे पास आता ही नहीं।"

यह सुन कर हवा ने थोड़ी देर के लिये अपना सिर खुजलाया और फिर उसे एक छोटा सा बकरा देते हुए कहा — "लो यह बकरा तुम्हारे लिये है। अब जब भी तुम्हें इससे पैसा चाहिये तब तुम इससे चाहे जितना पैसा माँग सकते हो।

यह तुम्हें उतना पैसा देगा जितना तुम्हें इससे चाहिये। और मैं फिर कह रहा हूँ कि अबकी बार फिर किसी सराय में नहीं जाना। अगर तुम गये तो मुझे पता चल जायेगा।"

आदमी बोला — "ठीक है। मैं नहीं जाऊँगा।" इसके बाद आदमी ने अपना बकरा उठाया और वहाँ से सीधा घर चल दिया।

आदमी अपने बकरे को अपने पीछे लिये सड़क के किनारे किनारे जा रहा था कि वह एक सराय के पास आया। यह वही सराय थी जिसमें वह पहले भी गया था। उसे देख कर उसके मन में फिर से उसके अन्दर जाने की ज़ोर की इच्छा जागी।

वह उसके दरवाजे पर खड़ा हो गया और सोचने लगा कि उसे अन्दर जाना चाहिये या नहीं क्योंकि एक तरफ तो हवा ने उसे पक्के तरीके से मना कर दिया था दूसरी तरफ उसकी इच्छा थी। उसकी यह भी इच्छा थी कि वह उस बकरे को जाँचना चाहता था।

फिर उसने सोचा "मैं इसके अन्दर चलता ही हूँ बस आज मैं वहाँ पियूँगा नहीं बस केवल एक गिलास ही पियूँगा और उसके बाद फिर मैं घर चला जाऊँगा।" और यह सोचता हुआ वह अपने बकरे को घसीटते हुए सराय में ले कर अन्दर चला गया क्योंकि वह उसके खो जाने से डरता था।

जब ज्यूज़ जो सराय के अन्दर थे उन्होंने एक बकरे को अन्दर आते देखा तो वे बहुत ज़ोर से चिल्ला पड़े — "अरे यह क्या। यह तुमने क्या सोचा कि तुम यह छोटा सा बकरा यहाँ कमरे में लिये हुए चले आओगे? क्या बाहर तुम्हें इसे बाँधने के लिये कोई जगह नहीं मिली?"

"चुप रहो ओ नीच लोगों। इस बात का तुम लोगों से क्या मतलब। यह उस तरह का बकरा नहीं है जिसके साथ तुम्हारा कोई सम्बन्ध हो। और अगर तुम्हें विश्वास न हो तो तुम यहाँ एक कपड़ा बिछाओ तब फिर तुम कुछ देखोगे। मैं तुमसे वायदा करता हूँ।"

लोगों ने तुरन्त ही एक कपड़ा बिछा दिया। आदमी बोला — "छोटे बकरे छोटे बकरे पैसे दो।" और उस छोटे से बकरे ने इतना सारा पैसा देना शुरू कर दिया कि वह बढ़ता ही गया और बढ़ता ही

गया। वहाँ मौजूद लोग चिल्लाने लगे "ओ आदमी। हमने ऐसा बकरा अपनी ज़िन्दगी में पहले कभी नहीं देखा। तुम इसे हमें बेच दो हम तुम्हें इसका बहुत सारा पैसा देंगे।"

गरीब भाई बोला — "तुम लोग यह सब पैसा ले सकते हो पर मैं अपना बकरा बेचने वाला नहीं हूँ।"

सो ज्यूज़ ने वहाँ बिखरा सारा पैसा समेट लिया और उसके सामने एक मेज लगवा दी जिस पर बहुत सारे प्रकार के व्यंजन लगे हुए थे। उन्होंने उसे वहाँ बैठने पर मजबूर कर दिया और मालिक ज्यूज़ ने चालाकी से कहा —

"हालाँकि यह खाना खा कर तुम थोड़े ज़िन्दादिल हो जाओगे पर तुम बहुत पीना नहीं क्योंकि तुम्हें मालूम है कि शराब आदमी की अक्ल पर असर करती है।"

गरीब भाई ने ज्यूज़ की इस साफ साफ चेतावनी की बड़ी सराहना की और फिर सब कुछ भूल कर वह खाने की मेज पर बैठ गया और गिलास भर भर कर शराब पीने लगा। पीते पीते वह ज्यूज़ से बातें भी करता जाता था। इस बीच वह अपने बकरे के बारे में बिल्कुल भूल ही गया।

उधर ज्यूज़ भी उसे पिलाते गये पिलाते गये। काफी पिलाने के बाद उन्होंने उसे बिस्तर पर लिटा दिया और उसके बकरे की जगह एक साधारण बकरा रख दिया।

अगले दिन जब वह सो कर उठा तो उसने अपना बकरा उठाया और उसे साथ ले कर अपने घर चला गया। जब वह अपने घर पहुँचा तो उसकी पत्नी दरवाजे में ही खड़ी थी।

जैसे ही उसने अपने पति को आते हुए देखा वह घर के अन्दर भाग गयी और अपने बच्चों से बोली — "आओ बच्चो, जल्दी आओ जल्दी करो तुम्हारे पिता जी आ रहे हैं। वह तुम्हारे लिये एक छोटा सा बकरा ले कर आ रहे हैं। तुम उठो और उनकी तरफ गुस्से से देखना। यह मेरा कितना बुरा साल बीता है पर आखिर वह घर वापस लौट ही आये।"

पति ने घर के दरवाजे पर आ कर आवाज लगायी — "प्रिये दरवाजा खोलो। मैं कहता हूँ दरवाजा खोलो।"

पत्नी बोली — "तुम कोई बहुत बड़े भले आदमी नहीं हो जिसके लिये मैं दरवाजा खोलने आऊँ। तुम दरवाजा अपने आप ही खोल लो। तुम इतनी क्यों पी लेते हो कि यह भी भूल जाते हो कि दरवाजा कैसे खोलते हैं।

यह बहुत बुरा समय है जो मैंने तुम्हारे साथ गुजारा है। यहाँ मैं कितने सारे बच्चों के साथ हूँ और तुम बाहर जा कर इतनी पी कर आते हो।"

खैर फिर पत्नी ने दरवाजा खोला और पति घर के अन्दर घुसा और बोला — "प्रिये तुम तन्दुरुस्त रहो।"

पर पत्नी चिल्ला कर बोली — "तुम इस बकरे को घर के अन्दर क्यों लाये। क्या यह घर के बाहर नहीं ठहर सकता।"

पति बीच में बोला — "मेरी बात तो सुनो। तुम बोलो मगर चिल्लाओ नहीं। हमें अब सब तरह की अच्छी अच्छी चीज़ें मिलेंगी और हमारे बच्चों का भी समय अच्छा गुजरेगा।"

पत्नी चिल्लायी — "अच्छा समय? इस बकरे के साथ हमारा क्या अच्छा समय बीतेगा? हमारे पास तो इस बकरे को खिलाने के लिये भी पैसे नहीं हैं। हमारे पास अपने लिये तो खाने के लिये पैसे हैं ही नहीं और तुम यह बकरा यहाँ और ले आये हो। यह सब बेकार की बात है।"

पति बोला — "प्रिये शान्त रहो। यह दूसरे बकरों जैसा नहीं है।"

पत्नी मुँह बना कर बोली — "तो फिर किस जैसा है।"

"अब तुम ज़्यादा सवाल मत करो और फर्श पर एक कपड़ा बिछाओ और अपनी आँखें खुली रखो।"

पत्नी ने पूछा — "मैं यहाँ कपड़ा क्यों बिछाऊँ?"

पति गुस्से से चिल्ला कर बोला — "अरे क्यों बिछाऊँ? जैसा मैं कहता हूँ तुम वैसा करो। और अपनी जबान को काबू में रखो।"

पर पत्नी फिर बोली — "मेरा तो बुरा समय आ गया है। तुम बाहर जा कर केवल पीते हो और जब तुम घर लौटते हो तब तुम

बेकार की बातें करते हो। अपने साथ थैला और बकरा लाते हो और हमारी झोंपड़ी तुड़वाते हो।"

यह सुन कर पति बहुत गुस्सा हो गया और कुछ और करने की बजाय वह बकरे पर चिल्लाया — "छोटे बकरे छोटे बकरे पैसे दो।" पर बकरा तो वहाँ बिल्कुल शान्त खड़ा रहा उसने कुछ भी नहीं किया।

इससे पति को और बहुत गुस्सा आ गया उसने पास पड़ी एक डंडी उठायी और उससे उसे पीटना शुरू कर दिया। सबसे पहले उसने उसके सिर पर मारा तो बस वह तो उसकी उसी मार से नीचे गिर पड़ा और मर गया।

गरीब भाई इससे बहुत नाराज था। वह बोला "मैं हवा के पास फिर जाऊँगा और उससे कहूँगा कि वह मुझे यह कैसा बेवकूफ बना रहा है।" उसने अपना टोप उठाया और फिर से हवा के पास चल दिया। बेचारी पत्नी उसके जाने बाद में घर ठीक किया और पति को बुरा भला कहा।

सो गरीब आदमी हवा के पास तीसरी बार आया और उससे पूछा — "क्या तुम मुझे बताओगे कि तुम वाकई में हवा हो या नहीं?"

हवा ने कहा — "इसका क्या मतलब है? तुम्हें क्या हो गया है?"

आदमी बोला — "मैं बताता हूँ कि इसका क्या मतलब है। तुमने मेरे साथ ऐसा मजाक क्यों किया। मेरी हँसी क्यों उड़वायी।"

बूढ़े बाबा ने फर्श पर लेटे लेटे ही अपना दूसरा कान उसकी तरफ किया और उससे पूछा — "मैंने तुम्हारी हँसी उड़वायी? तुमने उन चीज़ों को ठीक से पकड़ कर क्यों नहीं रखा जो मैंने तुम्हें दीं? तुमने मेरी बात क्यों नहीं सुनी जब मैंने तुमसे कहा था कि रास्ते में तुम किसी सराय में नहीं जाना? बोलो।"

आदमी घमंड से बोला — "तुम किस सराय की बात कर रहे हो? और जहाँ तक थैले और बकरे का सवाल है उन्होंने तो मेरे साथ छल किया। तुम मुझे कुछ और दो।"

हवा बोला — "तुम्हें किसी चीज़ को देने का क्या फायदा। तुम उसे मुझसे ले कर सराय ले जाओगे और फिर सराय वाले उसे वैसी चीज़ से बदल देंगे। मेरे ड्रम में से बारह लोग निकलो और इस शराबी को कुछ सीख दो ताकि इसका गला सूखा रह सके और यह अपने से बड़ों का कहा मान सके।"

तुरन्त ही उसके ड्रम में से बारह लोग निकल पड़े और उस आदमी को बहुत ज़ोर ज़ोर से मारने लगे। तब उस आदमी को पता चला कि यह सब मजाक नहीं था।

उसने हवा से दया की भीख माँगी — "ओ बाबा मुझ पर दया करो। मुझे ज़िन्दा जाने दो। अब मैं तुम्हारे पास कभी नहीं आऊँगा

हालॉक मुझे अभी जजमैन्ट डे तक जीना है। अब जो तुम कहोगे मैं वही करूँगा।"

हवा चिल्लाया — "ओ मेरे लोगों ड्रम में जाओ। और अब ओ आदमी सुनो। तुम बारह आदमियों का यह ड्रम ले जा सकते हो और इसे ले कर उन शापित ज्यूज़ के पास जाओ और अगर वे तुमको तुम्हारा थैला और बकरा वापस न करें तो तुम्हें मालूम है कि तुम्हें क्या कहना है।"

आदमी ने हवा को उसकी सलाह के लिये धन्यवाद दिया और वहाँ से वापस चला गया। वह सीधा उसी सराय में वापस आया जिसमें वह पहले ही दो बार आ चुका था।

जब ज्यूज़ ने देखा कि इस बार उस आदमी के पास कुछ भी नहीं था तो उन्होंने उससे कहा — "ओ आदमी तुम यहाँ नहीं आओ क्योंकि आज हमारे पास शराब नहीं है।"

आदमी ने गुस्से में भर कर कहा — "तुम्हारी शराब किसे चाहिये?"

"तो फिर तुम यहाँ क्यों आये हो?"

"मैं तो अपनी वजह से आया हूँ।"

"अपनी वजह से आया हूँ इसका क्या मतलब है?"

आदमी गरजा — "इसका मतलब क्या है। मैं तुम्हें अभी समझाता हूँ। तुम मेरा थैला और बकरा वापस कर दो।"

"कौन सा थैला और कौन सा बकरा? तुम तो उन्हें खुद ही अपने साथ ले गये थे।"

"हाँ में ले तो गया था पर वे तो तुमने बदल दिये थे।"

"हमने बदल दिये थे – इसका क्या मतलब है। हम मजिस्ट्रेट के पास जायेंगे तब तुम हमसे इसके बारे में सुनोगे।"

आदमी बोला — "अगर तुम मजिस्ट्रेट के पास जाओगे तो तुम अपने बुरे समय को अपने आप ही बुलाओगे। इसलिये अच्छा तो यही है कि मेरी चीज़ें मुझे वापस कर दो।"

कह कर वह वहीं पास में पड़ी बैन्च पर बैठ गया। ज्यूज़ ने उसे उसके कन्धों से पकड़ा और चिल्ला कर उसे बाहर उठा कर फेंकने लगे — "ओ गधे। जा यहाँ से। अरे क्या कोई जानता है कि यह आदमी कहाँ से आया है? कोई शक नहीं कि यह कोई चोर उचक्का है।"

यह सुन कर आदमी से न रहा गया वह तुरन्त बोला — "मेरे ड्रम में से बारह लोग निकलो और इन शापित ज्यूज़ को ठीक से मारो ताकि इन्हें पता चले कि एक ईमानदार आदमी को सताने का क्या मतलब होता है।"

उसके यह कहते ही उसके ड्रम में से बारह लोग निकल आये और ज्यूज़ की ज़ोर ज़ोर से पिटायी करने लगे। तो ज्यूज़ चिल्लाने लगे — "ओह ओह। प्यारे आदमी। हम तुम्हें वह सब दे देंगे जो तुम चाहते हो कम से कम तुम हमें ज़िन्दा तो छोड़ दो।"

आदमी बोला — "ठीक है पर अगली बार से ध्यान रखना कि किसी भले आदमी को धोखा नहीं देना।"

फिर उसने अपने लोगों को कहा — "ओ मेरे बारह लोगों ड्रम में वापस जाओ।" तुरन्त ही उसके वे लोग ज्यूज़ को ज़िन्दे से ज़्यादा मरा हुआ छोड़ कर ड्रम के अन्दर चले गये। उसके बाद उन्होंने उसे उसका थैला और बकरा दोनों वापस कर दिये।

आदमी भी अपनी दोनों चीज़ें ले कर घर वापस चल दिया। जब वह उन्हें ले कर घर वापस पहुँचा तो उसकी पत्नी और बच्चों ने उसे आता हुआ देखा तो माँ बोली — "तुम्हारे पिता जी थैले और बकरे के साथ वापस आ रहे हैं। अब हम क्या करें। हमने तो इन दोनों के साथ बड़ा बुरा समय बिताया है। हमारे पास तो कुछ भी नहीं बचा है। भगवान हम गरीबों की रक्षा करे। बच्चों तुम जा कर हर चीज़ छिपा दो।"

सो बच्चों ने सब कुछ छिपा कर रख दिया पर तभी पति ने दरवाजे पर आवाज लगायी "दरवाजा खोलो।"

पत्नी ने फिर कहा — "दरवाजा तुम अपने आप खोल लो।"

पति ने फिर से दरवाजा खोलने के लिये कहा पर उन्होंने उस पर कोई ध्यान नहीं दिया। आदमी को बड़ा आश्चर्य हुआ। अब यह मजाक काफी दूर चला गया था सो उसने अपने बारह लोगों को आवाज दी "ड्रम में से निकलो और मेरी पत्नी को सिखाओ कि पति का आदर कैसे किया जाता है।"

सो 12 लोग ड्रम में से निकले और पत्नी को पति के पैरों में लिटा दिया और उसे बहुत मारा। पत्नी चिल्लायी — “ओ प्रिय मुझे इतना मत मारो। मैं जब तक मरूँगी तब तक तुमसे कभी गुस्सा नहीं होऊँगी। मैं वही करूँगी जो तुम कहोगे। बस मुझे पीटो नहीं।”

पति बोला — “इसका मतलब यह है कि मैंने तुमको तरीका सिखा दिया है। ओ बारह लोगों ड्रम के अन्दर जाओ।” और वे बारह लोग तुरन्त ही ड्रम के अन्दर जा छिपे। उसकी पत्नी अब ज़िन्दा कम और मरी हुई ज़्यादा लग रही थी।

तब पति ने कहा — “अब एक कपड़ा फर्श पर बिछाओ।”

पत्नी एक मक्खी की तरह से बिना आवाज किये वहाँ से चली गयी और बिना कुछ कहे एक कपड़ा फर्श पर बिछा दिया। तब पति ने कहा — “ओ छोटे बकरे ओ छोटे बकरे पैसे दो।” और बकरे ने पैसों के ढेर के ढेर लगा दिये।

पिता बोला — “बच्चों जितना चाहे उतना पैसा बटोर लो। और प्रिये तुम भी जितना चाहे उतना ले लो।” उन्हें दोबारा कहने की जरूरत नहीं पड़ी।

उसके बाद आदमी ने खूँटी पर टँगे थैले से कहा — “थैले थैले मुझे खाने के लिये खाना और शराब चाहिये।” फिर उसने उसे पकड़ कर हिलाया तो तुरन्त ही उसकी मेज पर बहुत सारे किस्म का माँस और शराब लग गयी।

उसने अपनी पत्नी और बच्चों से कहा — “अब तुम जितना चाहो उतना खाना खाओ मेरे प्यारे बच्चो और प्रिये तुम भी। अब हमें खाने पीने और पैसों की कभी कोई कमी नहीं होगी। और हमें अब इनके लिये कोई काम भी नहीं करना पड़ेगा।”

सो अब गरीब भाई और उसकी पत्नी बहुत खुश थे हवा को धन्यवाद देते थकते नहीं थे। उनके पास ये थैला ओर बकरा आये बहुत दिन नहीं हुए थे कि वे लोग बहुत अमीर हो गये।

एक दिन पति ने पत्नी से कहा — “प्रिये मैं तुमसे एक बात कहना चाहता हूँ।”

“क्या।”

“मैं अपने भाई को अपने घर बुलाना वाहता हू और यह सब उसे दिखाना चाहता हूँ।”

पत्नी बोली — “बहुत अच्छा है। बुलाओ उसे। पर क्या तुम्हें मालूम है कि वह आयेगा।”

पति ने पूछा — “वह क्यों नहीं आयेगा। भगवान का धन्यवाद है कि अब हमारे पास सब कुछ है़ वह हमारे पास जब नहीं आया था जब हम गरीब थे और वह अमीर था। क्योंकि उस समय उसे यह कहने में शर्म आती थी कि मैं उसका भाई थे पर अब तो उसके पास हमसे ज़्यादा नहीं है।”

सो उन्होंने तैयारियाँ की और गरीब भाई अपने अमीर भाई को अपने घर न्यौता देने गया। गरीब भाई अपने अमीर भाई के पास

पहुँचा और बोला — "हलो भैया कैसे हो। भगवान आपकी सहायता करे।"

इस समय अमीर भाई अपनी गेहूँ की बालियों में से गेहूँ निकाल रहा था। उसने सिर उठा कर देखा तो अपने भाई को देख कर आश्चर्यचकित हो गया। वह हँस कर बोला — "आओ तुम्हारा धन्यवाद है। कैसे हो। बैठो और बताओ कैसे आना हुआ।"

गरीब भाई बोला — "धन्यवाद मेरे भाई। मैं बैठूँगा नहीं। मैं तुम्हें और तुम्हारी पत्नी को अपने घर न्यौता देने आया हूँ।"

अमीर भाई बोला — "पर कैसे?"

गरीब भाई बोला — "मेरी पत्नी ने तुमसे विनती की है और मैं भी तुमसे विनती करता हूँ कि कल तुम अपनी पत्नी के साथ हमारे घर खाना खाने आओ।"

अमीर भाई बोला — "हम जरूर आयेंगे चाहे तुम्हारे खाने में कुछ भी हो।"

सो अगले दिन अमीर भाई अपनी पत्नी के साथ अपने गरीब भाई के घर खाना खाने के लिये गया। उनको दूर से ही लगा कि उनका वह गरीब भाई अब अमीर हो गया है।

उधर गरीब भाई ने जब अपने अमीर भाई को अपने घर आते देखा तो वह बहुत खुश हुआ। उसकी जबान फिसल गयी और वह उसे अपने घर की हर चीज़ जो कुछ भी उसके पास था दिखाने लगा।

अमीर भाई तो यह देख कर आश्चर्य में भर गया कि उसका गरीब भाई तो बहुत अच्छा हो रहा था। उससे रहा नहीं गया और उसने अपने गरीब भाई से पूछ ही लिया कि उसके पास यह सब आया कहाँ से।

गरीब भाई बोला — "बस यह मत पूछो। मैं तो अभी तुम्हें कुछ और भी दिखाने वाला हूँ।" कह कर वह उसे अपने ताँबे के सिक्कों के पास ले गया और बोला "यह मेरे ओट्स[10] हैं।"

फिर वह उसे चाँदी के सिक्कों के पास ले गया और उससे कहा "यह मेरा बाजरा है जिसे मैं पीट पीट कर निकालता हूँ।" फिर वह उसे अपने सोने के सिक्कों के पास ले गया और बोला "यह मेरा सबसे अच्छा गेहूँ है।"

यह सुन कर तो अमीर भाई ने एक बार या दो बार नहीं बल्कि कई बार अपना सिर हिलाया और ये सब चीज़ें देख कर उनकी बहुत प्रशंसा की। वह बोला — "मेरे भाई। इतना सब तुमने कहाँ से पाया।"

गरीब भाई बोला — "अभी तो तुम्हें दिखाने के लिये मेरे पास और भी कुछ है। तुम यहाँ इस कुर्सी पर बैठो मैं तुम्हें सब कुछ दिखाता हूँ और उसके बारे में बताता हूँ।"

---

[10] Oats – a kind of grain

फिर उसने उन्हें बिठाया और अपना थैला खूँटी पर टाँग दिया और बोला — "थैले थैले मुझे खाने के लिये खाना और शराब चाहिये।" और तुरन्त ही उसकी मेज कई तरह के खानों और शराबों से भर गयी। उन सबने मिल कर खूब खाया खूब खाया और खूब पिया।

जब उन सबने पेट भर कर खा लिया और पी लिया गरीब भाई ने अपने बेटे से छोटे बकरे को लाने के लिये कहा। उसका बेटा बकरे को ले आया। अमीर भाई तो उसे देखते ही आश्चर्य में पड़ गया और सोचने लगा कि उसका गरीब भाई इस समय उसका क्या करने वाला है।

गरीब भाई बोला — "ओ छोटे बकरे मुझे पैसे दो।"

और छोटे बकरे ने पैसे देने शुरू कर दिये और फर्श पर ढेर के ढेर लग गये। गरीब भाई अपने अमीर भाई और उसकी पत्नी से कहा "उठा लो भैया उठा लो भाभी।" उन्होंने उसमें से जितना वे उठा सकते थे उठा लिये और उसकी बड़ी प्रशंसा की।

अमीर भाई ने कहा — "तुम्हारे पास तो बड़ी अच्छी अच्छी चीज़ें हैं। अगर मेरे पास भी ऐसा कुछ होता तो मुझे भी किसी चीज़ की कभी कोई कमी नहीं होती।"

फिर कुछ देर तक सोचने के बाद वह गरीब भाई से बोला — "तुम मुझे इन्हें बेच दो।

गरीब भाई बोला — "नहीं मैं इन्हें नहीं बेचूँगा।"

कुछ समय सोचने के बाद अमीर भाई ने फिर कहा — "मैं तुम्हें एक दर्जन बैल एक हल एक भूसा ले जाने वाली गाड़ी और एक भूसे वाला कॉटा दूँगा। इसके अलावा बोने के लिये बहुत सारा अनाज दूँगा। इस तरह तुम्हारे पास बहुत कुछ होगा। पर तुम मुझे बकरा और थैला दे दो।"

आखिरकार दोनों तैयार हो गये और गरीब भाई ने अपने अमीर भाई को उस सबके बदले में उसे अपना थैला और बकरा दे दिया। अब गरीब भाई रोज हल चलाने जाता पर वह अपने बैलों को न तो खाना खिला पाता और न पानी पिला पाता। एक दो दिन में उसके बैल खाना पानी के बिना जमीन पर लेट गये। उसने उन्हें उठाने की बहुत कोशिश की पर वे नहीं उठे।

फिर उसने उन्हें डंडे से मारा भी पर उनके मुँह से तो आवाज भी नहीं निकली। आदमी को आश्चर्य हुआ कि वे तो अब किसी काम के नहीं थे। वह तुरन्त ही अपने अमीर भाई के पास भागा गया साथ में वह अपना ड्रम ले जाना नहीं भूला।

जब गरीब भाई अमीर भाई के घर आया वह सीधा दरवाजे में से अन्दर आ गया और बोला — "हलो भाई। तुम तन्दुरुस्त रहो।"

अमीर भाई भी बोला — "तुम भी तन्दुरुस्त रहो भाई। तुम यहाँ क्यों आये हो? क्या तुम्हारा हल टूट गया है या फिर बैल मर गये हैं? हो सकता है कि तुमने उन्हें गन्दा पानी पिला दिया हो जिससे उनका खून जम गया हो और उन्हें सूजन आ गयी हो।"

गरीब भाई चिल्लाया — “तुम उन्हें ले लो मुझे नहीं मालूम कि तुम क्या कह रहे हो। मुझे तो बस इतना मालूम है कि मैंने उन्हें कई बार मारा जब तक मेरी बॉहें दर्द नहीं करने लगीं पर वे नहीं उठे। उन्होंने तो कोई आवाज भी नहीं निकाली। मैं उन पर इतना गुस्सा हुआ कि मैंने उन पर थूका भी। सो अब मैं तुम्हें बताने आ गया।

तुम मेरा थैला और बकरा मुझे वापस दे दो और अपने बैल मुझसे वापस ले लो क्योंकि वे मेरी सुनते ही नहीं।”

अमीर भाई चिल्लाया — “क्या? क्या मैं उन्हें वापस लूँगा? क्या मैंने वह सौदा एक दिन के लिये किया था? नहीं, मैंने तो वे चीज़ें तुम्हें एक बार और हमेशा के लिये दे दी थीं। मुझे कोई शक नहीं है कि तुमने उन्हें न खाना दिया और न पानी इसी लिये वे मर गये।”

गरीब भाई बोला — “मुझे नहीं मालूम था कि बैलों को खाना पानी भी देना होता है।”

अमीर भाई बोला — “क्या तुम्हें यह नहीं मालूम कि बैल भी खाना खाते हैं और पानी पीते हैं? जाओ तुम मेरे मकान से बाहर निकल जाओ और यहॉ फिर कभी नहीं आना नहीं तो मैं तुम्हें फॉसी चढ़ा दूँगा।”

गरीब भाई बोला — “वाह हम लोग कितने बड़े भले आदमी हैं। बस तुम मेरी चीज़ें मुझे वापस कर दो फिर मैं चला जाऊँगा।”

अमीर भाई बोला — "अच्छा हो अब तुम यहाँ बिल्कुल नहीं रुको। अब तुम अपने पैर हिलाओ और यहाँ से चलते बनो नहीं तो मैं तुम्हें बहुत मार मारूँगा।"

गरीब भाई बोला — "ऐसा मत बोलो बस तुम मेरा थैला और बकरा दे दो और मैं चला जाऊँगा।"

इस पर अमीर आदमी का गुस्सा बहुत बढ़ गया और वह आपे से बाहर हो गया। उसने अपनी पत्नी और बच्चों से कहा — "तुम लोग ऐसे खड़े खड़े क्या घूर रहे हो। क्या तुम इस आदमी को घर से बाहर निकालने में मेरी सहायता करने के लिये नहीं आ सकते?"

अब यह तो मजाक की बात नहीं थी सो गरीब भाई ने अपने बारह लोगों को बुलाया और उनसे कहा — "मेरे ड्रम में से बारह लोग निकलो और मेरे इस भाई और इसके परिवार को ठीक से मारो ताकि अगली बार ये किसी गरीब आदमी को अपने घर में से बाहर निकालने से पहले दो बार सोच सकें।"

यह सुन कर इसके ड्रम में से बारह आदमी निकल आये और उसके भाई के परिवार को मारने लगे और इन्हें मारते रहे जब तक कि अमीर भाई यह नहीं चिल्लाया कि "मुझे छोड़ दो। जो तुम्हें चाहिये वह तुम ले लो बस तुम मुझे ज़िन्दा छोड़ दो।"

इस पर गरीब भाई ने उन्हें अपने ड्रम के अन्दर भेज दिया। उसने अपने भाई से अपना थैला और बकरा लिया और अपने घर चला गया। इस घटना के बाद वे आराम से खुशी खुशी रहने लगे।

अब वे न तो गेहूँ बोते न बाजरा फिर भी उनके पास खाने के लिये बहुत कुछ था।

मैं भी वहाँ था शराब और बीयर पीने के लिये। जो मेरे मुँह में नहीं समाया वह मेरी दाढ़ी से नीचे बहने लगा। तुम्हारे लिये यह एक कहानी होगी पर मेरे लिये तो यह ओवन में पकी केक थी और अगर यह केक मुझे भी खाने के लिये मिली तो यह तुम भी खा सकते थे।

3 खिड़की पर आवाज़ें[11]

एक बार एक पतझड़ में एक कुलीन आदमी शिकार के लिये गया। उसके साथ बहुत सारे शिकारी भी थे। सारा दिन वे लोग शिकार करते रहे करते रहे पर शाम तक भी उन्हें कोई शिकार नहीं मिला। आखिर रात हो गयी। अब बहुत ठंडा हो गया था बहुत ज़ोर से बारिश भी पड़ने लगी थी। कुलीन आदमी बुरी तरह से भीग गया था। ठंड से उसके दाँत किटकिटाने लगे थे।

वह हाथ मलते हुए बोला — "काश इस समय कोई गर्म मकान होता ठहरने के लिये, सफेद बिस्तर होता सोने के लिये, खट्टा क्वास[12] होती पीने के लिये तो कितना अच्छा होता। बस किसी बात की शिकायत ही नहीं रहती बल्कि हम लोग सारी रात कहानियाँ कहते सुनते।"

तभी जंगल की गहराइयों में एक रोशनी चमकी सो उसे देख कर सब उधर की तरफ चल दिये। लो वहाँ देखा तो वहाँ तो एक मकान खड़ा था। वे उस मकान में चले गये। वहाँ जा कर देखा तो एक मेज पर रोटी और खट्टी क्वास रखी हुई थी। मकान भी गर्म था और वहाँ बिछा बिस्तर भी सफेद था। वह सब कुछ वहाँ था जो उस कुलीन आदमी ने चाहा था।

---

[11] The Voices at the Window. (Tale No 3)
[12] Sour Kwas – a kind of drink in Ukraine.

कुलीन आदमी के पीछे पीछे सब शिकारी भी अन्दर चले गये। भगवान की प्रार्थना की, खाना खाया और सोने के लिये लेट गये। सब लोग तो सो गये पर उनमें से एक को नींद नहीं आयी।

आधी रात के करीब उसने एक अजीब सी आवाज सुनी। फिर खिड़की पर कोई आया और उसे एक आवाज सुनायी दी – "ओ कुत्ते के पिल्ले। तूने कहा था कि "अगर हमारे पास एक गर्म मकान होता, एक सफेद बिस्तर होता, मुलायम रोटी होती और खट्टी क्वास होती तो हमें कोई शिकायत नहीं होती बल्कि सारी रात हम कहानियॉ कहते सुनते बिताते।"

पर तू तो अपना वायदा ही भूल गया जबकि तेरे घर जाने के रास्ते में ही तुझे यह सब मिल गया। पर अब जब तू अपने घर जायेगा तो रास्ते में तुझे एक सेब का पेड़ मिलेगा जिस पर बहुत सारे सेब होंगे।

वहॉ तेरी उस सेब को खाने की इच्छा होगी। तू उस सेब को खायेगा तो तू फट जायेगा। और अगर तेरे शिकारियों में से किसी एक ने भी इसे सुना और तुझसे कहा तो वह घुटनों तक पत्थर का बन जायेगा।"

शिकारी ने यह सुना और सोचा "उफ़। यह मेरे साथ क्या हो रहा है।"

जब मुर्गा दूसरी बार बोला तो खिड़की पर कोई और आया और बोला – "ओ कुत्ते के पिल्ले। तूने कहा था "अगर हमारे पास

एक गर्म मकान होता, एक सफेद बिस्तर होता, मुलायम रोटी होती और खट्टी क्वास होती तो हमें कोई शिकायत नहीं होती बल्कि सारी रात हम कहानियाँ कहते सुनते बिताते।" पर तू तो अपना वायदा ही भूल गया।

अब जबकि तू अपने घर जायेगा तो रास्ते में सड़क के किनारे तुझे पानी का एक स्रोत मिलेगा। वहाँ तेरी पानी पीने की इच्छा होगी और तू वहाँ पानी पियेगा तो तू फट जायेगा। पर अगर तेरे इन शिकारियों में से कोई इस बात को सुन लेगा और तुझे बता देगा तो वह कमर तक पत्थर का हो जायेगा।"

शिकारी ने यह सुना और सोचा "उफ़। यह मेरे साथ क्या हो रहा है।"

मुर्गे की तीसरी बाँग पर उसने खिड़की से फिर कुछ सुना। उसने कहा "ओ कुत्ते के पिल्ले। तूने कहा था "अगर हमारे पास एक गर्म मकान होता, एक सफेद बिस्तर होता, मुलायम रोटी होती और खट्टी क्वास होती तो हमें कोई शिकायत नहीं होती बल्कि सारी रात हम कहानियाँ कहते सुनते बिताते।"

पर तू तो अपना वायदा ही भूल गया जबकि तेरे घर जाने के रास्ते में ही तुझे यह सब मिल गया। पर अब जबकि तू अपने घर जायेगा तो रास्ते में तुझे पंखों का एक बिस्तर मिलेगा जिस पर तुझे सोने की इच्छा होगी। तू उस पर सोयेगा और जैसे ही तू उस पर लेटेगा तू फट जायेगा। पर अगर तेरे इन शिकारियों में से कोई इस

बात को सुन लेगा और तुझे बता देगा तो वह गले तक पत्थर का हो जायेगा।"

शिकारी ने यह सुना और अपने साथियों को उठाया और उनसे कहा कि "उठो। अब यहाँ से चलने का समय हो गया।"

कुलीन आदमी बोला — "हाँ चलो अब चलते हैं।"

और वे सब वहाँ से चल दिये। वे अभी बहुत दूर नहीं गये थे कि उन्हें एक सेब का पेड़ मिला जिस पर बहुत सारे सेब लदे हुए थे। वे सेब इतने सुन्दर थे कि उन्हें शब्दों में नहीं कहा जा सकता। उनको देख कर कुलीन आदमी का मन उन्हें खाने का कर आया। उसको लगा कि या तो वह वे सेब खायेगा नहीं तो मर जायेगा।

पर उस जागे हुए शिकारी ने दौड़ कर उस सेब के पेड़ को काट दिया। जैसे ही उसने वह पेड़ काटा वह पूरा पेड़ राख हो गया। शिकारी ऐसा कर के आगे की तरफ भाग गया और छिप गया।

वे कुछ दूर आगे गये तो रास्ते में सड़क के किनारे उन्हें मीठे पानी का एक स्रोत दिखायी दिया। वह पानी इतना शुद्ध और साफ था कि कुलीन आदमी का मन किया कि वह उस पानी को पी ले नहीं तो वह मर जायेगा।

पर शिकारी तेज़ी से दौड़ा और अपनी तलवार से उस पानी को काट दिया। उसके पानी काटते ही वह पानी खून में बदल गया। कुलीन आदमी बोला — "अरे इसकी बजाय तो तूने मुझे ही काट

दिया होता।" पर तब तक तो शिकारी दौड़ कर आगे निकल गया और छिप गया।

वे लोग और आगे बढ़े तो रास्ते में उन्हें एक सोने का पलंग दिखायी दिया। उस पर सारे में सफेद पंख बिछे हुए थे।

वे पंख इतने सफेद कोमल थे कि उसे देख कर कुलीन आदमी का मन किया कि वह उस पर लेट जाये पर जैसे ही वह उस पर बैठने वाला था कि पीछे से उस शिकारी ने उस पलंग पर अपनी तलवार मार कर उसे तोड़ दिया। टूटते ही वह पलंग कोयले में बदल गया।

कुलीन आदमी चिल्लाया "अरे तूने इसकी बजाय मुझे ही मार दिया होता।" पर वह शिकारी दौड़ कर आगे निकल गया और छिप गया।

जब वे सब घर पहुँचे तो कुलीन आदमी ने उस शिकारी को अपने सामने लाने के लिये कहा। जब वह सामने आ गया तो कुलीन आदमी चिल्लाया — "ओ शैतान के बच्चे। यह तूने क्या किया। मुझे तुझे मार देना चाहिये।"

पर शिकारी बोला — "इस ऑगन में किसी ऐसी घोड़ी को लाने के लिये कहिये जो किसी काम की न हो।"

सो एक ऐसी घोड़ी को लाया गया और वह शिकारी उस पर बैठ गया और बोला — "मालिक। जब मैं रात को लेट गया तो आधी रात को कोई चीज़ खिड़की पर आयी और बोली "ओ कुत्ते

के पिल्ले। तूने कहा था कि "अगर हमारे पास एक गर्म मकान होता, एक सफेद बिस्तर होता, मुलायम रोटी होती और खट्टी क्वास होती तो हमें कोई शिकायत नहीं होती बल्कि सारी रात हम कहानियाँ कहते सुनते बिताते।"

पर तू तो अपना वायदा ही भूल गया जबकि तेरे घर जाने के रास्ते में ही तुझे यह सब मिल गया। पर अब जब तू अपने घर जायेगा तो रास्ते में तुझे एक सेब का पेड़ मिलेगा जिस पर बहुत सारे सेब होंगे।

वहाँ तेरी उस सेब को खाने की इच्छा होगी। तू उस सेब को खायेगा तो तू फट जायेगा। और अगर तेरे शिकारियों में से किसी एक ने भी इसे सुना और तुझसे कहा तो वह घुटनों तक पत्थर का बन जायेगा।"

शिकारी जब यह बात यहाँ तक कह चुका तो वह घोड़ा अपने घुटनों तक पत्थर का बन चुका था।

इसके बाद शिकारी ने फिर से बोलना शुरू किया — "मुर्गे की दूसरी बाँग के साथ मैंने फिर एक आवाज सुनी। उसने भी यही कहा था जो पहली वाली आवाज ने कहा था और भविष्यवाणी की कि रास्ते में सड़क के किनारे उन्हें मीठे पानी का एक स्रोत दिखायी देगा।

उसका पानी इतना शुद्ध और साफ होगा कि कुलीन आदमी की वहाँ पानी पीने की इच्छा होगी पर अगर वह वहाँ पानी पियेगा तो

वह फट जायेगा। पर अगर तेरे इन शिकारियों में से कोई इस बात को सुन लेगा और तुझे बता देगा तो वह कमर तक पत्थर का हो जायेगा।"

शिकारी जब यह बात यहाँ तक कह चुका तो उसका घोड़ा अपने घुटनों तक पत्थर का बन चुका था।

शिकारी ने फिर से बोलना शुरू किया। मुर्गे की दूसरी बाँग पर कोई और खिड़की पर आया और उसने भी वही कहा जो पहली दो आवाजों ने कहा था और फिर उसने भविष्यवाणी की अब जब तू अपने घर जायेगा तो रास्ते में सड़क के किनारे तुझे पानी का एक स्रोत मिलेगा।

वहाँ तेरी पानी पीने की इच्छा होगी और तू वहाँ पानी पियेगा तो तू फट जायेगा। पर अगर तेरे इन शिकारियों में से कोई इस बात को सुन लेगा और तुझे बता देगा तो वह कमर तक पत्थर का हो जायेगा।"

शिकारी जब यह बात यहाँ तक कह चुका तो उसका घोड़ा अपनी कमर तक पत्थर का बन चुका था।

शिकारी ने फिर से बोलना शुरू किया। मुर्गे की तीसरी बाँग पर कोई और खिड़की पर आया और उसने भी वही कहा जो पहली आवाजों ने कहा था और फिर उसने भविष्यवाणी की कि रास्ते में तुझे एक पलंग मिलेगा जिस पर सफेद पंख बिछे होंगे और वहाँ पहुँच कर तेरी उस पर सोने की इच्छा होगी।

पर अगर तू उस पलंग पर लेटने की कोशिश करेगा तो तू फट जायेगा। पर अगर तेरे इन शिकारियों में से कोई इस बात को सुन लेगा और तुझे बता देगा तो वह गर्दन तक पत्थर का हो जायेगा।"

शिकारी अपनी बात पूरी करने के साथ ही घोड़े पर से कूद चुका था। उसके बाद ही उसका घोड़ा अपनी गर्दन तक पत्थर का बन चुका था।

"ओ मेरे मालिक। इसी लिये मैंने वह किया जो मुझे करना चाहिये था। मैं आपसे विनती करता हूँ कि आप मुझे इसके लिये माफ कर दें।"

4 छोटे ज़ार नोविश्नी, झूठी बहिन और वफादार जानवरों की कहानी[13]

एक बार की बात है कि किसी साम्राज्य के किसी राज्य में एक ज़ार रहता था। उसके कोई बच्चा नहीं था। एक दिन वह खाना खरीदने के लिये बाजार गया। हालाँकि वह एक ज़ार जरूर था पर उसका स्वभाव बहुत ही नीच किस्म का था। वह अपनी खरीदारी अपने आप ही करता था। वही उसने यहाँ भी किया।

उसने थोड़ी सा नमकीन मछली ली और घर चला गया। जब वह रास्ते में था तो उसे बहुत ज़ोर की प्यास लगी तो वह एक पहाड़ की तरफ मुड़ गया जहाँ वह जानता था, जैसे कि उससे पहले उसका पिता जानता था, कि वहाँ एक साफ मीठे पानी का स्रोत है। वह इतना प्यासा था कि वह बस वहाँ बिना अपने ऊपर क्रास बनाये पानी पीने के लिये लेट सा गया।[14]

बस शैतान उसके ऊपर बैठ गया और उसने उसे उसकी दाढ़ी से पकड़ लिया। ज़ार बेचारा डर गया और चिल्लाया "मुझे जाने दो। मुझे जाने दो।" पर शैतान ने उसे और सख्ती से पकड़ लिया और बोला "मैं तुझे बिल्कुल नहीं जाने दूँगा।"

---

[13] Story of Little Tzar, the False Sister and the Faithful Beasts. (Tale No 4)

[14] It seems that when one wants to drink water from a spring he must make cross on his/her chest first then he should drink water from it, otherwise some bad soul or Satan may control him.

तो ज़ार ने बहुत ही नर्म शब्दों में उससे कहा कि "तुम मुझसे कुछ भी माँग लो पर मुझे छोड़ दो।"

शैतान बोला — "ठीक है तब तुम मुझे ऐसा कुछ दे दो जो तुम्हारे घर में हो तब मैं तुम्हें जाने दूँगा।"

ज़ार बोला — "अच्छा मुझे सोचने दो कि मेरे पास क्या क्या है। हाँ मुझे मालूम है कि मेरे घर में मेरे पास आठ घोड़े हैं जैसे तुमने पहले कभी कहीं नहीं देखे होंगे। मैं अपने नौकर को उन्हें तुरन्त ही यहाँ इस स्रोत के पास लाने के लिये कह सकता हूँ। तुम उन्हें ले लो।"

शैतान बोला — "मैं उन्हें नहीं लूँगा।" और उसने ज़ार की दाढ़ी और कस कर पकड़ ली।

ज़ार फिर बोला — "ठीक है। तब सुनो। मेरे पास आठ बैल हैं जिन्होंने अभी तक मेरे लिये हल नहीं चलाया है या कहो कि एक दिन भी मेरे लिये काम नहीं किया है। मैं उन्हें यहाँ बुला लेता हूँ। मैं उन्हें एक बार फिर से आँख भर कर देख लूँगा। तब मैं उन्हें तुम्हारे साथ उन्हें चरने भेज दूँगा और फिर तुम उन्हें ले जाना।"

शैतान बोला — "नहीं मैं उनको भी नहीं लूँगा।"

इस तरह ज़ार एक एक कर के अपनी बहुत सारी बहुमूल्य चीज़ों के नाम गिनाता चला गया जो कुछ भी उसके पास था पर शैतान हर एक को मना करता चला गया और उसकी दाढ़ी को और ज़्यादा कस कर पकड़ता ही चला गया।

जब ज़ार ने देखा कि शैतान उससे उसके पास जो कुछ भी है उनमें से कुछ भी नहीं ले रहा है तो आखीर में उसने शैतान से कहा — "देखो। अब मेरे पास केवल एक पत्नी बची है जो इतनी सुन्दर है जैसी तुम्हें दुनियाँ भर में कहीं नहीं मिलेगी। तुम उसे ले लो और मुझे जाने दो।"

शैतान फिर बोला — "नहीं मैं उसे भी नहीं लूँगा।"

अब तो ज़ार बहुत उलझन में था। वह सोचने लगा — "अब मैं क्या करूँ यह तो किसी चीज़ को ले ही नहीं रहा। मैंने तो इसे अपनी प्यारी पत्नी भी इसे दे दी और यह उसे भी लेना नहीं चाहता।"

तब शैतान बोला — "वायदा करो कि जो कुछ भी तुम्हारे घर पर तुम्हारा इन्तजार कर रहा होगा वही तुम मुझे दे दोगे। और मैं तुम्हें जाने दूँगा।"

अपनी पत्नी के आगे ज़ार को और कुछ नहीं सूझा तो वह शैतान की इसी बात पर राजी हो गया और शैतान ने उसे छोड़ दिया।

पर जब ज़ार घर से दूर था तब ज़ार की पत्नी ने एक छोटे से "ज़ारेवको" और एक छोटी सी ज़ारेवना[15] को जन्म दिया था। वे दिनों से नहीं, यहाँ तक कि घंटों से भी नहीं बल्कि मिनटों से बड़े हो रहे थे। वे इतने प्यारे बच्चे थे जैसे पहले कभी किसी ने देखे नहीं।

---

[15] Tzarevko means Tzar's son and Tzarevna means Tzar's daughter

जब ज़ार घर आ रहा था तो उसकी पत्नी ने उसे दूर से आते देख लिया था तो बहुत खुशी खुशी वह अपने बच्चों को गोद में लिये हुए ज़ार से मिलने के लिये बाहर गयी। पर जैसे ही उसने अपने बच्चों को देखा तो वह तो रो पड़ा।

ज़ार की पत्नी बोली — "नहीं प्रिय नहीं। तुम ऐसे क्यों रोते हो? या फिर तुम यह सोच कर इतने खुश हो कि इतने अच्छे बच्चे तुम्हारे घर में पैदा हुए हैं इस बात की खुशी में तुम्हें आँसू के अलावा कोई शब्द ही नहीं मिले।"

ज़ार बोला — "नहीं प्रिये। जब मैं बाजार से घर वापस आ रहा था तो मुझे बहुत ज़ोर की प्यास लगी तो मैं एक पहाड़ की तरफ मुड़ गया जहाँ पानी था और जो जगह मेरे पिता और मुझे मालूम थी। मुझे कुछ ऐसा लगा कि वहाँ एक पानी का स्रोत है।

दूर से तो वह मुझे सूखा सा लगा पर पास जा कर देखा तो वहाँ तो बहुत पानी था। तो मैंने सोचा कि यहाँ पानी पी लिया जाये और मैं उसमें से पानी पीने के लिये झुक गया।

पर लो यह क्या। वहाँ मुझे एक शैतान ने मुझे मेरी दाढ़ी से पकड़ लिया और वह मुझे छोड़े नहीं। मैंने उससे बहुत विनती की पर उसने मुझे नहीं छोड़ा बल्कि और कस कर पकड़ लिया।

वह बोला — "तुम्हारे घर पर जो है वह तुम मुझे दो नहीं तो मैं तुम्हें कभी नहीं छोड़ूँगा।

मैंने उससे कहा "तुम घोड़े ले लो।"

उसने कहा "मुझे तुम्हारे घोड़े नहीं चाहिये।"

मैंने कहा "मेरे पास बैल हैं।"

तो उसने कहा "मुझे तुम्हारे बैल भी नहीं चाहिये।"

मैंने कहा "मेरी बहुत सुन्दर पत्नी है।"

उसने कहा "मुझे तुम्हारी पत्नी भी नहीं चाहिये।"

तब मैंने उससे कहा कि "जो कुछ भी मुझे घर पर मिलेगा मैं तुम्हें वह दे दूँगा। जब मैं यहाँ पहुँचा तो मुझे तो इस बात का अन्दाजा ही नहीं था कि भगवान ने मेरे ऊपर इस तरह कृपा की है। प्रिये इससे पहले कि वह यहाँ आ कर इन्हें ले जाये हम इन्हें दफ़ना दें।"

"नहीं नहीं प्रिय नहीं। इससे तो अच्छा है कि हम इन्हें कहीं छिपा देते हैं। हम अपनी झोंपड़ी[16] के पास में एक गड्ढा खोद लेते हैं हम इन्हें वहीं छिपा देंगे।"

सो उन्होंने एक गड्ढा खोदा और अपने बच्चों को वहाँ छिपा दिया। उन्होंने उनको रोटी और पानी भी वहीं दे दिया। फिर उन्होंने उसे ढक कर सपाट कर दिया और अपनी छोटी सी झोंपड़ी में आ गये।

इसी समय शैतान ने एक साँप का रूप रखा और उड़ता हुआ बच्चों की खोज में वहाँ तक आ पहुँचा। वह उनकी झोंपड़ी के चारों तरफ ऊपर नीचे उड़ता रहा। पर उसे कुछ दिखायी महीं दिया।

---

[16] In those days there were no mansions for the kings so they also used to live in huts.

आखिर वह ऍगीठी से चिल्ला कर बोला — "ऍगीठी ओ ऍगीठी। ज़ार ने अपने बच्चे कहाँ छिपा रखे हैं?"

ऍगीठी बोली — "ज़ार तो मेरा बहुत अच्छा मालिक रहा है। उसने मेरे अन्दर बहुत सारी लकड़ियाँ जलायी हुई हैं। मैं उसकी रक्षा करूँगी।"

जब उसे ऍगीठी से बच्चों का पता नहीं चला तो उसने भट्टी की झाड़ू से पूछा — "भट्टी की झाड़ू ओ भट्टी की झाड़ू। ज़ार ने अपने बच्चे कहाँ छिपा रखे हैं?"

भट्टी की झाड़ू बोली — "ज़ार मेरे लिये हमेशा ही एक अच्छा मालिक रहा है क्योंकि वह हमेशा ही मुझसे गर्म गर्म राख साफ करता रहा है। मैं तो उसी की तरफ हूँ।"

इस तरह से शैतान भट्टी की झाड़ू से भी बच्चों का कोई अता पता न निकलवा सका तो उसने कुल्हाड़ी से पूछा — "कुल्हाड़ी ओ कुल्हाड़ी। ज़ार ने अपने बच्चे कहाँ छिपा रखे हैं?"

कुल्हाड़ी बोली — "ज़ार तो मेरा हमेशा से ही बहुत अच्छा मालिक रहा है। वह मुझे हमेशा से अन्दर लेटने की जगह देता है इसलिये मैं उसे परेशान नहीं कर सकती।"

शैतान फिर एक बरमी[17] के पास गया और उससे पूछा — "बरमी ओ बरमी। बता तो ज़ार ने अपने बच्चे कहाँ छिपा रखे हैं?"

---

[17] Translated from the word "Gimlet". Gimlet is used to make a hole in the wall.

बरमी बोली — "ज़ार हमेशा से ही मेरे लिये एक बहुत अच्छा मालिक रहा है। वह मुझे छोटे छोटे छेद बनाने के काम में लाता है और फिर मुझे आराम करने देता है सो मैं भी उसे आराम करने दूँगी।"

साँप शैतान बरमी से बोला — "सो ज़ार तुम्हारा अच्छा मालिक है तो मैं तो केवल इतना कह सकता हूँ कि अगर वह एक अच्छा मालिक है, जैसा कि तुम कहती हो, तो वह तुम्हारे सिर पर हथौड़े क्यों मारता है?"

बरमी बोली — "यह तो तुम ठीक कहते हो। यह तो मैंने कभी सोचा ही नहीं। तुम मुझे ले सकते हो अगर तुम चाहो तो। मुझे तुम इस झोंपड़ी की चोटी से खींच लो और फिर दलदल जमीन में जहाँ मैं गिर पड़ूँ वहाँ तुम खोदो।"

शैतान ने ऐसा ही किया। उसने वहीं खोदना शुरू किया जहाँ वह बरमी गिर पड़ी थी और वहाँ से बच्चों को निकाल लिया। वे तो बहुत जल्दी जल्दी बढ़ रहे थे सो अब वे बच्चे नहीं थे। अब तो वे शाही नौजवान और सुन्दर राजकुमारी बन गये थे। साँप ने उन्हें उठा लिया और अपने साथ ले गया।

पर वे बड़े थे और भारी थे सो साँप उन्हें ले जाते ले जाते थक गया और एक जगह आराम करने के लिये लेट गया। लेटते ही वह सो गया। ज़ारेवना उसके सिर पर बैठ गयी और ज़ारेवको ज़ारेवना के पास बैठ गया।

तभी एक घोड़ा दौड़ता हुआ वहॉ आया। वह दौड़ता हुआ सीधा उन्हीं के पास आया और बोला — “हलो छोटे ज़ार नोविश्नी। क्या तुम यहॉ अपनी इच्छा से हो या फिर अपनी इच्छा के विरुद्ध हो?”

छोटा ज़ार नोविश्नी बोला — “हम लोग यहॉ अपनी इच्छा के विरुद्ध हैं अपनी इच्छा से नहीं।”

घोड़ा बोला — “तब तुम दोनों मेरी पीठ पर बैठ जाओ।”

सो वे दोनों उस घोड़े की पीठ पर बैठ गये और घोड़ा उन दोनों को ले कर कुलॉचे मारता हुआ दौड़ गया क्योंकि सॉप तो इस सारे समय सोता ही रहा। घोड़ा उन्हें बहुत दूर तक ले गया।

इस बीच सॉप की ऑख खुल गयी। उसने अपने चारों तरफ देखा तो उसे कोई दिखायी नहीं दिया। फिर वह अपनी उस जगह से बाहर निकला जहॉ वह सो रहा था। बाहर निकल कर उसे दिखायी दिया कि वे लोग तो दूर जा रहे थे सो वह उनके पीछे चल दिया।

उसने उन्हें जल्दी ही पकड़ लिया। सॉप को आते देख कर छोटे ज़ार नोविश्नी ने अपने घोड़े से कहा — “ओ घोड़े। अभी कितना गर्म है। अब यह तुम्हारे और हमारे हाथ में है।”

घोड़े की पूॅछ में वास्तव में एक अंगारा लग गया था क्योंकि सॉप उसके पीछे था और बहुत ज़ोर से आग की तरह से जल रहा था।

घोड़े ने देखा कि अब वह और कुछ नहीं कर सकता सो उसने एक आखिरी अंगड़ाई ली और मर गया। अब राजकुमार और राजकुमारी अकेले रह गये थे।

सॉप उनके पास आते हुए बोला — "अब तुम क्या सुन रहे हो? क्या तुम्हें पता नहीं कि मैं ही तुम्हारा पिता और ज़ार हूँ और तुमको ले जाने का अधिकार भी केवल मेरा ही है?"

"ओह आदरणीय पिता जी। अब हम किसी और की बिल्कुल नहीं सुनेंगे।"

सॉप बोला — "ठीक है। इस बार मैं तुम्हें माफ करता हूँ पर आगे से तुम ऐसा कभी नहीं करना।"

सॉप उनको ले कर फिर से उड़ गया। पर वह फिर से थक गया तो उसने उन्हें फिर से नीचे उतार दिया और आराम करने के लिये लेट गया और सो गया। ज़ारेवना उसके सिर के ऊपर बैठ गयी और ज़ारेवको उसके पास ही बैठ गया।

कुछ ही देर में एक भौंरा उड़ता हुआ उनके पास आया और छोटे ज़ार से बोला — "हलो छोटे ज़ार नोविश्नी कैसे हो?"

छोटा ज़ार बोला — "हलो छोटे भौंरे। तुम कैसे हो?"

भौंरे ने पूछा — "हलो छोटे ज़ार नोविश्नी। क्या तुम यहॉ अपनी इच्छा से हो या फिर अपनी इच्छा के विरुद्ध हो?"

छोटा ज़ार नोविश्नी बोला — "हम लोग यहॉ अपनी इच्छा के विरुद्ध हैं अपनी इच्छा से नहीं जैसा कि तुम देख सकते हो।"

भौंरा बोला — "तब तुम दोनों मेरी पीठ पर बैठ जाओ मैं तुम्हें यहाँ से ले चलता हूँ।"

"लेकिन प्यारे भौंरे। जब एक घोड़ा हमारी जान नहीं बचा सका तो तुम कैसे बचा पाओगे।"

भौंरा बोला — "मैं नहीं जानता जब तक कि मैं तुम्हें यहाँ से ले न जाऊँ। अगर मैं तुम्हें बचा नहीं सका तो मैं तुम्हें नीचे गिरा दूँगा।"

छोटा ज़ार बोला — "ठीक है फिर हम कोशिश कर के देखते हैं। क्योंकि हम दोनों को तो मरना ही है पर तुम शायद हमें किसी तरह से बचा सको।" सो वे एक दूसरे के गले मिले और भौंरे पर बैठ गये और भौंरा उनको उड़ा कर ले गया।

इधर जब साँप की आँख खुली तो उसे वहाँ कोई दिखायी नहीं दिया। तब वह वहाँ से बाहर निकला जहाँ वह सो रहा था। बाहर निकलने पर उसने देखा कि वे लोग दूर जा रहे थे। उन्हें इतनी दूर जाते देख कर वह अपनी पूरी गति से उनके पीछे भागा।

छोटा ज़ार नोविश्नी भौंरे से बोला — "अफसोस। यहाँ कितना गर्म हो रहा है। ऐसे तो हम तीनों मर जायेंगे।" यह सुन कर भौंरे ने अपने पंख घुमाये उनको नीचे उतारा और खुद वहाँ से उड़ गया।

तब साँप उड़ता हुआ वहाँ आया और अपना मुँह खोले उनके ऊपर गिर पड़ा और बोला — "आहा। तुम अब फिर परेशानी में पड़ गये हो। क्या मैंने तुमसे कहा नहीं था कि तुम बस मेरी सुनो

और किसी और की नहीं।" यह सुन कर वे रोने लगे और उनसे विनती करने लगे — "हम अबसे आपकी ही सुनेंगे किसी और की नहीं।"

वे उसके सामने इतना रोये और इतनी विनती की कि उसे उसको माफ करना ही पड़ा। सो उसने उन्हें फिर उठाया और फिर से उन्हें ले चला। पर कुछ दूर ले जा कर वह फिर थक गया सो वह फिर से आराम करने के लिये लेट गया और सो गया।

तभी एक बैल वहाँ आया। छोटे ज़ार से बोला — "हलो छोटे ज़ार नोविश्नी कैसे हो?"

छोटा ज़ार बोला — "हलो बैल। तुम कैसे हो?"

बैल ने पूछा — "हलो छोटे ज़ार नोविश्नी। क्या तुम यहाँ अपनी इच्छा से हो या फिर अपनी इच्छा के विरुद्ध हो?"

छोटा ज़ार नोविश्नी बोला — "हम लोग यहाँ अपनी इच्छा के विरुद्ध हैं अपनी इच्छा से नहीं जैसा कि तुम देख सकते हो।"

बैल बोला — "तब तुम दोनों मेरी पीठ पर बैठ जाओ मैं तुम्हें यहाँ से ले चलता हूँ।"

"लेकिन प्यारे बैल। जब एक घोड़ा और एक भौंरा हमारी जान नहीं बचा सके तो तुम कैसे बचा पाओगे।"

बैल ने उनसे कहा — "यह बेकार की बात है। तुम मेरे ऊपर बैठ जाओ मैं तुम्हें यहाँ से ले चलूँगा।"

वे बोले — "चलो हमें तो एक बार मरना ही है।"

और बैल उन्हें अपनी पीठ पर बिठा कर चल दिया। हर कुछ देर के बाद वह कूद जाता जिससे वे बस गिरने से बच जाते।

उनके जाने के बाद साँप की आँख खुली तो साँप को वे फिर से दिखायी नहीं दिये तो वह फिर से बहुत गुस्सा हो गया। अपने सोने की जगह से वह बाहर निकला तब उसने देखा कि वे तो बहुत दूर निकल गये हैं। वह तुरन्त ही जंगलों के ऊपर से उड़ा और बहुत तेज़ उड़ा।

छोटा ज़ार बोला — "ओ बैल। कितना गर्म हो रहा है। इतनी गमी से तो तुम भी मर जाओगे और हम भी मर जायेंगे।"

इस पर बैल बोला — "तुम मेरे बाँये कान में देखो तो उसमें तुम्हें एक घोड़े का कंघा मिल जायेगा। उसे तुम वहाँ से खींच कर निकाल लो और उसे अपने पीछे फेंक दो।"

छोटे ज़ार ने ऐसा ही किया। उसने बैल के बाँये कान में से घोड़े वाला कंघा निकाला और उसे अपने पीछे फेंक दिया। तुरन्त ही उसके पीछे एक बहुत ऊँचा और बहुत ही घना जंगल खड़ा हो गया पर बैल अपनी सामान्य गति से भागता रहा। थोड़ी थोड़ी देर में वह कूदता रहा जिससे वे बेचारे गिरते गिरते बचते रहे।

साँप किसी तरह अपना रास्ता बनाता हुआ वहाँ से बाहर निकला और फिर से उनका पीछा करने लगा तो छोटे ज़ार फिर से बोला — "ओ बैल। कितना गर्म हो रहा है। इतनी गमी से तो तुम भी मर जाओगे और हम भी मर जायेंगे।"

इस पर बैल बोला — "तुम मेरे दाँये कान में देखो तो वहाँ तुम्हें एक ब्रश मिलेगा। तुम उसे निकाल लो और उसे अपने पीछे फेंक दो।"

छोटे ज़ार ने ऐसा ही किया। उसने उसके दाँये कान में से एक ब्रश निकाला और उसे अपने पीछे फेंक दिया। उससे फिर एक जंगल बन गया जो इतना ही घना था जैसा कि एक ब्रश होता है।

साँप वहाँ तक आया और उसने उस जंगल को चबाना शुरू किया। चबा चबा कर साँप अपना रास्ता बनाता हुआ इसमें से बाहर निकला और उसने फिर से पीछा करना शुरू किया।

बैल अपनी सामान्य गति से हर कुछ दूरी पर कुदकता हुआ चला जा रहा था। पर जब साँप जंगल को चबा कर आगे बढ़ा और उनके पीछे भागा तो छोटे ज़ार ने फिर बैल से कहा कि उसे बहुत गर्म लग रहा है और वह तो मरने वाला हो रहा है।

बैल अब समुद्र के पास आता जा रहा था। उसने कहा — "तुम मेरे दाँये कान में से एक रूमाल निकाल लो और उसे मेरे सामने फेंक दो।" सो उसने उसके दाँये कान में से रूमाल निकाल कर अपने सामने हिला दिया तो उससे एक पुल बन गया। उस पुल से हो कर वे जल्दी से दौड़ गये। जैसे ही उन्होंने पुल पार किया वैसे ही साँप समुद्र के पास आ पहुँचा।

बैल ने छोटे ज़ार से कहा — "अब उस रूमाल को मेरे पीछे हिला दो।"

तो उसने उसे अपने पीछे हिला दिया जिससे वह पुल दोगुना हो गया। उसको पार करने के बाद उसने उसे अपने आगे हिला दिया तो वह उनके और आगे तक चला गया।

साँप समुद्र के किनारे तक तो आया पर वहाँ उसे रुक जाना पड़ा क्योंकि आगे जाने उसके पास कोई साधन नहीं था। इस तरह से वे तीनों समुद्र पार कर के उसके दूसरी पार चले गये और साँप समुद्र के इसी ओर रह गया।

बैल बोला — "मैं तुम्हें समुद्र के पास ही एक मकान है वहाँ ले जाऊँगा तुम लोग उसी मकान में रहना। वहाँ तुम मुझे मार देना।"

यह सुन कर तो दोनों भाई बहिन बहुत दुखी हुए और रो पड़े। छोटा ज़ार बोला — "हम तुम्हें कैसे मार सकते हैं। तुम तो हमारे छोटे पिता हो। तुमने हमें मौत से बचाया है।"

बैल बोला — "नहीं तुम लोग रोओ नहीं पर तुम्हें मुझे मारना ही पड़ेगा। मेरे शरीर का एक चौथाई हिस्सा तुम भट्टी के ऊपर टाँग देना। दूसरा चौथाई हिस्सा जमीन पर एक कोने में रख देना।

तीसरा चौथाई तुम घर के दरवाजे के पास कोने में रखना और आखिरी चौथाई हिस्सा देहरी के चारों तरफ रखना। इस तरह मेरे शरीर के चार हिस्से घर के चारों तरफ रखे रहेंगे।"

सो वे लोग उसे उस झोंपड़ी में ले गये और उसे मार डाला। मार कर उसके चारों हिस्से जैसे उसने बताये थे वैसे ही रख दिये। उसके बाद वे सो गये। आधी रात को ज़ारेवको की आँख खुली

और उसने दाँये कोने की तरफ देखा तो वहाँ उसे एक बहुत सुन्दर घोड़ा दिखायी दिया। वह घोड़ा इतना बढ़िया था कि उससे रहा नहीं गया और वह उस पर सवार हो गया।

देहरी वाले कोने में एक तलवार पड़ी थी तीसरे कोने में एक कुत्ता था जिसका नाम था प्रोशियस। चौथे कोने जो भट्टी के पास था उसमें भी एक कुत्ता खड़ा था जिसका नाम था नैड्विगा।[18]

छोटा ज़ार वहाँ से चले जाने का बहुत इच्छुक था। उसने अपनी छोटी बहिन को उठाया — "उठो बहिन उठो। भगवान की हमारे ऊपर दया है। उठो बहिन उठो और भगवान की प्रार्थना करो।"

सो वे उठे और उन्होंने भगवान की प्रार्थना की। जब तक उन्होंने भगवान की प्रार्थना की तब तक सुबह हो चुकी थी। वह घोड़े पर बैठा कुत्तों को अपने साथ लिया ताकि वे जो शिकार करें उन पर वे लोग ज़िन्दा रह सकें और वहाँ से चल दिया।

इस तरह से वे उसी झोंपड़ी में रहते रहे। एक दिन बहिन अपने पहनने के कपड़े और बिस्तर की चादर धोने के लिये समुद्र के किनारे गयी कि साँप वहाँ आया और उससे पूछा — "तुमने यह समुद्र कैसे पार किया?"

[18] Both the dogs' names were Prodius and Nadviga

उसकी बहिन बोली — “यह समुद्र हमने इस तरह से पार किया कि मेरे भाई के पास एक रूमाल है जिसे जब वह अपने पीछे हिलाता है तो वह एक पुल बना देता है।”

साँप बोला — “मैं कहता हूँ कि तुम उससे यह रूमाल माँगो। उससे कहना कि तुम उसे धोना चाहती हो और फिर उसे यहाँ ला कर हिला दो। इससे मैं भी तुम्हारे पास आ कर रह सकूँगा और फिर हम तुम्हारे भाई को जहर दे पायेंगे।”

जब वह कपड़े धो कर घर पहुँची तो वह अपने भाई के पास पहुँची और उससे कहा — “तुम मुझे अपना रूमाल दे दो तो मैं उसे धो कर साफ कर दूँगी वह बहुत मैला हो गया है।”

उसने अपनी बहिन का विश्वास कर लिया और उसे अपना रूमाल दे दिया। वह उसे समुद्र के पास ले गयी और वहाँ पहुँच कर उसे हिला दिया। देखो वहाँ तो एक पुल बन गया और साँप उस पर से चल कर समुद्र पार आ गया।

वे दोनों आपस में यह बात करते हुए एक साथ घर लौटे कि छोटे ज़ार को कैसे मारा जाये और कैसे उसे भगवान की सुन्दर दुनियाँ से हटाया जाये।

छोटे ज़ार का यह नियम था कि वह रोज सुबह सवेरे ही उठ जाता था अपने घोड़े पर चढ़ता और शिकार के लिये निकल जाता जो उसे बहुत अच्छा लगता था।

सो साँप ने बहिन से कहा — "तुम बीमार होने का बहाना कर के बिस्तर पर ही लेटी रहो और अपने भाई से कहो कि "मेरी तबियत ठीक नहीं है। मैंने एक सपना देखा है कि अगर तुम मेरे लिये मादा भेड़िये का दूध ला दोगे तो मैं ठीक हो जाऊँगी।"

इससे वह मादा भेड़िये का दूध लाने जायेगा तो जंगल में भेड़िये उसे और उसके कुत्तों को फाड़ कर रख देंगे। फिर हम उसके साथ वही करेंगे जैसा हम चाहेंगे। उसकी ताकत उसके कुत्तों में है।"

जब छोटा ज़ार शिकार से लौट कर आया तो साँप छिप कर बैठ गया। बहिन ने कहा — "मेरी तबियत ठीक नहीं है। मैंने सपने में देखा है कि अगर तुम मेरे लिये मादा भेड़िये का दूध ला दोगे तो मैं ठीक हो जाऊँगी। मैं बहुत कमजोर हूँ भगवान न करे कि मैं मर जाऊँ।"

उसका भाई बोला — "यकीनन। मैं तुम्हारे लिये मादा भेड़िये का दूध ला कर दूँगा।" वह तुरन्त ही अपने घोड़े पर सवार हुआ अपने कुत्ते लिये और जंगल की तरफ चल दिया।

चलते चलते वह एक झाड़ी तक पहुँचा था कि उसमें से एक मादा भेड़िया बाहर निकली तो उसका प्रोशियस कुत्ता दौड़ा और उसे दबोच लिया और उसके नौड्विगा कुत्ते ने उसे पकड़ कर रखा। छोटे ज़ार ने उसका दूध निकाला और उसे जाने दिया।

मादा भेड़िया ने इधर उधर देखा और बोली — "ओ छोटे ज़ार नोविश्नी। मुझे लग रहा था कि तुम मुझे जाने नहीं दोगे पर क्योंकि तुमने मुझे जाने दिया इसलिये मैं अपना एक बच्चा तुम्हें दे देती हूँ।"

तब उसने अपने एक बच्चे को उसे देते हुए कहा — "जाओ बेटा तुम इन छोटे ज़ार के साथ जाओ और इनकी ऐसे सेवा करना जैसे यह तुम्हारे आदरणीय पिता हों।"

छोटा ज़ार मादा भेड़िया का दूध और बच्चा ले कर आ गया।

अब उसके पास दो कुत्तों के साथ साथ एक भेड़िये का बच्चा और था जो उन कुत्तों के पीछे पीछे आ रहा था।

साँप और उसकी बहिन ने उसे दूर से ही आते देख लिया। उसने देखा कि उसके पीछे तीन कुत्ते और चले आ रहे हैं।

साँप बहिन से बोला — "अरे यह तो बड़ा चालाक है। इसने तो दो कुत्तों के साथ साथ एक और पहरेदार कुत्ता भी जोड़ लिया है। तुम यहीं बिस्तर पर लेटी रहो और अपनी हालत और बुरा दिखाने की कोशिश करो। अबकी बार इससे मादा भालू के दूध की माँग करना। क्योंकि मुझे यकीन है कि भालू इसे जरूर ही चीर फाड़ देंगे।" तब साँप एक सुई में बदल गया और बहिन ने ले जा कर उसे दीवार में लगा दिया।

इस बीच छोटा ज़ार अपने घोड़े पर से उतरा और अपने कुत्तों और भेड़िये के बच्चे के साथ झोंपड़ी में घुसा तो कुत्तों ने दीवार में लगी सुई की तरफ देख कर सूँघना शुरू कर दिया।

उसकी बहिन ने कहा — "तुमने इतने बड़े बड़े कुत्ते क्यों पाल रखे हैं। ये मुझे आराम ही नहीं करने देते।" सो उसने अपने कुत्तों को अपने पास बुलाया और वहीं बिठा लिया।

फिर उसकी बहिन ने कहा — "मैंने सपने में देखा है कि मुझे शायद मादा भालू के दूध से कुछ फायदा होगा।" उसके भाई ने कहा "ठीक है मैं उसे ले कर आता हूँ।" पर जाने से पहले वह आराम करने के लिये लेट गया।

नैडविगा कुत्ता उसके सिर के पास लेट गया प्रोशियस कुत्ता उसके पैरों के पास लेट गया और वोवचोक यानी छोटा भेड़िया उसके बराबर में लेट गया। इस तरह से वह रात भर सोया। अगले दिन वह सुबह उठ गया अपने घोड़े पर सवार हुआ और मादा भालू का दूध लाने चला गया।

वे फिर से एक झाड़ी के पास आये तो इस बार उसमें से एक मादा भालू निकल कर बाहर आयी। प्रोशियस ने उसे निकलते ही दबोच लिया और नैडविगा ने उसे कस कर थामे रखा और छोटे ज़ार ने उसका दूध निकाल लिया और छोड़ दिया।

मादा भालू बोली — "हलो छोटे ज़ार नोविश्नी। मुझे तो लगा था कि तुम मुझे जाने नहीं दोगे पर क्योंकि तुमने मुझे जाने दिया इसलिये मैं तुम्हें अपना एक बच्चा देती हूँ।" कह कर छोटे ज़ार को उसने अपना एक बच्चा दिया और बच्चे से कहा — "तुम इनकी ऐसे ही आज्ञा मानना जैसे तुम अपने पिता की आज्ञा मानते।"

छोटा ज़ार अपने घोड़े पर बैठा और अपने घर आ गया। साँप और छोटे ज़ार की बहिन ने उसे दूर से ही आते देख लिया। इस बार उसके पीछे तीन नहीं चार जानवर थे। उसने साँप से कहा — "इसके पीछे तो चार जानवर हैं।"

तो साँप बोला — "अगर इसके पीछे चार जानवर हैं तो क्या हम इसे कभी भी नहीं मार पायेंगे। मैं बताऊँ तुम क्या करो। अबकी बार इससे मादा खरगोश का दूध लाने के लिये कहो। हो सकता है कि इसके जानवर इसके उसका दूध निकालने से पहले ही उसे खा जायें।"

इतना कह कर वह फिर से सुई बन गया और बहिन ने उसे दीवार में लगा दिया – पहले से थोड़ा सा ऊँचा ताकि अबकी बार कुत्ते वहाँ तक न पहुँच सकें।

घर आने पर छोटा ज़ार अपने घोड़े से उतरा और वह और उसके कुत्ते झोंपड़ी में आये तो कुत्तों ने फिर से सुई की तरफ जा कर सूँघना शुरू कर दिया और भौंकने लगे पर छोटा ज़ार इसकी वजह न जान सका।

लेकिन उसकी बहिन रोने लगी — "तुम ये इतने बड़े बड़े कुत्ते क्यों रखते हो। इनका यह भौंकना सुन कर मुझे बहुत गुस्सा आता है।" इस पर छोटा ज़ार उन पर चिल्लाया और वे उसके पास चुपचाप आ कर बैठ गये।

बहिन फिर बोली — "मैं इतनी बीमार हूँ भैया कि मुझे मादा खरगोश के दूध के सिवा और कुछ ठीक नहीं कर सकता। मेरे लिये वही ले कर आओ।"

छोटा ज़ार बोला — "ठीक है बहिन। मैं तुम्हारे लिये वह भी ले कर आऊँगा।" पर जाने से पहले वह आराम करने के लिये लेट गया।

नैडविगा कुत्ता उसके सिर के पास लेट गया प्रोशियस कुत्ता उसके पैरों के पास लेट गया और वोवचोक यानी छोटा भेड़िया और मैदवैदिक यानी छोटा भालू उसके दोनों तरफ लेट गये।

इस तरह से वह रात भर सोया। अगले दिन वह सुबह उठ गया अपने घोड़े पर सवार हुआ और मादा भालू का दूध लाने चला गया।

वे फिर से एक झाड़ी के पास आये तो इस बार उसमें से एक मादा खरगोश निकल कर बाहर आयी। प्रोशियस कुत्ते ने उसे निकलते ही दबोच लिया और नैडविगा कुत्ते ने उसे कस कर थामे रखा और छोटे ज़ार ने उसका दूध निकाल लिया और छोड़ दिया।

मादा खरगोश बोली — "हलो ओ छोटे ज़ार। मुझे लगा कि मुझे छोड़ोगे नहीं पर क्योंकि तुम्हारे कुत्तों ने मुझे मारा नहीं और क्योंकि तुमने मुझे ज़िन्दा जाने दिया इसलिये मैं अपना एक बच्चा तुम्हें देती हूँ।" फिर अपना एक बच्चा उसे देते हुए कहा बच्चे से

कहा — "जाओ और इनका कहा ऐसे ही मानना जैसे तुम अपने पिता का मानते।"

छोटा ज़ार पाँच पाँच जानवरों को अपने साथ ले कर घर की तरफ चल पड़ा। बहिन ने फिर से उसे दूर से आते देखा तो देखा कि उसके साथ तो पाँच पाँच जानवर आ रहे हैं। वह बोली — "यह तो एक बहुत बड़ी परेशानी है। सारे पाँच जानवर इसके साथ चले आ रहे हैं और यह तो बिल्कुल ठीक ही चला आ रहा है।"

साँप बोला "अबकी बार इससे लोमड़ी का दूध लाने के लिये कहो। हो सकता है कि जब यह उसे लेने जाये तो इसके जानवर इसे झटका मार दें।" इतना कह कर साँप सुई में बदल गया और बहिन ने उसे दीवार पर और ऊँचाई पर लगा दिया ताकि कुत्ते उस तक न पहुँच सकें।

ज़ार फिर से घोड़े पर से उतरा तो उसके कुत्ते फिर से झोंपड़ी की तरफ दौड़े और उसी दीवार की तरफ जा कर सूँघने और भोंकने लगे जिस पर सुई लगी थी।

उसकी बहिन ने फिर से रोते हुए कहा कि तुम इतने भयानक कुत्ते क्यों रखते हो। इस पर भाई ने अपने कुत्तों को चिल्ला कर अपने पास बुला लिया।

बहिन ने कहा — "भैया मैं अभी भी बीमार हूँ मुझे इस बार लोमड़ी का दूध ला कर दो। मैं उससे जरूर ठीक हो जाऊँगी।"

उसके भाई ने कहा "ठीक है मैं ला दूँगा।" पर जाने से पहले वह आराम करने के लिये लेट गया।

नैडविगा कुत्ता उसके सिर के पास लेट गया प्रोशियस कुत्ता उसके पैरों के पास लेट गया और वोवचोक यानी छोटा भेड़िया और मैदवैदिक यानी छोटा भालू और छोटा खरगोश उसके दोनों तरफ लेट गये।

इस तरह से वह सारी रात सोया। अगले दिन फिर सुबह उठा और अपने घोड़े पर सवार हो कर अपने सब साथियों को साथ ले कर लोमड़ी का दूध लाने चला। वे लोग अबकी बार कुछ ज़्यादा ही घनी झाड़ियों की तरफ पहुँच गये कि यकायक उसमें से एक लोमड़ी बाहर निकली।

पोर्शियस कुत्ते ने उसे दबोच लिया नैड्विगा कुत्ते ने उसे कस कर पकड़ लिया और छोटे ज़ार ने उसका दूध निकाल लिया और उसे छोड़ दिया।

लोमड़ी बोली — "तुम्हारा बहुत बहुत धन्यवाद ओ छोटे ज़ार नोविश्नी कि तुमने मुझे ज़िन्दा छोड़ दिया। मुझे लगा कि तुम अपने कुत्तों से मुझे मरवा दोगे। तुम्हारी इस मेहरबानी के लिये मैं तुम्हें अपना एक बच्चा देती हूँ।"

फिर उसने अपना एक बच्चा छोटे ज़ार को देते हुए बच्चे से कहा — "तुम इनका उसी तरह से कहना मानना जैसे अपने पिता का मानते।"

अब वह छह जानवरों के साथ घर चला गया और उसकी बहिन और साँप ने उनको दूर से ही देख लिया। लो अब तो उसके पास छह रक्षक थे और उसे खुद को भी कोई नुकसान नहीं पहुँचा था।

साँप बोला — "अब हम लोग इसे कभी नहीं मार पायेंगे। अबकी बार खुद को तुम बहुत बीमार दिखाओ और उससे कहो "मैं बहुत बीमार हूँ। क्योंकि दूसरे साम्राज्य में बहुत दूर एक जंगली सूअर है जो अपनी नाक से खेत जोतता है अपने कानों से बीज बोता है और अपनी पूँछ से मिट्टी के ढेले तोड़ता है।

और उसी राज्य में एक मिल है जिसमें बारह भट्टियाँ हैं जो अपना अनाज खुद ही पीसती हैं और खुद ही आटा निकालती है अगर तुम मुझे उसका वह आटा ला कर दो जिससे मैं केक बना सकूँ तभी मैं ज़िन्दा रह पाऊँगी।"

यह सुन कर भाई ने कहा — "मुझे ऐसा लगता है कि तू मेरी बहिन ही नहीं है। तू तो मेरी दुश्मन है।"

बहिन ने कहा — "यह कैसे सम्भव है भैया जबकि हम इस अनजानी जगह में अकेले एक साथ रह रहे हैं।"

वह बोला "ठीक है मैं ले आऊँगा।"

इस बार भी उसने अपनी बहिन का विश्वास कर लिया। वह अपने घोड़े पर चढ़ा अपने साथियों को अपने साथ लिया और फिर

एक ऐसी जगह आ गया जहाँ वह जंगली सूअर भी था और वह मिल भी थी जिसका उसकी बहिन ने जिक्र किया था।

वह मिल तक आया वहाँ उसने अपना घोड़ा बाँधा और उस मिल में घुस गया। वहाँ बारह भट्टियाँ थीं बारह दरवाजे थे और इन दरवाजों पर इन्हें खोलने और बन्द करने के लिये किसी आदमी की जरूरत नहीं थी क्योंकि वे अपने आप ही बन्द होते थे और अपने आप ही खुलते थे।

उसने पहली भट्टी के नीचे से थोड़ा सा आटा लिया और दूसरे दरवाजे से चला गया पर उसके कुत्ते दरवाजे के बाहर ही रह गये। इस तरह वह बारहों दरवाजों से हो कर गया और फिर पहले दरवाजे से बाहर आ गया। उसने चारों तरफ देखा तो उसे अपने कुत्ते कहीं नजर नहीं आये।

उसने सीटी बजायी तो उसे अपने कुत्तों के रोने की आवाज आयी जहाँ से वे बाहर नहीं निकल सकते थे। वह बेचारा बहुत ज़ोर ज़ोर से रोने लगा। फिर वह अपने घोड़े पर सवार हुआ और अपने घर चला गया।

जब वह घर पहुँचा तो उसने देखा कि उसकी बहिन साँप के साथ खुशियाँ मना रही है। जैसे ही भाई झोंपड़ी के अन्दर घुसा तो साँप बोला — "हमें माँस की जरूरत थी और लो माँस आ गया।"

क्योंकि अभी अभी उन्होंने बैल को मारा था और जहाँ उन्होंने बैल को मारा था वहाँ व्हाइटथौर्न का पेड़ उग आया था। वह इतना

सुन्दर था कि बस वैसा पेड़ तो केवल कहानियों में ही पाया जाता है पर न तो उसकी कल्पना ही की जा सकती है और न ही वह दैवीय है।

छोटे ज़ार ने जब उसे देखा तो बोला — "ओ मेरे जीजा जी।" क्योंकि बिना उसके कुत्तों के उसे साँप के प्रति नम्र तो होना ही चाहिये था। "मेहरबानी कर के मुझे इस व्हाइटथौर्न के पेड़ पर चढ़ने की इजाज़त दीजिये ताकि मैं उसके ऊपर चढ़ कर अपने चारों तरफ देख सकूँ।"

पर बहिन ने साँप से कहा — "प्रिय दोस्त। उससे कहो कि वह अपने लिये पानी अपने आप ही उबाले। फिर हम उसे उबालेंगे। क्योंकि यह ठीक नहीं है कि तुम अपने हाथ गन्दे करो।"

साँप बोला — "ठीक है। वह अपना पानी खुद गर्म करेगा।" फिर उसने छोटे ज़ार से कहा "तुम जाओ और जंगल से लकड़ी काट कर लाओ और फिर आग जला कर उस पर पानी गर्म करो।"

छोटा ज़ार यह सुन कर जंगल में लकड़ी काटने चला गया। जब वह लकड़ी काट रहा था तो एक मैना उधर से उड़ी और छोटे ज़ार से बोली — "इतनी जल्दी नहीं, इतनी जल्दी नहीं ओ छोटे ज़ार नोविश्नी। आराम से। जितना धीरे कर सकते हो उतना धीरे करो क्योंकि तुम्हारे कुत्ते दो दरवाजे चबा कर बाहर आ गये है।"

उसके बाद छोटे ज़ार ने एक बड़े बर्तन में पानी गर्म करने के लिये रखा और उसके नीचे आग जला दी पर लकड़ी जो वह काट

कर लाया था वह सड़ी हुई थी और बिल्कुल सूखी हुई थी सो आग लगाते ही वह धू धू कर के जल पड़ी तो उसने उसके ऊपर थोड़ा सा पानी छिड़क दिया। उसने उस पर कई बार पानी छिड़का ताकि वह बहुत तेज़ी से न जले।

एक बार वह और पानी लाने के लिये ऑगन में गया ता मैना ने कहा — "इतनी जल्दी नहीं, इतनी जल्दी नहीं ओ छोटे ज़ार नोविश्नी। आराम से। जितना धीरे कर सकते हो उतना धीरे करो क्योंकि तुम्हारे कुत्ते चार दरवाजे चबा कर बाहर आ गये है।"

जब वह अपनी झोंपड़ी की तरफ आ रहा था तो उसकी बहिन ने कहा — "पानी अभी तक अच्छी तरह से गर्म नहीं हुआ है। तुम लोहे की सलाख ले जाओ और जा कर उसे कुरेदो।"

उसने वैसा ही किया तो लकड़ी के टुकड़े और तेज़ी से जल पड़े पर जब वह चली गयी तो उसने आग के ऊपर और पानी डाल दिया ताकि आग धीरे धीरे जल सके।

वह फिर ऑगन में गया तो मैना ने उससे फिर कहा — "इतनी जल्दी नहीं, इतनी जल्दी नहीं ओ छोटे ज़ार नोविश्नी। आराम से। जितना धीरे कर सकते हो उतना धीरे करो क्योंकि तुम्हारे कुत्ते अब छह दरवाजे चबा कर बाहर आ गये है।"

जब वह अन्दर आया तो उसकी बहिन ने उसे फिर से आग को कुरेदने के लिये कहा। उसने वैसा ही किया पर जब वह चली गयी उसने फिर से कोयलों पर पानी डाल दिया।

इस तरह वह आँगन में आता जाता रहा। यह करते करते वह थक गया था सो वह बोला — "उफ़ यह कितना थका देने वाला काम है।"

तभी मैना ने कहा — "इतनी जल्दी नहीं, इतनी जल्दी नहीं ओ छोटे ज़ार नोविश्नी। आराम से। जितना धीरे कर सकते हो उतना धीरे करो क्योंकि तुम्हारे कुत्ते अब दस दरवाजे चबा कर बाहर आ गये है।"

छोटे ज़ार ने सबसे ज़्यादा सड़ी हुई लकड़ी ली और उसे आग में डाल दिया। और यह दिखाने के लिये कि वह सचमुच में जल्दी कर रहा है वह ऐसा करता भी रहा और देर करने के लिये बीच बीच में पानी भी डालता रहा। फिर भी पानी जल्दी ही उबलने लगा।

वह फिर से लकड़ी लेने जंगल गया तो मैना ने उससे कहा — "इतनी जल्दी नहीं, इतनी जल्दी नहीं ओ छोटे ज़ार नोविश्नी। आराम से। जितना धीरे कर सकते हो उतना धीरे करो क्योंकि तुम्हारे कुत्ते अब सारे दरवाजे चबा कर बाहर आ गये है और अब आराम कर रहे हैं।"

पर अब तो पानी उबल रहा था सो उसकी बहिन आयी और उससे कहा — "आ और अपने आपको इस पानी में उबाल। तू और कब तक हमें इन्तजार करायेगा।"

छोटे ज़ार बेचारे ने तब उस उबलते पानी को अपने ऊपर डालना शुरू किया जबकि बहिन ने मेज तैयार की। उस मेज पर

कपड़ा बिछाया ताकि साँप उसके भाई को उस मेज पर बैठ कर खा सके।

उधर वह बेचारा चमचे से अपने ऊपर उबलता हुआ पानी गिराता रहा और चिल्लाता रहा — "ओ मेरे प्यारे जीजा जी। मुझे उस व्हाइटथौर्न पेड़ पर चढ़ने दें ताकि मैं इधर उधर देख सकूँ। क्योंकि वहाँ से मैं बहुत दूर तक देख सकता हूँ।"

बहिन ने साँप से कहा — "इसे ऐसा मत करने देना। यह वहाँ बहुत देर तक बैठा रहेगा और हमारा समय बर्बाद करेगा।"

पर साँप बोला — "कोई बात नहीं इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। अगर यह वहाँ चढ़ना चाहता है तो इसे चढ़ने दो न।"

सो छोटे ज़ार ने उस पेड़ पर चढ़ना शुरू किया। वह हर डाली पर कदम रख रख रहा था कोई भी डाली नहीं छोड़ रहा था ताकि उसे कुछ समय और मिल जाये। इस तरह चढ़ते चढ़ते वह ऊपर उसकी चोटी तक पहुँच गया।

वहाँ पहुँच कर उसने अपनी बाँसुरी निकाली और उसे बजाना शुरू कर दिया।

लेकिन वह मैना उड़ते हुई वहाँ आयी और बोली — "इतनी जल्दी नहीं, इतनी जल्दी नहीं ओ छोटे ज़ार नोविश्नी। क्योंकि तुम्हारे कुत्ते अब आराम कर चुके हैं और अब अपनी पूरी ताकत से भागते हुए तुम्हारे पास आ रहे हैं।"

पर तभी उसकी बहिन भागती हुई वहाँ आयी — "यह तुम वहाँ क्या और किसके लिये बजा रहे हो। तुम शायद यह भूल गये हो कि हम तुम्हारा यहाँ नीचे इन्तजार कर रहे हैं।"

यह सुन कर उसने पेड़ से नीचे उतरना शुरू कर दिया और वह हर डाली पर देर लगाता जा रहा था जबकि उसकी बहिन उससे जल्दी नीचे उतरने के लिये कहती रही।

आखिर वह आखिरी डाली पर आ गया और जैसे ही वह उस डाली पर खड़ा हुआ और नीचे जमीन पर कूदा तो उसने सोचा कि "बस अब तो मैं गया।"

पर उसी पल उसके दोनों कुत्ते और बाकी जानवर भी वहाँ आ चुके थे। कुत्ते बहुत ज़ोर ज़ोर से भौंक रहे थे। आते ही वे उसके चारों तरफ खड़े हो गये।

तब छोटे ज़ार ने क्रौस का निशान बनाया और कहा — "हे भगवान तुम्हारी जय हो। अभी मैं तुम्हारी इस सुन्दर दुनियाँ में कुछ दिन और ज़िन्दा रह लूँगा।"

उसके बाद उसने साँप से कहा — "ओ मेरे प्यारे जीजा जी अब तुम बाहर निकलो क्योंकि अब मैं तुम्हारे लिये तैयार हूँ।"

साँप उसे खाने के लिये बाहर निकल कर आया पर उसने कुत्तों और अपने दूसरे जानवरों से कहा — "वौवचौक, मैदवैदिक, प्रोशियस, नैडविगा। पकड़ लो इसे।" उसके यह कहने पर वे सब साँप पर टूट पड़े और उस फाड़ डाला।

छोटे ज़ार ने उसके सारे टुकड़े समेटे और उन्हें जला कर राख कर दिया। लोमड़ा उसकी राख में उलट पलट हो गया ताकि वह उसकी राख से पूरा ढक जाये। उसके बाद वह एक खुली जगह चला गया और अपने को हिला कर उसकी राख चारों दिशाओं में फैला दी।

पर जब वे साँप को फाड़ रहे थे तो छोटे ज़ार की बहिन ने उसका एक दाँत तोड़ कर रख लिया। जब सब खत्म हो गया तो छोटे ज़ार ने अपनी बहिन से कहा — "तुम तो मेरे साथ हमेशा ही झूठी दोस्त रही हो तो तुम इसी राज्य में रहो और मैं दूसरे राज्य में जाता हूँ।"

उसके बाद उसने दो बालटियाँ बनायी और उन्हें व्हाइटथौर्न पेड़ पर लटका दिया और बहिन से कहा — "देखो बहिन। अगर तू मेरे लिये रोयेगी तो यह वाली बालटी ऑसुओं से भर जायेगी और अगर तू साँप के लिये रोयेगी तो वह बालटी खून से भर जायेगी।"

यह सुन कर वह रो पड़ी और बोली — "भैया मुझे छोड़ कर मत जाओ। मुझे अपने साथ ले चलो।"

छोटा ज़ार बोला — "नहीं। जैसी झूठी दोस्त तू है ऐसी झूठी दोस्त को मैं अपने साथ नहीं रख सकता। तू जहाँ है वहीं रह।" कह कर वह अपने घोड़े पर चढ़ा अपने कुत्तों और जानवरों को बुलाया और दूसरे साम्राज्य के किसी दूसरे राज्य की तरफ निकल पड़ा।

वह चलता गया चलता गया जब तक वह किसी दूसरे शहर में नहीं पहुँच गया। उस शहर में पानी का केवल एक ही स्रोत था। इस स्रोत में एक ड्रैगन रहता था जिसके बारह सिर थे।

जब भी कभी कोई वहाँ से पानी लेने जाता और अपना पानी भरता तो वह ड्रैगन वहाँ से निकल आता और उसे खा जाता। इसके अलावा उस शहर में कोई और जगह ऐसी नहीं थी जहाँ से लोग पानी भर सकते।

सो छोटा ज़ार जब इस शहर में आया तो वह एक अजनबियों की सराय में ठहरा। उसने उस सराय वाले से पूछा — "यह सड़कों पर चिल्लाना दौड़ना किस वजह से। क्या मामला है।"

सराय का मालिक बोला — "क्यों। आपको नहीं पता कि आज इस देश के ज़ार की बारी है कि वह अपनी बेटी को ड्रैगन के पास भेजे।"

सो वह सराय से बाहर गया और जा कर सुना कि वहाँ के लोग क्या कह रहे थे। "ज़ार ने यह घोषणा करा रखी है कि जो कोई भी इस ड्रैगन को मारेगा ज़ार उसके साथ अपनी बेटी की शादी कर देगा और उसे अपना आधा राज्य दे देगा।"

यह सुन कर छोटा ज़ार नोविश्नी आगे बढ़ा और बोला — "मैं मारूँगा इस ड्रैगन को।"

सो सब लोगों तुरन्त ही ज़ार के पास गये और उससे कहा कि "एक अजनबी कह रहा है कि वह ड्रैगन को मार सकता है।" उसे

ज़ार के पास भेज दिया।" यह सुन कर ज़ार ने लोगों से कहा कि वे उसे ला कर रक्षकों के साथ मिला दें।

उसके बाद ज़ारेवना को बाहर लाया गया। उसके पीछे छोटा ज़ार था और उसके पीछे उसका घोड़ा और उसके जानवर थे। ज़ारेवना बहुत सुन्दर थी और बहुत कीमती कपड़े पहने थी कि उस समय जो कोई भी उसे देख रहा था रो रहा था।

पर जैसे ही ड्रैगन बाहर निकल कर आया और ज़ारेवना को खाने के लिये उसने अपना मुँह खोला छोटे ज़ार ने अपनी खुद चलने वाली तलवार से कहा "ड्रैगन के ऊपर गिरो।" और अपने जानवरों से कहा "वौवचौक, मैदवैदिक, प्रोशियस, नैडविगा। पकड़ लो इसे।" उसके यह कहने पर वे सब ड्रैगन पर टूट पड़े और उस फाड़ डाला।

जब वे उसे फाड़ चुके तब छोटे ज़ार ने उसके शरीर के बचे हुए हिस्सों को लिया और उन्हें जला कर राख कर दिया। छोटे लोमड़े ने उसकी राख को अपनी पूँछ में लपेटा और फिर खुली जगह में जा कर उसे चारों दिशाओं में फैला दिया।

छोटे ज़ार ने प्यारी सी ज़ारेवना का हाथ पकड़ा और उसे ज़ार के पास ले गया। लोग बहुत खुश हो गये क्योंकि अब उनका ज़ार पानी के ड्रैगन की कैद से आजाद हो गया था। ज़ारेवना ने छोटे ज़ार को अपनी शादी की अँगूठी पहना दी।

अब वे घर के लिये रवाना हुए। वे चलते गये चलते गये क्योंकि ज़ार का राज्य अभी बहुत दूर था। चलते चलते छोटा ज़ार थक गया था सो वह एक जगह लेट गया। ज़ारेवना उसके सिर के पास बैठ गयी।

तब छोटे ज़ार का नौकर उठा और उसने छोटे ज़ार की खुद चलने वाली तलवार उसकी कमर से निकाली और उससे कहा "ओ खुद चलने वाली तलवार इसे काट दो।" सो खुद चलने वाली तलवार ने छोटे ज़ार को काट डाला। उसके जानवरों को इस बात का पता ही नहीं चला क्योंकि वे भी थक कर सो गये थे।

तब उस नौकर ने ज़ारेवना से कहा — "अब तुम अपने सारे लोगों से कहना कि मैंने तुम्हें बचाया है और अगर तुमने ऐसा नहीं कहा तो मैं तुम्हारे साथ भी वैसा ही करूँगा जैसा मैंने इस आदमी के साथ किया है।"

ज़ारेवना बोली — "मैं ऐसा ही कहूँगी कि तुमने ही मुझे बचाया है।" क्योंकि वह उस नौकर से बहुत ज़्यादा डर गयी थी। जब वे लोग शहर पहुँचे तो ज़ार अपनी बेटी को ज़िन्दा देख कर बहुत खुश हुआ। उसने नौकर को बहुत शानदार कपड़े पहनाये और सबने मिल कर बहुत खुशियाँ मनायीं।

उधर जब नैडविगा सो कर उठा तो उसने देखा कि उसका मालिक तो वहाँ कहीं नहीं था। उसने तुरन्त ही बाकी सब जानवरों

को उठाया। वे सब यह सोचने लगे कि उन सबमें सबसे ज़्यादा तेज़ कौन है।

काफी सोच विचार के बाद वे इस फैसले पर पहुँचे कि उन सबमें खरगोश सबसे ज़्यादा तेज़ था। तब उन लोगों ने फैसला किया कि खरगोश भागे और जल्दी से ज़िन्दगी देने वाला और उपचार करने वाला पानी लाये और साथ में जवानी देने वाला सेब भी ले कर आये।

सो खरगोश यह पानी और सेब लाने के लिये दौड़ गया। दौड़ते दौड़ते वह एक ऐसे देश में आया जिसमें उसने एक स्रोत देखा और उस स्रोत के पास ही उगा हुआ एक सेब का पेड़ भी देखा जिस पर जवान बनाने वाले बहुत सारे सेब लगे हुए थे। पर इस स्रोत और इस सेब का पेड़ दोनों ही की रखवाली एक मस्कोवाइट[19] करता था जो बहुत ही ताकतवर था।

वह अपनी तलवार अपने चारों तरफ बार बार कुछ इस तरह से घुमाता रहता था कि कोई चूहा भी कुँए के पास तक नहीं पहुँच पाता था। तो अब क्या किया जाये। सो छोटे खरगोश ने अपनी चालाकी का इस्तेमाल करना का निश्चय किया। उसने अपने आपको टेढ़ा मेढ़ा बना लिया और कुँए की तरफ लँगड़ा कर चल दिया।

जब मस्कोवाइट ने उसे देखा तो मन में सोचा कि "यह किस तरह का जानवर है। मैंने ऐसा जानवर पहले कभी देखा नहीं।"

---

[19] Muskovite.

सो खरगोश उसके पास से गुजर गया और आगे बढ़ता ही रहा आगे बढ़ता ही रहा और चलते चलते कुँए तक आ गया। मस्कोवाइट वहाँ कुँए पर खड़ा हुआ था। उसने अपनी आँखें बड़ी बड़ी खोल ली थीं पर खरगोश तो स्रोत के ऊपर की तरफ बढ़ गया था। उसने वहाँ से एक बोतल पानी भरा एक सेब तोड़ कर उसमें डाला और पल भर में वहाँ से हवा हो गया।

वह भाग कर छोटे ज़ार नोविश्नी के पास आया तो नैडविगा ने तुरन्त ही उसके शरीर के टुकड़ों के ऊपर ज़िन्दगी और उपचार का पानी छिड़क दिया।

सारे टुकड़े खिसक कर पास आ गये तभी उसके मुँह में थोड़ा सा पानी और डाल दिया गया जिससे छोटा ज़ार नोविश्नी ज़िन्दा हो कर उठ कर बैठा हो गया। तब उसे एक छोटा सा टुकड़ा जवानी के सेब का खिला दिया जिससे वह तुरन्त ही जवान और ताकतवर हो गया।

छोटे ज़ार ने खड़े हो कर एक अँगड़ाई ली एक जंभाई ली और बोला — "उफ़ मैं कितनी देर तक सोता रहा।"

प्रोशियस बोला — "यह तुम लोगों के लिये बहुत अच्छा रहा कि तुम लोग ज़िन्दगी और उपचार का पानी ले आये।"

सब बोले — "पर अब हम क्या करें।"

सबने सलाह की और इस फैसले पर पहुँचे कि छोटे ज़ार को एक बूढ़े का वेश बना कर ज़ार के महल जाना चाहिये। सो छोटे

ज़ार नोविश्नी ने एक बूढ़े का वेश बनाया और जब वह वहाँ पहुँचा तो उसने महल में अन्दर जाने की इजाज़त माँगी ताकि वह नौजवान शादीशुदा जोड़े को देख सके पर वहाँ ज़ार के नौकर उसे अन्दर जाने नहीं दे रहे थे।

पर उसके अन्दर आने की इजाज़त माँगने की आवाज ज़ारेवना के कानों को सुनायी दे गयी तो उसने उन नौकरों से कहा कि वे उसे अन्दर आने दें।

जब वह अन्दर घुसा तो उसने अपना शाल अपनी टोपी और वह अँगूठी हटा ली जो उसने ड्रैगन को मारने के बाद उसे दी थी तो वह उसे पहचान तो गयी पर उसे अपनी आँखों पर विश्वास नहीं हुआ। उसने छोटे ज़ार से कहा — "इधर आओ, ओ भगवान जैसे यात्री। ताकि मैं तुम्हारी ठीक से आवभगत कर सकूँ।"

तब छोटा ज़ार मेज के पास पहुँचा और ज़ारेवना ने उसे एक गिलास में वाइन दी। उसने उसे अपने बाँये हाथ से लिया। ज़ारेवना ने देखा कि उसने उसका गिलास उस हाथ से नहीं लिया जिसमें उसकी अँगूठी पड़ी हुई थी। सो उसने वह गिलास उससे वापस ले कर खुद पी लिया।

फिर उसने उसे दूसरा गिलास भर कर वाइन दी तब उसने उसे दाँये हाथ से लिया। और जब उसने उसे दाँये हाथ से लिया तब उसने अपनी दी हुई अँगूठी उसके हाथ में देखी तो उसने अपने पिता से कहा — "पिता जी यही मेरे पति हैं जिन्होंने मेरी जान बचायी थी

न कि उस आदमी ने। उस गधे ने तो मेरे पति को मार ही दिया था और मुझसे कहा कि मैं आपसे कहूँ कि वही मेरा पति है।"

जब ज़ार ने यह सुना तो वह गुस्से से उबल पड़ा उसने तुरन्त ही नौकर से कहा – "तो यह है तू।" और तुरन्त ही उसे एक जंगली घोड़े की पूँछ से बँधवा कर जिसके ऊपर कोई नहीं चढ़ सकता था मैदान में खुला छोड़ दिया। अब जहाँ भी वह घोड़ा उसे ले जाये।"

अब वह छोटे ज़ार नोविश्नी को मेज पर ले आया और फिर और खुशियाँ मनायी गयीं।

ज़ारेवको और ज़ारेवना बहुत दिनों तक ज़िन्दा रहे। एक दिन ज़ारेवना ने अपने पति से पूछा – "अपने घर और अपने सम्बन्धियों के बारे में कुछ बताइये।"

तब उसने उसे अपनी बहिन के बारे में बताया तो तुरन्त ही उसने उसे घोड़े पर सवार होने के लिये कहा और अपने जानवरों को साथ ले कर उसकी खोज में जाने के लिये कहा।

वे सब उसी जगह आये जहाँ वह उसे छोड़ कर गया था। वहाँ आ कर उसने देखा कि वह बालटी जो वह साँप के लिये छोड़ कर गया था खून से भरी हुई थी और ज़ार की बालटी सूखी थी और टूटी फूटी पड़ी हुई थी।

इससे वह पहचान गया कि वह अभी तक साँप के लिये रो रही थी। उसने उससे कहा "भगवान तेरी सहायता करें। मैं तुझे अब

नहीं जानता। अब तू यहीं रह मैं अब तेरी तरफ ऑख उठा कर भी नहीं देखूँगा।"

पर वह फिर उससे विनती करती रही उसे सहलाती रही कि वह उसे अपने साथ ले जाये तो भाई को उस पर दया आ गयी और वह उसे अपने साथ ले गया।

जब वे घर पहुँचे तो बहिन ने सॉप का दॉत निकाल लिया जिसे उसने अब तक छिपा रखा था। उसने वह दॉत अपने भाई के तकिये के नीचे रख दिया जहॉ वह सोता था। जब रात को भाई सोने गया तो उसने भाई को मार दिया।

उसकी पत्नी ने सोचा कि वह गुस्सा है इसलिये वह उससे नहीं बोला तो उसने उससे विनती की कि वह उससे गुस्सा न हो। पर फिर भी जब वह नहीं बोला तो उसने उसका हाथ पकड़ कर उठाया तो लो उसका हाथ तो लैड की तरह बिल्कुल ठंडा पड़ा था। वह चिल्ला पड़ी।

उसकी आवाज सुन कर प्रोशियस दरवाजे के अन्दर घुसा और अपने मालिक को चूमा तब ज़ार तो ज़िन्दा हो गया पर प्रोशियस बेचारा मर गया।

तब नैडविगा ने उसे चूमा तो प्रोशियस तो ज़िन्दा हो गया और नैडविगा मर गया। तब ज़ारेवको ने मैदवैदिक से कहा "अब तुम नैडविगा को चूमो।" उसने उसे चूमा तो नैडविगा तो ज़िन्दा हो गया पर मैदवैदिक मर गया।

इस तरह से वे बड़े से छोटे तक चूमते रहे जब तक खरगोश की बारी नहीं आयी। खरगोश ने वोवचोक को चूमा और खरगोश मर गया पर वोवचोक ज़िन्दा रहा। अब क्या करें। छोटा खरगोश बेचारा मर चुका था और अब कोई भी नहीं बचा था जो उसे ज़िन्दा कर सके।

छोटे ज़ार ने लोमड़े से कहा कि वह खरगोश को चूमे। पर लोमड़ा बहुत चालाक था। उसने खरगोश को अपने कन्धे पर उठाया और उसे जंगल ले चला। वह उसे एक ऐसी जगह ले गया जहाँ एक ओक का पेड़ गिरा हुआ पड़ा था। वहाँ उसकी एक डाल दूसरी डाल के ऊपर थी।

वहाँ पहुँच कर उसने खरगोश को नीची वाली डाल के ऊपर रखा और उसी डाल के नीचे से उसे चूमते हुए निकल गया। उसने यह ध्यान रखा कि डाल उसके और खरगोश दोनों के बीच में रहे। इससे साँप का दाँत खरगोश के मुँह से निकल पड़ा और ऊपर वाली डाल में जा कर फँस गया।

खरगोश और लोमड़ा दोनों सुरक्षित जंगल से भाग कर घर पहुँच गये। जब सबने उन दोनों को ठीक और ज़िन्दा देखा तो सबने बहुत खुशियाँ मनायीं कि उस दाँत की वजह से किसी को कोई नुकसान नहीं पहुँचा था। पर उन्होंने छोटे ज़ार की बहिन को पकड़ कर एक जंगली घोड़े की पूँछ से बाँध कर मैदान में छोड़ दिया।

इसके बाद छोटा ज़ार और ज़ारेवना और सभी जानवर खुशी खुशी रहे। मैं भी वहाँ था मैंने भी वहा बहुत सारी वाइन पी जब तक वह मेरे मुँह से नहीं निकल गयी। और यह कहानी आपके लिये।

5 पिशाच और सेंट माइकिल[20]

एक बार एक गॉव में दो पड़ोसी थे। उनमें से एक अमीर था जो बहुत अमीर था और एक गरीब जो इतना गरीब था कि उसके पास अपनी झोंपड़ी के अलावा और कुछ नहीं था। वह झोंपड़ी भी उसकी नीचे गिरने को तैयार थी।

कुछ समय बाद गरीब आदमी का कुछ ऐसा समय आया कि उसके पास खाने के लिये भी नहीं रहा और उसे कोई काम भी नहीं मिल रहा था। वह बहुत दुखी था और सोच रहा था कि अब वह क्या करे।

उसने सोचा और सोचा और फिर अपनी पत्नी से कहा — "देखो प्रिये मैं अपने अमीर पड़ोसी के पास जाता हूँ हो सकता है कि वह मुझे एक चॉदी का रूबल उधार दे दे। मैं कम से कम उससे रोटी तो खरीद सकूँगा। सो वह अपने अमीर पड़ोसी के पास चला गया।

वह अपने अमीर पड़ोसी के पास आया और बोला — "लौर्ड आप तन्दुरुस्त रहें।"

"तुम भी।"

"आदरणीय मालिक। मैं आपसे किसी काम से आया हूँ।"

अमीर आदमी ने पूछा — "बोलो तुम्हारा क्या काम है।"

[20] The Vampire and St. Michael. (Tale No 5)

गरीब आदमी बोला — “मुझे अफसोस है कि मुझे कहना तो नहीं चाहिये पर मेरा समय कुछ ऐसा बुरा आ गया है कि न तो मेरे घर में इस समय रोटी का एक भी टुकड़ा है और न ही मेरे घर में कोई पैसा है।

इसलिये मैं आपसे मालिक एक चाँदी का रूबल उधार माँगने आया हूँ। इसके लिये हम हमेशा के लिये आपके आभारी रहेंगे। मैं काम कर के आपका यह कर्ज चुका दूँगा।”

अमीर आदमी ने पूछा — “पर तुम्हारी जमानत कौन देगा?”

गरीब आदमी बोला — “मैं नहीं जानता कि कोई मेरी जमानत देगा। मैं तो बहुत गरीब हूँ। भगवान और सेंट माइकिल ही मेरी जमानत देंगे।” और उसने कोने में रखी एक मूर्ति की तरफ इशारा कर दिया।

सेंट माइकिल की मूर्ति ने अमीर आदमी से कहा — “तुम इस आदमी को यह पैसे उधार दो दो और उसे मेरे हिसाब में डाल देना। भगवान तुम्हें वापस कर देगा।”

अमीर आदमी बोला — “ठीक है अगर आप यह कहते हैं तो मैं इसे यह पैसा दिये देता हूँ।” कह कर उसने एक चाँदी का सिक्का उसे दे दिया। गरीब आदमी ने उसे बहुत बहुत धन्यवाद दिया और खुशी खुशी घर लौट आया।

पर अमीर आदमी को शान्ति नहीं थी कि भगवान उसे उसका दिया हुआ कर्जा उसे उसके जानवरों को बढ़ा कर उसे तन्दुरुस्त रख कर उसके बच्चों द्वारा वापस कर देंगे।

वह उस गरीब आदमी के वापस लौटने का इन्तजार करता रहा कि वह कब वापस आयेगा और कब उसे उसका चाँदी का रूबल वापस करेगा। पर ऐसा तो कुछ हुआ ही नहीं सो वह उसकी खोज में निकल पड़ा।

उसके घर के सामने जा कर वह उस पर चिल्लाया — "ओ कुत्ते के पिल्ले। तुम मेरा पैसा वापस करने क्यों नहीं आये। तुम यह तो जानते हो कि पैसा उधार कैसे माँगा जाता है पर तुम उसे देना भूल जाते हो।"

यह सुन कर गरीब आदमी की पत्नी ज़ोर से रो पड़ी। वह रोते हुए बोली — "अगर वह ज़िन्दा होते तो वह जरूर दे देते। पर वह तो अभी कुछ ही देर पहले मर गये।"

अमीर आदमी उसके ऊपर गुस्सा हुआ और वहाँ से चला गया पर जब वह घर पहुँचा तो सेंट माइकिल की मूर्ति के पास जा कर खड़ा हुआ और बोला "तुम तो अच्छे उसकी जमानत साबित हुए।" कह कर उसने उसे उठाया और उसकी आँखें निकालीं और उसे पीटना शुरू कर दिया।

वह सेंट माइकिल की मूर्ति को बार बार मारता रहा। थक कर उसने उसे पानी के एक छोटे से गड्ढे में फेंक दिया और उसे पैरों

तले कुचल दिया। "मैं तुझे उस आदमी की जमानत देने के लिये अच्छी तरह से मारूँगा जिसने मेरा पैसा वापस नहीं किया।"

जब वह सेंट माइकिल को इस तरह गालियाँ दे रहा था तो एक बीस साल का नौजवान उसके पास आया और बोला — "बाबा आप यह क्या कर रहे हैं।"

अमीर आदमी बोला — "मैं इसे मार रहा हूँ क्योंकि इसने एक सूअर के बच्चे की जमानत दी थी जो अब मर गया है और अब यह झूठ बोल रहा है। इसने कहा था कि यह उसे दिया हुआ मेरा एक चाँदी का रूबल मुझे वापस करेगा पर इसने ऐसा नहीं किया।"

नौजवान बोला — "बाबा आप इसे मत मारिये मैं इसके बदले में आपको यह चाँदी का रूबल दे देता हूँ। और यह पवित्र मूर्ति आप मुझे दे दीजिये।"

"अगर तुम्हारी इच्छा है तो तुम इसे ले जाओ पर पहले मुझे चाँदी का रूबल दे दो।"

वह नौजवान तुरन्त ही अपने घर दौड़ा गया और अपने पिता से बोला — "पिता जी मुझे एक चाँदी का रूबल दे दीजिये।"

"किसलिये बेटा?"

उसने अपने पिता से कहा — "पिता जी मैं एक पवित्र मूर्ति खरीदना चाहता हूँ। यह रूबल मुझे उसे खरीदने के लिये चाहिये।" फिर उसने अपने साथ होने वाली घटना भी उन्हें बता दी कि किस

तरह से एक आदमी एक चाँदी के रूबल के लिये सेंट माइकिल की मूर्ति को पीट रहा था।

पिता बोला — "नहीं मेरे बेटे। हम जैसे गरीब आदमी के पास उस जैसे अमीर आदमी को देने के लिये चाँदी का रूबल कहाँ से आया।"

"नहीं पिता जी। मुझे एक रूबल दे दीजिये न।" उसने अपने पिता से उसके लिये तब तक विनती की जब तक वह उसे मिल नहीं गया। उसे ले कर वह जितनी जल्दी भाग सका उतनी जल्दी वहाँ भागा गया चाँदी का रूबल उस अमीर आदमी को दिया और उससे वह पवित्र मूर्ति ले ली।

उसने उसे धोया साफ किया और उसे सुगन्धित फूलों के बीच रख दिया। फिर वे वैसे ही रहते रहे जैसे वे पहले रह रहे थे।

इस नौजवान के तीन चाचा थे। तीनों अमीर सौदागर थे और हर तरह की वस्तु का व्यापार करते थे। वे जहाज़ में विदेश जाया करते थे जहाँ वे अपना सामान बेचते थे और पैसा कमा कर लाते थे।

एक दिन जब उसके चाचा लोग व्यापार के लिये विदेश जाने के लिये तैयार हो रहे थे तो उसने उनसे कहा "मुझे भी अपने साथ ले चलिये।"

उन्होंने पूछा — "तुम हमारे साथ क्यों जाना चाहते हो? हमारे पास तो बेचने के लिये सामान है पर तुम्हारे पास क्या है?"

"फिर भी आप मुझे अपने साथ ले चलिये।"

"पर तुम्हारे पास तो कुछ है ही नहीं।"

"मैं लकड़ी की पट्टी और बोर्ड बनाऊँगा और उन्हें ले चलूँगा।"

उसके चाचा उसके इस तरह के सामान की कल्पना के बारे में सोच कर ही हँस दिये पर जब उसने उनसे बहुत विनती और जिद की तो थक कर वे तैयार हो गये।

उन्होंने कहा — "पर देखना यह सामान बहुत सारा मत ले चलना क्योंकि हमारे जहाज़ पहले से ही काफी भरे हुए हैं।" तब उसने लकड़ी की पट्टियाँ और बोर्ड बनाये उन्हें जहाज़ पर चढ़ाया सेंट माइकिल की मूर्ति अपने साथ ली और वे चल दिये।

वे चलते रहे चलते रहे। वे कुछ दूर चले वे बहुत दूर चले कि वे एक और ज़ार के राज्य में आ पहुँचे। इस ज़ार के एक अकेली बेटी थी जो इतनी सुन्दर थी जिसकी सुन्दरता का वर्णन नहीं किया जा सकता। भगवान की इस सुन्दर दुनियाँ में उसके समान कोई और सुन्दर नहीं था और न ही कहानियों में उस जैसा सुन्दर और कोई मिलता था।

एक दिन वह ज़ारेवना नदी पर नहाने के लिये गयी। और बिना अपने आपको क्रौस किये हुए ही पानी में कूद गयी। इससे किसी बुरी आत्मा ने उसे पकड़ लिया। ज़ारेवना पानी से बाहर निकलते ही इतनी बुरी तरह से बीमार हो गयी कि कुछ कहा नहीं जा सकता। उसके माता पिता ने वह सब कुछ किया जो वे कर सकते थे।

अक्लमन्द आदमियों और स्त्रियों से भी जो कुछ हो सकता था उन्होंने किया पर सब बेकार।

कुछ ही दिनों में उसकी हालत और बिगड़ती गयी और वह मर गयी। तब ज़ार ने यह घोषणा करवायी कि लोग वहाँ आयें और उसकी लाश पर प्रार्थना करें जिससे उसमें से बुरी आत्मा निकल सके। जो भी यह कर देगा वह उसे अपनी आधी ताकत और आधा राज्य दे देगा।

अब क्या था लोग भीड़ में वहाँ आने लगे पर कोई भी उसकी लाश पर प्रार्थना नहीं कर सका। यह असम्भव था। क्योंकि हर शाम को एक आदमी चर्च उस पर प्रार्थना करने के लिये जाता था और हर सुबह उसकी हड्डियाँ समेटने के लिये किसी को जाना पड़ता था क्योंकि वहाँ उनके अलावा और कुछ बचता ही नहीं था।

ज़ार इस बात से बहुत गुस्सा था। उसने सोचा कि इस तरह से तो मेरे सारे आदमी मारे जायेंगे। तब उसने कहा कि जो कोई विदेशी सौदागर यहाँ से गुजरे वह यहाँ आ कर प्रार्थना करे और अगर वे प्रार्थना नहीं करेंगे तो उन्हें यहाँ से जाने नहीं दिया जायेगा।

सो विदेशी सौदागर भी वहाँ एक एक कर के जाने लगे। शाम को एक सौदागर उस चर्च में बन्द कर दिया जाता। अगले दिन वे आते और उसकी हड्डियाँ बटोर कर ले जाते।

आखिर चर्च में प्रार्थना करने की उस नौजवान के चाचाओं की बारी आयी। वे रोने लगे और चिल्लाने लगे "हम तो गये। भगवान ही हमारी सहायता करे।"

तब नौजवान के सबसे बड़े चाचा ने उससे कहा — "सुनो ओ सीधे लड़के। हालाँकि मरी हुई ज़ारेवना के शरीर पर प्रार्थना करने की आज मेरी बारी है पर अगर तुम मेरी जगह चर्च में चले जाओ और वहाँ रात गुजारो तो मैं तुम्हें अपना सारा जहाज़ दे दूँगा।"

नौजवान बोला — "नहीं। अगर वह मेरे भी टुकड़े टुकड़े कर देगी तब क्या होगा। मैं नहीं जाऊँगा।"

सेंट माइकिल बोले — "नहीं तुम जाओ और डरो नहीं। तुम चर्च के बिल्कुल बीच में खड़े हो जाना और अपने चारों तरफ अपनी लकड़ी की तख्तियाँ और बोर्ड की बाड़ लगा लेना।

एक टोकरी भर कर नाशपाती ले जाना। जब वह तुम्हारे ऊपर दौड़े तो वे नाशपातियाँ अपने चारों तरफ बिखेर देना। उसे उनको चुनने में सुबह हो जायेगी। पर तुम इस सारे समय अपनी प्रार्थना पढ़ते रहना। वह कुछ भी करे तुम अपना सिर उठा कर ऊपर मत देखना।"

जब रात हुई तो उसने अपनी तख्तियाँ और बोर्ड लिये एक टोकरी नाशपाती लीं और चर्च चल दिया। वहाँ पहुँच कर उसने अपने चारों तरफ तख्तियाँ और बोर्ड लगा लिये नाशपाती की टोकरी अपने पास रख ली और पार्थना पढ़नी शुरू कर दी।

जब काफी रात बीत गयी तो उसे कुछ आवाजें सुनायी पड़ीं। उसने सोचा “ओ लौर्ड यह सब क्या है। ज़ारेवना की अर्थी भी हिलने लगी। बैंग बैंग। और लो ज़ारेवना अपनी अर्थी से उठ कर उसके सामने आ गयी।

वह बोर्ड के ऊपर कूदी और नौजवान को पकड़ने की कोशिश की तो वह पीछे की तरफ गिर पड़ी। वह दोबारा कूदी पर दोबारा भी वह पीछे की तरफ गिर पड़ी।

तब उसने अपनी नाशपाती की टोकरी उठायी और उसकी नाशपातियों को चारों तरफ बिखरा दिया। वे नाशपातियाँ चर्च में चारों तरफ बिखर गयीं और वह उनको उठाने के लिये उनके पीछे भागती रही। इसे करते करते उसे सुबह हो गयी। मुर्गे की पहली बाँग के साथ ही वह अपनी अर्थी पर जा कर शान्त लेट गयी।

जब सुबह हुई तो लोग चर्च की सफाई करने के लिये आये और आशा कर रहे थे कि उस नौजवान की हड्डियाँ उठा कर ले जायेंगे पर लो वह तो वहाँ बैठा बैठा प्रार्थना पढ़ रहा था। यह खबर तो शहर भर में फैल गयी। लोग इसे सुन कर बहुत खुश हुए।

अगली रात उसके दूसरे चाचा की बारी थी। उसने भी उससे विनती की कि वह उसकी जगह चला जाये। उसने वहाँ एक रात तो गुजार ही ली थी तो अब वह दूसरी रात भी गुजार ही सकता था और इसके बदले में वह उसे अपना पूरा जहाज़ दे देगा।

पर वह बोला — "नहीं मैं नहीं जाऊँगा। मुझे डर लगता है।"

पर सेंट माइकिल ने कहा — "तुम डरो नहीं। तुम वहाँ जाओ। उस दिन की तरह से तुम अपने बोर्ड अपने चारों तरफ लगा लेना और तुम अपने साथ एक टोकरी गिरियाँ लेते जाना।

जब वह तुम्हारे ऊपर दौड़े तब वह गिरियाँ अपने चारों तरफ बिखरा देना। वह उन्हें सुबह मुर्गे की बाँग देने तक समेटती रहेगी। पर इस सारे समय तुम अपनी प्रार्थना पढ़ते रहना और कुछ भी हो जाये तुम ऊपर सिर उठा कर मत देखना।"

नौजवान ने ऐसा ही किया। उसने अपने बोर्ड उठाये एक टोकरी गिरियाँ लीं और चर्च में चला गया। वहाँ उसने प्रार्थना पढ़नी शुरू कर दी। उस रात की तरह से आधी रात के बाद कुछ आवाजें आयीं और सारा चर्च हिलने लगा।

उसका ताबूत हिलने लगा और लो वह उठ कर खड़ी हो गयी और सीधी उसकी तरफ दौड़ी। वह बहुत कूदी। वह बोर्ड से हो कर उसके पास आने ही वाली थी। वह हिस्स की आवाज कर रही थी। उसकी आँखें अंगारे जैसी लाल थीं और जल रही थीं। पर इसका कोई फायदा नहीं था।

वह अपनी प्रार्थना पढ़ता ही रहा पढ़ता ही रहा और उसकी तरफ एक बार भी नहीं देखा। उसने अपनी गिरियों की टोकरी उठायी और सारी गिरियाँ अपने चारों तरफ बिखेर दीं।

वह उनके पीछे भागी और सुबह मुर्गे की पहली बॉग तक उन्हें इकट्ठा करती ही रही। मुर्गे की पहली बॉग के साथ ही वह अपने ताबूत में शान्त लेट गयी और ताबूत का ढक्कन बन्द कर लिया। अगली सुबह चर्च की सफाई करने वाले आये तो देखा कि वह तो ज़िन्दा था।

अगली रात को उसे अपने तीसरे चाचा की जगह भी चर्च जाना पड़ा। यह सुन कर तो वह बहुत रोया और बोला — "उफ़ मैं क्या करूँ। इससे तो अच्छा था कि मैं पैदा ही न हुआ होता।"

पर सेंट माइकिल बोले — "तुम दुखी न हो। रोओ नहीं। आखीर में सब ठीक हो जायेगा। पहले की तरह से अपने चारों तरफ अपने बोर्ड की दीवार लगा लेना। अपने ऊपर पवित्र जल छिड़क लेना। और अपने आपको पवित्र अगरबत्ती से खुशबू दे लेना। साथ में मुझे भी लेते जाना इससे वह तुम्हें नहीं ले पायेगी।

जैसे ही वह अपने ताबूत में से उठे तुम उसके ताबूत में कूद जाना। वह जो कुछ भी तुमसे कहे और तुमसे कितनी भी विनती करे पर तुम उसे उसमें दोबारा मत जाने देना जब तक वह तुमसे यह न कहे "मेरे साथी"।"

सो वह तीसरे दिन भी चला गया। वहाँ जा कर वह बीच चर्च में जा कर खड़ा हो गया। अपने चारों तरफ बोर्ड की दीवार लगा ली। अपने चारों तरफ पौपी के बीज फैला दिये। पवित्र अगरबत्ती

से अपने आपको सुगन्धित कर लिया। और फिर अपनी प्रार्थना पढ़नी शुरू कर दी। वह उसे पढ़ता रहा पढ़ता रहा।

आधी रात के करीब उसने फिर से शोर सुना – फड़फड़ाहट गरज हिस्स और रोने की आवाजें। सारा चर्च काँप रहा था। चर्च की वेदी पर रखा हुआ मोमबत्ती लगाने वाला गिर पड़ा। वहाँ जो पवित्र मूर्तियाँ मुँह के बल गिर पड़ीं। ओ लौर्ड यह सब कितना भयानक था।

और फिर ताबूत में से आवाज आयी "बैंग बैंग" और ज़ारेवना उठ कर खड़ी हो गयी। वह अपना ताबूत छोड़ कर सारे चर्च में घूम आयी। फिर वह बोर्ड की दीवार की तरफ दौड़ी और उसे पकड़ना चाहा पर वह पीछे गिर पड़ी।

उसने कई बार कोशिश की पर वह उसे पकड़ न सकी और बार बार पीछे को गिर जाती थी। अब उसके मुँह से झाग निकलने लगे थे। हर पल उसका गुस्सा बढ़ता ही जा रहा था। वह उसे ढूँढती हुई चर्च में चारों तरफ घूम रही थी। इस बीच वह सेंट माइकिल की मूर्ति साथ में ले कर उसके ताबूत में जा कर लेट गया। वह सारे चर्च में उसे ढूँढती हुई अभी भी घूम रही थी।

वह चिल्लायी "अरे अभी तो वह यहीं था अब नहीं है। कहाँ गया।" वह फिर भागी पर फिर गिर पड़ी। वह फिर चिल्लायी "अरे अभी तो वह यहीं था अब नहीं है। कहाँ गया।" फिर वह

अपने ताबूत की तरफ भागी। वहाँ उसे देख कर उसने ताबूत में कूदना चाहा पर उसे वहाँ देख कर रुक भी गयी।

बोली — "यहाँ से बाहर निकलो। मैं अब तुम्हें पकड़ने की कोशिश नहीं करूँगी। बस इसमें से बाहर निकल आओ।"

पर उसने कोई जवाब नहीं दिया वह बस अपनी प्रार्थना करता रहा। फिर बोला मुर्गा पहली बार। वह बोली "बाहर निकलो मेरे साथी बाहर निकलो।"

यह सुन कर वह ताबूत में से बाहर निकल आया और फिर दोनों ने भगवान की प्रार्थना की। दोनों बहुत रोये और भगवान को धन्यवाद दिया क्योंकि उसने उन दोनों पर दया की थी।

सुबह होने पर बहुत सारे लोग चर्च में आये जिनमें आगे आगे ज़ार था। वे सोचते चले आ रहे थे कि उन्हें वह ज़िन्दा मिलेगा या फिर उन्हें उसकी हड्डियाँ मिलेंगी। पर लो वहाँ तो दोनों भगवान की पूजा कर रहे थे। ज़ार तो उन दोनों को ज़िन्दा और ठीक देख कर बहुत खुश हो गया।

उसके बाद चर्च में उनकी शानदार पूजा हुई। ज़ारेवना के ऊपर पवित्र जल छिड़का गया। उसका बैप्टाइज़ेशन भी दोबारा हुआ। बुरी आत्मा अब उसे छोड़ कर चली गयी।

ज़ार ने उस नौजवान को अपनी आधी ताकत और आधा राज्य दे दिया। सौदागर लोग अपने भतीजे के साथ अपने अपने जहाज़ में अपने देश लौट गये।

वे एक साथ रहे। समय गुजरता रहा। नौजवान अभी भी कुँआरा था। वह अभी भी इतना सुन्दर था कि उसे शब्दों में बखान नहीं किया जा सकता। ज़ार अभी भी अपनी बेटी के साथ अकेला रह रहा था।

धीरे धीरे ज़ारेवना कुछ दुखी रहने लगी। वह अब पहले की तरह नहीं रह गयी थी बहुत ही दुखी थी। ज़ार ने उससे पूछा "तुम इतनी दुखी क्यों हो?"

वह बोली — "पिता जी मैं दुखी नहीं हूँ।"

पर ज़ार उसे देखता रहता था वह उसे दुखी लग रही थी पर उसके लिये कोई सहायता नहीं थी। एक बार ज़ार ने उससे फिर पूछा — "क्या तुम बीमार हो?"

"नहीं पिता जी। पर मुझे खुद पता नहीं कि मुझे क्या हो गया है।"

कुछ दिन ऐसे ही चलता रहा जब तक ज़ार ने एक सपना नहीं देखा। सपने में उससे कहा गया कि "तुम्हारी बेटी उस नौजवान को बहुत प्यार करती है जिसने उसके अन्दर से बुरी आत्मा को बाहर निकाला है।"

तब ज़ार ने उससे पूछा — "क्या तुम उस नौजवान से प्यार करती हो?"

ज़ारेवना ने जवाब दिया — "हाँ पिता जी।"

ज़ार ने कहा — "तब तुमने मुझसे यह बात पहले क्यों नहीं कही मेरी बेटी?"

तब उसने अपने नौकरों को उस नौजवान के राज्य भेजा और कहा कि उन्हें वहाँ वह नौजवान मिल जायेगा जिसने ज़ारेवना को ठीक किया था सो उसे तुम जल्दी से जल्दी यहाँ ले कर आओ।

वे लोग चले गये और उसे ले कर ज़ार के पास आ गये। वह अपने साथ वे लकड़ी के तख्ते और बोर्ड भी साथ ले कर आया था।

ज़ार उससे मिला। उसने उसके सारे बोर्ड खरीद लिये और लो जब उन्हें तोड़ा गया तो उनमें से बहुत सारे बहुमूल्य हीरे जवाहरात निकल पड़े। ज़ार उसे अपने घर ले गया और ज़ारेवना से उसकी शादी कर दी। फिर सब खुशी खुशी रहे।

6 ट्रैमसिन, चिड़िया ज़ार और समुद्र की सुन्दरी नस्तासिया की कहानी[21]

एक बार की बात है कि एक आदमी और एक स्त्री रहते थे। उनके एक बहुत छोटा सा बेटा था। गरमियों में वे खेतों से मक्का काटा करते थे।

एक दिन जब उन्होंने अपने बेटे को एक मक्का की बाल के गठ्ठर के पास लिटा दिया एक गरुड़ ने नीचे छलाँग लगायी और बच्चे को पकड़ कर उसे जंगल में ले गया और अपने घोंसले में लिटा दिया।

इस समय तीन डाकू उस जंगल में घूम रहे थे। उन्होंने घोंसले में से आती हुई एक बच्चे के रोने की आवाज सुनी। सो वे उस ओक के पेड़ के पास गये जिस पर चिड़िया का घोंसला था। उन्होंने आपस में कहा — "चलो इस पेड़ को काट कर गिरा देते हैं और इस बच्चे को मार देते हैं।"

एक बोला — "नहीं नहीं यह ठीक नहीं है। हमें ऊपर चढ़ कर बच्चे को ज़िन्दा ही नीचे ले आना चाहिये।" सो वह पेड़ के ऊपर चढ़ गया और बच्चे को ज़िन्दा ही नीचे ले आया। अब वे तीनों मिल कर उसे पालने लगे।

[21] The Story of Tremsin, the Bird Zhar, and Nastasia, the Lovely Maid of the Sea. (Tale No 6)

उन्होंने उसका नाम ट्रैमसिन रख दिया। वहाँ उनके पास पल बढ़ कर वह जवान हो गया। उसके बाद उन्होंने उसे एक घोड़ा दे दिया।

घोड़ा दे कर उन्होंने उससे कहा — "अब तुम दुनियाँ में कहीं भी जाओ और अपने माता पिता को ढूँढो।"

सो ट्रैमसिन दुनियाँ में घूमने निकल पड़ा। वह अपना घोड़ा घास के मैदानों[22] में दूर तक ले गया। घोड़े ने उससे कहा — "जब हम थोड़ा और दूर चले जायेंगे तो तुम्हें ज़ार चिड़िया का एक पंख दिखायी देगा। तुम उसे बिल्कुल मत छूना नहीं तो तुम बहुत मुश्किल में पड़ जाओगे।"

इसके बाद वे और आगे चलते चले गये। उन्होंने दस ज़ारों के राज्य पार किये। उसके बाद वे एक और राज्य में आये जो तीसवीं जमीन में था जहाँ वह पंख पड़ा हुआ था। नौजवान ने सोचा "क्यों न मैं यह पंख उठा लूँ जो इतनी दूर से भी चमक रहा है।"

वह पंख के पास गया। वह पंख इतनी ज़ोर से चमक रहा था कि उसका वर्णन नहीं किया जा सकता यहाँ तक कि उसके बारे में सोचा भी नहीं जा सकता और कहानियों में भी नहीं आता। ट्रैमसिन ने वह पंख उठाया और एक शहर में जा पहुँचा।

[22] Translated for the word "Steppe" – a large area of flat unforested grassland in south-eastern Europe or Siberia.

उस शहर में एक बहुत ही अमीर कुलीन आदमी रहता था। ट्रैमसिन उस अमीर कुलीन आदमी के घर के अन्दर चला गया और वहाँ जा कर उससे कहा — "क्या आप मुझे अपने यहाँ मजदूर रखेंगे?"

कुलीन आदमी ने उसे देखा तो देखा कि वह तो बहुत सुन्दर था और मजबूत था सो वह बोला — "हाँ हाँ क्यों नहीं।"

और उसने उसे अपना नौकर रख लिया। इस कुलीन आदमी के पास कई नौकर थे वे उसके घोड़ों की देखभाल करते थे और जब भी वह शिकार के लिये जाता था तो वे उन्हें चमकाते थे। ट्रैमसिन को भी उन्हीं के साथ रख दिया गया और वह भी उन्हीं की तरह उस आदमी के घोड़ों की देखभाल करने लगा।

उस आदमी के नौकरों ने देखा कि वे अपने अपने घोड़ों को इतनी अच्छी तरह से नहीं चमका पाते थे जितना कि ट्रैमसिन अपने घोड़े को चमका लेता था।

तो एक दिन उन्होंने उसे बहुत पास से देखा कि वह इसके लिये क्या करता है तो उन्होंने देखा कि जब ट्रैमसिन ने घोड़े को साफ कर लिया तो एक बार उसे चिड़िया ज़ार के पंख से सहला दिया। ऐसा करते ही उस घोड़े के बाल चाँदी जैसे चमक उठे।

यह देख कर वे नौकर उससे जलने लगे। उन्होंने आपस में बात की कि "किस तरह से हम इसे इस दुनियाँ से हटा दें। हम कुछ

ऐसा करेंगे कि हम इसे कोई ऐसा मुश्किल काम देंगे जिसे यह न कर सके फिर हमारा मालिक इसे नौकरी से निकाल देगा।"

सो वे अपने मालिक के पास गये और उससे कहा — "मालिक। ट्रैमसिन के पास चिड़िया ज़ार का एक पंख है। उसका कहना है कि अगर वह चाहे तो वह चिड़िया ज़ार को भी ला सकता है।"

यह सुन कर मालिक ने ट्रैमसिन को बुलवाया और उससे कहा — "मेरे सईस कहते हैं कि अगर तुम चाहो तो मेरे लिये चिड़िया ज़ार ला सकते हो।"

ट्रैमसिन बोला — "नहीं जनाब नहीं। मैं नहीं ला सकता।"

मालिक बोला — "मुझे ऐसा जवाब मत दो। अगर तुम ना करोगे तो मेरे पास एक तलवार है जिससे मैं तुम्हारा सिर एक कद्दू की तरह काट दूँगा।"

यह सुन कर तो ट्रैमसिन तो रो पड़ा और सीधा अपने घोड़े के पास गया और बोला — "मेरे मालिक ने मुझे एक बहुत ही मुश्किल काम करने के लिये सौंपा है जो मेरे सब किये कराये पर पानी फेर देगा।"

घोड़ा बोला — "क्या है वह काम?"

नौजवान बोला — "चिड़िया ज़ार को लाना है।"

घोड़ा बोला — "यह कोई बड़ा काम नहीं है यह तो चुटकी बजाते का काम है। चलो घास के मैदान में चलते हैं। वहाँ मैं चारों

तरफ देखूँगा और तुम बिल्कुल नंगे हो कर घास में लेट जाना। चिड़िया ज़ार खाने के लिये नीचे कूद लगायेगी।

जब तक वह तुम्हारे शरीर के चारों तरफ पंजे मारती रहे तब तक तुम उसे मत छूना पर अगर वह तुम्हारी ऑखों पर अपना पंजा मारे उसे उसकी टॉगों से पकड़ लेना।"

सो जब वे जंगली घास के मैदान में पहुँचे तो ट्रैमसिन तो नंगा हो कर घास में लेट गया और उसका घोड़ा इधर उधर घूमने लगा। तुरन्त ही चिड़िया ज़ार कूद लगा कर अपने खाने के लिये नीचे आयी और उसके शरीर के आसपास अपनी चोंच मारने लगी।

पर आखिर वह उसकी ऑखें निकालने के लिये आयी तो उसने उसे उसकी टॉगों से पकड़ लिया। फिर वह घोड़े पर चढ़ा और उस चिड़िया को ला कर अपने मालिक को दे दी।

अब तो उसके साथी उससे और ज़्यादा जलने लगे। उन्होंने फिर आपस में बात की — "अब हम उसके लिये ऐसा कौन सा काम ढूँढे जिसे वह कर ही न सके ताकि हम उससे बच जायें।"

बहुत सोच विचार के बाद वे मिल कर मालिक के पास गये और उससे कहा — "ट्रैमसिन कहता है कि चिड़िया ज़ार पकड़ना तो कोई मुश्किल काम नहीं था पर वह कहता है कि वह तो समुद्र की तीन गुनी सुन्दर नस्तासिया को भी यहाँ ला सकता है।"

यह सुन कर कुलीन आदमी ने फिर से ट्रैमसिन को बुला भेजा और उससे कहा — "देखो तुम मेरे लिये चिड़िया ज़ार ले कर आये

यह तो तुमने अच्छा किया पर अब तुम मेरे लिये समुद्र की तीन गुनी सुन्दर नस्तासिया को ला कर दो।”

ट्रैमसिन बोला — “पर जनाब मैं उसे नहीं ला सकता।”

मालिक बोला — “देखो मुझे इस तरह का जवाब नहीं चाहिये। तुम्हें पता होना चाहिये कि मेरे पास तलवार है जिससे मैं तुम्हारा सिर कद्दू की तरह काट सकता हूँ।”

ट्रैमसिन रोता रोता फिर अपने घोड़े के पास पहुँचा।

घोड़े ने पूछा — “आज तुम क्यों रोते हो।”

तो नौजवान बोला — “मैं क्यों न रोऊँ। मेरे मालिक ने मुझे एक ऐसा मुश्किल काम थमा दिया है जो हो ही नहीं सकता।”

“और वह क्या काम है?”

“उन्होंने कहा है कि मुझे समुद्र की तीन गुनी सुन्दर नस्तासिया को ले कर आना है।”

घोड़ा ज़ोर से हँसा और बोला — “यह कोई मुश्किल काम नहीं है यह तो बस चुटकी बजाते का काम है। तुम समुद्र के किनारे सफेद तम्बू लगवाओ। और कुछ छोटी छोटी चीज़ें खरीद लो। शराब और वाइन की बोतलें खरीद लो। वह तीन गुनी सुन्दरी नस्तासिया वहाँ आयेगी और तुम्हारी वे छोटी छोटी चीज़ें खरीद लेगी। तब तुम उसे ले जा सकते हो।”

कुलीन आदमी ने ऐसा ही किया। उसने समुद्र के किनारे सफेद तम्बू लगवा दिये। उसने कुछ रूमाल स्कार्फ खरीद कर उनको सुन्दर

ढंग से सजा कर रख दिया। बहुत सारी ब्रैन्डी और वाइन सजा कर रख दी।

तब ट्रैमसिन समुद्र की तरफ अपने तम्बू में गया तो रास्ते में उसके घोड़े ने कहा — "जब मैं उसको ढूँढने जाऊँ तब तुम यहाँ सोने का बहाना करना। तब वह समुद्र की तीन गुनी सुन्दर नस्तासिया यहाँ आयेगी और तुमसे पूछेगी कि "ये चीज़ें कितने की हैं।"

पर तुम चुप रहना कुछ नहीं बोलना। फिर वह शराब और वाइन चखेगी तो वह तम्बू में ही सो जायेगी। उस समय तुम उसे आसानी से पकड़ पाओगे। फिर उसे कस कर पकड़ लेना।"

सो ट्रैमसिन तम्बू में सोने का बहाना कर के लेट गया। तभी समुद्र से समुद्र की तीन गुनी सुन्दर नस्तासिया वहाँ आयी और नौजवान से पूछने लगी — "ओ सौदागर। तुम्हारी ये चीज़ें कितने की हैं।"

पर नौजवान ने उसे कोई जवाब नहीं दिया। उसने यह सवाल उससे बार बार पूछा पर कोई जवाब न पा कर वह तम्बू के और अन्दर चली गयी

वहाँ जा कर उसने वाइन चखी तो वह तो बहुत अच्छी थी फिर उसने शराब चखी वह उससे भी ज़्यादा अच्छी थी। चखते चखते वह उसे पीने लगी। पहले थोड़ी पी फिर ज़्यादा पी और फिर सो गयी।

तब ट्रैमसिन ने उसे उठा कर अपने पीछे घोड़े पर बिठाया और उसे मालिक के पास ले गया। मालिक तो उसे देख कर बहुत ही खुश हुआ और उसकी बहुत बहुत प्रशंसा करने लगा।

पर समुद्र की तीन गुनी सुन्दर नस्तासिया ने कहा — "देखो। तुमको चिड़िया ज़ार का पंख मिला है। चिड़िया ज़ार खुद भी मिली है और अब तुमने मुझे भी पा लिया है अब तुम मेरे लिये समुद्र में से एक छोटा सा मूँगे का हार और ला दो।"

ट्रैमसिन बेचारा फिर अपने वफादार घोड़े के पास पहुँचा और बहुत ज़ोर ज़ोर से रोने लगा और उसे सारी कहानी सुनायी तो घोड़ा बोला — "मैंने तुमसे कहा था न कि चिड़िया ज़ार का पंख मत उठाना नहीं तो मुसीबत में फँस जाओगे। चलो रोओ नहीं। यह भी कोई मुश्किल काम नहीं है यह भी पलक झपकते ही हो जायेगा।"

सो वे दोनों समुद्र के किनारे घूमने चले गये। घोड़ा बोला "मैं तो यहाँ घूमने जाता हूँ और तुम यहाँ तब तक इन्तजार करो जब तक कि एक केंकड़ा समुद्र के बाहर नहीं निकलता है। जब वह बाहर निकले तो उससे कहना कि "मैं तुम्हें पकड़ूँगा।"

सो ट्रैमसिन ने अपने घोड़े को तो घूमने दिया और खुद वह वहीं बैठ कर केंकड़े के बाहर निकलने का इन्तजार करने लगा। कुछ देर में ही एक केंकड़ा समुद्र में से बाहर निकला।

उसे देखते ही वह केंकड़े से बोला — "मैं तुझे पकड़ लूँगा।"

केंकड़ा बोला — “नहीं तुम मुझे मत पकड़ो। तुम मुझे समुद्र में वापस जाने दो मैं तुम्हारी बहुत बड़ी सेवा करूँगा।”

नौजवान बोला — “ठीक है मैं तुम्हें छोड़ दूँगा पर तुम मुझे समुद्र में से समुद्र की तीन गुनी सुन्दर नस्तासिया की मूँगे की माला ला कर दो।” इस शर्त के साथ उसने उसे समुद्र में वापस जाने दिया।

तब केंकड़े ने छोटे छोटे केंकड़ों को इकट्ठा किया। उन्होंने बहुत सारे मूँगे इकट्ठे किये और उन्हें समुद्र के किनारे ले आये और उन्हें ट्रैमसिन को ला कर दे दिये।

तभी उसका वफादार घोड़ा दौड़ता दौड़ता आया ट्रैमसिन तुरन्त ही उस घोड़े पर चढ़ गया और वे मूँगे समुद्र की तीन गुनी सुन्दर नस्तासिया को ले जा कर दे दिये।

नस्तासिया बोली — “देखो। तुमको चिड़िया ज़ार का पंख मिला है। चिड़िया ज़ार खुद भी मिली है तुमने मुझे भी पा लिया है तुमने मेरे लिये समुद्र में से एक छोटा सा मूँगे का हार भी ला दिया है। अब मेरे लिये समुद्र में से जंगली घोड़े भी ला दो।”

यह सुन कर तो ट्रैमसिन बहुत ही दुखी हो गया पर वह फिर से रोता हुआ अपने वफादार घोड़े के पास गया और अपनी कहानी कही तो घोड़ा बोला — “इस बार यह कोई छोटा मोटा काम नहीं है यह वाकई बहुत मुश्किल काम है। तुम अपने मालिक के पास जाओ

और उससे कहो कि वह बीस खालें चालीस पौंड तारकोल चालीस पौंड रुई और चालीस पौंड बाल खरीदे।”

सो ट्रैमसिन अपने मालिक के पास गया और उससे जरूरी सामान खरीदने के लिये कहा। उसके मालिक ने उसका बताया हुआ सारा सामान खरीद कर उसे दे दिया। ट्रैमसिन ने इस सब सामान को अपने घोड़े पर लादा और दोनों समुद्र की तरफ चल दिये।

जब वे समुद्र के किनारे पर आ गये तो घोड़े ने कहा — “मेरे ऊपर खालें तारकोल और रुई फैला दो और देखो उन्हें इस तरह से फैलाना – पहले एक खाल, उसके ऊपर दो पौंड तारकोल, उसके ऊपर दो पौंड रुई। इस तरह उन्हें तब तक बिछाओ जब तक वे सब खत्म न हो जायें।”

ट्रैमसिन ने वैसा ही किया। घोड़ा बोला — “अब मैं समुद्र में कूदता हूँ। जब तुम एक लाल लहर किनारे की तरफ आते देखो तो तुम यहाँ से भाग जाना और उसे निकल जाने देना। उसके बाद फिर एक सफेद लहर आयेगी तो किनारे पर बैठ जाना और उसे ध्यान से देखते रहना।

तब मैं समुद्र से बाहर निकलूँगा और फिर मेरे पीछे सारे घोड़े बाहर निकलेंगे। तब तुम घोड़े के बालों से उस घोड़े को मारना जो ठीक मेरे बाद निकले। फिर वह तुम्हारे लिये कमजोर पड़ जायेगा और तुम्हें उसे काबू करना आसान रहेगा।”

इसके बाद वह वफादार घोड़ा समुद्र में कूद गया और ट्रैमसिन समुद्र के किनारे बैठ गया। घोड़ा एक बागीचे की तरफ तैर गया जो समुद्र में से ऊपर उठा था। वहाँ समुद्र के घोड़े चर रहे थे।

जब नस्तासिया के ताकतवर घोड़े ने उसे और उन खालों को देखा जिन्हें वह ले जा रहा था तो वह उसके पीछे बड़ी तेज़ी से भागा। सारे के सारे घोड़े उसके पीछे भाग लिये। वे ट्रैमसिन के घोड़े और खालों को समुद्र के अन्दर ले गये और उसका पीछा करते रहे।

तब नस्तासिया के ताकतवर घोड़े ने ट्रैमसिन के घोड़े को पकड़ लिया और उसकी एक खाल फाड़ दी और उसे अपने दाँतों से काटने लगा। जैसे जैसे वह भागता जा रहा था वह उसके टुकड़े करता जा रहा था।

फिर उसने उसे दोबारा पकड़ लिया और उसकी दूसरी खाल भी फाड़ ली और उसके भी टुकड़े करता चला गया जैसे उसने पहली खाल के किये थे। इस तरह से वह सत्तर मील तक भागा चला गया जब तक उसने नस्तासिया के घोड़े के ऊपर रखी सारी खालों को नहीं फाड़ दिया और उनके टुकडे टुकड़े नहीं कर दिये।

पर ट्रैमसिन वहीं समुद्र के किनारे पर ही बैठा रहा जब तक उसे सफेद लहर आती दिखायी नहीं दे गयी। उस सफेद लहर के पीछे उसका अपना घोड़ा था और उसके पीछे तीन गुनी सुन्दर नस्तासिया

का तीन गुना भयानक घोड़ा था और उसके पीछे बहुत सारे घोड़े थे।

उसे देखते ही ट्रैमसिन ने बीस पौंड बाल से पूरी ताकत से उसके सिर पर मारा। उसके मारते ही वह घोड़ा शान्त खड़ा हो गया। ट्रैमसिन ने तुरन्त ही उसके ऊपर लगाम डाल दी सवार हुआ और उसे और उसके सारे घोड़ों को तीन गुनी सुन्दर नस्तासिया के पास ले गया।

नस्तासिया ने उसकी ताकत की बहुत तारीफ की और उससे कहा — "तुमको चिड़िया ज़ार का पंख मिला है। चिड़िया ज़ार खुद भी मिली है तुमने मुझे भी पा लिया है तुमने मेरे लिये समुद्र में से एक छोटा सा मूँगे का हार भी ला दिया है। समुद्र में से जंगली घोड़े भी ला दिये।

अब तुम मेरी घोड़ी का दूध निकाल कर उन्हें तीन बर्तनों में रखो जिससे कि एक बर्तन में वह उबलता हुआ रहे दूसरे बर्तन में वह गुनगुना रहे और तीसरे बर्तन में बर्फ की तरह ठंडा रहे।"

यह सुन कर ट्रैमसिन एक बार फिर से रोता हुआ अपने वफादार घोड़े के पास पहुँचा तो घोड़े ने पूछा — "अब क्या बात है। क्यों रोते हो?"

ट्रैमसिन रोते रोते बोला — "क्या करूँ अगर मैं रोऊँ नहीं तो। तीन गुनी सुन्दर नस्तासिया ने फिर से मुझे एक मुश्किल काम सौंप दिया है जो नहीं हो सकता। वह यह कि अब मुझे उसकी घोड़ी का

दूध निकाल कर उन्हें तीन बर्तनों में रखना है जिससे कि एक बर्तन में वह उबलता हुआ रहे दूसरे बर्तन में वह गुनगुना रहे और तीसरे बर्तन में बर्फ की तरह ठंडा रहे।"

घोड़ा बोला — "ओहो। यह कोई खास मुश्किल काम नहीं है। यह तो बहुत ही छोटा सा काम है। मैं उसकी घोड़ी को सहलाऊँगा तो वह घोड़ी दूध देगी। तुम उस घोड़ी का दूध तीन बर्तनों में इकट्ठा कर लेना जब तक वे बर्तन भर नहीं जाते।"

ट्रैमसिन ने ऐसा ही किया। उसने तीन बर्तन भर कर घोड़ी का दूध दुह लिया। उसके पहले बर्तन में दूध उबलता गर्म था दूसरे बर्तन का दूध गुनगुना गर्म था और तीसरे बर्तन का दूध बर्फ की तरह ठंडा था।

जब सब तैयार हो गया तो तीन गुनी सुन्दर नस्तासिया ने ट्रैमसिन से कहा — "अब तुम पहले बर्फ से ठंडे दूध में कूदो उसके बाद गुनगुने दूध में कूदो और फिर उबलते दूध में कूदो।"

ट्रैमसिन पहले ठंडे दूध वाले बर्तन में कूदा फिर वह गुनगुने दूध वाले बर्तन में कूदा और फिर गर्म दूध वाले बर्तन में कूदा। पहले बर्तन में से वह बूढ़ा बन कर निकला। दूसरे बर्तन में से वह एक नौजवान बन कर निकला और तीसरे बर्तन में से तो वह इतना सुन्दर बन कर निकला जिसकी सुन्दरता को तो लेखनी भी नहीं लिख सकती कोई कहानी भी नहीं कह सकती।

उसके बाद तीन गुनी सुन्दर नस्तासिया उन बर्तनों में कूदी। वह भी उसी तरीके से ठंडे बर्तन में से एक बुढ़िया की शक्ल निकली। गुनगुने दूध में से वह एक नौजवान लड़की के रूप में निकली और फिर गर्म दूध के बर्तन में से तो इतनी सुन्दर लड़की के रूप में निकली जिसकी सुन्दरता को तो लेखनी भी नहीं लिख सकती कोई कहानी भी नहीं कह सकती।

उसके बाद नस्तासिया ने कुलीन आदमी को भी उन बर्तनों में कूदने के लिये कहा। तो वह भी उसी तरीके से ठंडे बर्तन में से एक बूढ़े की शक्ल में निकला। गुनगुने दूध में से वह एक नौजवान के रूप में निकला और फिर गर्म दूध के बर्तन में कूदा तो तुरन्त ही फट गया।

ट्रैमसिन ने तीन गुनी सुन्दर नस्तासिया से शादी कर ली। फिर वे बहुत समय तक खुशी खुशी रहे। कुलीन आदमी के सारे मकान जायदाद अब उनके थे। बुरे नौकरों को उन्होंने निकाल दिया था।

7 साँप पत्नी[23]

एक बार की बात है एक भला आदमी था। उसके यहाँ एक मजदूर काम करता था जो कभी लोगों के पास नहीं बैठता था। उसके साथियों से जो हो सकता था वह सब कुछ उन्होंने कर लिया था पर वे उसे कभी अपने साथ नहीं ले जा सके।

कभी उन्होंने उससे सराय में चलने के लिये भी कहा पर वहाँ भी वे उसे बहुत देर तक नहीं रोक सके। वह हमेशा ही जंगलों में अकेला ही घूमता रहता।

एक दिन हमेशा की तरह वह जंगल में घूम रहा था। यह जंगल किसी भी गाँव से या फिर किसी भी बस्ती से काफी दूर था कि उसे एक बहुत बड़ा साँप दिखायी दिया जो लहराता हुआ उसी की तरफ आ रहा था।

साँप उससे बोला — "मैं तुझे यहीं और इसी समय खाऊँगा।"

मजदूर जंगल के अकेलेपन का आदी था सो बोला — "अगर तुम्हारी खाने की इच्छा है तो खाओ।"

यह सुन कर साँप बोला — "नहीं। मैं तुझे नहीं खाऊँगा। बस तू जो मैं चाहता हूँ वह कर दे।" कह कर साँप ने उसे बताया कि उसे क्या करना था।

[23] The Serpent Wife. (Tale No 7)

उसने कहा — "तुम अभी घर लौट जाओ तो तुम अपने मालिक को गुस्सा पाओगे क्योंकि तुम घर से बहुत देर तक अनुपस्थित रहे हो और वहाँ उसके पास उसका काम करने के लिये कोई नहीं था।

इससे क्या हुआ कि उसका अनाज खेत में ही खड़ा रह गया। तो अभी जब वह तुम्हें देखेगा तो तुमसे वह अपने अनाज की बालें लाने के लिये कहेगा। इस काम में मैं तुम्हारी सहायता करूँगा।

तुम अपनी गाड़ी ठीक से भर लेना पर सारी बालों के गट्ठरों को मत भरना एक छोटा सा गट्ठर वहीं छोड़ जाना। उससे ज़्यादा छोड़ने की जरूरत नहीं है पर उतना छोड़ जाना।

फिर तुम अपने मालिक से विनती करना कि वह इस गट्ठर को तुम्हें तुम्हारी मजदूरी के रूप में दे दे। उससे पैसे मत लेना बस केवल अनाज की बालों का गट्ठर ही लेना।

जब तुम्हारा मालिक यह गट्ठर तुम्हें दे दे तो तुम उसे जला देना। उसमें से एक सन्दर स्त्री निकलेगी उसे तुम अपनी पत्नी बना लेना।"

मजदूर ने उसका कहा माना और सीधा घर वापस चला गया। उसके साथ वैसा ही हुआ जैसा साँप ने कहा था। उसने अनाज के सारे गट्ठर बड़ी सँभाल कर गाड़ी में भर लिये।

वे इतने सारे थे कि उनके बोझ से उसकी गाड़ी भी चटक गयी। जब वह सारा अनाज घर ले कर आया तो उसने मालिक से

कहा कि वह एक बचा हुआ गठ्ठर अपनी मजदूरी के रूप में चाहता है।

मजदूर ने अपनी मजदूरी के रूप में पैसे लेने के लिये मना कर दिया। उसने उससे वही गठ्ठर माँगा जो वह खेत में छोड़ आया था।

उसके मालिक ने उसे वह गठ्ठर दे दिया। वह फिर से खेत में चला गया और जैसा कि साँप ने कहा था वहाँ जा कर उस गठ्ठर को जला दिया। तुरन्त ही उसमें से एक सुन्दर स्त्री निकल पड़ी। मजदूर उसे अपने घर ले गया और उससे शादी कर ली।

अब वह एक ऐसी जगह ढूँढने लगा जहाँ वह अपने लिये एक झोंपड़ी बना सके। उसके मालिक ने उसे थोड़ी सी जगह दे दी जहाँ वह अपनी झोंपड़ी बना सकता था। उसने वहाँ अपनी झोंपड़ी बना ली।

उसकी पत्नी ने उसे झोंपड़ी बनाने में इतनी ज़्यादा सहायता की कि जैसे उसने उसे हाथ ही न लगाया हो। उसकी वह झोंपड़ी बहुत जल्दी ही बन गयी और उसमें वह सब कुछ भी जल्दी ही आ गया जिसकी उन्हें जरूरत थी।

आदमी की तो कुछ समझ में ही नहीं आया। वह तो बस उसे चारों तरफ से देख देख कर आश्चर्य ही करता रहा। जिधर भी वह देखता उधर ही उसे सारी चीज़ें ठीक और इस्तेमाल करने के लिये तैयार नजर आतीं। उसके घर से अच्छा घर उस गाँव में और कोई नहीं था।

अब वह उस घर में शान्ति से और धन धान्य सहित जितने दिनों तक ज़िन्दा रहता रह सकता था अगर उसकी इच्छाऐं अपनी सीमा से आगे न बढ़ी होतीं।

उसके पास अनाज के तीन खेत खड़े हुए थे। तो एक दिन जब वह घर आया तो उसके मजदूरों ने उसे बताया — "मालिक आपके खेतों में अनाज पका हुआ तो खड़ा है पर अभी कटा नहीं है।"

अनाज काटने का मौसम आ रहा था। उसकी पत्नी को उसके खेतों की देखभाल करनी थी और अनाज अभी भी कटा नहीं था। उसने सोचा "यह क्या बात है?" गुस्से में वह चिल्लाया "मैं देखता हूँ यह कैसे होता है। जो साँप होता है वह पहले साँप ही होता है।"

घर आते आते तो उसका गुस्सा बहुत ही बढ़ गया। वह आपे से बाहर हो गया और यह गुस्सा उसे अपनी पत्नी पर बस अनाज न कटने की वजह से था।

जब वह घर पहुँचा तो सीधा अपने कमरे मे लेटने के लिये चला गया। उसकी पत्नी का कहीं पता नहीं था बस वहाँ तो तकिये के बीच में एक बड़ा सा साँप कुंडली मारे बैठा था। तब उसने अपने मन में सोचा कि एक बार उसकी पत्नी ने उससे कहा था कि "याद रखना मुझे कभी साँप नहीं कहना। अगर तुमने कहा तो तुम अपनी पत्नी को खो दोगे।"

यह बात उसके दिमाग में अब आयी पर अब तो बहुत देर हो चुकी थी। जो कुछ उसने कह दिया था उसे तो वापस नहीं लिया जा

सकता था। फिर उसने सोचना शुरू किया कि "उसकी पत्नी कितनी अच्छी थी। कैसे उसने उसे खुद ही ढूँढा था।

कैसे वह उसकी सेवा में अक्सर खड़ी रहती थी। कैसे उसने उसका कितना सारा भला किया था और फिर भी वह अपनी जबान को रोक नहीं सका। अब इसका परिणाम यह होगा कि उसे अब ज़िन्दगी भर बिना पत्नी के ही रहना पड़ेगा।"

यह सोचते सोचते उसका दिल बहुत भारी हो गया और जो नुकसान उसने अपने आप ही अपना कर लिया था उसकी वजह से वह ज़ोर ज़ोर से रोने लगा।

साँप बोला — "अब और मत रोओ। जो होना होता है वह तो होता ही है। क्या तुम इसलिये दुखी हो कि तुम्हारा अनाज खेत में अभी भी खड़ा हुआ है? जा कर अपने अनाजघर में देखो सारा अनाज वहाँ कटा रखा है। क्या मैं उसे घर ले कर नहीं आया और मैंने उसमें से दाना नहीं निकाला और सब कुछ ठीक से नहीं रखा? अब मुझे वहाँ चले जाना चाहिये जहाँ तुम मुझे सबसे पहले मिले थे।"

यह कह कर वह वहाँ से रेंग गया और मजदूर सारे रास्ते रोता हुआ उसके पीछे पीछे ऐसे चला जैसे कोई मरे हुए के लिये रोता

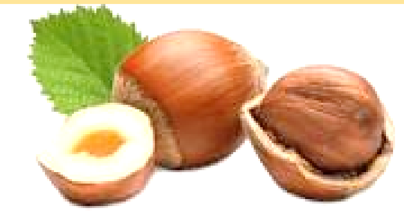

जाता है। जब वे जंगल पहुँचे तो साँप रुक गया और एक हैज़ल नट के पेड़ के नीचे कुंडली मार कर बैठ गया।

तब उसने मजदूर से कहा — "अब तुम मुझे एक बार चूमो पर ध्यान रखना कि मैं तुम्हें काटूँ नहीं।"

सो उसने उसे एक बार चूमा तो वह एक डाल से जा कर लिपट गया और उससे पूछा — "अब तुम्हें कैसा महसूस हो रहा है?"

वह बोला — "जिस समय मैंने तुम्हें चूमा तो मुझे ऐसा लगा जैसे मुझे वह सब पता चल रहा हो जो इस दुनियाँ में हो रहा हो।"

साँप बोला — "अब तुम मुझे दूसरी बार चूमो।"

आदमी ने उसे दूसरी बार चूमा तो उसने फिर पूछा — "अब तुम्हें कैसा महसूस हो रहा है?"

आदमी बोला — "इस बार मुझे ऐसा लगा जैसे मैं वे सारी भाषाऐं जानता हूँ जो दुनियाँ भर के लोग बोलते हैं।"

साँप बोला — "अब तुम मुझे तीसरी बार चूमो पर यह आखिरी बार होगा।"

आदमी ने उसे तीसरी बार चूमा तो साँप ने फिर पूछा — "अब तुम्हें कैसा महसूस हो रहा है?"

आदमी बोला — "अब मुझे लग रहा है कि जैसे मैं वह सब कुछ जानता हूँ जो धरती के नीचे हो रहा है।"

साँप बोला — "अब तुम ज़ार के पास जाओ तो वह तुम्हें तुम्हारे ज्ञान के लिये अपनी बेटी दे देगा।" इसके बाद साँप पेड़ से उतरा और पेड़ के नीचे गायब हो गया। उधर आदमी ज़ार के पास गया और उसकी बेटी से शादी कर ली।

8 बदकिस्मत डैनियल की कहानी[24]

एक बार की बात है कि एक नौजवान था जिसका नाम बदकिस्मत डैन[25] था। वह जहाँ कहीं भी जाता था वह जो कुछ भी करता था वह जिसके लिये भी काम करता था उसका कोई अच्छा परिणाम नहीं निकलता था। वह पानी की तरह से फैल जाता था।

एक दिन वह एक नये आदमी के पास काम करने के लिये गया। उसने कहा — "मैं आपके पास बोये हुए गेहूँ के खेत के एक टुकड़े के लिये पूरे एक साल काम करूँगा।"

उसका मालिक राजी हो गया और उसे काम पर रख लिया गया। उसने अपने खेत में गेहूँ बो दिया और उसका गेहूँ बड़ी तेज़ी से बढ़ने लगा।

जबकि उसके मालिक का गेहूँ अभी डंडी पर ही लगा हुआ था उसका गेहूँ में बाल भी आने लगी थीं। जब उसके मालिक के खेत में गेहूँ पर बालें आयीं तब तक उसका गेहूँ पक चुका था। उसने सोचा कि अब मैं इन्हें कल काट लूँगा।

पर उसी रात एक बादल आया ओला पड़ा और उसका सारा गेहूँ खराब कर गया। यह देख कर डैनियल तो रो पड़ा। वह बोला

---

[24] The Story of Unlucky Daniel. (Tale No 8)

[25] Dan is the short form of Daniel

“अब मैं किसी दूसरे मालिक के पास जा कर काम करूँगा। तब शायद भगवान मेरी सहायता करें।”

सो वह अब दूसरे मालिक के पास गया। वहाँ जा कर उसने कहा — “मैं आपके पास पूरे एक साल काम करूँगा। अगर आप मुझे घोड़े का वह जंगली बच्चा दे देंगे।” मालिक राजी हो गया और वह वहाँ उसके पास काम करने लगा।

एक साल खत्म होने तक उसने उस जंगली घोड़े को इतनी अच्छी तरह से प्रशिक्षित कर दिया कि उसने उसे एक गाड़ी में जोतने के लायक बना दिया। उसने सोचा — “यह तो बड़ा अच्छा है कि अबकी बार मेरे पास ले जाने के लिये कुछ तो होगा।”

पर उसी रात कुछ भेड़िये अस्तबल में घुस आये और उसके घोड़े को मार गये। डैनियल एक बार फिर रो पड़ा। उसने सोचा कि अब मैं किसी दूसरे मालिक के पास जा कर काम करूँगा। हो सकता है कि वहाँ मेरी किस्मत खुल जाये।

सो वह अब तीसरे मालिक के पास पहुँचा। इस मालिक की कब्र पर एक बड़ा सा पत्थर रखा हुआ था। वह पत्थर वहाँ कहाँ से आया था किसी को नहीं पता था और वह इतना भारी था कि हालाँकि बहुत दिनों से कोशिश की जा रही थी पर कोई उसे हटा नहीं पा रहा था। उसने कहा कि “मैं इस पत्थर के लिये आपके पास एक साल तक काम करूँगा।

मालिक राजी हो गया और उसे रख लिया गया। उसके बाद से ही उस पत्थर पर एक बदलाव आने लगा। उसके ऊपर फूल आने लगे।

एक तरफ से वे लाल थे दूसरी तरफ से वे चाँदी के रंग के थे और तीसरी तरफ से वे सुनहरे थे। यह देख कर डैनियल ने सोचा "किसी तरह भी सही यह पत्थर अब मेरा होगा। कोई इसे यहाँ से हिला भी नहीं सकता।"

पर अगले दिन उस पत्थर एक बिजली गिरी और उसे चूर चूर कर दिया। डैनियल फिर से रो पड़ा और दुखी हो गया कि हालाँकि उसने कई साल सेवा की पर भगवान ने उसे फिर से कुछ नहीं दिया।

लोगों ने उसे समझाया — "सुनो। तुम इतने बदकिस्मत हो तुम ज़ार के पास क्यों नहीं जाते। वह हम सबके पिता हैं इसलिये वह तुम्हारी भी देखभाल करेंगे।"

उसने उनकी सुनी और वह ज़ार के पास गया। उसने उसे अपने राज दरबार में रख लिया। एक दिन ज़ार ने उससे पूछा — "मैं तुम्हारी प्रशंसा करता हूँ कि तुम बदकिस्मत हो इसलिये जो तुम्हारी इच्छा हो तुम वह करो। तुमसे ज़्यादा अच्छा उसे करने वाला और कोई नहीं है। जो कुछ तुम करोगे मैं उसके लिये तुम्हें ठीक से पैसे दूँगा।"

तब ज़ार ने तीन बैरल लिये जिन्हें उसने सोना कोयला और रेत से भरा और डैनियल से कहा — "अब तुम इन्हें देखो और बताओ कि सोना किसमें है।

अगर तुमने यह बता दिया तो मैं तुम्हें ज़ार बना दूॅगा। अगर तुमने वह चुना जिसमें कोयला है तो मैं तुम्हें लोहार बना दूॅगा। और अगर तुमने वह बैरल चुना जिसमे रेत भरा है तब तुम सचमुच में बहुत ही बदकिस्मत हो। फिर तुमको मेरे राज्य से चले जाना चाहिये पर फिर भी मैं तुम्हें एक घोड़ा और एक जिरहबख्तर साथ ले जाने के लिये दूॅगा।"

सो डैनियल को उस जगह पर लाया गया जहॉ वे बैरल रखे थे। वह उनके चारों तरफ घूमा और एक के बाद एक को महसूस करता रहा। फिर एक बैरल पर अपनी उॅगली रख कर बोला — "इस बैरल में सोना है।" सो लोगों ने उसे तोड़ा और लो उसमें तो रेत भरा था।

ज़ार बोला — "ठीक है। मुझे अब लग रहा है कि तुम वाकई बहुत ही बदकिस्मत हो। तुम मेरे राज्य से निकल जाओ क्योंकि मुझे तुम जैसे की कोई जरूरत नहीं है।" उसके बाद उसने उसे एक घोड़ा एक जिरहबख्तर और कोज़ैक[26] की एक पोशाक दी और वापस भेज दिया।

[26] A member of a people of Ukraine and southern Russia, noted for their horsemanship and military skill.

वह सारा दिन चलता रहा चलता रहा और दूसरे दिन भी चलता रहा। उसके पास खाने के लिये कुछ भी नहीं था – न उसके अपने खाने के लिये न उसके घोड़े के खाने के लिये। वह तीसरे दिन भी चला। दूर उसे भूसे का एक ढेर दिखायी दिया तो उसने सोचा कि "यह मेरे लिये नहीं तो कम से कम मेरे घोड़े के लिये तो काफी होगा।"

सो वह उसके पास गया पर जैसे ही वह वहाँ पहुँचा तो वह जल उठा। यह देख कर डैनियल रो पड़ा। तभी उसे किसी के रोने की आवाज सुनायी पड़ी और आवाज आयी "बचाओ बचाओ मुझे बचाओ। मैं जल रहा हूँ।"

वह बोला — "मैं तुम्हें कैसे बचाऊँ जब मैं खुद इसके पास नहीं आ सकता।"

आवाज बोली — "तुम मुझे अपना हथियार दो। मैं उसे पकड़ लूँगा। तब तुम मुझे खींच सकते हो।"

सो उसने अपना हथियार उसकी तरफ आगे बढ़ाया और फिर उस हथियार को खींचा तो एक साँपिन उसके साथ खिंची चली आयी। वह एक भली साँपिन था जैसी बस कहानियों में मिलती है। उसने डैनियल से कहा — "क्योंकि तुमने मुझे बचाया है इसलिये तुम मुझे अपने घर ले चलो।"

"मैं तुम्हें घर कैसे ले जा सकता हूँ।"

सॉपिन बोली — "तुम मुझे घोड़े पर ले चलो। जिधर की तरफ भी मैं अपना सिर घुमाऊँ तुम मुझे उसी दिशा में ले चलो।" सो वह उसे अपने घोड़े पर ले चला। चलते चलते वे एक कम्पाउंड में आये जो देखने में ही बहुत सुन्दर था।

वहाँ आ कर वह घोड़े पर से उतरी और उससे बोली — "तुम यहाँ रुको मैं अभी आती हूँ।" ऐसा कह कर वह दरवाजे के नीचे रेंग गयी और वह वहीं खड़ा रहा।

वहाँ खड़े रहते रहते वह बहुत थक गया तो वह फिर रो पड़ा। पर आखिर वह एक बहुत सुन्दर लड़की के रूप में बहुत सुन्दर कपड़े पहन कर बाहर आयी और उसके लिये दरवाजा खोला और कहा — "आओ और अपने घोड़े को भी अन्दर ले आओ। कुछ खा लो और आराम कर लो।"

सो वे अन्दर चले गये। कम्पाउंड में दो फव्वारे लगे थे। उस नाग कन्या ने उनमें से एक फव्वारे में से एक छोटा गिलास पानी लिया उसके चारों तरफ थोड़ी सी ओट्स फैलायी और डैनियल से कहा कि वह अपना घोड़ा वहाँ बाँध दे।

उसने सोचा "यह क्या कह रही है। हमने तीन दिनों से कुछ खाया पिया नहीं है और यह उसे केवल एक मुट्ठी ओट्स और छोटा सा गिलास पानी का दे कर हमारा मजाक उड़ा रही है।"

उसके बाद वे अन्दर मेहमानों के कमरे में गये तो उसने उसे भी एक छोटा सा गिलास पानी का और एक छोटा सा टुकड़ा रोटी का

दिया। उसने फिर अपने मन में सोचा "क्या यह सब मेरे जैसे भूखे आदमी के लिये?"

तभी उसने खिड़की में से बाहर देखा तो उसने देखा कि सारा ऑगन ओट्स और पानी से भरा पड़ा है और उसके घोड़े ने पेट भर कर खा लिया है। तब उसने अपना रोटी का वह छोटा सा टुकड़ा चबाया और थोड़ा सा पानी पिया तो उसे लगा कि उसका पेट तो भर गया है।

नाग कन्या बोली — "क्या तुम्हारा पेट भर गया?"

वह बोला — "हॉ भर गया।"

"तब तुम अब थोड़ी देर के लिये आराम कर लो।"

अगली सुबह जब वह उठा तो नाग कन्या ने कहा — "तुम मुझे अपना घोड़ा दो अपना जिरहबख्तर दो और अपने कपड़े दो और बदले में मैं तुम्हें अपने कपड़े देती हूॅ।"

तब उसने डैनियल को अपना हथियार और अपने कपड़े दिये और कहा — "यह तलवार ऐसी है कि अगर तुम इसे बस हिला भी दोगे तो सारे लोग नीचे गिर पड़ेंगे।

और जहॉ तक इस पोशाक का सवाल है जो कोई भी इसे पहनेगा उसे कोई भी नहीं पकड़ पायेगा। अब तुम अपने रास्ते चले जाओ जब तक कि तुम एक सराय तक नहीं पहुॅच जाओ।

वहॉ लोग तुम्हें बतायेंगे कि ज़ार एक योद्धा खोज रहा है। तो तुम उसके पास जाना और कहना कि तुम उसका वह काम करना

चाहते हो। वहाँ तुम उसकी बेटी से शादी कर लेना पर अपना सच उसे सात साल तक नहीं बताना।"

उसके बाद दोनों ने एक दूसरे से विदा ली और वह चला गया। चलते चलते वह एक सराय में पहुँचा और जब सराय वालों ने उसे देखा तो वे जान गये कि यह आदमी किसी अजनबी देश से आया है तो उन्होंने उससे कहा — "कुछ अजनबी लोगों ने हमारे ज़ार पर हमला बोल दिया है। वह उसका सामना नहीं कर पा रहा है।

एक बहुत ही ताकतवर अजनबी ने उसके राज्य का काफी हिस्सा जीत लिया है और वह उसकी बेटी को भी उठा कर ले गया है। उसे डर है कि वह मारा जायेगा।"

डैनियल बोला — "अच्छा। तुम मुझे उसके महल का रास्ता बताओ।" सो उन्होंने उसे ज़ार के महल का रास्ता दिखा दिया और डैनियल उसके महल की तरफ चला गया।

जब वह ज़ार के पास आया तो उसने ज़ार से कहा — "मैं इस अजनबी देश पर आपके लिये कब्जा करा दूँगा। मुझे केवल दो कोज़ैक चाहिये पर ये दोनों भी चुने हुए लोग होने चाहिये।"

सो ज़ार के नौकर राज्य भर में घूम कर दो चुने हुए लोगों को ले कर आये और डैनियल ने उन्हें साथ ले कर घास के मैदान में चला गया। वहाँ पहुँच कर उसने उनसे कहा कि वे वहाँ लेट जायें और सो जायें वह उनका पहरा देगा।

जब वे सो गये तो अजनबी देश की फौज वहॉ आयी और डैनियल से कहा कि अगर वह मारामारी नहीं चाहता तो उसे वहॉ से वापस चले जाना चाहिये।

जब डैनियल पीछे नहीं हटा तो उन्होंने अपनी बन्दूकें और तोपें चलानी शुरू कर दीं। उन्होंने इतनी सारी गोलियॉ और गोले चलाये कि दोनों कोज़ैकों के शरीर उनसे करीब करीब ढक गये। तो डैनियल ने अपनी तलवार हिलायी और भाला चलाया। उन लोगों में से जिन तक डैनियल के भाले नहीं पहुँचे केवल वे ही बच कर भाग सके।

इस तरह से उसने सबको हरा दिया और उनका अनजाना देश जीत लिया। वापस आ कर उसने ज़ार की बेटी से शादी कर ली। वे दोनों अब खुशी से रहने लगे।

पर उस अजनबी देश के सलाहकार ज़ारेवना के कान भरने लगे। वे बोले — "यह कैसा आदमी है जिसे आपने अपने लिये चुन लिया है। यह कौन है कहॉ से आया है। आप पता तो लगायें कि इसकी ताकत कहॉ बसती है ताकि हम इसे मार सकें और आपको बचा सकें।"

यह सुन कर उसने डैनियल से इस बारे में पूछताछ करनी शुरू कर दी तो डैनियल ने उसे बताया कि "मेरी सारी ताकत इन दस्तानों में बसती है।" यह सुन कर ज़ारेवना उसके सोने का इन्तजार करती

रही। जब वह सो गया तो उसने उसके दस्ताने उतार लिये और उन्हें अजनबी देश के लोगों को दे दिये।

अगले दिन जब वह शिकार खेलने गया तो उन सलाहकारों ने उसे वहाँ घेर लिया और कई तीर मारे और दस्तानों से मारा पर सब बेकार रहा। तब उसने अपनी तलवार हिलायी और जिस किसी को भी उससे मारा वह जमीन पर गिर पड़ा। उन सबको उसने जेल में बन्द करवा दिया।

पर उसकी पत्नी ने उससे प्यार से फिर पूछा — "तुम मुझे बताओ न कि तुम्हारी ताकत कहाँ बसती है।" अबकी बार वह बोला कि उसकी ताकत उसके जूतों में बसती है।

सो जब वह सो गया तब उसने उसके जूते निकाल कर उन सलाहकारों को दे दिये। उन्होंने उस पर फिर से हमला कर दिया पर उसने फिर से अपनी तलवार हिला कर उन्हें नीचे गिरा दिया। फिर उन्हें जेल में बन्द कर दिया।

तीसरी बार उसकी पत्नी ने उससे प्यार से फिर पूछा — "तुम मुझे बताओ न कि तुम्हारी ताकत कहाँ बसती है।"

अबकी बार वह उसके पूछने से थक गया तो उसने कहा कि मेरी ताकत मेरी तलवार में और मेरी कमीज़ में बसती है। जब तक यह कमीज़ मेरे शरीर पर है कोई मुझे छू भी नहीं सकता।"

कुछ देर तक वह उसे मनाती रही फिर बोली — "तुम जा कर नहा लो और अपने आपको ठीक से साफ कर लो। मेरे पिता भी ऐसे ही किया करते थे।"

वह उसकी बात मानता रहा और जैसे ही उसने अपने कपड़े उतारे और वह नहाने गया तुरन्त ही ज़ारेवना ने उसके कपड़े दूसरे कपड़ों से बदल दिये। और उसकी कमीज़ और तलवार उसके दुश्मनों को दे दी।

जब वह नहा कर बाहर आया तो तुरन्त ही उन्होंने उस पर हमला बोल दिया। उसके टुकड़े टुकड़े कर दिये। टुकड़ों को एक थैले में भरा उस थैले को घोड़े पर रखा और उसे अपनी मन मर्जी की जगह जाने के लिये छोड़ दिया। घोड़ा बेचारा चलता चला गया और उसी जगह आ पहुँचा जहाँ वह नाग कन्या के साथ रहता था।

जब उसकी मालकिन ने उसे देखा तो उसके मुँह से निकला "कहीं बेचारा डैनियल फिर से किसी जाल में तो नहीं फँस गया।"

तुरन्त ही उसने घोड़े पर से थैला उतारा खोला और उसके सारे टुकड़े जोड़े। उन्हें धो कर साफ किये। एक फव्वारे से उपचार करने वाला पानी लिया और दूसरे से ज़िन्दगी का पानी लिया और उसके सारे शरीर पर छिड़क दिया। पानी छिड़कते ही वह फिर से ज़िन्दा हो कर और तन्दुरुस्त हो कर उठ खड़ा हुआ।

नाग कन्या ने उससे कहा — "क्या मैंने तुमसे नहीं कहा था कि तुम उस लड़की से अपना सच सात साल तक मत कहना और तुमने सुना ही नहीं।"

वह वहीं खड़ा रहा एक शब्द भी नहीं बोला। वह फिर बोली — "खैर अब तुम थोड़ा आराम कर लो क्योंकि तुम्हें आराम की बहुत जरूरत है। फिर मैं तुम्हें कोई और चीज़ दूँगी।"

अगले दिन उसने उसे एक जंजीर दी और कहा — "तुम उसी सराय में चले जाओ जहाँ तुम पहले गये थे।अगले दिन सुबह जब तुम नहा रहे होगे तो सराय के मालिक से कहना कि वह तुम्हें इस जंजीर से अपनी पूरी ताकत लगा कर पीटेगा।

उसके बाद तुम अपनी पत्नी के पास चले जाना पर उससे इस बारे में एक शब्द भी नहीं कहना कि तुम्हें क्या हुआ था।"

सो वह उसी सराय में चला गया और रात वहीं गुजारी। अगले दिन सुबह नहाते समय उसने अपनी सराय के मालिक को जंजीर दे कर कहा कि वह उस जंजीर उसकी पीठ पर अपनी पूरी ताकत से मारे। सो जब उसका सिर पानी में डूब गया तब सराय के मालिक ने उसे अपनी पूरी ताकत से मारा।

इसके बाद तो उसके शरीर से एक इतना सुन्दर घोड़ा निकल आया जितना सुन्दर घोड़ा कभी किसी ने देखा नहीं था। सराय का मालिक इस बात से इतना खुश था इतना खुश था कि वह एक

ठहरने वाले से छुटकारा पा गया और अब वह किसी दूसरे को वहाँ रहने की जगह दे सकता था।

वह तुरन्त ही घोड़े को मेले में ले गया और उसे बेचने के लिये खड़ा हो गया। वहाँ ज़ार भी मौजूद था सो उसने जब उस घोड़े को देखा तो उससे पूछा कि वह वह घोड़ा कितने में बेचेगा। सराय का मालिक बोला "मुझे पाँच हजार रूबल चाहिये।" ज़ार ने उसे पैसे गिन दिये और घोड़ा ले कर चला गया।

जब वह अपने दरबार में पहुँचा तो उसने उसे बड़ी शान से अपना नया घोड़ा सबको दिखाया। फिर अपनी बेटी को बुलाया — "आओ बेटी यहाँ आओ। देखो मैंने कितना सुन्दर घोड़ा खरीदा है।"

पर जैसे ही उसकी बेटी ने वह घोड़ा देखा तो बोली — "यह घोड़ा तो बिल्कुल बेकार है। इसे तो यहीं मार दीजिये।"

ज़ार बोला — "अरे मेरी प्यारी बेटी मैं ऐसा कैसे कर सकता हूँ?"

बेटी बोली — "इसे तो आपको जरूर ही मारना है पिता जी।"

सो एक चाकू मँगवाया गया और उसे तेज़ किया गया। तभी दरबार की एक कन्या को उस घोड़े के ऊपर दया आ गयी। वह चिल्लायी — "ओह मेरे प्यारे घोड़े तू कितना अच्छा है और फिर भी तुझे मारा जा रहा है।"

घोड़ा हिनहिनाया और उसके पास गया और उससे कहा — “जब ये मुझे मारें तब तुम मेरे खून की पहली एक बूँद लेना और उसे बागीचे में गाड़ देना।”

उसके बाद उसे काट दिया गया। उस लड़की ने वैसा ही किया जैसा घोड़े ने उससे करने के लिये कहा था। उसने उसके खून की पहली बूँद ली और उसे बागीचे में गाड़ दिया।

उस बूँद से वहाँ एक चैरी का पेड़ उग आया। उसका पहला पत्ता सुनहरा था और उसकी दूसरी पत्ती का रंग उससे भी ज़्यादा सुन्दर था। उसकी तीसरी पत्ती का रंग कोई दूसरा ही रंग था। उसकी हर पत्ती अलग रंग की थी।

एक दिन ज़ार अपने बागीचे में घूमने के लिये आया तो उसकी नजर उस चैरी के पेड़ पर पड़ी तो उसे वह बहुत अच्छा लगा। उसने अपनी बेटी से कहा — “देखो हमारे बागीचे में कितना सुन्दर चैरी का पेड़ है। कौन जाने यह यहाँ कब उगा।”

पर जैसे ही ज़ारेवना ने उसे देखा तो वह बोली — “यह पेड़ तो मेरी बर्बादी है पिता जी इसे तुरन्त ही कटवा दीजिये।”

ज़ार बोला — “पर बेटी यह तो बहुत सुन्दर पेड़ है मैं इसे कैसे कटवा सकता हूँ। यह तो मेरे बागीचे की सुन्दरता है।”

ज़ारेवना बोली — “पिता जी इसे तो कटना ही है यह तो कटेगा ही।”

एक कुल्हाड़ी मँगवायी गयी और जैसे ही उसे काटने के लिये तैयार हुआ गया कि वही लड़की भागी हुई वहाँ आयी — "ओह मेरे प्यारे चैरी के पेड़, ओ मेरे प्यारे चैरी के पेड़। तुम कितने प्यारे हो। तुम एक घोड़े में से निकले हो और हालाँकि तुम केवल एक दिन के ही हो फिर भी ये लोग तुम्हें गिरा रहे हैं।"

पेड़ बोला — "तुम चिन्ता मत करो। तुम मेरी पहली छीलन उठा लेना और उसे पानी में फेंक देना।"

उसके बाद उन लोगों ने चैरी के पेड़ को काट दिया। उसकी पहली छीलन जो गिरी उसे उस लड़की ने उठा कर पानी में फेंक दिया। उस लकड़ी के टुकड़े से वहाँ एक बहुत सुन्दर नर बतख तैरने लगा। इतना सुन्दर कि बस उसे देखते ही बनता था।

ज़ार शिकार के लिये गया तो उसने वह बतख देखा। वह बतख उसके इतने पास था कि वह उसे अपने हाथ से छू सकता था। ज़ार ने अपने कपड़े उतारे और उसके पीछे पीछे पानी में कूद गया।

बतख भी उसे किनारे से दूर और और दूर ले गया। उसके बाद बतख ज़ार को उस जगह ले गया जहाँ उसने अपने कपड़े उतार कर रखे थे। और जब वह उनके पास आ गया वह एक आदमी में बदल गया और उन कपड़ों को पहन लिया। अब वह डैनियल था।

तब उसने ज़ार से कहा — "तैर कर इधर आओ। तैर कर इधर आओ।"

ज़ार तैर कर उधर गया। पर जब वह वहाँ पहुँचा तो डैनियल ने उसे मार दिया और उसके कपड़े पहने वह उसके दरबार में पहुँचा तो सब दरबारियों ने उसका ज़ार की तरह से स्वागत किया।

उसने पूछा — "वह लड़की कहाँ है जो अभी यहाँ थी।"

वे उस लड़की को वहाँ ले कर आये तो डैनियल ने उससे कहा — "अब तक तुम मेरी दूसरी माँ रही हो और अब तुम मेरी दूसरी पत्नी होगी।"

इस तरह वह उस लड़की के साथ खुशी से रहा पर उसने अपनी पहली पत्नी को जंगली घोड़ों की पूँछ से बँधवा कर उसके टुकड़े टुकड़े करवा दिये।

9 एक चिड़िया और एक झाड़ी[27]

एक बार एक चिड़िया एक झाड़ी के ऊपर से उड़ी — "ओ छोटी झाड़ी मुझे थोड़ा सा झूला झुला दो।"

झाड़ी बोली — "नहीं मैं नहीं झुलाऊँगी।"

इस पर चिड़िया नाराज हो गयी। वह एक बकरी के पास गयी और उससे कहा — "तू झाड़ी को खा ले क्योंकि झाड़ी एक भली चिड़िया को झूला नहीं झुलाती।"

बकरी ने कहा — "नहीं मैं नहीं खाऊँगी।"

तब चिड़िया एक भेड़िये के पास गयी और उससे कहा — "भेड़िये भेड़िये तू बकरी को खा ले क्योंकि बकरी झाड़ी को नहीं खाती। क्योंकि झाड़ी एक भली चिड़िया को झूला नहीं झुलाती।"

भेड़िया बोला — "मैं बकरी को नहीं खाता।"

तब चिड़िया लोगों के पास गयी और उनसे कहा — "ओ भले लोगो तुम लोग भेड़िये को मार दो क्योंकि भेड़िया बकरी को नहीं खाता। क्योंकि बकरी झाड़ी को नहीं खाती। क्योंकि झाड़ी एक भली चिड़िया को झूला नहीं झुलाती।"

लोगों ने कहा — "हम तो भेड़िये को नहीं मारते।"

---

[27] The Sparrow and the Bush. (Tale No 9)

सो चिड़िया टार्टर्स[28] के पास गयी और उनसे कहा — "टार्टर्स ओ टार्टर्स। तुम लोगों को मार दो क्योंकि ये लोग भेड़िये को नहीं मारते। क्योंकि भेड़िया बकरी को नहीं खाता। क्योंकि बकरी झाड़ी को नहीं खाती। क्योंकि झाड़ी एक भली चिड़िया को झूला नहीं झुलाती।"

टार्टर्स ने कहा — "हम लोगों को नहीं मारते।"

लोगों ने कहा — "हम भेड़िये को नहीं मारते।"

भेड़िये ने कहा — "मैं बकरी को नहीं खाता।"

बकरी ने कहा — "मैं झाड़ी को नहीं खाती।

झाड़ी ने कहा — "मैं एक भली चिड़िया को झूला नहीं झुलाती।"

झाड़ी बोली — "तुम आग के पास जाओ क्योंकि टार्टर्स लोगों को नहीं मारते। क्योंकि लोग भेड़िये को नहीं मारते। क्योंकि भेड़िया बकरी को नहीं खाता। क्योंकि बकरी झाड़ी को नहीं खाती। क्योंकि झाड़ी एक भली चिड़िया को झूला नहीं झुलाती।"

पर आग ने भी कहा — "मैं टार्टर्स को नहीं जलाती। तुम पानी के पास जाओ।"

---

[28] Tartars – Tatar, also spelled as Tartar, any member of several Turkic-speaking peoples that collectively numbered more than 5 million in the late 20th century and lived mainly in west-central Russia along the central course of the Volga River. The name Tatar first appeared among nomadic tribes living in northeastern Mongolia and the area around Lake Baikal from the 5th century CE. Unlike the Mongols, these peoples spoke a Turkic language. After various groups of these Turkic nomads became part of the armies of the Mongol conqueror Genghis Khan in the early 13th century, a fusion of Mongol and Turkic elements took place, and the Mongol invaders of Russia and Hungary became known to Europeans as Tatars (or Tartars).

सो चिड़िया पानी के पास गयी पर पानी ने भी कहा — “मैं आग नहीं बुझाता।”

तो चिड़िया बैल के पास गयी। उसने उससे कहा — “बैल बैल। तू चल कर पानी पी ले क्योंकि पानी आग नहीं बुझाता। क्योंकि आग टार्टर्स को नहीं जलाती। क्योंकि टार्टर्स लोगों को नहीं मारते।

क्योंकि लोग भेड़िये को नहीं मारते। क्योंकि भेड़िया बकरी को नहीं खाता। क्योंकि बकरी झाड़ी को नहीं खाती। क्योंकि झाड़ी एक भली चिड़िया को झूला नहीं झुलाती।”

बैल बोला — “मैं पानी को नहीं पीता।”

तब चिड़िया कुल्हाड़ी के पास गयी और उससे कहा कि वह बैल को मारे क्योंकि बैल पानी नहीं पीता। क्योंकि पानी आग नहीं बुझाता। क्योंकि आग टार्टर्स को नहीं जलाती। क्योंकि टार्टर्स लोगों को नहीं मारते।

क्योंकि लोग भेड़िये को नहीं मारते। क्योंकि भेड़िया बकरी को नहीं खाता। क्योंकि बकरी झाड़ी को नहीं खाती। क्योंकि झाड़ी एक भली चिड़िया को नहीं झुलाती।”

कुल्हाड़ी ने कहा — “मैं बैल को नहीं मारती।”

सो चिड़िया कीड़ों के पास गयी और उनसे कहा कि वे कुल्हाड़ी को खा लें क्योंकि कुल्हाड़ी बैल को नहीं मारती। क्योंकि बैल पानी नहीं पीता। क्योंकि पानी आग नहीं बुझाता। क्योंकि आग टार्टर्स

को नहीं जलाती। क्योंकि टार्टर्स लोगों को नहीं मारते। क्योंकि लोग भेड़िये को नहीं मारते।

क्योंकि भेड़िया बकरी को नहीं खाता। क्योंकि बकरी झाड़ी को नहीं खाती। क्योंकि झाड़ी एक भली चिड़िया को झूला नहीं झुलाती।"

कीड़ों ने भी कहा कि वे कुल्हाड़ी को कोई नुकसान नहीं पहुँचायेंगे।

तब चिड़िया एक मुर्गी के पास गयी कि वह कीड़ों को खा ले क्योंकि कीड़े कुल्हाड़ी को नुकसान नहीं पहुँचाते। क्योंकि कुल्हाड़ी बैल को नहीं मारती। क्योंकि बैल पानी नहीं पीता। क्योंकि पानी आग नहीं बुझाता। क्योंकि आग टार्टर्स को नहीं जलाती।

क्योंकि टार्टर्स लोगों को नहीं मारते। क्योंकि लोग भेड़िये को नहीं मारते। क्योंकि भेड़िया बकरी को नहीं खाता। क्योंकि बकरी झाड़ी को नहीं खाती। क्योंकि झाड़ी एक भली चिड़िया को झूला नहीं झुलाती।"

तब चिड़िया एक मादा बाज़ के पास गयी और उससे कहा कि वह मुर्गी को पकड़ ले क्योंकि मुर्गी कीड़ों को नहीं खाती। क्योंकि कीड़े कुल्हाड़ी को खा लें क्योंकि कुल्हाड़ी बैल को नहीं मारती। क्योंकि बैल पानी नहीं पीता। क्योंकि पानी आग नहीं बुझाता। क्योंकि आग टार्टर्स को नहीं जलाती।

क्योंकि टार्टर्स लोगों को नहीं मारते। क्योंकि लोग भेड़िये को नहीं मारते। क्योंकि भेड़िया बकरी को नहीं खाता। क्योंकि बकरी झाड़ी को नहीं खाती। क्योंकि झाड़ी एक भली चिड़िया को झूला नहीं झुलाती।”

तब मादा बाज़ मुर्गी को पकड़ने को दौड़ी।
मुर्गी कीड़ों को खाने दौड़ी।
कीड़े कुल्हाड़ी को खाने दौड़े।

कुल्हाड़ी बैल को मारने दौड़ी।
बैल पानी पीने दौड़ा।
पानी आग बुझाने भागा।
आग टार्टर्स जलाने दौड़ी।

टार्टर्स लोगों को मारने भागे।
लोग भेड़िये को मारने दौड़े।
भेड़िया बकरी को खाने भागा।
बकरी झाड़ी को खाने भागी।
बकरी को आते देख झाड़ी ने एक भली चिड़िया को झूला झुलाया।”

10 बूढ़ा कुत्ता[29]

एक बार एक आदमी था जिसके पास एक कुत्ता था। जब तक वह कुत्ता जवान था तब तक वह बहुत काम का था और बहुत काम करता था। जब वह बूढ़ा हो गया तो उसे घर के बाहर निकाल दिया गया। सो वह वहाँ से चला गया और घर की बाड़ के बाहर जा कर लेट गया।

जब वह वहाँ लेटा हुआ था तो वहाँ एक भेड़िया आया और उससे पूछा — "कुत्ते कुत्ते। क्या बात है कि तुम मुँह लटका कर क्यों बैठे हो।"

कुत्ता बोला — "जब मैं जवान था तब मेरे मालिक ने मेरा खूब इस्तेमाल किया पर अब मैं बूढ़ा हो गया हूँ तो वे मुझे मारते हैं।"

भेड़िया बोला — "मैं तुम्हारे मालिक को खेत में देख रहा हूँ। तुम उसके पास जाओ हो सकता है कि वह तुम्हें कुछ दे दे।"

कुत्ता बोला — "नहीं। मैं नहीं जाऊँगा। वे तो मुझे खेत में घुसने भी नहीं देंगे। वे तो केवल मुझे मारेंगे।"

भेड़िया बोला — "कुत्ते। मुझे अफसोस है पर मैं तुम्हारे लिये तुम्हारी ज़िन्दगी आसान बनाना चाहता हूँ। मुझे दिखायी दे रहा है कि तुम्हारी मालकिन ने अपने बच्चे को गाड़ी के नीचे लिटा दिया है। मैं उसे उठा कर भाग लूँगा। तुम मेरे पीछे भौंकते हुए भागना।

[29] The Old Dog. (Tale No 10)

मुझे मालूम है कि अब तुम्हारे दाँत नहीं हैं तुम मुझे जितनी ज़ोर से काट सकते हो काटना ताकि तुम्हारी मालकिन तुम्हें यह करते हुए ठीक से देख सके।

सो भेड़िया उस गाड़ी के पास गया बच्चे को उठाया और भाग लिया। कुत्ता भौंकता हुआ उसके पीछे भागा और उसके पास पहुँच कर उसे काटने लगा।

कुत्ते की मालकिन ने यह देखा तो रोती चिल्लाती हुई घास इकट्ठी करने वाला यन्त्र[30] ले कर उसके पीछे दौड़ी — "देखिये यह भेड़िया मेरे बच्चे को ले कर भाग गया है। गैब्रील देखो न भेड़िया मेरे बच्चे को ले गया।"

मालिक ने जब यह सुना तो वह भी भेड़िये के पीछे भागा और बच्चे को उससे छुड़ा लिया। फिर उसने कुत्ते की तरफ देखा तो बोला — "ओ मेरे बहादुर कुत्ते। तुम बूढ़े और बिना दाँत के जरूर हो पर तुम अपने मालिक के बच्चे को किसी भेड़िये को ले कर नहीं जाने दोगे।"

उस दिन के बाद से मालिक ने कुत्ते को बहुत अच्छी तरह से खाना देना शुरू कर दिया।

[30] Translated for the word "Harrow" – An agricultural implement consisting of a heavy frame set with teeth or tines which is dragged over ploughed land to break up clods, remove weeds, and cover seed.

11 लोमड़ी और बिल्ला[31]

एक बार की बात है कि एक जंगल में एक लोमड़ी रहती थी। और उस लोमड़ी के पास रहता था एक आदमी। उस आदमी के पास था एक बिल्ला जो अपनी जवानी में एक बहुत अच्छा चूहा पकड़ने वाला था पर अब वह बूढ़ा हो गया था और उसकी आँखों से उसे दिखायी भी कम देता था।

आदमी उस बिल्ले को अब बिल्कुल नहीं चाहता था पर वह उसे मारना भी नहीं चाहता था। एक दिन वह उसे जंगल में ले गया जहाँ वह उससे खो गया।

तो लोमड़ी उस बिल्ले के पास आयी और उससे बोली — "हलो मिस्टर शैगी मैथ्यू। आप कैसे हैं? आप यहाँ कैसे?"

बिल्ला बोला — "बड़े अफसोस की बात है कि मेरा मालिक मुझे तब तक बहुत प्यार करता था जब तक मैं काट सकता था पर अब क्योंकि मैं काट नहीं सकता और मैंने अब चूहे पकड़ने भी छोड़ दिये हैं।

हालाँकि मैं कभी बहुत सारे चूहे पकड़ लिया करता था तो अब मेरा मालिक मुझे पसन्द तो नहीं करता पर मारना भी नहीं चाहता सो वह मुझे जंगल में छाड़ गया है जहाँ मैं बड़ी बदकिस्मत मौत मरूँगा।"

---

[31] The Fox and the Cat. (Tale No 11)

लोमड़ी बोली — "अरे मेरे प्यारे बिल्ले नहीं। ऐसा नहीं सोचते। तुम मुझ पर छोड़ दो। मैं तुम्हें तुम्हारा रोज का खाना दिलवाने में तुम्हारी सहायता करूँगी।"

बिल्ला बोला — "अरे मेरी छोटी बहिन लोमड़ी तुम तो बहुत अच्छी हो।" और लोमड़ी ने बिल्ले के लिये एक छोटा सा घर बनवा दिया और उसके चारों तरफ एक बागीचा बनवा दिया ताकि वह उसमें घूम सके।

एक दिन एक खरगोश आदमी की बन्दगोभी चुराने के लिये आया। वह बोलने लगा "कीं कीं कीं"। आवाज सुन कर बिल्ले ने खिड़की में से अपना मुँह बाहर निकाला तो देखा कि बाहर तो खरगोश है।

बिल्ला अपने पिछवाड़े पर बैठ गया और अपनी पूँछ ऊँची कर ली और बोला "फ्र्र्र्र्र्र"। यह आवाज सुन कर खरगोश डर गया और वहाँ से भाग गया और यह बात भालू भेड़िये और जंगली सूअर से जा कर कही।

भालू बोला — "तुम चिन्ता मत करो खरगोश। हम चारों एक दावत देंगे जिसमें लोमड़ी और बिल्ले को भी बुलायेंगे। देखो मैं आदमी के घर से शराब चुरा लाऊँगा और तुम और मिस्टर भेड़िया उसका मक्खन का बर्तन चुरा लाना।

और तुम मिस्टर जंगली सूअर उसके फलों के पेड़ उखाड़ लाना। और मिस्टर खरगोश तुम जा कर बिल्ले और लोमड़ी को न्यौता दे कर आओ।"

सो उन्होंने सब कुछ तैयार कर लिया जैसा कि भालू ने कहा था। खरगोश मेहमानों को न्यौता देने दौड़ गया। वह खिड़की के नीचे आया और बोला हम आपकी छोटी लेडी लोमड़ी और मिस्टर शैगी मैथ्यू को अपने घर खाने के लिये न्यौता देने आये हैं।" यह कह कर वह वहाँ से भाग गया।

जब वह भालू के पास पहुँचा तो भालू ने कहा "अरे तुम्हें तो उनसे अपनी अपनी चम्मचें लाने के लिये कहना था।"

खरगोश बोला — "उफ़ मेरा दिमाग भी कैसा है अगर मैं भूला नहीं तो।" कह कर वह फिर से उन्हें न्यौता देने भाग गया।

वह फिर खिड़की पर पहुँचा और लोमड़ी से बोला — "अपनी अपनी चम्मचें लाने का ध्यान रखना।"

लोमड़ी बोली — "ठीक है।"

सो बिल्ला और लोमड़ी दोनों खरगोश के घर दावत खाने चले। जब बिल्ले ने वहाँ सूअर का माँस देखा तो वह अपने पिछवाड़े पर बैठ गया और अपनी पूँछ ऊपर कर ली और अपनी पूरी ताकत से चिल्लाया "म्याऊँ म्याऊँ।"

पर उनको लगा कि वह बोला "मा लो मा लो"।

भालू जो दूसरे जानवरों के साथ पीछे छिपा था बोला — "क्या। यहाँ हम चार एक साथ इकट्ठा हैं और यह सूअर के चेहरे वाला बिल्ला कह रहा है कि हम कम हैं। यह बिल्ला तो पता नहीं कितना बड़ा राक्षस जैसा होगा जिसकी इतनी ज़्यादा भूख होगी।

सो वे चारों डर गये और वहाँ से भाग गये। भालू एक पेड़ पर चढ़ गया और दूसरे जानवर भी जहाँ जहाँ छिप सकते थे जा कर छिप गये।

पर जब बिल्ले ने भालू की मूँछें पेड़ के पीछे से झाँकती देखीं तो उसने सोचा कि वह कोई चूहा है। तो वह फिर से अपने पिछवाड़े पर बैठ गया और चिल्लाया "फ्ट फ्ट फ्ट फ्र्र्र्र्र्र"।

यह आवाज सुन कर तो वे सब और भी ज़्यादा डर गये। सूअर और दूर किसी झाड़ी में चला गया। भेड़िया एक ओक के पेड़ के पीछे छिप गया। भालू उस पेड़ पर से उतर कर एक और बड़े पेड़ पर चढ़ गया। और खरगोश तो वहाँ से बिल्कुल ही भाग गया।

पर बिल्ला वहाँ सारी अच्छी अच्छी चीज़ों के बीच खड़ा रहा। वह सूअर का सारा माँस खा गया। छोटी लोमड़ी सारा शहद खा गयी। और वे वहाँ खाते रहे खाते रहे जब तक उनका पेट नहीं भर गया। फिर वे अपने पंजे चाटते चाटते वहाँ से चले गये।

12 भूसे का बैल[32]

एक बार की बात है कि एक समय में एक बूढ़ा और एक बुढ़िया रहते थे। बूढ़ा खेतों में काम करता था जबकि बुढ़िया घर बैठ कर रुई कातती थी। वे लोग इतने गरीब थे कि वे कुछ भी नहीं बचा पाते थे। इनकी सारी कमाई केवल खाने में ही चली जाती और जब वह खरीद लिया जाता तो फिर तो कुछ भी नहीं बचता।

आखिर बुढ़िया के दिमाग में एक बहुत अच्छा विचार आया। वह बोली — "देखो प्रिय। तुम मुझे भूसे का एक बैल बना दो और उसके ऊपर तारकोल लगा दो।"

बूढ़ा बोला — "यह तुम क्या बेवकूफी की बात कर रही हो? ऐसे बैल का क्या फायदा?"

बुढ़िया बोली — "नहीं बस तुम मुझे ऐसा एक बैल बना दो। मुझे मालूम है कि मुझे क्या करना है।"

अब वह बेचारा बूढ़ा क्या करता। वह अपने काम पर लग गया और भूसे का एक बैल बना दिया और उसे सारा का सारा तारकोल से ढक दिया।

रात गुजर गयी और सुबह सवेरे बुढ़िया ने अपनी तकली ली और अपने बैल को घास के मैदान में चराने के लिये ले चली।

[32] The Straw Ox. (Tale No 12)

वह खुद तो एक पहाड़ी के पीछे बैठ गयी और अपनी रुई कातने लगी और बैल से कहती रही — "ओ बैल। चरते रहो जब तक मैं रुई कात रही हूँ। चरते रहो जब तक मैं रुई कात रही हूँ।"

जब वह रुई कात रही थी तो उसका सिर नीचे लटक गया और उसे झपकियाँ आने लगीं। जब वह झपकियाँ ले रही थी तो वहाँ के घने अँधेरे जंगल में से पाइन के पेड़ों के पीछे से एक भालू दौड़ता हुआ आया और आ कर भूसे के बैल से बोला — "तुम कौन हो मुझे बताओ मुझसे बोलो।"

बैल बोला — "मैं एक तीन साल की बिना बच्चे वाली गाय[33] हूँ। मैं भूसे की बनी हुई हूँ और मेरे ऊपर तारकोल लिपटा हुआ है।"

भालू बोला — "भूसे से भरी हुई और तारकोल लिपटी हुई। मुझे कुछ भूसा और तारकोल दो ताकि में अपने उखड़े हुए बालों को ठीक से लगा सकूँ।"

बैल बोला — "ले लो थोड़ा सा ले लो।" यह सुनते ही भालू उसके ऊपर गिर पड़ा और उसका तारकोल नोचने लगा। नोचते नोचते वह उसमें अपने दाँत भी गड़ाने लगा जब तक उसे यह पता नहीं चल गया कि वह उसका अब कुछ नहीं बिगाड़ सकता।

उसने फिर उसमें से दाँत निकालने चाहे पर कोई फायदा नहीं। बैल उसे खींच कर पता नहीं कहाँ ले गया।

---

[33] Translated for the word "Heifer"

उसके बाद बुढ़िया की आँख खुल गयी तो उसे अपना बैल कहीं दिखायी नहीं दिया। “उफ़। मैं बुढ़िया भी कितनी बेवकूफ हूँ। हो सकता है कि वह घर चला गया हो।”

सो उसने अपनी तकली उठायी और बोर्ड उठाया उन्हें अपने कन्धे पर डाला और जल्दी जल्दी घर चल दी। उसने देखा कि उसका बैल तो एक भालू को घसीटता हुआ उनके घर की बाड़ तक ले आया है।

तो वह चिल्ला पड़ी — “प्रिय देखो हमारा बैल एक भालू ले कर आ गया है। तुम जल्दी बाहर आओ और इसे मार दो।” बूढ़ा तुरन्त ही कूद कर बाहर आया भालू को मार डाला और बाँध कर नीचे वाले कमरे में फेंक दिया।

अगले दिन सुबह बहुत सवेरे जब तक रोशनी भी नहीं हुई थी बुढ़िया ने फिर से अपनी तकली ली और बैल लिया और उसे घास के मैदान में चराने चल दी। वह खुद एक टीले पर बैठ गयी और बैल को चरने के लिये घास के मैदान में छोड़ दिया।

वहाँ वह रुई कातने लगी और बैल से कहने लगी — “ओ बैल। चरते रहो जब तक मैं रुई कात रही हूँ। चरते रहो जब तक मैं रुई कात रही हूँ।”

जब वह रुई कात रही थी तो उसका सिर नीचे झुकने लगा और उसे झपकियाँ आने लगीं। जब वह झपकियाँ ले रही थी तो वहाँ के घने अँधेरे जंगल में से पाइन के पेड़ों के पीछे से एक भूरा भेड़िया

दौड़ता हुआ आया और आ कर भूसे के बैल से बोला — "तुम कौन हो मुझे बताओ मुझसे बोलो।"

बैल बोला — "मैं एक तीन साल की बिना बच्चे वाली गाय हूँ। मैं भूसे की बनी हुई हूँ और मेरे ऊपर तारकोल लिपटा हुआ है।"

भूरा भेड़िया बोला — "भूसे से भरी हुई और तारकोल लिपटी हुई। तो मुझे कुछ तारकोल दो ताकि कुत्ते और उनके बच्चे मुझे काट न सकें।"

बैल बोला — "ले लो थोड़ा सा ले लो।" यह सुनते ही भूरा भेड़िया उसके ऊपर टूट पड़ा और उसका तारकोल नोचने लगा। नोचते नोचते वह उसमें अपने दाँत भी गड़ाने लगा जब तक उसे यह पता नहीं चल गया कि वह उसका अब कुछ नहीं बिगाड़ सकता।

उसने फिर उसमें से दाँत निकालने चाहे पर कोई फायदा नहीं। वह अपने दाँत उसमें से बाहर नहीं निकाल सका। बैल उसे खींच कर पता नहीं कहाँ ले गया।

जब बुढ़िया की आँख खुली तो उसने देखा कि उसका बैल तो वहाँ नहीं है। उसने सोचा कि शायद वह घर गया होगा सो उसने अपनी तकली उठायी बोर्ड उठाया उन्हें कन्धे पर डाला और घर चल दी। जब वह घर पहुँची तो देख कर आश्चर्यचकित रह गयी कि उसका बैल तो भूरे भेड़िये को लिये हुए घर पर खड़ा था। उसने

अपने पति से कहा कि वह भेड़िये को भी नीचे वाले कमरे में फेंक दे।

तीसरे दिन बुढ़िया फिर से अपने बैल को घास के मैदान में चराने के लिये ले गयी। वह एक बड़े से टीले के पास बैठ गयी और सो गयी। इस बीच एक लोमड़ा आया और बैल से पूछा "तुम कौन हो मुझे बताओ मुझसे बोलो।"

बैल बोला — "मैं एक तीन साल की बिना बच्चे वाली गाय हूँ। मैं भूसे की बनी हुई हूँ और मेरे ऊपर तारकोल लिपटा हुआ है।"

"अच्छा। तो तुम तारकोल की बनी हुई हो तो थोड़ा सा तारकोल मुझे भी दे दो ताकि मैं उसे अपने शरीर पर मल कर मैं अपने आपको कुत्तों और उनके बच्चों से बचा सकूँ।"

बैल बोला — "ले लो थोड़ा सा तुम भी ले लो।" यह सुनते ही लोमड़ा उसके ऊपर गिर पड़ा और उसका तारकोल नोचने लगा। नोचते नोचते वह उसमें अपने दाँत भी गड़ाने लगा जब तक उसे यह पता नहीं चल गया कि वह उसका अब कुछ नहीं बिगाड़ सकता।

उसने फिर उसमें से दाँत निकालने चाहे पर कोई फायदा नहीं। लोमड़ा उस बैल में से अपने दाँत नहीं निकाल सका। बैल उसे खींच कर पता नहीं कहाँ ले गया।

जब बुढ़िया की आँख खुली तो उसने देखा कि उसका बैल तो वहाँ नहीं है। उसने सोचा कि शायद वह घर गया होगा सो वह घर

चल दी। जब वह घर पहुँची तो देख कर आश्चर्यचकित रह गयी कि उसका बैल तो लोमड़े को लिये हुए घर पर खड़ा था। उसने अपने पति से कहा कि वह लोमड़े को भी नीचे वाले कमरे में फेंक दे।

इसके बाद इसी तरह से बुढ़िया ने खरगोश को भी पकड़ा।

जब बूढ़े ने इन सबको सुरक्षित पकड़ लिया तब वह नीचे वाले कमरे के सामने वाली बैन्च पर बैठ गया और अपना चाकू तेज़ करने लगा। यह देख कर भालू बोला — "बाबा आप यह चाकू किसके लिये तेज़ कर रहे हैं।"

बूढ़ा बोला — "तुम्हारी खाल निकालने के लिये ताकि मैं उससे अपने और अपनी पत्नी के लिये एक एक कोट बना सकूँ।"

भालू बोला — "नहीं बाबा नहीं। मेहरबानी कर के मेरी खाल मत निकालो। अगर आप मुझे छोड़ देंगे तो मैं आपके लिये बहुत सारा शहद ला कर दूँगा।"

बूढ़ा बोला — "ठीक है। पर ध्यान रहे कि तुम मुझे ला कर दोगे।" कह कर उसने भालू को खोल दिया और उसे वहाँ से जाने दिया। वह फिर से बैन्च पर बैठ गया और फिर से अपना चाकू तेज़ करने लगा।

इस बार भेड़िये ने पूछा — "बाबा आप यह चाकू किसके लिये तेज़ कर रहे हैं।"

बूढ़ा बोला — "तुम्हारी खाल निकालने के लिये ताकि मैं उससे अपने लिये ठंड के लिये एक टोपी बना सकूँ।"

भेड़िया बोला — "नहीं बाबा नहीं। मेहरबानी कर के मेरी खाल मत निकालो। अगर आप मुझे छोड़ देंगे तो मैं आपके लिये बहुत सारी छोटी छोटी भेड़ें ला कर दूँगा।"

बूढ़ा बोला — "ठीक है। पर ध्यान रहे कि तुम मुझे ला कर दोगे।" कह कर उसने भेड़िये को खोल दिया और उसे वहाँ से जाने दिया। वह फिर से बैन्च पर बैठ गया और फिर से अपना चाकू तेज़ करने लगा।

इस बार लोमड़े ने पूछा — "बाबा आप यह चाकू किसके लिये तेज़ कर रहे हैं।"

बूढ़ा बोला — "तुम्हारी खाल निकालने के लिये। छोटे छोटे लोमड़ों की खालें बहुत मुलायम होती हैं और वे कौलर और कफ़ बनाने के लिये बहुत अच्छी होती हैं इसलिये मैं उनके लिये तुम्हारी खाल निकालना चाहता हूँ।"

लोमड़ा बोला — "नहीं बाबा नहीं। मेहरबानी कर के मेरी खाल मत निकालो। अगर आप मुझे छोड़ देंगे तो मैं आपके लिये बहुत सारी मुर्गियाँ और बतखें ला कर दूँगा।"

बूढ़ा बोला — "ठीक है। पर ध्यान रहे कि तुम मुझे ला कर दोगे।" कह कर उसने लोमड़े को खोल दिया और उसे वहाँ से जाने

दिया। वह फिर से बैन्च पर बैठ गया और फिर से अपना चाकू तेज़ करने लगा।

अब वहॉ खरगोश अकेला रह गया।

बूढ़ा अब खरगोश के लिये अपना चाकू तेज़ कर रहा था। खरगोश ने पूछा — "बाबा अब आप यह चाकू किसके लिये तेज़ कर रहे हैं।"

बूढ़े ने जवाब दिया — "छोटे खरगोशों की खाल बहुत ही मुलायम होती है। मैं ठंड में तुम्हारी खाल के दस्ताने बना कर पहनूॅगा।"

खरगोश बोला — "नहीं बाबा नहीं। मेहरबानी कर के मेरी खाल मत निकालो। अगर आप मुझे छोड़ देंगे तो मैं आपके लिये बहुत सारी फूल गोभी ला कर दूॅगा।"

बूढ़ा बोला — "ठीक है। पर ध्यान रहे कि तुम मुझे वह ला कर दोगे।" कह कर उसने खरगोश को खोल दिया और उसे वहॉ से जाने दिया।

उसके बाद वे सोने चले गये लेकिन बहुत सुबह सवेरे ही जब न तो ॲधेरा था न उजाला उन्हें कुछ शोर सुनायी दिया तो बुढ़िया बूढ़े से बोली देखो कोई दरवाजा खुरच रहा है। देखो बाहर कौन है। बूढ़ा बाहर गया तो उसने देखा कि भालू शहद की मक्खी का पूरा छत्ता लिये खड़ा है। बूढ़े ने भालू से वह छत्ता ले कर रख लिया और फिर सोने चला गया।

वह अभी लेटा ही था कि फिर से कुछ शोर मचा तो बुढ़िया ने फिर कहा — "देखो न बाहर कौन है।"

बूढ़ा फिर बाहर देखने गया तो अबकी बार वहाँ भेड़िया खड़ा था और उसके साथ बहुत सारी भेड़ें थीं। उसने उन भेड़ों को अन्दर किया ही था कि तभी लोमड़ा वहाँ बहुत सारी मुर्गियाँ और बतखें ले कर आ गया। और उसके तुरन्त बाद ही खरगोश बन्द गोभियाँ केल के पत्ते और कई तरह की सब्जियाँ ले कर आ गया।

बूढ़ा और बुढ़िया अपनी इस योजना से बहुत खुश थे। अब उन्हें किसी चीज़ की जरूरत नहीं थी। जहाँ तक भूसे के बैल का सवाल था वह बाहर धूप में रखा रहा जब तक वह वहाँ रखा रखा चूर चूर नहीं हो गया।

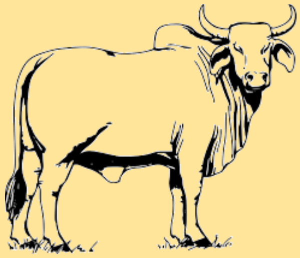

13 सुनहरा जूता[34]

एक बार की बात है कि एक बूढ़ा और बुढ़िया थे। बूढ़े की एक बेटी थी और बुढ़िया की एक बेटी थी। बुढ़िया ने बूढ़े से कहा — "जाओ और अपनी बेटी के लिये एक बिना बच्चे वाली गाय[35] खरीद लाओ ताकि उसके पास उसकी देखभाल का कोई तो काम हो।" सो बूढ़ा गया और बाजार से एक बिना बच्चे वाली गाय खरीद लाया।

बुढ़िया ने अपनी बेटी को तो बहुत बिगाड़ कर रखा हुआ था पर वह बूढ़े की बेटी को अक्सर ही मारती रहती। इसके बावजूद बूढ़े की बेटी बहुत अच्छी और मेहनत करने वाली लड़की थी जबकि बुढ़िया की बेटी बहुत ही आलसी थी। वह अपने हाथ अपनी गोद में रख कर बैठे रहने के सिवाय और कुछ नहीं करती थी।

एक दिन बुढ़िया ने बूढ़े की बेटी से कहा — "देख ओ कुत्ते की बेटी। गाय को बाहर चराने के लिये ले जा। और ये दो गठरी रुई है इन्हें साफ कर के शाम तक कात लाना।" लड़की ने रुई की दोनों गठरियॉ उठायीं और गाय ले कर उसे चराने के लिये चल दी।

---

[34] The Golden Slipper. (Tale No 13)

[35] Translated for the word "Heifer"

सो गाय तो चरने लगी और लड़की बैठ कर रोने लगी। गाय ने उसे रोते देखा तो उससे पूछा — "प्यारी बेटी तुम यहाँ बैठी बैठी क्यों रोती हो?"

लड़की बोली — "मुझे अफसोस है। मैं क्यों न रोऊँ। मेरी सौतेली माँ ने मुझे ये दो गठरी रुई दी है और इसे साफ कर के धुन कर कात कर धो कर कपड़ा बुन कर शाम को लाने के लिये कहा है।"

गाय बोली — "दुखी मत हो। सब कुछ ठीक हो जायेगा। तुम सोने के लिये लेट जाओ।"

सो वह लड़की सोने के लिये लेट गयी और सो गयी। जब वह सो कर उठी तो उसने देखा कि सारी रुई साफ हो चुकी थी कत चुकी थी और उसका कपड़ा बुन कर धोया जा चुका था।

तब वह गाय और कपड़े को ले कर घर चली गयी और कपड़ा ले जा कर अपनी सौतेली माँ को दे दिया। बुढ़िया ने उसे ले लिया और छिपा कर रख दिया ताकि किसी को यह पता न चल सके कि उसे बूढ़े की बेटी ले कर आयी थी।

अगले दिन उसने अपनी बेटी से कहा — "प्यारी बेटी। जाओ तुम गाय को बाहर ले जा कर चरा लाओ। और देखो यह थोड़ी सी रुई है जिसे तुम साफ कर के कात कर के या जैसे भी तुम चाहो कर के इसे शाम को घर ले आना।

वह गाय और रुई ले कर गाय चराने चली गयी। वहाँ जा कर उसने गाय को तो चरने भेज दिया और खुद वह सो गयी। शाम को वह गाय चरा कर घर ले आयी और रुई ला कर अपनी माँ को दे दी और बोली — "ओह मम्मी सारा दिन मेरा सिर दर्द करता रहा। गर्म भी बहुत था। मैं रुई को गीला करने के लिये नाले पर भी नहीं जा सकी।"

उसकी माँ बोली — "कोई बात नहीं बेटी। तुम लेट जाओ और सो जाओ। यह काम तुम फिर किसी और दिन कर लेना।"

अगले दिन उसने बूढ़े की बेटी को फिर से बुलाया — "उठ ओ कुतिया। जा और गाय को चरा ला। और यह एक गट्ठर रुई का है जिसे तुझे साफ करना है कातना है और उसका कपड़ा बुन कर साफ कर के लाना है।" लड़की ने वह रुई का गट्ठर लिया और गाय को चराने के लिये चल दी।

गाय तो घास चरने लगी और लड़की बेचारी एक विलो के पेड़ के नीचे बैठ गयी। उसने अपनी रुई एक तरफ को रख दी और बहुत ज़ोर ज़ोर से रोने लगी।

उसे रोता देख कर गाय उसके पास आयी और उससे पूछा — "प्यारी बेटी तुम क्यों रोती हो?"

लड़की बोली — "मैं क्यों न रोऊँ।" कह कर उसने सारी बात गाय को बता दी।"

गाय बोली — "तुम दुखी न हो। सब ठीक हो जायेगा। तुम लेट कर आराम से सोओ।" सो वह लेट गयी और तुरन्त ही सो गयी।

जब वह शाम को उठी तो उसने देखा कि उस रुई का तो कपड़ा बन चुका था ताकि उसकी तुरन्त ही कमीज़ बनायी जा सकती थी। वह गाय को घर ले गयी और कपड़ा ले जा कर अपनी सौतेली माँ को दे दिया।

यह देख कर बुढ़िया अपने मन में सोचने लगी "क्या बात है कि इस कुत्ते के बच्चे की बेटी ने अपना काम समय से खत्म कर लिया। मुझे मालूम है कि जरूर ही इस गाय ने इसका काम किया होगा। पर मैं इस पर रोक लगाने वाली हूँ।"

वह बूढ़े के पास गयी और उससे कहा कि वह इस गाय को मरवा दे क्योंकि तेरी यह बेटी फिर ज़रा सा भी काम नहीं करती। बस यह गाय को चराने के लिये बाहर चली जाती है। वहाँ यह कुछ नहीं करती बस सारे दिन सोती रहती है।"

बूढ़ा बोला — "ठीक है मैं इसे मारे देता हूँ।"

पर बूढ़े की बेटी ने यह सब कुछ सुन लिया। वह बागीचे में चली गयी और ज़ोर ज़ोर से रोने लगी। उसका रोना सुन कर गाय उसके पास आयी और उससे पूछा — "मेरी बच्ची क्यों रोती हो?"

लड़की बोली — "मैं क्यों न रोऊँ जबकि वे तुझे मारना चाहते हैं।"

गाय बोली — "तुम चिन्ता न करो सब ठीक हो जायेगा। जब वे लोग मुझे मार दें तो तुम अपनी सौतेली माँ से कहना कि वह तुम्हें मेरी आँतें साफ करने के लिये दे दें।

उन आँतों में तुम्हें एक दाना मिलेगा जिसे तुम बो देना। उससे विलो का एक पेड़ उग आयेगा। फिर जो कुछ भी तुम्हें चाहिये तुम उस विलो के पेड़ से माँग लेना। तुम्हारी सब इच्छाऐं पूरी हो जायेंगी।"

उसके पिता ने गाय को मार डाला। लड़की ने अपनी सौतेली माँ से उसकी आँतें धोने की इच्छा प्रगट की तो वह बोली — "जैसे मेरे पास कोई और है जो यह काम करेगा।"

सो उसने उसे धोने के लिये वे आँतें दे दीं। आँतें धोते समय उसे उनमें एक दाना मिल गया। उसने वह दाना अपने घर के सामने बो दिया।

अगले दिन जब वह सो कर उठी तो उसके घर के सामने उस दाने से एक विलो का पेड़ उग आया था। विलो के पेड़ के नीचे पानी का एक स्रोत भी था। वैसा शुद्ध और साफ पानी गाँव भर में कहीं नहीं था। वह बर्फ की तरह से ठंडा और साफ था।

जब रविवार आया तो सौतेली माँ ने अपनी प्रिय बेटी को सजाया और चर्च ले गयी। पर बूढ़े की बेटी से उसने कहा — "तू चौका चूल्हा देख। आग को ठीक से जला कर रखना और खाना बना कर रखना। सारे घर की सफाई कर के रखना।

अपनी सबसे अच्छी फ्राक पहन कर रखना और कपड़े धो कर रखना। तब तक मैं चर्च से लौट कर आती हूँ। और अगर तूने ये सब काम खत्म नहीं किये तो मैं तुझे मार दूँगी।"

सो बुढ़िया और उसकी बेटी तो चर्च चले गये और बूढ़े की तेज़ बेटी ने चूल्हे में आग जलायी और खाना तैयार किया। फिर वह विलो के पेड़ के पास पहुँची और वहाँ जा कर बोली — "ओ विलो के पेड़ ओ विलो के पेड़। अपनी छाल में से निकल कर आ ओ लेडी अन्ना, जब मैं तुझे पुकारूँ।"

यह सुनते ही विलो के पेड़ ने अपना कर्तव्य निभाया। उस पेड़ ने अपने सारे पत्ते हिलाये और फिर उसमें से एक लड़की निकल कर बाहर आयी और बोली — "मेरी प्यारी छोटी लेडी। बोलो मेरे लिये क्या आज्ञा है।"

लड़की बोली — "मुझे एक बहुत सुन्दर पोशाक दो और मुझे एक घोड़ा गाड़ी दो क्योंकि मुझे भगवान के घर यानी कि चर्च जाना है।" तुरन्त ही उसके लिये सिल्क और साटिन की पोशाक आ गयी और एक घोड़ा गाड़ी आ गयी। उसके पैर में सुनहरे जूते थे। और वह चर्च चली गयी।

जब वह चर्च पहुँची तो वहाँ बहुत कुछ करने को था। उसे देख कर बहुत सारे लोग बोले — "ओह ओह ओह। यह कौन है। क्या यह कोई राजकुमारी है या फिर यह कोई रानी है। इसके जैसी तो हमने पहले कभी देखी नहीं।"

इत्तफाक से नौजवान ज़ारेविच[36] भी वहाँ मौजूद था। जब उसने उसे देखा तो उसका तो उसे देख कर दिल ही धड़कने लगा। वह तो उसके ऊपर से अपनी ऑखें ही नहीं हटा सका। वहीं का वहीं खड़ा रह गया। सारे कप्तान और दरबारी लोग उसकी तारीफ कर रहे थे। वे सब उसे देखते ही उससे प्यार करने लगे। पर वह थी कौन इसका तो उन्हें पता ही नहीं था।

जब चर्च में पूजा खत्म हो गयी ये वह उठी गाड़ी में बैठी और घर आ गयी। घर आने पर उसने अपने बढ़िया कपड़े उतारे अपने फटे पुराने कपड़े फिर से पहने और खिड़की वाले कोने में बैठ कर चर्च से आने वालों को देखने लगी।

उसकी सौतेली माँ भी चर्च से वापस आयी। उसने उससे पूछा — "क्या खाना तैयार है?"

"हॉ तैयार है।"

"क्या तूने कमीज़ें सिल दीं?"

"हॉ मैंने कमीज़ें भी सिल दीं।"

उसके बाद वे सब खाना खाने बैठे तो वे इस बात का वर्णन करने लगीं कि आज उन्होंने चर्च में कितनी सुन्दर लड़की देखी। बुढ़िया बोली — "ज़ारेविच तो बजाय अपनी प्रार्थना करने के उसे ही सारा समय देखता रहा। वह लग ही इतनी अच्छी रही थी।"

---

[36] Tzarevich – son of a Tzar or prince in Russian language

उसके बाद उसने बूढ़े की बेटी से कहा — "जहाँ तक तेरा सवाल है ओ आलसिन। तूने कमीज़ें तो सिल दी हैं और धो भी दी हैं पर तू तो गन्दी ही है।"

अगले रविवार सौतेली माँ ने चर्च के लिये फिर से अपनी बेटी को तैयार किया और अपनी सौतेली बेटी से कहा — "ओ आलसिन। देख कर रखना कि आग जलती रहे।" और उसे बहुत सारे काम थमा दिये।

बूढ़े की बेटी ने सारे काम बहुत जल्दी खत्म कर लिये।"

उसके बाद वह फिर से विलो के पेड़ के पास गयी और बोली — "ओ चमकदार वसन्त के विलो पेड़। ओ चमकदार वसन्त के विलो पेड़। बदल दो। बदल दो।"

तब पिछली बार से भी ज़्यादा शानदार एक सुन्दरी उस पेड़ में से निकली और बोली — "ओ छोटी लेडी ओ प्यारी लेडी। तुम्हें क्या चाहिये?"

उसने उसे अपनी जरूरत की सब चीज़ें बता दीं। तो उसने उसे एक बहुत सुन्दर पोशाक दी एक जोड़ी सुनहरे जूते दिये और वह एक शानदार गाड़ी में बैठ कर चर्च चली गयी।

वहाँ ज़ारेविच फिर से आया हुआ था। जैसे ही उसने लड़की को देखा तो वह तो वहीं खड़ा रह गया जैसे जमीन से जम गया हो। वह अपनी आँखें भी उससे नहीं हटा सका। लोग भी आपस में फुसफुसा रहे थे "क्या यहाँ कोई ऐसा नहीं है जो यह जानता हो कि

यह कौन है। क्या किसी को नहीं पता कि यह इतनी सुन्दर लड़की कौन है?"

फिर उन्होंने आपस में पूछना शुरू कर दिया "क्या तुम इसे जानते हो? क्या तुम इसे जानते हो?" सभी ने यही जवाब दिया कि "नहीं हम तो नहीं जानते। नहीं हम तो नहीं जानते।"

जब ज़ारेविच से पूछा गया तो ज़ारेविच ने भी यही कहा — "नहीं मैं तो इसे नहीं जानता। पर जो कोई मुझे यह बतायेगा कि यह कौन है मैं उसे थैला भर कर सोने के डकैट[37] दूँगा।"

उन्होंने सबने आपस में एक दूसरे से पूछा एक दूसरे से सलाह की पर कोई यह नहीं बता सका कि वह कौन है। पर ज़ारेविच के साथ एक हँसोड़ रहता था जो जब भी ज़ारेविच दुखी होता तो हमेशा ही उसके साथ मजाक करता रहता था।

इस बार भी वह हँसा और उसने ज़ारेविच से कहा — "मुझे मालूम है कि इस लेडी का पता कैसे लगाया जा सकता है।"

नौजवान ज़ारेविच ने पूछा "कैसे?"

हँसोड़ बोला — "मैं बताता हूँ। चर्च में उस जगह पर तारकोल लगा दो जहाँ वह खड़े होना चाहती है। इससे उसका जूता उसमें चिपक जायेगा। वह वहाँ से जल्दी भागने के चक्कर में यह भी नहीं देखेगी कि उसका जूता चर्च में पीछे छूट गया है।" सो ज़ारेविच ने

[37] Ducket was the currency

अपने दरबारियों को हुक्म दिया कि वे तुरन्त ही उस जगह पर तारकोल लगा दें।

अगली बार जब चर्च की पूजा खत्म हुई ते वह हमेशा की तरह से जल्दी से उठी और जाने लगी तो उसका एक जूता उस तारकोल में चिपक गया। जब वह घर पहुँची तो उसने अपनी बढ़िया पोशाक उतार दी अपने फटे पुराने कपड़े पहन कर खिड़की के पास वाले कोने में बैठ गयी और चर्च से आने वालों को देखती रही।

जब उसकी सौतेली माँ और बहिन चर्च से आयीं तो उनके पास बात करने के लिये बहुत कुछ था जैसे कैसे वह नौजवान ज़ारेविच उस सुन्दर लड़की से प्रेम करने लगा था पर कोई भी उसे पहचान नहीं पा रहा था कि वह कहाँ से आयी थी।

अब सौतेली माँ बूढ़े की बेटी से और भी ज़्यादा घृणा करने लगी थी क्योंकि वह हमेशा अपना काम बड़े अच्छे तरीके से कर लेती थी।

पर ज़ारेविच ने कुछ नहीं किया सिवाय दर्द महसूस करने के। उसने अपने पूरे राज्य में यह ढिंढोरा पिटवा दिया कि "कौन है वह लड़की जिसका सुनहरा जूता खो गया है?" पर कोई सामने नहीं आया।

तब ज़ार ने अपने बहुत सारे सलाहकारों को अपने राज्य में ऐसी लड़की को खोजने के लिये भेजा। उसने उनसे कहा कि "अगर

यह लड़की न मिली तो मेरा बच्चा तो मर जायेगा और फिर तुम जानते हो कि तुम सब भी गये।"

सो ज़ार के सारे सलाहकार अपने राज्य के सारे गॉवों और शहरों में गये और वहॉ जा कर उन्होंने पहले राजकुमारियों कुलीन लोगों और अमीर लोगों की सब लड़कियों के पैर नापे और उनकी जूते के साइज़ से तुलना की ताकि वे उस लड़की को पहचान सकें जो ज़ारेविच की दुलहिन बन सके।

पर उन सब लड़कियों के पैर या तो छोटे थे या फिर बड़े। फिर वे गरीब और किसान लोगों के पास गये और वहॉ जा कर उनकी बेटियों को देखा।

वे खोजते रहे खोजते रहे पैर नापते रहे नापते रहे फिर वे यह सब करते करते इतना थक गये कि वे अपने चारों तरफ देखने लगे तो उनको एक झोंपड़ी के पास लगा एक विलो का पेड़ दिखायी दे गया। उस पेड़ की जड़ में पानी का एक स्रोत था।

वे बोले "चलो इस पेड़ की ठंडी छॉह में बैठ कर थोड़ा आराम कर लेते हैं।" सो वे उस पेड़ के पास गये और वहॉ जा कर आराम करने के लिये उस पेड़ के नीचे बैठ गये। तभी बुढ़िया उस झोंपड़ी से बाहर निकल कर आयी तो उन्होंने उससे पूछा — "मॉ जी क्या आपके कोई बेटी है?"

"हॉ है।"

उन्होंने पूछा — "एक और दो?"

"दो। पर दूसरी मेरी अपनी बेटी नहीं है वह केवल रसोई में काम करने वाली एक आलसी लड़की है। वह तो देखने में भी बहुत गन्दी है।"

"ठीक है ठीक है। हम दोनों का पैर इन सुनहरी जूतों से नापना चाहेंगे।"

बुढ़िया बोली — "ठीक है।" फिर उसने अपनी बेटी से कहा कि वह अपने आपको ठीक से साफ करे अपने पैर धोये पर बूढ़े की बेटी स्टोव के पीछे छिप कर बैठ गयी। वह न तो साफ थी न उसने ठीक से कपड़े पहने थे। बुढ़िया ने उससे कहा — "ओ कुत्ते की बच्ची, तू वहीं बैठी रह।"

ज़ार के सलाहकार दोनों बेटियों के पैर नापने के लिये झोंपड़ी में आये तो बुढ़िया अपनी बेटी से बोली — "बेटी अपना पैर आगे बढ़ाओ।" लड़की ने अपना पैर आगे बढ़ाया सलाहकारों ने उसे नापा पर वह जूता तो उसके पैरों में बिल्कुल भी फिट नहीं हो रहा था।

सो सलाहकारों ने बुढ़िया से कहा — "आपकी दूसरी बेटी कहाँ है उसे बुलाइये।"

बुढ़िया बोली — "वह। वह तो बहुत ही आलसी है। इसके अलावा वह तैयार भी नहीं है।"

"कोई बात नहीं। हमें तो केवल उसका पैर नापना है। कहाँ है वह?"

तब बूढ़े की बेटी बाहर निकल कर आयी तो उसकी सौतेली माँ ने उसे उन सलाहकारों की तरफ धक्का देते हुए कहा “जा न ओ आलसी लड़की।”

तब सलाहकारों ने जूते से उसका पैर नापा तो लो वह तो उसके पैर में बिल्कुल ऐसे फिट हो गया जैसे हाथ में दस्ताने फिट हो जाते हैं। यह देख कर दरबारी और सलाहकार लोग बहुत खुश हुए और उन्होंने भगवान को बहुत बहुत धन्यवाद दिया।

वे बोले — “माँ जी। हम आपकी इस बेटी को अपने साथ ले जायेंगे।”

“क्या? ऐसी गन्दी लड़की को आप अपने साथ ले जायेंगे? लोग आप पर हँसेंगे नहीं?”

“हो सकता है वे हम पर हँसें। पर फिर भी हमें इसे ले जाना तो पड़ेगा ही।”

तब बुढ़िया ने उन्हें डाँटा और उस लड़की को उनके साथ भेजने से मना करने लगी और चिल्ला कर बोली — “इतनी आलसी और गन्दी लड़की ज़ार के बेटे की बहू कैसे बन सकती है?”

वे बोले — “बेटी तुम्हें हमारे साथ आना ही पड़ेगा। जाओ जा कर ठीक से तैयार हो कर आ जाओ।”

वह बोली — “एक मिनट ठहरिये। मैं अभी तैयार हो कर आती हूँ।”

कह कर वह विलो के पेड़ के नीचे से निकलने वाले स्रोत के पास गयी वहाँ जा कर वह नहा धो कर कपड़े पहन कर जब झोंपड़ी में घुसी तो वह इतनी शानदार और सुन्दर लग रही थी कि ऐसी लड़की के बारे में न तो सोचा जा सकता था और न कोई अन्दाज़ा लगाया जा सकता था केवल कहानियों में ही सुना जा सकता था।

वह उस समय सूरज की तरह चमक रही थी। यह देख कर बुढ़िया भी कुछ नहीं कह सकी। उन्होंने उसे एक गाड़ी में बिठाया और चल दिये।

जब ज़ारेविच ने उसे देखा तो वह अपने आपे में न रह सका। वह बोला — "पिता जी। जल्दी कीजिये। हमें अपना आशीर्वाद दीजिये।"

सो ज़ार ने उन दोनों को आशीर्वाद दिया और उन दोनों की शादी हो गयी। उनकी शादी की खुशी में एक बहुत बढ़िया दावत दी गयी जिसमें सारी दुनियाँ को बुलाया गया।

उसके बाद वे दोनों एक साथ खुशी खुशी रहे और जब तक रहे तब तक पेट भर कर गेहूँ की रोटी खाते रहे।

14 लोहे का भेड़िया[38]

एक बार चर्च का एक पादरी था जिसके पास एक नौकर था जिसने उसके पास बड़ी वफादारी के साथ बारह साल से ज़्यादा काम किया था।

एक दिन वह पादरी के पास आया और बोला — "आप मेरा हिसाब तय कर दीजिये। आपके ऊपर जो भी मेरा निकलता हो वह मुझे दे दीजिये। मैं आपके पास बहुत दिनों तक काम कर चुका हूँ अब मैं इस दुनियाँ में मैं अपने थोड़े से दिन शान्ति से गुजारना चाहता हूँ।"

पादरी बोला — "यह तो बहुत अच्छी बात है। मैं अब तुझे बताता हूँ कि मैंने तेरी वफादार नौकरी के लिये क्या मजदूरी तय कर रखी थी। ले मैं तुझे यह अंडा देता हूँ। तू इसे घर ले जा। जब तू घर पहुँच जाये तो वहाँ जानवरों के रहने का एक घर बनाना और उसे बहुत मजबूत बनाना।

तब इस अंडे को उस जानवरों के घर के बीचोबीच तोड़ना फिर तू कुछ देखेगा। पर तू जो चाहे करे पर इस अंडे को रास्ते में मत तोड़ना क्योंकि तब तेरी अच्छी किस्मत तेरा साथ छोड़ देगी।"

[38] The Iron Wolf. (Tale No 14)

नौकर ने अंडा लिया और घर चल दिया। वह चलता गया चलता गया। आखिर उसने सोचा "देखता हूँ कि मेरे लिये इस अंडे में क्या है।"

ऐसा सोच कर उसने वह अंडा बीच रास्ते में ही तोड़ दिया। लो उसमें से तो बहुत सारे हर तरह के जानवर निकल आये। वे सब इतने सारे थे कि उन्हें देख कर ऐसा लग रहा था जैसे वहाँ कोई जानवरों का मेला लग गया हो।

नौकर तो यह देख कर ठगा सा खड़ा देखता रह गया। उसने फिर सोचा कि "भगवान के नाम पर अब मैं इतने सारे जानवरों को इस अंडे के अन्दर कैसे भरूँ।"

उसने बस अभी ये शब्द कहे ही थे कि एक लोहे का भेड़िया वहाँ आया और उससे कहा — "मैं इन सब जानवरों को इस अंडे के अन्दर भर दूँगा और उस अंडे को इस तरीके से जोड़ भी दूँगा कि वह पहले की तरह से पूरा साबुत हो जायेगा।"

लोहे का भेड़िया आगे बोला — "पर इसके बदले में जब भी कभी तुम दुलहे की कुर्सी पर बैठोगे तो मैं तुम्हें खाने आ जाऊँगा।"

नौकर ने सोचा "इससे पहले कि मैं दुलहे की कुर्सी पर बैठूँ और यह मुझे खाने के लिये आये बहुत कुछ हो सकता है इस बीच में इतने सारे जानवरों को ले लूँगा।"

सो लोहे के भेड़िये ने सारे जानवरों को इकट्ठा किया उनको अंडे में भरा और अंडे को पहले की तरह से बन्द कर दिया और जैसे वह पहले साबुत था वैसा ही साबुत उसे फिर से कर दिया।

नौकर उस अंडे को ले कर वहाँ से अपने गाँव चला गया जहाँ वह रहता था। वहाँ जा कर पादरी के कहे अनुसार उसने एक बहुत मजबूत जानवरों का घर बनाया और उसके बीचोबीच जा कर उस अंडे को तोड़ दिया। तुरन्त ही वह सारा जानवरों का घर जानवरों से भर गया।

उसके बाद उसने खेती और पशु पालन शुरू कर दिया। अब तो वह सारी दुनियाँ में बहुत अमीर हो गया। इतना अमीर कि अब उससे अमीर और कोई था ही नहीं। यह बात उसने अपने तक ही सीमित रखी और उसका सामान तेज़ी से बढ़ने लगा। अब उसकी खुशियों में बस एक ही खुशी की कमी थी और वह थी पत्नी की पर वह पत्नी कैसे लाये। उसको पत्नी लाने में डर लगता था।

जहाँ वह रहता था वहीं पास में एक जनरल रहता था। उसकी एक बहुत सुन्दर बेटी थी। इस बेटी को इस अमीर आदमी से प्यार हो गया।

सो एक दिन जनरल इस अमीर आदमी के घर गया और इससे पूछा — "तुम शादी क्यों नहीं करते? मैं अपनी बेटी की शादी तुमसे कर दूँगा और अपनी बेटी के साथ साथ बहुत सारा पैसा भी दूँगा।"

अमीर आदमी बोला — "मैं शादी कैसे कर सकता हूँ। जैसे ही हम शादी की कुर्सियों पर बैठेंगे लोहे का भेड़िया आयेगा और मुझे खा जायेगा।" और उसने जनरल को वह सारी घटना बता दी जो उसके साथ हुई थी।

जनरल बोला — "यह तुम क्या बेकार की बात कर रहे हो। तुम डरो नहीं। मेरे पास बहुत ही ताकतवर लोग हैं। जब शादी के समय शादी की कुर्सियों पर बैठने का समय आयेगा तो हम तुम्हारे घर को अपने सिपाहियों के तीन मजबूत घेरों से घेर देंगे और वे उस लोहे के भेड़िये को तुम्हारे पास आने ही नहीं देंगे। मैं तुमसे वायदा करता हूँ।"

इस तरह वे तब तक इस बारे में बात करते रहे जब तक वह खुद ही शादी के लिये तैयार नहीं हो गया। उसके बाद उन लोगों ने शादी की दावत की तैयारी शुरू कर दी। उसके तुरन्त बाद ही जनरल ने अपने ताकतवर सिपाहियों को तीन लाइनों में उसके घर के चारों तरफ खड़ा करवा दिया।

अब जैसे ही नये दुलहा दुलहिन अपनी अपनी शादी वाली कुर्सियों पर बैठे यकीनन लोहे का भेड़िया वहाँ भागता हुआ आ गया। उसने देखा कि दुलहे के घर के चारों तरफ तो बहुत सारे लोग तीन लाइनों में खड़े हुए हैं।

वह तीनों लाइनों के ऊपर से कूद कर सीधा उसके घर में जा पहुँचा। पर आदमी ने जैसे ही लोहे का भेड़िया देखा वह खिड़की से

हो कर बाहर कूद गया। अपने घोड़े पर चढ़ा और भाग गया। भेड़िया उसके पीछे भाग लिया।

वह दूर और दूर भागता चला गया और भेड़िया उसके पीछे भागता चला गया पर वह भेड़िया कितना भी तेज़ भागा मगर किसी तरह आदमी को पकड़ नहीं सका। आखिर शाम को आदमी रुक गया तो उसने देखा कि वह एक बियाबान जंगल में खड़ा है।

उसके सामने एक झोंपड़ी थी। वह झोंपड़ी तक गया तो उसने देखा कि उस झोंपड़ी के बाहर एक बूढ़ा और एक बुढ़िया बैठे हुए हैं। उसने उनसे कहा — "ओ भले लोगों। क्या आप मुझे यहाँ थोड़ी देर आराम करने देंगे?"

वे बोले "हाँ हाँ क्यों नहीं।"

आदमी बोला — "मगर एक बात है। जब मैं आपके पास आराम कर रहा होऊँगा तो मेहरबानी कर के लोहे के भेड़िये को मुझे पकड़ने मत देना।"

बूढ़ा और बुढ़िया ने कहा — "तुम चिन्ता मत करो। हमारे पास एक कुत्ता है जिसका नाम चुटकू है जो किसी भी भेड़िये को एक मील दूर से आता सुन लेता है। जब वह आयेगा तो हमें यकीन है कि वह हमें उसके आने की खबर जरूर दे देगा।"

सो वह वहाँ लेट गया। उसकी बस वहाँ ऑख लगी ही थी कि चुटकू भौंक पड़ा। बूढ़ों ने उसे तुरन्त ही उठाया और कहा कि वह वहाँ से भाग जाये क्योंकि लोहे का भेड़िया आ रहा है। उन्होंने उसे

कुत्ता दे दिया और रास्ते में खाने के लिये भट्टी में पकी हुई गेहूँ की रोटी दे दी।

कुत्ता और रोटी ले कर आदमी वहाँ से चल दिया। वह अँधेरा होने तक चलता रहा कि वह एक और जंगल में आ गया। वहाँ भी उसे एक झोंपड़ी दिखायी दे गयी। उस झोंपड़ी के सामने भी एक बूढ़ा और एक बुढ़िया बैठे थे।

उसने उन दोनों से भी रात को रुकने की जगह माँगी और कहा कि वे उसकी लोहे के भेड़िये से रक्षा करें। उन्होंने कहा — "तुम चिन्ता न करो हमारे पास वाज़्को[39] नाम का एक कुत्ता है जो किसी भी भेड़िये को नौ मील दूर से सुन लेता है।"

सो वह वहाँ लेट गया और सो गया। मुश्किल से उसकी आँख लगी होगी कि वाज़्को भौंक पड़ा। बूढ़ों ने उसे उठाया कि लोहे का भेड़िया आ रहा है अब उसे जाना चाहिये। उन्होंने उसे अपना कुत्ता दिया और रास्ते में खाने के लिये भट्टी में पकी हुई जौ की रोटी दी। वह अपने घोड़े पर बैठा दोनों कुत्ते उसके पीछे थे और वह चल दिया।

वह फिर चलता गया चलता गया और जब वह रुका तो उसने अपने चारों तरफ देखा तो उसने अपने आपको फिर से एक जंगल में पाया। वहाँ भी एक झोंपड़ी थी। वह उस झोंपड़ी में घुसा तो वहाँ भी एक बूढ़ा और एक बुढ़िया बैठे हुए थे।

---

[39] Vazhko

उसने उनसे कहा — “ओ भले लोगों। क्या आप मुझे यहाँ आराम करने की जगह दे सकते हैं। पर मेहरबानी कर के लोहे के भेड़िये से मेरी रक्षा करें।”

बूढ़ा और बुढ़िया बोले — “डरो नहीं। तुम यहाँ आराम से सो सकते हो। हमारे पास एक कुत्ता है बैरी जो भेड़िये की आवाज बारह मील से सुन लेता है। जब वह आयेगा तो वह हमें बता देगा।”

सुबह को बैरी ने बताया कि लोहे का भेड़िया आ रहा है। तुरन्त ही बूढ़ों ने आदमी को उठाया और उसे वहाँ से जाने के लिये कहा। उन्होंने उसे अपना कुत्ता दिया और रास्ते में खाने के लिये कूटू[40] की रोटी दी और उसे विदा किया।

आदमी ने तीनों कुत्ते लिये खाना लिया और वहाँ से चल दिया। अब उसके पास तीन कुत्ते थे और तीनों उसके पीछे पीछे चल रहे थे।

वह चलता चलता रहा और शाम के समय वह एक और जंगल में था। वहाँ भी एक झोंपड़ी थी। वह उसके अन्दर गया पर वहाँ कोई भी नहीं था। वहाँ जा कर वह भी लेट गया और उसके कुत्ते भी लेट गये।

---

[40] Translated for the word “Buckwheat”. In India this is eaten on fasting days.

चुटकू उसके कमरे की देहरी पर था। वाज़्को उसके घर की देहरी पर था और बैरी घर के बाहरी गेट की देहरी पर था। तभी उन्हें लोहे के भेड़िये के आने की आवाज सुनायी पड़ी।

चूटकू ने उसके आने की सूचना दी वाज़्को ने उसे धरती पर ही पकड़ लिया और बैरी ने उसे फाड़ डाला। आदमी ने अपने तीनों कुत्ते लिये और घर वापस आ गया।

15 तीन भाई[41]

एक बार की बात है कि तीन भाई थे। पहले और दूसरे तो ठीक थे पर तीसरा भाई कुछ बेवकूफ सा था। उनके छोटे से बागीचे में सुनहरे सेब के पेड़ थे जिन पर सुनहरे सेब लगा करते थे।

इस बागीचे से कुछ ही दूरी पर एक घरेलू सूअर रहता था जिसे इन सुनहरे सेबों को खाने की लत लग गयी थी। इसलिये पिता ने अपने बेटों को इन पेड़ों की रखवाली के लिये भेजा।

सबसे बड़ा बेटा सबसे पहले गया और उसकी रखवाली करने लगा जब तक वह थक नहीं गया। उसके बाद वह सो गया। तब वह घरेलू सूअर आया और उसने उनमें से एक सुनहरे सेबों का पेड़ उखाड़ लिया। उसके सारे सेब खा कर वह वहाँ से चला गया। अगले दिन पिता सुबह को उठा और अपने सेबों के पेड़ों को गिना तो उनमें से एक पेड़ कम निकला।

अगली रात पिता ने अपने दूसरे बेटे को उन सेबों के पेड़ों की रखवाली के लिये भेजा। वह भी उनकी रखवाली करता रहा जब तक कि वह थक नहीं गया। थकने पर वह भी सो गया। उसके सोने के बाद वह घरेलू सूअर फिर से वहाँ आया और एक पेड़ उखाड़ लिया। उसके सारे सेब खाये और चला गया। अगले दिन

---

[41] The Three Brothers. (Tale No 15)

पिता सुबह को उठा और अपने सेबों के पेड़ों को गिना तो उनमें से फिर एक पेड़ कम निकला।

अगली रात तीसरे और सबसे छोटे बेटे ने अपने पिता से कहा — "पिता जी मुझे भी जाने दीजिये न सेब के पेड़ की रखवाली के लिये।"

पर उसके पिता ने कहा कि "बेवकूफ तू कहाँ जायेगा। तेरे अक्लमन्द भाइयों ने बागीचे की रखवाली की पर वे किसी को पकड़ नहीं पाये। तू वहाँ क्या कर सकता है।"

"ठूँ ठूँ। पिता जी मुझे एक बन्दूक दीजिये और मैं भी वही करूँगा।" अब उसका पिता उसे बन्दूक नहीं देना चाहता था पर उसने बन्दूक ली और वह बागीचे की रखवाली करने चला गया।

वह लड़का वहाँ जा कर बैठ गया। बैठा रहा बैठा रहा। कुछ नहीं हुआ। कोई नहीं आया। उसे नींद आने लगी। नींद के झटके में बन्दूक उसके घुटनों पर से नीचे गिर पड़ी। वह चौंक कर जाग गया और और ज़्यादा ध्यान से पहरा देने लगा।

आखिर उसने कुछ सुना तो इधर उधर देखा। लो वहाँ तो एक सूअर खड़ा था। उसने तुरन्त ही बन्दूक चला दी। उस समय वह सूअर एक और पेड़ खोद रहा था।

पटाक। उसके भाइयों ने बन्दूक की आवाज सुनी तो वे दौड़े आये तो यह देख कर आश्चर्यचकित रह गये कि वहाँ तो एक मरा हुआ सूअर पड़ा हुआ था।

वे बोले — “अब हमारा क्या होगा?”

सबसे बड़ा भाई बोला — “चलो इसे हम मार देते हैं और उसे एक गड्ढा खोद कर दबा देते हैं। फिर हम कह देंगे कि हमने इस घरेलू सूअर को मार दिया।”

सो उन्होंने अपने भाई को मारा और एक गड्ढे में दबा दिया और घरेलू सूअर को अपने पिता के पास ले गये और बोले — “जब हम पहरा दे रहे थे यह सूअर आया और पेड़ की जड़ खोदने लगा सो हमने इसे मार दिया और आपके पास ले आये।”

पिता बहुत खुश हुआ।

एक दिन एक कुलीन आदमी उधर से गुजर रहा था तो उसने देखा कि मिट्टी के एक छोटे से टीले पर एल्डर की एक बहुत सुन्दर झाड़ी उग रही है। सो वह उसके पास गया और उसकी एक डाली काट कर उसकी एक बाँसुरी बना ली।

उसने उसे बजाना शुरू किया। पर जो वह बजाना चाहता था वह तो उससे बज नहीं रहा था वह तो बस अपने आप ही बज रही थी जो वह बजाना चाहती थी। वह रोती हुई बोली —

बजाओ ओ अच्छे मालिक बजाओ पर मेरा दिल मत निकालो
मुझे मेरे भाइयों ने मार दिया मेरे शरीर को इस गड्ढे में फेंक दिया
उस घरेलू सूअर की वजह से जिसे मैंने मारा जिसने पेड़ उखाड़ा

वह कुलीन आदमी तब एक सराय में चला गया जहाँ उसे उस बेवकूफ का पिता मिल गया। कुलीन आदमी ने उससे कहा —

“आज मेरे साथ एक अजीब सी घटना घटी। आज मैंने ऐल्डर की झाड़ी की एक डंडी से एक बाँसुरी बनायी तो उस पर जो मैंने बजाना चाहा वह तो बजा नहीं बस वह अपने आप ही बजने लगी।”

तब पिता ने वह बाँसुरी अपने हाथ में ली और उसे खुद बजाना चाहा तो उससे भी वह नहीं बजा जो वह बजाना चाहता था। उसके हाथों में आ कर वह अपने आप ही बजने लगी —

बजाओ ओ मेरे अच्छे पिता बजाओ पर मेरा दिल मत निकालो
मुझे मेरे भाइयों ने मार दिया मेरे शरीर को इस गड्ढे में फेंक दिया
उस घरेलू सूअर की वजह से जिसे मैंने मारा जिसने पेड़ उखाड़ा

पिता तो यह देख कर आश्चर्यचकित रह गया। उसने वह बाँसुरी उस कुलीन आदमी से खरीद ली और घर चला गया। घर जा कर उसने उसे अपनी पत्नी को दे दिया और उससे उसे बजाने के लिये कहा तो बाँसुरी ने गाया —

बजाओ ओ मेरी अच्छी माँ बजाओ पर मेरा दिल मत निकालो
मुझे मेरे भाइयों ने मार दिया मेरे शरीर को इस गड्ढे में फेंक दिया
उस घरेलू सूअर की वजह से जिसे मैंने मारा जिसने पेड़ उखाड़ा

उसके बाद पिता ने वह बाँसुरी अपने दोनों बेटों को बजाने के लिये दी पर वे उसे बजाने के लिये तैयार नहीं थे लेकिन पिता ने कहा “नहीं तुम्हें इसे बजाना ही होगा।” कह कर उसने उसे अपने छोटे बेटे को थमा दी। उसने बजाया —

बजाओ ओ मेरे अच्छे भाई बजाओ पर मेरा दिल मत निकालो
मुझे मेरे भाइयों ने मार दिया मेरे शरीर को इस गड्ढे में फेंक दिया
उस घरेलू सूअर की वजह से जिसे मैंने मारा जिसने पेड़ उखाड़ा

भाई ने घबरा कर उसे अपने पिता को वापस कर दिया। तब पिता ने बड़े भाई को दिया जिसने उसे मारा था। वह उसे बजाने को तैयार नहीं था पर पिता के कहने पर उसे उसे बजाना ही पड़ा। बाँसुरी ने गाया —

बजाओ ओ मेरे अच्छे भाई बजाओ पर मेरा दिल मत निकालो
वह तुम थे जिसने मुझे मारा मेरे शरीर को इस गड्ढे में फेंक दिया
उस घरेलू सूअर की वजह से जिसे मैंने मारा जिसने पेड़ उखाड़ा

पिता बोला — "तो इसका मतलब है कि तुमने मेरे बच्चे को मारा।" बड़ा भाई इसके जवाब में कह ही क्या सकता था सिवाय इसको मानने के।

तब सबसे छोटे भाई को उस गड्ढे में से निकाल कर कब्रगाह में ठीक से दफ़नाया गया पर बड़े भाई को एक घोड़े की पूँछ से बाँध कर खुला छोड़ दिया गया।

मैं भी वहाँ था और खा पी रहा था जब तक कि मेरी दाढ़ी नहीं भीग गयी।

16 ज़ार और देवदूत[42]

कहीं, कहीं भी नहीं, किसी साम्राज्य में, किसी राज्य में, समय का पता नहीं, हमारे देश में नहीं, एक ज़ार रहता था। वह इतना घमंडी था इतना इतना घमंडी था कि वह न तो भगवान से डरता था और फिर किसी आदमी से तो डरने का सवाल ही क्या।

वह कोई अच्छी सलाह नहीं सुनता था चाहे वह उसे कोई भी देता पर करता वह वही था जो उसे सही लगता। तो किसी की भी उसे सही रास्ते पर लाने की हिम्मत नहीं थी। सो उसके सारे दरबारी मन्त्री आदि उससे बहुत दुखी थे और उसकी जनता भी।

एक दिन यह ज़ार चर्च गया तो पादरी वहाँ धर्म की किताब पढ़ रहे थे तो इसका मतलब यह था कि वह उसे सुननी ही चाहिये थी। अब पादरी ने उसमें से कुछ ऐसे शब्द पढ़े जो उसे पसन्द नहीं आये। उसने सोचा "ऐसे शब्द मुझसे कहना? मैं इन्हें कभी भूल नहीं सकता चाहे मेरे बाल ही सफेद क्यों न हो जायें।"

पूजा के बाद ज़ार घर चला गया और अपने नौकरों को भेज कर पादरी को बुलवाया। पादरी आया तो ज़ार ने उससे पूछा — "मेरे सामने यह सब पढ़ने की तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई?"

पादरी बोला — "वे तो पढ़ने के लिये ही लिखे गये थे।"

---

[42] The Tzar and the Angel. (Tale No 16)

ज़ार बोला — "यह तो तुमने ठीक कहा कि वे पढ़ने के लिये ही लिखे गये थे पर क्या तुम वह सब पढ़ोगे जो उसमें लिखा गी करना।"

पादरी बोला — "यौर मैजेस्टी। न तो वे शब्द मैंने लिखे हैं और न ही मैं कोई होता हूँ उन पर चिकनाई मलने वाला।"

ज़ार बोला — "तुम उन शब्दों के द्वारा मुझे क्या सिखाना चाहते हो। मैं यहाँ का ज़ार हूँ और मेरी बात मानना तुम्हारा कर्तव्य है।"

पादरी बोला — "मैं और सब चीज़ों में आपकी आज्ञा का पालन करता हूँ ज़ार सिवाय धर्म की बातों में। भगवान इन सबके ऊपर है आदमी लोग इसे नहीं बदल सकते।"

ज़ार चिल्लाया — "तुम उन्हें बदलो नहीं। पर अगर मैं उन्हें बदलना चाहता हूँ तो तुम्हें उन्हें बदलना भी पड़ेगा। पर इस समय तुम उन्हेंउसमें से तुरन्त ही काट दो और फिर कभी उन्हें चर्च में पढ़ने की हिम्मत नहीं करना। क्या तुम सुन रहे हो?"

पादरी बोला — "मैं ऐसा नहीं कर सकता। मेरी इस मामले में कोई मर्जी नहीं है।"

"मैं तुम्हें आज्ञा देता हूँ।"

पादरी बोला — "मैं ऐसी हिम्मत नहीं कर सकता ओ ज़ार।"

ज़ार बोला — "मैं तुम्हें सोच विचार के लिये तीन दिन देता हूँ। चौथे दिन शाम को तुम मेरे पास आना और उस दिन अगर तुमने

मेरा कहना नहीं माना तो मैं तुम्हारा सिर तुम्हारे धड़ से अलग कर दूँगा।" पादरी ने बहुत नीचे तक अपना सिर झुकाया और अपने घर चला गया।

तीसरा दिन खत्म होने पर आ रहा था और पादरी की समझ में कुछ नहीं आ रहा था कि वह क्या करे। उसे अपने धर्म के लिये मरने में कोई डर नहीं था पर उसकी पत्नी और बच्चों का क्या होगा। वह घूमता रहा और रोता रहा हाथ मलता रहा "ओह मैं कितना बदकिस्मत हूँ।" कहता कहता वह अपने बिस्तर पर लेट गया।

सारी रात वह सो नहीं पाया। सुबह सवेरे के पलों में उसकी आँख लगी। तभी उसने एक सपना देखा जिसमें उसने एक देवदूत देखा। वह उसके सिर के पास खड़ा था। वह बोला — "भगवान ने मुझे तेरी रक्षा करने के लिये भेजा है।"

सो जब पादरी सुबह को उठा तो वह बहुत खुश था। उसने उस दिन बड़ी भक्ति से प्रार्थना की। उस दिन सुबह को ज़ार भी उठा। उसने उस दिन अपने शिकारियों को बुलाया और उनसे शिकार पर चलने के लिये कहा।

सो वे सब शिकार के लिये जंगल की तरफ चल दिये। उन्हें जाये हुए बहुत देर नहीं हुई थी कि पास की एक झाड़ी से ज़ार की आँखों के नीचे एक बारहसिंगा बाहर कूदा। उसको देखते ही ज़ार उसके पीछे भागा।

बार बार ज़ार को ऐसा लगता कि वह बस अभी उस बारहसिंगे को मार लेगा पर फिर भी ज़ार उसके इतने पास न आ सका जिससे वह उसका शिकार कर सके।

उत्सुकता में ज़ार अपने घोड़े को और तेज़ भगाये लिये जा रहा था "जल्दी भाग जल्दी भाग। बस अब हमने उसे पकड़ लिया।" कि तभी एक छोटी सी नदी आ गयी जिसे उसे पकड़ने के लिये पार करना जरूरी था क्योंकि वह बारहसिंगा उसमें कूद गया था।

ज़ार एक अच्छा तैरने वाला था।

"अबकी बार मुझे उसे पकड़ना ही है। थोड़ी देर ही सही पर अबकी बार मैं उसे सींगों से जरूर ही पकड़ लूँगा।" सो ज़ार ने अपने कपड़े उतारे और बारहसिंगे के पीछे पीछे पानी में कूद पड़ा। पर तब तक तो बारहसिंगा नदी पार कर के दूसरे किनारे पहुँच चुका था।

ज़ार ने उसे पकड़ने के लिये अपने हाथ बढ़ाये पर वहाँ तो उसे कोई बारहसिंगा दिखायी नहीं दिया। वह तो देवदूत था जो वहाँ बारहसिंगा का रूप रख कर आया था। ज़ार को यह देख कर बड़ा आश्चर्य हुआ। उसने अपने चारों तरफ देखा पर उसे बारहसिंगा कहीं दिखायी नहीं दिया। वह कहाँ चला गया।

तभी उसने नदी के दूसरे किनारे किसी को देखा जो उसके कपड़े पहन रहा था। कपड़े पहन कर वह शिकारियों को इकट्ठा कर

के घर चला गया। जहाँ तक ज़ार का सवाल था वह उस जंगल में अकेला नंगा खड़ा रह गया।

उसने अपने चारों तरफ फिर देखा तो देखा कि बहुत दूर जंगल के ऊपर धुँआ उठ रहा है और कुछ काला सा काले बादल की तरह साफ आसमान में दिखायी दे रहा था।

ज़ार ने सोचा कि शायद वहीं मेरे शिकारियों का टैन्ट लगा हुआ है सो वह उसी तरफ चल दिया। चलते चलते वह ईंटों के एक भट्टे के पास आया। ईंट पकाने वाले उससे मिलने आये तो एक नंगे आदमी को अपने सामने खड़ा देख कर चौंक गये।

उन्होंने सोचा यह नंगा आदमी यहाँ क्या कर रहा है। उन्होंने देखा कि वह तो लंगड़ा है और घायल है। सारे शरीर में उसके खरोंचें पड़ी हुई हैं। उसने भट्टे वालों से कुछ पीने के लिये माँगा और बोला कि वह कुछ खायेगा भी।

वे भट्टे वाले बहुत दयालु थे। उन्होंने दया कर के उसे कुछ पुराने कपड़े पहनने को दिये। कुछ काली रोटी और खीरा खाने को दिया। जिस दिन से वह पैदा हुआ था उस दिन से आज ही उसने इतना स्वाददार खाना खाया था।

खाना खिलाने के बाद भट्टे वालों ने उससे पूछा — "अब तुम कौन हो यह बताओ।"

ज़ार बोला — "अब मैं तुम्हें बताता हूँ कि मैं कौन हूँ। मैं तुम्हारा ज़ार हूँ। मेहरबानी कर के मुझे मेरी राजधानी तक ले चलो वहाँ मैं तुम्हें इनाम दूँगा।"

उन्होंने उसकी तरफ आश्चर्य से देखा और चिल्लाये — "क्या तुम ज़ार हो? क्या तुम हमारे साथ मजाक कर रहे हो? तुम ज़ार बनने का बहाना कर रहे हो। तुम हमें क्या इनाम दोगे?"

वह अपने आपको भूल गया था कि वह कहाँ था उसे लगा कि वह अपने घर में है। वह ज़ोर से चिल्लाया — "अबकी बार तुम मुझ पर हँसने की हिम्मत करो तो मैं तुम्हारे सिर कटवा दूँगा।"

"क्या तुम?" कह कर वे उसे पीटने लगे। उन्होंने उसे बहुत पीटा और बेरहमी से लुढ़का दिया। फिर उसे भगा दिया। वह बेचारा चिल्लाता हुआ जंगल में चला गया।

वह चलता गया चलता गया। उसने एक बार फिर धुँआ उठता देखा तो उसने सोचा कि शायद यहीं मेरे शिकारियों का टैन्ट होगा सो वह उसी तरफ चल दिया। शाम को उसने वहाँ एक और ईंटों का भट्टा का देखा।

वहाँ भी उन्होंने उसके ऊपर दया दिखायी। उन्होंने उसका बहुत ही प्यार से स्वागत किया। उन्होंने उसे खाना दिया पीने के लिये कुछ दिया। उन्होंने भी उसे कुछ फटे पुराने कपड़े दिये क्योंकि वे खुद भी बहुत गरीब लोग थे।

उनको लगा कि यह कोई भागा हुआ सिपाही है या फिर कोई और गरीब आदमी है। पर जब उसने पेट भर कर खा लिया और कपड़े पहन लिये तो उसने उनसे कहा — "मैं तुम्हारा ज़ार हूँ।"

यह सुन कर वे हँस पड़े और उससे खराब तरीके से बात करने लगे। फिर वे उसके ऊपर टूट पड़े और उसे बहुत पीटा और उसे वहाँ से खदेड़ दिया।

वह उस जंगल में अकेला ही घूमता ही रहा जब तक रात नहीं हो गयी। फिर वह एक पेड़ के नीचे लेट गया और सो गया। उसने वह रात इसी तरह से गुजारी। सुबह को जल्दी उठ कर वह फिर आगे चलने लगा।

आखिर वह तीसरे भट्टे पर पहुँचा। यहाँ उसने उन भट्टे वालों से यह नहीं कहा कि वह उनका ज़ार है। वे भी उसकी तरफ बहुत दयावान थे। उन्होंने उसे एक जोड़ी पुराने जूते दिये। फिर उसने उनसे कहा कि वे उसे राजधानी का रास्ता दिखा दें। उन्होंने कहा कि वह बहुत दूर है। सारा दिन लग जायेगा।

सो वह वहाँ से चल दिया और एक छोटे से शहर में आया। वहाँ सड़क पर खड़े सन्तरियों ने उसे रोका "रुक जाओ।"

वह रुक गया तो उन्होंने कहा "अपना आज्ञापत्र दिखाओ।"

"मेरे पास तो कोई आज्ञापत्र नहीं है।"

"क्या? तुम्हारे पास कोई आज्ञापत्र नहीं है? तब तो तुम कोई खानाबदोश लगते हो। पकड़ लो इसे।" और पकड़ कर उसे तहखाने में डाल दिया।

कुछ देर बाद ही वे उससे पूछने आये — "तुम कहाँ से हो?"

"फलाँ फलाँ राजधानी से।"

तब उन्होंने उसे जंजीर से बाँधा और उधर ले चले। वे उसे उस राजधानी ले गये और उसे एक दूसरे तहखाने में डाल दिया।

उसके बाद तहखाने का रखवाला कैदियों को देखने के लिये आया तो किसी ने कुछ कहा किसी दूसरे ने कुछ कहा। जब वह ज़ार के पास आया और उससे पूछताछ की तो उसने उसे सारा सच बता दिया और कहा — "एक बार मैं ज़ार था।" और उसने जो जो उस पर गुजरी थी सब बता दी।

यह सुन कर उन सबको बड़ा आश्चर्य हुआ क्योंकि वह तो किसी तरह भी ज़ार नहीं लग रहा था। वह बहुत दुबला हो गया था क्योंकि काफी समय से वह इधर उधर घूम रहा था। उसकी दाढ़ी भी इतने दिनों में उलझ गयी थी। इसके ऊपर से भी वह ज़ार नहीं लग रहा था।

सो उन्होंने सोचा कि वह कोई ज़ार नहीं था बल्कि कोई पागल था सो उन्होंने उसे बाहर भगा दिया।

"ऐसे बेवकूफ को हम यहाँ हमेशा के लिये यहाँ क्यों रखें। क्यों हम ज़ार की रोटी इस पर बर्बाद करें।" सो उन्होंने उसे बाहर

निकाल दिया। किसी भी आदमी ने अपने आपको इतना अभागा कभी महसूस नहीं किया होगा जितना यह ज़ार महसूस कर रहा था।

अपनी इच्छा से उसने कोई काम भी कर लिया होता अगर वह कोई काम करना जानता तो। पर उसने तो कोई काम कभी किया ही नहीं था सो उसको खाने के लिये भीख ही माँगनी पड़ी। भीख भी कभी उसने माँगी नहीं थी सो जीने के लिये भी वह रोटी मुश्किल से काफी माँग पाता था।

रात को वह वहीं सो जाता जहाँ उसे रात हो जाती। कभी घास के मैदान में तो कभी किसी पेड़ के नीचे। वह सोचता "क्या कभी इसका अन्त होगा।"

जिसने ज़ार के कपड़े पहने थे वह देवदूत था वह ज़ार बन कर शिकारियों के साथ घर पहुँचा। कोई भी उसे पहचान नहीं पाया कि वह ज़ार नहीं था बल्कि वह एक देवदूत था।

उस दिन चौथा दिन था और पादरी को ज़ार के पास मिलने जाना था सो उस शाम वह उसके पास आया। बहुत दुखी मन से वह बोला — "ओ ज़ार। जैसी आपकी इच्छा हो वैसा करें।"

ज़ार बोला — "भगवान की जय हो। क्योंकि अब मैं जानता हूँ कि अब मेरे राज्य में कम से कम एक पादरी तो है जो भगवान के कहे पर अड़ा रहता है। मैं अपने राज्य में तुम्हें इस राज्य का सबसे बड़ा बिशप[43] बनाता हूँ।"

---

[43] Bishop – the highest priest of the church in the kingdom.

पादरी ने बहुत नीचे झुक कर ज़ार को धन्यवाद दिया और उसकी प्रशंसा में कहता चला गया "यह क्या आश्चर्य है कि इतना जिद्दी ज़ार अब इतना न्यायशाली और अच्छे स्वभाव वाला बन गया।"

पादरी ही नहीं बल्कि बाकी सब लोग भी जो वहाँ बैठे हुए थे ज़ार के इस बदलाव पर आश्चर्यचकित हो गये। अब वह इतना अच्छा और नम्र स्वभाव का हो गया था कि अब वह अपने दिन जंगल में भी नहीं गुजारता था।

वह अपने लोगों के बारे में पूछताछ भी करता था कि अगर किसी को कोई तकलीफ होती या फिर किसी ने अपने पड़ोसी के साथ कोई बुरा किया होता या फिर किसी के साथ अन्याय हुआ होता।

वह अब हर चीज़ का हिसाब रखता। जो जज अन्याय करते उन्हें डाँटता और देखता कि हर आदमी के साथ वहाँ न्याय हो रहा है। लोग भी अपने ज़ार से अब उतने ही ज़्यादा खुश रहते जितने पहले वे उससे दुखी थे। हर अदालत में अब न्याय होता और कोई रिश्वत भी नहीं ली जाती।

पर उधर असली ज़ार की हालत और खराब होती चली गयी। तीन साल बाद एक दिन नकली ज़ार ने यह ढिंढोरा पिटवाया कि फलाँ फलाँ दिन सब लोग फलाँ फलाँ जगह दावत के लिये इकट्ठे

होंगे। ज़ार उन्हें एक दावत देना चाहता था। सबको वहाँ आना है चाहे वह अमीर हो या गरीब, स्त्री हो या पुरुष।

ज़ार के बुलावे पर सब लोग वहाँ आये। उनमें वह अभागा पुराना ज़ार भी आया। ज़ार के कम्पाउंड में बहुत सारी लम्बी लम्बी मेजें लगवायी गयीं।

सब लोग उन मेजों पर खाना खाने बैठे। जिसने भी यह खुश खुश दृश्य देखा उसी ने भगवान को धन्यवाद दिया। सबने पेट भर कर खाना खाया और शराब पी।

ज़ार ने खुद अपने दरबारियों के साथ मिल कर अपने मेहमानों को उतना माँस और शराब परोसा जितना उन्हें चाहिये था। उसके बाद ज़ार ने सबसे पूछा कि क्या वहाँ कोई ऐसा आदमी था जिसके साथ अन्याय हुआ हो या फिर वह दुख में हो।

जब लोग जाने लगे तो ज़ार खुद पैसों का एक थैला ले कर दरवाजे पर खड़ा हुआ और उसने हर एक को एक एक सिक्का दिया पर उस अभागे ज़ार को उसने तीन सिक्के दिये।

तीन साल के बाद ज़ार ने एक और बड़ी दावत का इन्तजाम किया और हर एक को उसमें बुलाया – अमीर को और गरीब को और अर्ल को और चर्ल को। सारे लोग खाने पीने के लिये आये पेट भर कर खाया पिया ज़ार के धन्यवाद दिया और फिर उसको सिर झुका झुका कर जाने लगे।

वह अभागा ज़ार भी जाने को था कि देवदूत ज़ार ने उसे रोक लिया और उसे महल के अन्दर ले गया और कहा — "भगवान ने तुम्हारा इम्तिहान ले लिया। इन दस सालों में तुम्हारा घमंड तोड़ दिया। लेकिन मुझे उसने तुम्हें यह सिखाने के लिये भेजा था कि ज़ार को अपनी जनता की शिकायतों का आदर करना चाहिये।

इसलिये जमीन पर पहले तुम्हें एक गरीब और खानाबदोश बनाया गया ताकि तुम अक्लमन्द बन सको चाहे थोड़े ही सही। अब देखो तुम अपने लोगों के लिये अच्छा करना। लोगों के साथ न्याय करना। और आज से तुम अपने देश के ज़ार फिर से हो। और मैं स्वर्ग जाता हूँ।"

यह कहने के बाद उसने नौकरों से उसे नहलाने के लिये, उसकी हजामत बनाने के लिये, क्योंकि उसकी दाढ़ी तो अब तक कमर से भी नीचे तक पहुँच गयी थी और उसे ज़ार की पोशाक पहनाने के लिये कहा।

बाद में ज़ार से उसने उसकी रानी के पास जाने के लिये कहा। और कहा — "वहाँ ज़ार के दरबारी खुशियाँ मना रहे हैं। कोई भी अब तुम्हें खानाबदोश के रूप में नहीं जानेगा। भगवान हमेशा तुम्हें अच्छा करने की प्रेरणा दें।"

जब देवदूत यह कह चुका तो वह वहाँ से गायब हो गया। वहाँ केवल उसके कपड़े ही पड़े रह गये।

उसके बाद ज़ार ने भगवान की भक्ति से प्रार्थना की और फिर अन्दर अपने दरबारियों के पास चला गया। बाद में उसने बहुत न्यायपूर्वक शासन किया जैसा कि देवदूत उससे कह गया था।

17 इवान और सूरज की बेटी की कहानी[44]

एक बार यह बहुत पहले की बात है कि कहीं एक जगह चार भाई रहते थे। उनमें से तीन भाई तो घर पर रहते थे और चौथा भाई काम ढूँढने के लिये घर से बाहर जाया करता था।

एक बार उसने एक पशुपालक के पास एक काम ढूँढा जिसमें उसे तीन सोने के सिक्के एक साल के मिलने वाले थे।

उसने उसके यहाँ तीन साल काम किया और बाद में उससे अपने नौ सोने के सिक्कों को ले कर घर चल दिया। पर सबसे पहले उसने क्या किया कि वह एक नदी के किनारे गया और उसमें अपनी तीन सिक्के यह कहते हुए डाले कि "अगर मैंने वफादारी से अपने मालिक की सेवा की है तो ये तीनों सिक्के पानी पर तैर जायें।"

यह कह कर वह वहीं नदी के किनारे लेट गया और सो गया। अब यह तो पता नहीं कि वह वहाँ कितनी देर सोया पर जब वह उठा तो उसने पानी की सतह की तरफ देखा तो उसे अपने सिक्के कहीं दिखायी नहीं दिये।

उसने फिर से वही कह कर दूसरे तीन सिक्के नदी में फेंके और वहीं लेट कर फिर से सो गया। जब वह जागा तो उसने फिर से

[44] The Story of Ivan and the Daughter of the Sun. (Tale No 17)

नदी की तरफ देखा पर इस बार भी उसके सिक्के वहाँ कहीं भी नहीं थे।

उसने अबकी बार अपने आखिरी तीन सिक्के निकाले और उन्हें भी वही कह कर नदी में फेंक दिया। इस बार जब वह उठा तो लो उसके नौ सिक्के तो नदी की सतह पर बह रहे थे। वह उन्हें देख कर बहुत खुश हो गया। उसने उन्हें उठा लिया और उन्हें ले कर अपने घर की तरफ चल दिया।

अब उस दिल बहुत हल्का था। रास्ते में उसे तीन "कटसापी"[45] मिले वह एक गाड़ी भर कर कुछ ले जा रहे थे। उसने उनसे पूछा कि वे क्या ले जा रहे थे। उन्होंने बताया कि वे अगरबत्तियाँ ले जा रहे थे।

उसने सीधे सीधे उनसे कहा कि वे अपना सामान उसे बेच दें। वे राजी हो गये और उन्होंने उसे अपना सामान दे दिया। सामान दे कर वे अपने रास्ते चले गये और यह अपने घर की तरफ चल दिया।

रास्ते में उसने आग जलायी और वे सारी अगरबत्तियाँ भगवान के लिये जला दीं। तब एक देवदूत ऊपर से उड़ कर आया और उसने उससे पूछा "तुम अपने खुद के लिये क्या चाहते हो? क्या साम्राज्य चाहते हो? या बहुत सारा पैसा चाहते हो? या फिर एक

[45] Katsapi

बहुत सुन्दर पत्नी चाहते हो? बोलो क्योंकि भगवान तुम्हें वही दे सकते हैं जो तुम चाहते हो।"

उस आदमी ने जब देवदूत की बात सुन ली तो वह बोला — "ज़रा रुको मुझे सोचने दो। मैं उन लोगों की सलाह लेने जाना चाहता हूँ जो वहाँ खेतों में हल चला रहे हैं।"

अब वे लोग जो खेत में हल चला रहे थे वे सब उसके भाई थे पर उसे यह पता नहीं था कि वे उसके भाई थे। सो वह उनके पास गया और सबसे बड़े भाई से बोला — "चाचा मुझे बताओ कि मैं भगवान से क्या माँगूँ – राज्य धन या पत्नी। इन तीनों में से कौन सी चीज़ मेरे लिये सबसे अच्छी रहेगी?"

सबसे बड़ा भाई बोला — "मुझे नहीं मालूम। और दूसरा जान भी कौन सकता है तुम्हारे खुद के सिवा? जाओ किसी और से पूछो।"

सो वह दूसरे भाई के पास गया जो थोड़ी दूर पर हल चला रहा था। उसने उससे भी वही सवाल पूछा तो उसने केवल अपने कन्धे ही उचकाये और कहा कि वह नहीं जानता।

तब वह तीसरे भाई के पास गया जो उसका सबसे छोटा भाई था और वहीं हल चला रहा था। उसने उससे पूछा — "इन तीन चीज़ों में से सबसे अच्छी कौन सी चीज़ है – राज्य धन या पत्नी?"

वह बोला — "अरे यह कैसा सवाल है? तुम राज्य और बहुत धन के लिये बहुत छोटे हो। उसके लिये तुम्हें थोड़ा इन्तजार करना

चाहिये। तुम भगवान से अपने लिये एक अच्छी पत्नी माँग लो। यही एक बहुत अच्छी चीज़ है जो तुम्हारी सारी ज़िन्दगी खुशियों से भर देगी।"

सो वह वापस देवदूत के पास गया और उससे एक बहुत अच्छी पत्नी माँग ली। उसके बाद वह अपने रास्ते चल दिया जब तक वह एक जंगल में आया। उसने अपने चारों तरफ देखा तो देखा कि उस जंगल में तो एक झील थी।

जब वह उसकी तरफ देख रहा था तो उसने देखा कि कहीं से तीन जंगली फाख्ताऐं उड़ती हुई आयीं और झील में उतर गयीं।उन्होंने अपने कपड़े फेंके और वे झील में डुबकी मार गयीं। तब उसने देखा कि वे जंगली फाख्ताऐं नहीं थीं बल्कि तीन सुन्दर परी थीं। वे झील में नहायीं।

इस बीच आदमी वहाँ से खिसक गया। उसने उनके कपड़े ढूँढे और उनमें से एक के कपड़े चुरा लिये और उन्हें एक झाड़ी के पीछे छिपा दिया। जब वे बाहर निकल कर आयीं तो उनमें से एक के कपड़े गायब थे।

तब उस नौजवान ने कहा — "मुझे मालूम है कि आपके कपड़े कहाँ हैं पर मैं आपको उन्हें तब ही दूँगा जब आप मेरी पत्नी बनेंगी।"

वह बोली — "यह तो अच्छा है। मैं तुम्हारी पत्नी बनूँगी।" तब उसने उसे कपड़े दे दिये और उसने पहन लिये। फिर वे पास वाले गाँव की तरफ चल दिये।

जब वे वहाँ पहुँचे तो परी ने उससे कहा — "अब तुम उस कुलीन आदमी के पास चलो उसके पास बहुत जमीन है। तुम उससे जा कर विनती करो कि वह तुम्हें एक छोटा सा मकान बनाने के लिये थोड़ी सी जमीन दे दे।"

यह सुन कर वह उस कुलीन आदमी के किले में गया और फिर उसके मेहमानों वाले कमरे में गया और बोला — "भगवान की जय हो।"

कुलीन आदमी बोला — "हमेशा हमेशा। इवान तुम यहाँ क्या चाहते हो?"

आदमी बोला — "जनाब मैं यहाँ आपसे थोड़ी सी जमीन माँगने आया हूँ जहाँ मैं अपनी एक छोटी सी झोंपड़ी बना सकूँ।"

"ओह झोंपड़ी बनाने के लिये जगह? बहुत अच्छे। अभी तुम अपने घर जाओ। कल मैं अपने ओवरसीयर से कह दूँगा वह तुम्हें जमीन दिखा देगा।"

सो वह कुलीन आदमी के किले से लौटा तो उसकी पत्नी ने कहा — "अब तुम जंगल चले जाओ और एक ओक का पेड़ काट लाओ। देखना वह ओक का पेड़ छोटा हो जो तुम्हारे बाँहों के घेरे में आ जाये।"

सो उसने ऐसा एक पेड़ ढूँढा जिसका तना उसकी बाँहों के घेरे में आ जाता और उसे काट कर ले आया। ओवरसीयर ने उन्हें जमीन दिखा दी थी सो उसकी पत्नी ने उस पेड़ की एक वहाँ अपनी झोंपड़ी बना ली।

पर जब ओवरसीयर अपने मालिक के पास पहुँचा तो उसने अपने मालिक से इवान की पत्नी की बहुत बड़ाई की तो कुलीन आदमी बोला कि वह ऐसी वैसी है बहुत सुन्दर है पर फिर भी वह है तो दूसरे की पत्नी।

ओवरसीयर बोला — "उसे बहुत दिनों तक दूसरे की रहने की जरूरत नहीं है। अब इवान हमारे हाथों में है। हमें उसे यह देखने के लिये भेजना चाहिये कि सूरज जब डूबने को होता है तो इतना लाल क्यों होता है।"

मालिक बोला — "इसका मतलब तो यह हुआ कि उसको वहाँ भेज दिया जाये जहाँ से वह कभी लौट कर न आ सके।"

"यही अच्छा है।"

सो इवान को बुलाया गया और उसे उसका काम बता दिया गया। वह बड़ी ज़ोर ज़ोर से रोता हुआ घर आया। उसकी पत्नी ने उससे पूछा कि क्या बात है तो उसने उसे सब कुछ बताया।

पत्नी ने कहा — "तुम चिन्ता मत करो। मैं सूरज के सब तरीकों के बारे में बताती हूँ क्योंकि मैं सूरज की अपनी बेटी हूँ। मैं तुम्हें उनके बारे में सब कुछ बताती हूँ। तुम वापस कुलीन आदमी के

पास जाओ और उससे कहो कि सूरज जब डूबता है तब वह लाल इसलिये होता है कि "जैसे जैसे सूरज समुद्र के नीचे जाता है तीन स्त्रियाँ उसमें से निकलती हैं। उन स्त्रियों को देख कर वह पूरा लाल हो जाता है।"

सो वह वापस कुलीन आदमी के पास गया और जा कर उससे वही कहा जो उसकी पत्नी ने उससे कहा था। यह सुन कर वे चिल्लाये — "ओहो। अगर तुम वहाँ तक जा सकते हो तो फिर तुम इससे आगे भी जा सकते हो।" सो उन्होंने उससे नरक जाने के लिये कहा और यह पता लगाने के लिये कहा कि वहाँ कैसा है।

उसकी पत्नी ने कहा — "मैं नरक को जाने वाली सड़क को भी अच्छी तरह से जानती हूँ पर उसके लिये कुलीन आदमी को अपने ओवरसीयर को तुम्हारे साथ भेजना चाहिये वरना वह कभी विश्वास नहीं करेगा कि तुम नरक गये थे।" सो कुलीन आदमी ने अपने ओवरसीयर से कहा कि उसे इवान के साथ नरक जाना चाहिये।

दोनों नरक की तरफ चल दिये। जब वे वहाँ पहुँचे तो नरक के राजा ने ओवरसीयर को तुरन्त ही पकड़ लिया — "ओ कुत्ते। हम तुझे कुछ समय से ढूँढ रहे थे।"

इवान बिना ओवरसीयर के लौट आया तो कुलीन आदमी ने उससे पूछा "मेरा ओवरसीयर कहाँ है।"

इवान बोला — "मैं उसे नरक में छोड़ आया हूँ और वे यह भी कह रहे थे कि वे आपको भी ढूँढ रहे हैं।"

जब कुलीन आदमी ने यह सुना तो उसने आपको लटका कर मार लिया और फिर इवान और उसकी पत्नी खुशी खुशी रहे।

18 बिल्ला, मुर्गा और लोमड़ी[46]

एक बार एक बिल्ले और एक मुर्गे ने साथ साथ रहने का निश्चय किया। दोनों ने एक राख के ढेर पर अपने लिये एक झोंपड़ी बनायी। और मुर्गा तो घर पर ही रहा जबकि बिल्ला सौसेजैज़ लाने के लिये बाहर चला गया।

एक दिन एक लोमड़ी भागी हुई वहाँ आयी और बोली — "ओ मुर्गे दरवाजा खोलो।"

मुर्गा बोला — "मुझसे बिल्ले ने मना किया है ओ छोटी लोमड़ी मैं दरवाजा नहीं खोल सकता।"

लोमड़ी फिर बोली — "ओ छोटे मुर्गे दरवाजा खोलो।"

मुर्गे ने भी फिर कहा — "बिल्ले ने मुझसे मना किया है, मैंने कहा न ओ छोटी लोमड़ी।"

पर मुर्गा जब उससे न कहते कहते थक गया तो उसने दरवाजा खोल दिया। जैसे ही उसने दरवाजा खोला तो लोमड़ी अन्दर घुसी मुर्गे को अपने जबड़े में पकड़ा और उसे ले कर भाग गयी। मुर्गा चिल्लाया —

बिल्ले ओ बिल्ले मेरी सहायता करो
इस लोमड़ी ने मुझे कस कर पकड़ रखा है अपनी पूरी ताकत से

[46] The Cat, the Cock and the Fox. (Tale No 18)

अपनी पूँछ पर कि मेरी टाँगें भी घिसट रही हैं
उस पुल पर जो पत्थर का बना है

बिल्ले ने उसका यह रोना सुना तो वह लोमड़ी के पीछे दौड़ा मुर्गे को छुड़ाया और घर ले कर आया। घर आ कर उसने मुर्गे को बहुत डाँटा और कहा — "अगर तुम मरना नहीं चाहते तो आगे से तुम उसके जबड़े से सावधान रहना।"

उसके बाद एक दिन बिल्ला गेहूँ लेने गया ताकि मुर्गा कुछ खा सके। बस वह अभी बाहर गया ही था कि लोमड़ी फिर से उनके घर आयी और मुर्गे से बोली — "मैं विनती करती हूँ कि ओ मुर्गे दरवाजा खोलो और मुझे अन्दर आने दो।"

मुर्गा बोला — "नहीं नहीं ओ लोमड़ी मैं दरवाजा नहीं खोल सकता। बिल्ले ने मुझसे मना किया है।"

पर लोमड़ी तब तक उससे दरवाजा खोलने के लिये कहती रही जब तक उसने दरवाजा नहीं खोला। लोमड़ी तुरन्त ही अन्दर भागी और मुर्गे को गर्दन से पकड़ कर ले गयी। मुर्गा फिर चिल्लाया —

बिल्ले ओ बिल्ले मेरी सहायता करो
इस लोमड़ी ने मुझे कस कर पकड़ रखा है अपनी पूरी ताकत से
अपनी पूँछ पर कि मेरी टाँगें भी घिसट रही हैं
उस पुल पर जो पत्थर का बना है

बिल्ले ने फिर से उसे सुन लिया और उसे बचाने के लिये लोमड़ी के पीछे भागा। मुर्गे को तो उसने बचा लिया पर लोमड़ी की

उसने बहुत पिटायी की। फिर उसने मुर्गे से कहा कि अगर वह ज़िन्दा रहना चाहता है तो वह लोमड़ी को घर के अन्दर न आने दे।

पर अगली बार जब बिल्ला घर से बाहर गया तो लोमड़ी फिर से वहाँ आयी और आवाज लगायी — "ओ प्यारे मुर्गे दरवाजा खोलो।"

मुर्गे ने उससे बहुत कहा कि बिल्ली ने कहा है कि वह लोमड़ी के लिये दरवाजा न खोले पर बिल्ली ने कुछ उससे इतना गिड़गिड़ाते हुए कहा कि मुर्गे ने फिर से उसे दरवाजा खोल दिया। लोमड़ी ने उसे फिर गले से पकड़ा और ले भागी। और मुर्गा चिल्लाया —

बिल्ले ओ बिल्ले मेरी सहायता करो
इस लोमड़ी ने मुझे कस कर पकड़ रखा है अपनी पूरी ताकत से
अपनी पूँछ पर कि मेरी टाँगें भी घिसट रही हैं
उस पुल पर जो पत्थर का बना है

बिल्ले ने मुर्गे की पुकार सुनी और उसे बचाने दौड़ा। वह दौड़ा और दौड़ा पर इस बार वह लोमड़ी को नहीं पकड़ सका। वह बेचारा घर लौट आया और बहुत ज़ोर से रो पड़ा। अब वह बिल्कुल अकेला था।

आखिर उसने अपने आँसू पोंछे और अपने लिये एक छोटी सी वायलिन, एक उसे बजाने वाला और एक बड़ा सा थैला ले लिया। अब वह वायलिन बजाते बजाते लोमड़ी की माँद तक जा पहुँचा।

वायलिन ओ वायलिन बज
लोमड़ी के दो बार दो बेटियाँ थी और एक बेटा जिसका नाम था फिल
आओ लोमड़ी आओ और मेरा मीठा बाजा देखो

यह सुन कर लोमड़ी की बेटी ने कहा — "माँ मैं बाहर जा कर यह देखना चाहती हूँ कि इतना सुन्दर बाजा कौन बजा रहा है।" यह कह कर वह बाहर निकल गयी।

जैसे ही लोमड़ी की बेटी बाहर निकली बिल्ली ने उसे पकड़ कर अपने थैले में डाल लिया और उसने फिर से गाना शुरू किया —

वायलिन ओ वायलिन बज
लोमड़ी के दो बार दो बेटियाँ थी और एक बेटा जिसका नाम था फिल
आओ लोमड़ी आओ और मेरा मीठा बाजा देखो

यह सुन कर लोमड़ी की दूसरी बेटी भी उसका गाना सुनने के लिये बाहर निकली। जैसे ही वह बाहर निकली तो लोमड़ी ने उसे भी अपने थैले में डाला और फिर गाने लगी। इस तरह वह तब तक गाती रही जब तक उसने उसकी चारों बेटियों और बेटे को नहीं पकड़ लिया।

अब वह बेचारी लोमड़ी अकेली रह गयी। वह रोने लगी। फिर उसने सोचा कि "मैं जा कर उन्हें खुद ही बाहर ढूँढती हूँ और उन्हें पुकारती हूँ क्योंकि मुर्गा पक रहा है और दूध उबल रहा है। हम लोगों को खाना खाये हुए भी बहुत देर हो चुकी है।"

यह सोच कर वह बाहर चली गयी।

जैसे ही वह अपनी मॉद से बाहर निकली कि बिल्ली ने उसके ऊपर कूद कर उसे भी पकड़ लिया और उसे मार दिया। उसके बाद उसने जा कर सारा सूप पी लिया और दूध भी पी लिया।

उसके बाद उसने देखा कि एक तश्तरी में मुर्गा रखा है। वह उससे जा कर बोली — "उठ ओ मुर्गे उठ।" सो मुर्गे ने अपने आपको हिलाया और उठ गया। बिल्ली उसे अपने साथ अपने घर ले आयी।

फिर वे दोनों आराम से और खुशी से रहने लगे। फिर जैसे वे एक दूसरे से मजाक करते और एक दूसरे के साथ हॅसते चलो हम भी एक दूसरे से मजाक करते हैं और हॅसते हैं।

19 साँप राजकुमार और उसकी दो पत्नियाँ[47]

एक बार की बात है कि एक ज़ारित्सा[48] थी जिसके कोई बच्चा नहीं था। उसकी बहुत इच्छा थी कि उसके कोई बच्चा हो। ज्योतिषियों ने उससे कहा कि वह एक पाइक मछली[49] पकड़वाये। फिर उसका और कुछ नहीं केवल सिर उबलवाये और उसे खा ले फिर देखे कि क्या होता है।

उसने ऐसा ही किया। उसने पाइक मछली का सिर खा लिया। एक साल ऐसे ही निकल गया। एक साल के बाद उसने एक साँप को जन्म दिया।

जैसे ही वह पैदा हुआ उसने अपने चारों तरफ देखा और बोला — "माँ, पिता जी। मेरे लिये एक पत्थर का घर बनवा दीजिये। वहाँ मेरे लिये एक छोटा सा बिस्तर हो। एक छोटा सा स्टोव हो। मुझे गर्म रखने के लिये आग हो। और पन्द्रह दिन के अन्दर अन्दर मेरी शादी कर दीजिये।"

सो उन्होंने वैसा ही किया जैसा उसने उनसे करने के लिये कहा था। उन्होंने उसे पत्थर के एक घर में बन्द कर दिया। उसके लिये एक छोटा सा बिस्तर रखवा दिया। एक छोटा सा स्टोव और उसे गर्म रखने के लिये आग रखवा दी।

---

[47] The Serpent-Tzarevich and His Two Wives. (Tale No 19)
[48] Tzaritsa means the "Queen"
[49] Pike fish is a large kind of fish

पन्द्रह दिन में ही वह काफी बड़ा हो गया था। इतना बड़ा कि अब वह अपने बिस्तर में समाता ही नहीं था। वह बोला — “अब मैं शादी करना चाहता हूँ।”

सो वे देश की बहुत सारी सुन्दर लड़कियों को ले कर आये ताकि वह उनमें से अपनी मनचाही लड़की को चुन सके। वे सब बहुत सुन्दर थीं पर उसने उनमें से किसी को नहीं चुना।

वहीं एक बुढ़िया खड़ी थी जिसके बारह बेटियाँ थीं। वह उनमें से अपनी ग्यारह बेटियों को ज़ारित्सा के पास उसके बेटे के साथ शादी कराने के लिये लायी थी पर बारहवीं को नहीं लायी थी।

जब वे ज़ारित्सा के पास आ रहे थे तो उसकी सबसे छोटी बेटी ने पूछा कि वे उसे क्यों नहीं ले जा रहे तो उन्होंने कहा कि वह अभी बहुत छोटी थी। वह ज़ोर से बोली — “अगर तुम लोग मुझे ले चलते तो ज़ारेविच मुझे ही अपनी दुलहिन चुन लेता।”

यह बात ज़ार के कानों में पड़ी तो उसने हुक्म दिया कि उसे भी तुरन्त ही वहाँ लाया जाये। जब वह आ गयी तो ज़ार ने उससे पूछा — “क्या तुम मेरे बेटे की बहू बनोगी?”

उसने जवाब दिया — “हाँ मैं बनूँगी पर इससे पहले कि मैं उसकी बहू बनूँ मुझे पहले बीस शमीज़ चाहिये, बीस लिनन के गाउन चाहिये, बीस गर्म कपड़े के गाउन चाहिये और बीस जोड़ी जूते चाहिये। यानी हर चीज़ बीस बीस चाहिये।” ज़ार ने उसे ये सब दे दिये।

लड़की ने उन सबको पहना – बीस शमीज़, बीस लिनन के गाउन, बीस गर्म कपड़े के गाउन, बीस जूते एक के बाद। इस सबके बाद वह सॉप ज़ारेविच के पास गयी। जब वह सॉप ज़ारेविच के घर की देहरी पर पहुँची तो वह बोली — "सॉप ज़ारेविच की जय हो।"

सॉप ज़ारेविच भी बोला — "आओ सुन्दरी। क्या तुम मेरी पत्नी बनोगी?"

"हॉ बनूँगी।"

वह बोला — "तो अपनी खालों में से एक खाल उतारो।"

"हॉ मैं उतारूँगी पर फिर तुम भी वैसा ही करोगे।"

सो सॉप ने अपनी एक खाल उतारी और लड़की ने भी अपने बीस सूटों में से एक सूट उतारा। इस तरह दोनों ने अपनी अपनी खालें और सूट उन्नीस बार और उतारे। अब लड़की अपने एक रोज के पहने हुए सूट में रह गयी थी और सॉप अपनी केवल आदमी की खाल में रह गया।

उसके बाद उसने अपनी आखिरी खाल भी उतार कर फेंक दी। उसकी खाल हवा में उड़ गयी। लड़की ने वह खाल तुरन्त ही पकड़ ली और उसे आग में फेंक दिया जो वहॉ ॲगीठी में जल रही थी और उसके पूरी तरीके से जलने का इन्तजार किया।

अब उसके सामने एक साँप नहीं बल्कि एक बहुत सुन्दर राजकुमार खड़ा था। उसके बाद उनकी शादी हो गयी और वे हमेशा खुशी खुशी रहे।

पर न तो पति ही कभी अपने बूढ़े पिता ज़ार से मिलने गया और न ही उसने कभी अपनी पत्नी को महल के पास जाने दिया।

बूढ़े ज़ार ने उसे कई बार बुलाया पर उसका बेटा वहाँ नहीं गया। आखिर उसकी पत्नी को बहुत शर्म आयी तो उसने अपने पति से कहा — "प्रिये। अगर तुम नहीं जाते तो कोई बात नहीं पर मुझे तो अपने पिता के पास जाने दो। मैं उनके पास केवल अपना समय बिताने के लिये ही जाऊँगी कहीं ऐसा न हो कि वह गुस्सा हो जायें। वैसे मुझे वहाँ क्यों नहीं जाना चाहिये?"

तब उसने अपनी पत्नी को अपने पिता के पास जाने की इजाज़त दे दी। वह ज़ार के दरबार में गयी और वहाँ कुछ देर समय बिताया। उसने वहाँ खुशी से समय बिताया खूब खाया पिया और वापस आ गयी।

पर उसके पति ने उससे कह रखा था कि वहाँ जा कर जैसे भी चाहे समय गुजार सकती है पर जो कुछ उसके साथ यहाँ हुआ था वह किसी को न बताये क्योंकि अगर वह वह किसी को बतायेगी तो वह फिर उसे कभी नहीं देख पायेगी। क्योंकि वहाँ अभी किसी को पता नहीं था कि वह अब साँप नहीं रह गया था बल्कि एक सादा

सा राजकुमार था। उसने भी वायदा किया कि वह यह बात किसी से नहीं कहेगी।

पर इन सब वायदों के बाद भी उसने उनसे कह ही दिया कि किस तरह से बीस खालें उतार कर उसका साँप पति अब एक राजकुमार बन गया था और अब वह उसके साथ बहुत खुश है।

पर जब वह घर लौटी तो उसे घर में कोई नहीं मिला। उसका पति किसी और राज्य को लौट गया था। वह बेचारी वहीं बैठ गयी और ज़ोर ज़ोर से रोने लगी। पर जब वह और न रो पायी तो वह दुनियाँ में उसे ढूँढने के लिये निकल पड़ी।

चलते चलते वह एक अकेले छोटे से घर के पास आयी। वहाँ उसमें एक बुढ़िया रहती थी। वह उस घर में अन्दर चली गयी और बुढ़िया से रात को रुकने की जगह माँगी। यह बुढ़िया हवाओं की माँ थी। वह उसे रखने के लिये तैयार नहीं थी।

उसने कहा — "भगवान तेरी रक्षा करें बेटी। मेरा बेटा अभी इधर उधर घूम रहा है। किसी भी पल वह आफ़त मचाता यहाँ आता ही होगा। वह तुझे आते ही मार डालेगा और तेरी हड्डियों को चारों तरफ बिखेर देगा।"

पर पत्नी उससे प्रार्थना की कि वह उसे बस रात गुजारने की जगह दे दे सो उसने उसे एक बहुत बड़ी आलमारी के पीछे छिपा दिया। कुछ पल में ही हवा उड़ता हुआ वहाँ आया तो उसे किसी कोज़ैक स्त्री की खुशबू आयी तो वह अपनी माँ से बोला — "माँ

यह क्या है? यहाँ घर में किसी कोज़ैक की हड्डियों की बुरी बू आ रही है।"

उसकी माँ ने कहा — "नहीं बेटा ऐसा नहीं है। एक लड़की ने हमारे घर में शरण ली है जो कहती है कि वह अपने पति को ढूँढने के लिये निकली है।"

हवा बोला — "तो माँ उसे एक चाँदी का सेब दो दो और उसे जाने दो क्योंकि उसका पति एक दूसरे राज्य में है।" सो उन्होंने उसे चाँदी का सेब दे कर विदा किया।

वह फिर चलती गयी जब तक कि उसे रात नहीं हो गयी। वहाँ भी उसे एक घर मिल गया। वह उस घर में चली गयी। उस घर में भी एक बुढ़िया रहती थी। उसने उससे रात को ठहरने की जगह माँगी। पर बुढ़िया उसे ठहरने की जगह न दे।

उसने कहा — "अभी मेरा बेटा आता होगा वह तुझे मार डालेगा।"

"नहीं दादी माँ। मैंने एक रात ऐसे ही गुजारी है। मैं हवाओं की माँ के पास रह कर आ रही हूँ।"

तब बुढ़िया ने उसे अन्दर बुलाया और उसे अपने घर में छिपा दिया। वह चाँद की माँ थी। तुरन्त ही चाँद उड़ता हुआ वहाँ आया और अपनी माँ से बोला — "माँ यह क्या है? यहाँ घर में किसी कोज़ैक की हड्डियों की बुरी बू आ रही है।"

उसकी माँ ने कहा — “नहीं बेटा ऐसा नहीं है। एक लड़की ने हमारे घर में शरण ली है जो कहती है कि वह अपने पति को ढूँढने के लिये निकली है क्योंकि उसने उसके माता पिता को उसके बारे में उसका सच बता दिया था।”

चाँद बोला — “तब तो उसे अभी और आगे जाना पड़ेगा। उसे एक छोटा सा सोने का सेब दे दो और उससे कहो कि वह यहाँ से जल्दी से जल्दी चली जाये क्योंकि उसका पति दूसरी शादी करने जा रहा है।” सो वह रात उसने वहीं काटी और सुबह उठते ही उन्होंने उसे एक सोने का सेब दे कर विदा किया।

वह फिर चल दी। रात फिर हो गयी। अबकी बार वह सूरज की माँ के घर आयी। वहाँ भी उसने रात को ठहरने की जगह माँगी पर बुढ़िया बोली — “मैं तुझे अपने घर में जगह नहीं दे सकती। मेरा बेटा सारी दुनियाँ में उड़ता है पर वह यहाँ जल्दी ही आता होगा। आते ही तुझे देखेगा तो तुझे मार देगा।”

लड़की बोली — “नहीं माँ जी ऐसा मत कहिये। अभी मैं हवा और चाँद की माँओं के पास रुक कर आ रही हूँ और दोनों ने मुझे एक एक सेब दे कर विदा किया है।”

तब सूरज की माँ ने भी उसे घर के अन्दर छिपा लिया कि तभी वहाँ सूरज आ पहुँचा। वह अपनी माँ से बोला — “माँ यह क्या है? यहाँ घर में किसी कोज़ैक की हड्डियों की बुरी बू आ रही है।”

उसकी माँ ने कहा — "नहीं बेटा ऐसा नहीं है। एक लड़की ने हमारे घर में शरण ली है।"

उसने अपने बेटे को पूरी बात नहीं बतायी कि वह लड़की अपने पति की खोज में निकली हुई है पर सूरज को यह बात पता चल गयी।

उसने कहा — "माँ। उसे एक हीरों का सेब ले कर उसके पति के घर भेज दो जहाँ वह रहता है। यह सेब दुनियाँ का सबसे अच्छा और सबसे ज़्यादा कीमती सेब है। उससे कहना कि वे लोग उसे अन्दर नहीं आने देंगे इसलिये उसे एक बुढ़िया का वेश बना कर वहाँ जाना चाहिये।

वहाँ पहुँच कर उनके कम्पाउंड में एक कपड़ा बिछा कर बैठ जाना चाहिये और उस पर चाँदी का सेब रख लेना चाहिये। उसे देख कर बहुत सारे लोग यह देखने आयेंगे कि यह कौन है जो चाँदी का सेब लिये बैठा है।"

सो उस लड़की ने वही किया जैसा सूरज ने उससे करने के लिये कहा था। उस राज्य की रानी जिससे उसके पति ने शादी की थी उसके पास यह देखने के लिये आयी कि वह क्या बेच रही थी। उसने उससे पूछा कि उसे अपने चाँदी के सेब के लिये क्या चाहिये।

लड़की ने कहा — "मुझे अपने सेब के लिये कुछ नहीं चाहिये। मुझे बस इतना चाहिये कि इसके बदले में मैं एक रात अपने पति के साथ गुजार लूँ।"

रानी ने सेब उठाया और उसे राजकुमार के साथ एक रात बिताने के लिये बुलाया पर उससे पहले उसने राजकुमार को सोने की दवा पिला दी जिससे जब वह उसके पास गयी तो उसे पता ही नहीं चला कि कोई उसके पास आया था सो वह उससे कुछ बात ही नहीं कर सका और न उसे यह पता चला कि वह किस किस्म का आदमी था।

वह सारी रात उसे देखती रही देखती रही पर जब वह उससे कोई बात नहीं कर सकी तो सुबह को घर वापस आ गयी।

अगले दिन वह फिर कम्पाउंड में कपड़ा बिछा कर बैठी और उस पर अबकी बार अपना सोने का सेब रख कर बैठ गयी। रानी ने फिर उस सेब को देखा तो फिर उससे पूछा कि उसे अपने सोने के सेब के लिये क्या चाहिये। वह उसे उसकी झोली भर कर पैंस देने के लिये तैयार थी।

लड़की ने कहा — "मुझे अपने सेब के लिये कुछ नहीं चाहिये। मुझे बस इतना चाहिये कि इसके बदले में मैं एक रात अपने पति के साथ गुजार लूँ।"

रानी ने सेब उठाया और उसे राजकुमार के साथ एक रात बिताने के लिये बुलाया पर उससे पहले उसने राजकुमार को सोने की दवा पिला दी जिससे जब वह उसके पास गयी तो उसे पता ही नहीं चला कि कोई उसके पास आया था सो वह उससे कुछ बात ही नहीं

कर सका और न उसे यह पता चला कि वह किस किस्म का आदमी था।

वह सारी रात उसे देखती रही देखती रही रोती रही रोती रही पर जब वह उससे कोई बात नहीं कर सकी तो सुबह को घर वापस आ गयी।

अब उसके पास केवल एक ही सेब बचा था पर वह तो हीरों का सेब था – दुनियाँ का सबसे कीमती सेब। रानी ने उस सेब के भी दाम पूछे तो लड़की ने फिर कहा कि "मुझे इसके लिये कुछ नहीं चाहिये सिवाय इसके कि एक रात मैं अपने पति के साथ गुजार लूँ। इसके बाद मैं फिर यह कभी नहीं माँगूँगी।"

रानी ने वह सेब उठाया और रात को उसे आने के लिये कहा। जब वह अपने पति के पास गयी तो वह पिछली रातों की तरह उस रात भी सोया हुआ था। लड़की ने उसके माथे पर चूमा पर वह कुछ नहीं बोला। उसने उसे फिर चूमा पर वह फिर भी नहीं बोला। वह उसे बार बार चूमती रही आखिर वह उसे उठाने में सफल हो गयी।

उठ कर उसने पूछा "कौन है?"

लड़की ने कहा — "मैं हूँ आपकी पहली पत्नी।"

राजकुमार ने पूछा — "तुम्हें इधर का रास्ता कैसे मिला?"

लड़की ने कहा — "मैं आपको ढूँढती हुई इधर उधर सब जगह ढूँढती फिरी। मैं हवाओं की माँ के पास रुकी मैं चाँद की माँ के पास रुकी मैं सूरज की माँ के पास रुकी। उनमें से हर एक ने मुझे एक

सेब दिया जिसे मैंने आपकी रानी को दिया। हर सेब के बदले में उसने मुझे एक रात आपके साथ रहने का मौका दिया। और यह मेरी आपके साथ तीसरी रात है।”

तब उसका दिमाग कुछ ठीक हुआ तो उसने रोशनी करने के लिये कहा। पर जब रोशनी हो गयी तो उसने देखा कि उसकी पहली पत्नी तो एक बुढ़िया थी।

फिर उसने सोचा कि क्या वह इस तरह की चीज़ को कभी जानता था? कि उसकी पहली और वफादार पत्नी तो उसे सारे में ढूँढती फिरी और एक उसकी यह दूसरी पत्नी रानी है जिसने उसे तीन सेबों के बदले में बेच दिया।

उसने अपनी पहली पत्नी को रानी के पहनने लायक उतने कीमती कपड़े दिलवाये जितने उसे चाहिये थे। उसने भी अपना बुढ़िया वाला नकली वेश उतार दिया और वह फिर से जवान हो गयी। पर उसने अपनी बेवफा पत्नी को चार घोड़ों की पूँछों से बँधवा कर घास के मैदान में छोड़ दिया।

20 मोल का जन्म[50]

एक बार की बात है कि एक अमीर आदमी और एक गरीब आदमी दोनों का एक ही खेत था। वे दोनों एक ही समय पर उसमें एक ही बीज बोया करते थे। पर भगवान गरीब आदमी को उसकी मेहनत का ज़्यादा फायदा देता था। उसके बीजों को अच्छी तरह से बढ़ाता था जबकि अमीर आदमी के बीज ठीक से नहीं बढ़ते थे।

अमीर आदमी ने गरीब आदमी से कहा कि "खेत का वह हिस्सा जहाँ बीज उग आता था वह मेरा है न कि उसका। गरीब आदमी ने इस बात का विरोध किया पर अमीर आदमी नहीं माना बल्कि उससे कहा — "अगर तुम मेरा विश्वास नहीं करते तो कल सुबह को सवेरे जल्दी खेत पर आना तब भगवान इस बात का फैसला करेंगे।"

यह सुन कर गरीब आदमी तो घर चला गया पर अमीर आदमी ने गरीब आदमी के खेत में एक गहरा गड्ढा खोदा और उसमें अपने बेटे को रख दिया और उससे कहा — "देखो बेटे। जब मैं कल सुबह सवेरे यहाँ आऊँ और पूछूँ कि यह खेत किसका है तो कहना कि "यह खेत अमीर आदमी का है गरीब आदमी का नहीं।"

[50] Origin of Mole. (Tale No 20)
Mole is animal that lives underground.

उसके बाद उसने उसे भूसे से अच्छी तरह ढक दिया और घर चला गया। अगले दिन सुबह सवेरे बहुत सारे लोग वहाँ आये गरीब आदमी भी आया।

अमीर आदमी ने चिल्ला कर पूछा — "हे भगवान बताओ कि यह खेत किसका है अमीर आदमी का या फिर गरीब आदमी का?"

बीच खेत में से आवाज आयी — "अमीर आदमी का। अमीर आदमी का।"

पर भगवान तो उन इकट्ठे हुए आदमियों के बीच में मौजूद थे। वह बोले — "इस आवाज को मत सुनो क्योंकि यह खेत तो यकीनन गरीब आदमी का है।"

तब भगवान ने सबको बताया कि यह सारा मामला क्या था। फिर उन्होंने अमीर आदमी के बेटे से कहा — "जहाँ तुम हो वहीं रहो। अब जब तक सूरज आसमान में है तुम हमेशा मिट्टी के नीचे ही रहो।"

इस तरह से उस अमीर आदमी का बेटा उसी जगह मोल बन गया। इसी लिये मोल सूरज के उजाले से भागते हैं।

21 दो राजकुमार[51]

एक बार की बात है कि एक राजा के दो बेटे थे। एक दिन उसके दोनों बेटे जंगल में शिकार खेलने गये। वहाँ वे खो गये। वे वहाँ बारह हफ्तों तक घूमते रहे। घूमते घूमते वे एक ऐसी जगह आये जहाँ तीन सड़कें मिलती थीं।

बड़े भाई ने अपने छोटे भाई से कहा — "यहाँ हमारी सड़कें अलग अलग होती हैं। तुम दूसरी वाली सड़क लो और मैं यह वाली सड़क लेता हूँ।"

उसके बाद बड़े भाई ने मैपिल के एक पेड़ में अपना चाकू घुसा दिया और फिर अपने छोटे भाई से कहा — "देखो भैया। अगर इस चाकू से खून निकले तो तुम यह समझना कि मैं नष्ट हो रहा हूँ। तो तुम यकीनन मुझे ढूँढने के लिये निकलना।

पर अगर खून इसके हैन्डिल से निकल रहा हो तो इसका मतलब यह है कि तुम नष्ट हो रहे हो। तो फिर मैं तुम्हें ढूँढने निकल जाऊँगा।"

उसके बाद दोनों भाइयों ने एक दूसरे को गले लगाया और अपने अपने रास्तों पर चले गये।

---

[51] The Two Princes. (Tale No 21)

बड़ा भाई चलता रहा चलता रहा और चलते चलते एक पहाड़ पर आ पहुँचा। वह इतना ऊँचा था कि उससे ऊँचा पहाड़ वहाँ कोई नहीं था।

वह उस पहाड़ पर अपने कुत्ते और छड़ी के सहारे चढ़ता रहा। वह चढ़ता चला गया और एक सेब के पेड़ के पास आ पहुँचा। उसने देखा कि सेब के पेड़ के नीचे आग जल रही थी। वह वहाँ कुछ गर्म होने के लिये रुक गया।

कि तभी एक बुढ़िया उसके पास आयी और बोली — "प्यारे बेटे। तुम अपना यह कुत्ता ज़रा बाँध के रखो कहीं ऐसा न हो कि यह मुझे काट ले।" सो उसने अपना कुत्ता बाँध दिया और कुत्ता बाँधते ही वह उसका कुत्ता दोनों पत्थर के हो गये। क्योंकि वह बुढ़िया एक जादूगरनी थी।

कुछ समय गुजर गया। कुछ समय बाद छोटा भाई मैपिल के पेड़ के पास वापस आया तो उसने देखा कि चाकू से खून टपक रहा था। उसने समझ लिया कि उसका भाई बहुत बड़े संकट में है। वह तुरन्त ही उसकी खोज में चल दिया।

आखीर में वह सबसे ऊँचे पहाड़ पर आ गया। वहाँ उसने एक कम्पाउंड देखा और उस कम्पाउंड में एक बुढ़िया बैठी थी। बुढ़िया ने उससे पूछा — "ओ छोटे राजकुमार। तुम यहाँ कैसे आये हो। तुम क्या ढूँढ रहे हो?"

वह बोला — "मैं अपने भाई को ढूँढ रहा हूँ। पूरा एक साल बीत गया है जबसे मैंने उसके बारे में मैंने कुछ सुना है। और मुझे यह भी नहीं पता कि वह ज़िन्दा है या मर गया।"

बुढ़िया बोली — "मैं बता सकती हूँ कि वह मर गया है और अब उसे ढूँढने का कोई फायदा नहीं हालाँकि तुम उसे दुनियाँ भर में ढूँढ चुके हो। पर तुम उस पहाड़ पर जा सकते हो वहाँ तुम्हें दो पहाड़ एक दूसरे के सामने खड़े मिलेंगे। वहाँ तुम्हें एक बूढ़ा मिलेगा जो तुम्हें आगे का रास्ता बतायेगा।"

सो वह दूसरे पहाड़ पर चला गया। वहाँ उसने देखा कि दो पहाड़ एक दूसरे के सामने खड़े थे। वहाँ उसे दो बूढ़े बैठे हुए मिले जिन्होंने उससे सीधे पूछा — "ओ छोटे राजकुमार ओ छोटे राजकुमार तुम कहाँ जा रहे हो और तुम किसे ढूँढ रहे हो?"

छोटा भाई बोला — "मैं अपने बड़े भाई को ढूँढ रहा हूँ। मेरा बड़ा भाई जो नष्ट हो रहा है और मुझे वह कहीं नहीं मिल रहा।"

तब उनमें से एक बूढ़े ने कहा — "अगर तुम बिना गिरे हुए इन पहाड़ों को खुरच सकते हो तो मैं तुम्हें वह दे दूँगा जो तुम चाहते हो।" छोटे भाई ने वैसा कर दिया तो उसने उसे एक रस्सी दी जो तीन फ़ैथम[52] लम्बी थी और उससे उसी पहाड़ पर लौट जाने के लिये

[52] Fathom is the standard of measuring depth of water, otherwise one Fathom equals to 6 feet, so 3 Fathoms equal to 18 feet = 6 yards = 5.4 meters.

कहा जहाँ वह बुढ़िया से मिला था और जिसने उसे वहाँ ठहरने और गर्म होने के लिये कहा था।

उसने उससे कहा कि वह इस रस्सी से उस बुढ़िया को बाँध दे और तब तक खूब मारे जब तक वह तुम्हारे भाई को वापस देने के लिये राजी न हो जाये।

और केवल तुम्हारे भाई को ही नहीं बल्कि वहाँ एक ज़ार ज़ारित्सा और एक ज़ारेवना भी हैं जिन्हें उसे ज़िन्दा करना है क्योंकि उसने उनको भी पत्थर बना कर रखा हुआ है। उसे जब तक पीटना जब तक वह इन सबको ज़िन्दा न कर दे।"

वह रस्सी ले कर छोटा भाई उसी पहाड़ पर चला गया जहाँ वह बुढ़िया थी जहाँ आग जल रही थी और जहाँ एक सेब का पेड़ भी खड़ा था। उसे देख कर बुढ़िया बाहर आयी और बोली — "छोटे मालिक छोटे मालिक। मैं ज़रा आग के पास बैठ कर थोड़ा गर्म हो लूँ।"

छोटा भाई बोला — "ओ छोटी माँ आओ। यहाँ बैठ कर थोड़ा गर्म हो लो और आराम से बैठो।"

सो वह बाहर निकल कर आयी और जैसे ही वह बाहर निकल कर आयी छोटे भाई ने उसके चारों तरफ रस्सी फेंक कर उसे बाँध लिया और उसकी पिटायी करनी शुरू कर दी। उसने उससे चिल्ला कर पूछा — "बता तूने मेरे भाई को कहाँ छिपा कर रखा है।"

बुढ़िया चिल्लायी — "ओ मेरे छोटे मालिक ओ मेरे छोटे मालिक। मुझे छोड़ दो मुझे जाने दो। मैं अभी बताती हूँ कि तुम्हारा भाई कहाँ है।"

पर उसने बिल्कुल नहीं सुना। वह तो बस उसे पीटता गया पीटता गया। उसने उसके नंगे पैर आग में रख दिये और उन्हें जब तक भूनता रहा जब तक कि वह ऊपर तक काँप नहीं गयी।

उसके बाद उसने उसे छोड़ दिया तब वह छोटे भाई को एक पहाड़ पर एक गुफा में ले गयी वहाँ से उसने इलाज करने वाला और ज़िन्दगी देने वाला पानी निकाला और उसके भाई को ज़िन्दा किया।

लेकिन वह उसके लिये बस इतना ही कर सकी क्योंकि इतना करने में ही वह अधमरी सी हो गयी थी।

तब बड़े भाई ने अपने छोटे भाई से कहा — "ओह मेरे भाई। मैं कितनी ज़ोर से सोता रहा। पर तुम्हें मेरे कुत्ते को भी ज़िन्दा करना है।"

तब जादूगरनी ने उसके कुत्ते को भी ज़िन्दा किया। ज़ार ज़रित्सा और ज़ारेवना को भी ज़िन्दा किया जिन्हें पत्थर में बदल दिया गया था। उसके बाद उन सबने वह जगह छोड़ दी और वहाँ से चले गये। कुछ दूर जाने के बाद ही बड़े भाई ने जमीन को झुक कर प्रणाम किया और अपने रास्ते अकेला ही चला गया।

चलते चलते वह एक शहर में आया जहाँ सारे लोग रो रहे थे और सारे घरों पर काले कपड़े लटक रहे थे। उसने उनसे पूछा —

“तुम सब लोग क्यों रो रहे हो और तुम्हारे घरों पर काले कपड़े क्यों लटक रहे हैं?”

वे बोले — “क्योंकि यहाँ एक ड्रैगन है जो आदमियों को खाता है। कल हमें अपनी राजकुमारी को उसे खाने के लिये देना है।”

वह बोला — “नहीं नहीं तुम्हें ऐसा नहीं करना पड़ेगा।” ऐसा कह कर वह उस गुफा की तरफ चल पड़ा जहाँ ड्रैगन रहता था।

उसने अपना घोड़ा गुफा के पास बाँध दिया और वहीं उसी के पास सारी रात सोता रहा। अगले दिन राजकुमारी उस गुफा के मुँह के पास लायी गयी। वह वहाँ पर गाड़ी में बिठा कर लायी गयी थी और एक नौकर उसकी नौकरी में था।

पर जब राजकुमार ने उसे देखा तो वह उससे मिलने के लिये उसके पास आया। उसको एक तरफ ले जा कर उसके हाथ में एक प्रार्थना की किताब दे दी और कहा — “राजकुमारी जी आप यहीं ठहरिये और मेरे लिये प्रार्थना कीजिये।”

यह सुन कर वह तुरन्त ही घुटनों के बल बैठ गयी और राजकुमार की ज़िन्दगी के लिये प्रार्थना करने लगी।

तभी ड्रैगन ने गुफा में से अपना एक सिर निकाला और बोला — “अब मेरा समय हो गया है। मेरा खाना मुझे चाहिये। कहाँ है मेरा खाना? यहाँ तो मेरा नाश्ता भी नहीं है।”

राजकुमार बोला — “आगे आओ आगे आओ। मैं तुम्हें तुम्हारा नाश्ता और खाना दोनों एक साथ ही खिलाऊँगा।”

यह सुन कर ड्रैगन रुक नहीं सका और अपने छहों सिर बाहर निकाल कर गुफा से बाहर निकलने लगा। जैसे ही उसने अपने छहों सिर बाहर निकाले वैसे ही राजकुमार ने अपनी तेज़ तलवार से उसके सारे सिर तुरन्त ही काट डाले। उसके शरीर पर चट्टान गिर पड़ी सो वह कुचला गया।

राजकुमार ने ड्रैगन के छहों सिर इकट्ठा किये और उन्हें एक तरफ डाल दिये और उन सिरों की छहों जीभें काट लीं। राजकुमारी को उसने महल वापस भेज दिया क्योंकि वे एक साल और बारह हफ्ते तक शादी नहीं कर सकते थे।

और अगर उस समय तक वह राजा के सामने नहीं पहुँचा तो उसकी शादी किसी दूसरे से हो जायेगी। इस शर्त के साथ वह वहाँ से चला गया।

उसके बाद राजकुमारी का गाड़ी वाला ड्रैगन वाली जगह पर आया और उसने वहाँ ड्रैगन के छहों सिर वहाँ पड़े देखे तो उसने उन्हें उठा लिया और राजकुमारी से कहा — "मैं तुम्हें यहीं मार दूँगा अगर तुम बारह बार मेरे सामने यह कसम नहीं खाओगी कि तुम यह कहोगी कि "इसने ही ड्रैगन को मारा है।" और फिर मुझे अपना पति नहीं बनाओगी।"

सो उसे बारह बार इस बात की कसम खानी पड़ी नहीं तो वह उसे वहीं मार देता। इस तरह वे दोनों एक साथ शहर लौटे। राजकुमारी को ज़िन्दा देख कर शहर के सब घरों से सारे काले कपड़े

उतार दिये गये। घंटे बजने लगे। सब लोग खुशियाँ मनाने लगे कि एक गाड़ी चलाने वाले ने ड्रैगन को मार दिया था। वे सब खुशी से बोले "अब उनकी शादी जल्दी से जल्दी हो जानी चाहिये।"

इस बीच राजा का बेटा आगे और आगे चलता चला गया और अब वह उसी शहर में वापस आ गया जहाँ उसने अपने छोटे भाई को छोड़ा था। वहाँ पहुँच कर उसे पता चला कि ज़ार और ज़ारित्सा ने उसके भाई को अपनी ज़ारेवना और अपना सारा राज्य दे दिया था।

वह कुछ समय तक वहाँ चक्कर काटता रहा पर एक साल और बारह हफ्तों के खत्म होने के समय वह वापस उसी राज्य लौट गया जिस राज्य की राजकुमारी की उसने ड्रैगन से जान बचायी थी। वहाँ पहुँचने पर उसने देखा कि उसकी तो शादी की बहुत शानदार तैयारियाँ हो रही थीं।

उसने पूछा — "इसका क्या मतलब है?"

लोगों ने जवाब दिया — "क्योंकि राजकुमारी के गाड़ी चलाने वाले ने छह सिर वाले ड्रैगन को मार दिया है और राजकुमारी को उससे बचाया है इसलिये अब उन दोनों की शादी हो रही है।"

वह चिल्लाया — "ओह मेरे भगवान। अरे मैंने तो यह ड्रैगन कभी देखा ही नहीं। कैसा था यह ड्रैगन?"

तब वे उसे ले गये और उसे उसके सिर दिखाये। सिर देख कर वह चिल्लाया — "अरे हर दूसरे जानवरों के मुँह में जीभ होती है पर इसके तो कोई जीभ ही नहीं है। यह कैसा ड्रैगन है?"

तब वे उसे ज़ारेवना की गाड़ी चलाने वाले के पास ले गये जो अब राजकुमार बनाया जा चुका था और उससे यह बात कही तो वह यह सुन कर बहुत गुस्सा हुआ और बोला — "जो कोई यह कहता है कि ड्रैगन के जीभ होती हैं मैं उसे चार घोड़ों की पूँछ में बँधवा दूँगा जो उसे घास के मैदान में खींच कर ले जायेंगे और उसे फाड़ देंगे।"

राजकुमारी ने राजा के बेटे को पहचान लिया। उसने उन दोनों में सुलह करवायी।

तब राजकुमार ने अपना रूमाल निकाला और उन्हें उसमें लिपटी छहों जीभें दिखायीं और फिर उन्हें उनके मुँहों में रख कर भी दिखाया। हर जीभ ड्रैगन के मुँह में पहुँच कर बोलने लगी और उन्होंने राजकुमारी से कहा कि वह बताये कि वहाँ क्या हुआ था।

तब राजकुमारी ने बताया कि किस तरह से वह तो राजकुमार की ज़िन्दगी के लिये प्रार्थना कर रही थी और फिर किस तरह गाड़ी वाले ने उससे बारह बार इस बात की कसम दिलवायी कि वह घर जा कर केवल यही कहेगी कि गाड़ी वाले ने ही ड्रैगन को मारा है और अगर वह ऐसा नहीं करेगी तो वह उसे वहीं मार देगा।

जब ज़ार ने यह सुना तो तुरन्त ही उसने अपनी बेटी की शादी राजकुमार से कर दी और गाड़ी वाले के लिये पूछा कि उसे क्या सजा दी जाये।

राजकुमार बोला — "इसे चार घोड़ों की पूँछ में बँधवा कर घास के मैदान में छोड़ दिया जाये ताकि वे वहाँ उसके टुकड़े टुकड़े कर सकें और रैवन और कौए उन्हें खा सकें।"

22 कृतघ्न बच्चे और बूढ़ा पिता जो स्कूल दोबारा गया[53]

एक बार की बात है कि एक बूढ़ा था। वह बहुत दिनों तक ज़िन्दा रहा था। भगवान ने उसे बच्चे भी दिये थे जिन्हें उसने आदमी की तरह से बड़ा किया था। उसने अपनी सारी चीज़ें उनमें बाँट दी थीं। उसने सोचा था कि मैं तो अपनी ज़िन्दगी अपने बच्चों के बीच में काट लूँगा।

सो वह बूढ़ा अपने सबसे बड़े बेटे के पास रहने गया। पहले तो उसने अपने पिता को ठीक से रखा और उसका बहुत आदर किया। वह बोला — "यह हमारा कर्तव्य है कि हम अपने पिता के खाने पीने का ख्याल रखें। देखें कि उनके पास ठीक से कपड़े हैं कि नहीं और समय समय पर देखें कि उनकी दूसरी जरूरतें भी ठीक से पूरी हो रही हैं या नहीं। त्यौहारों पर उन्हें नये कपड़े मिल रहे हैं या नहीं।"

उन्होंने ऐसा ही किया और पिता को समय समय पर सब कुछ ठीक से मिलता रहा। इस तरह सबसे बड़ा बेटा पिता के लिये बहुत अच्छा था। पर कुछ समय बाद ही वह अपनी इस मेहमानदारी से

---

[53] The Ungrateful Children and the Old Father Who Went to School Again. (Tale No 22)

तंग आ गया और वह अपने पिता से कठोर व्यवहार करने लगा। कभी कभी वह अपने पिता पर चिल्ला भी पड़ता।

बूढ़े की इस घर में अब पहले जैसी अपनी कोई जगह नहीं रह गयी थी। अब कोई उसे खाना खिलाता भी नहीं था। सो उसका बेटा यह कह कर पछताने लगा कि उसने यह क्यों कहा कि वह अपने पिता को रखेगा। वह जो कौर उसे खिलाता उस हर कौर पर भुनभुनाता।

बूढ़े के पास अब सिवाय इसके कोई और चारा नहीं रह गया था कि वह अपने दूसरे बेटे के पास जा कर रहे। उसके यहाँ जाने पर उसे यहाँ से अच्छा भी लग सकता था और खराब भी। पर अपने बड़े बेटे के पास रहना तो अब उसके लिये असह्यनीय हो गया था।

सो पिता अपने दूसरे बेटे के पास रहने के लिये गया पर वहाँ पहुँच कर उसे लगा कि उसने तो गेहूँ की बजाय भूसा ले लिया है। जब भी वह खाना खाना शुरू करता तो उसके बेटा और बहू दोनों ही मुँह बनाने लग जाते। बहू ससुर को डाँटती।

वह अपने पति से कहती — "हमारी अपनी जरूरतों को पूरा करने के लिये हमारे पास पहले ही अधिक नहीं था अब हमें इस बूढ़े की जरूरतों को भी पूरा करना होता है।"

बूढ़े के लिये वह सब सुनना काफी था सो वह अपने तीसरे बेटे के पास गया।

इस तरह बूढ़ा बारी बारी से अपने चारों बेटों के पास गया पर जिसके पास भी वह गया वह यही कहता कि "पिता को रखने का कर्तव्य तुम्हारा है।" या फिर "हमारे पास तो अपने लिये ही काफी नहीं पड़ता।"

सो किसी ने उसे नहीं रखा। वास्तव में अब लड़ाई यह थी कि पिता को कौन नहीं रखेगा। किसी के पास कई बच्चे थे तो दूसरा अपनी पत्नी को डाँटता था। एक का घर बहुत छोटा था तो दूसरे का घर बहुत गरीब। किसी के पास कोई बहाना था तो किसी दूसरे के पास दूसरा।

उन्होंने कहा — "ओ बूढ़े तुम्हें जहाँ जाना हो जाओ। बस हमारे पास नहीं आओ।"

बूढ़ा बहुत ही सीधा था वह अपने बच्चों के सामने ही रो पड़ा। उसकी समझ में नहीं आया कि वह क्या करे। उनके सामने गिड़गिड़ाना बेकार था। उसका कोई भी बेटा उसे रखने के लिये तैयार नहीं था। फिर भी कहीं तो उसे रहना ही था। उसने उनसे किसी से कुछ नहीं कहा उन्हें वैसा ही करने दिया जैसा वे करना चाहते थे।

सो चारों बेटे एक साथ मिल कर बैठे और आपस में सलाह की। कई बार उन्होंने आपस में मिल कर सलाह की तो आखिर वे इस नतीजे पर पहुँचे कि बूढ़े के लिये सबसे अच्छा तरीका स्कूल जाने का था।

उन्होंने कहा — “कम से कम वहाँ उसके बैठने के लिये एक बैन्च होगी। खाने के लिये वह वहाँ कुछ ले जाया करेंगे।”

उसके बाद उन्होंने यह सब बूढ़े से कहा मगर बूढ़ा स्कूल जाना नहीं चाहता था। उसने अपने बेटों से विनती की कि वे उसे स्कूल न भेजें। वह फिर उनके सामने रो पड़ा।

वह बोला — “मुझे सफेद दुनियाँ तो दिखायी देती नहीं मैं काली किताब कैसे देखूँगा। मैंने तो इसके अलावा मैंने तो बचपन के बाद से कभी अक्षर पढ़े ही नहीं। अब मैं उन्हें शुरू कैसे करूँगा। मौत की कगार पर खड़े हुए एक बूढ़े को क्लर्क नहीं बनाया जा सकता।”

पर उनसे बात करने का कोई फायदा नहीं था। उसके बच्चों की ऊँची आवाज के सामने उसकी कमजोर आवाज दब गयी। उसके बच्चों ने कहा कि उसे स्कूल जाना ही है तो उसे स्कूल जाना ही पड़ा।

उस गाँव में कोई चर्च नहीं था तो उसे स्कूल के लिये दूसरे गाँव जाना पड़ा। सड़क के सहारे सहारे बीच में एक जंगल पड़ता था। सो एक बार जब वह स्कूल जा रहा था तो जंगल में उसे एक भला आदमी अपनी गाड़ी में जाता मिला।

जब बूढ़ा उसकी गाड़ी के पास तक आया तो वह उसे अपने पास बुलाने के लिये अपनी गाड़ी से उतर गया और उससे पूछा कि वह किधर जा रहा था।

बूढ़े ने आदर से अपना हैट उतारा और उससे बात करने के लिये कुछ पग आगे बढ़ा और उससे अपनी बदकिस्मती के बारे में कहा। कहते कहते बूढ़े के गालों पर आँसू बहने लगे।

वह बोला — "बड़े दुख की बात है जनाब। अगर भगवान ने मुझे बच्चे न दिये होते तो शिकायत की कोई बात ही नहीं थी पर यह बात कितनी अजीब सी है कि ऐसा दुख मेरे सिर पर पड़ा।

भगवान का धन्यवाद है कि मेरे चार बेटे हैं और सबके अपने अपने मकान हैं इस पर भी वे अपने बूढ़े बाप को स्कूल पढ़ने के लिये भेज रहे हैं। क्या इस तरह की बात पहले कभी सुनी है?"

इतना कह कर उसने उसे अपना हाल विस्तार में बता दिया। भले आदमी को बूढ़े पर बहुत दया आयी। वह बोला — "ओ बूढ़े। तुम्हें स्कूल जाने की कोई जरूरत नहीं है। यह तो तुम समझ लो। तुम घर लौट जाओ और मैं तुम्हें बताता हूँ कि तुम्हें क्या करना है ताकि तुम्हारे बच्चे तुम्हें स्कूल न भेजें।

ओ बूढ़े। तुम डरो भी नहीं और रोओ भी नहीं। अपनी आत्मा को तकलीफ मत दो। भगवान तुम्हारे ऊपर दया करें सब ठीक हो जायेगा। मुझे अच्छी तरह मालूम है कि यहाँ क्या करना चाहिये।"

भले आदमी ने उसे तसल्ली दी और बूढ़ा घर खुश होता हुआ चल दिया। रास्ते में भले आदमी ने अपना पर्स निकाला। वह पर्स तो वास्तव में एक बहुत ही भले आदमी का पर्स लग रहा था। उसमें एक छोटी सी थैलिया थी जिसमें छुटपुट सिक्के पड़े हुए थे।

बूढ़े ने उसे देखा तो उसने उसकी अपने मन में बहुत प्रशंसा की। बल्कि वह उसे जितना ज़्यादा देखता उसे वह उतना ही ज़्यादा अच्छा लगता। भले आदमी ने अपना पर्स निकाला और उसे किसी चीज़ से भरने लगा।

जब वह भर गया तो उसने वह बूढ़े को दे दिया और कहा — "लो यह पर्स लो और सीधे अपने बच्चों के पास चले जाओ और जब तुम घर पहुँच जाओ तो अपने चारों बेटों को बुलाना और उनसे कहना —

"मेरे प्यारे बेटों। काफी दिन पहले जब मैं जवान था तो मैं दुनियाँ में घूमता फिरा जिससे मैंने कुछ पैसा बनाया। फिर मैंने अपने मन में सोचा कि "मैं इसे खर्च नहीं करूँगा।" क्योंकि कोई नहीं जानता कब क्या हो जाये। सो मैं एक जंगल में गया और एक ओक के पेड़ के नीचे उसे दबा दिया।

उसके बाद मैंने फिर उस पैसे की कभी कोई चिन्ता नहीं की क्योंकि मेरे तो बच्चे ही बहुत अच्छे थे। पर जब तुम लोगों ने मुझे स्कूल भेजा तो फिर मैं उसी ओक के पेड़ के नीचे आया और सोचा "क्या ये चाँदी के टुकड़े अभी भी अपने मालिक का इन्तजार कर रहे हैं? चलो यहाँ खोद कर देखता हूँ।"

सो मैंने उस ओक के पेड़ के नीचे खोदा और वे सिक्के मुझे वहाँ मिल गये। अब इन्हें मैं तुम्हें दिखाने के लिये घर ले कर आया हूँ। मैं इन्हें तब तक रखूँगा जब तक मैं मरूँगा।

पर मेरे मरने के बाद आपस में सलाह कर लेना कि किसने मुझे सबसे ज़्यादा प्यार किया है। मेरी सबसे ज़्यादा देखभाल की है। मुझे साफ कमीज़ देने में कोई भुनभुनाहट नहीं की है। या जब मैं भूखा हूँ तब रोटी देने में कोई हिचकिचाहट नहीं की है। उसे मैं अपने इस पैसे में से सबसे ज़्यादा पैसे दे कर जाऊँगा।

इसलिये अब तुम मेरे बच्चों मेरा स्वागत करो। मेरा आशीर्वाद तुम्हें मिलेगा। अब जैसे तुम चाहो उसी तरह से आपस में तय कर लो। यकीनन इस उम्र में मैं अजनबियों के साथ नहीं रहना चाहता। अब यह बताओ कि इस पैसे के लिये तुममें से कौन अपने पिता को अपने पास रखना चाहेगा।"

इस तरह बूढ़ा एक पर्स एक सन्दूकची में ले कर अपने बच्चों के पास लौट गया। जब वह सन्दूकची बगल में दबाये गाँव लौटा तो किसी को एकदम से पता नहीं चला कि वह एक "अच्छे जंगल" से लौटा है।

जब कोई भारी सी सन्दूकची बगल में दबा कर घर लौटता है तो देखने वाले को तुरन्त ही पता चल जाता है कि वह किसी "अच्छे जंगल" से लौटा है। सो जैसे ही वह गाँव लौटा तो उसकी सबसे बड़ी बहू भागती हुई उससे मिलने के लिये आयी और उसके वापस आने पर भगवान को धन्यवाद दिया।

वह बोली — “पिता जी आपके जाने के बाद कुछ भी अच्छा नहीं लग रहा था। सारा घर सूना सूना पड़ा था। आइये थोड़ा आराम कर लीजिये। आप बहुत दूर गये थे थक भी गये होंगे।”

तब सारे भाई एक साथ आये और बूढ़े ने उन्हें बताया कि भगवान ने उसके साथ क्या किया था। उस सन्दूकची को देख कर सबके चेहरे चमक उठे और उन्होंने अपने अपने मन में सोचा कि “अगर हम इन्हें रख लेंगे तो यह पैसा हमारा होगा।

चारों भाई अपने बूढ़े पिता से और कुछ नहीं निकलवा सके। अब वे सब उसकी अच्छी तरह से देखभाल करते थे। बूढ़ा भी बहुत खुश था। पर उसने उस भले आदमी की सलाह मानी और उस सन्दूकची को अपने हाथ से छोड़ा नहीं।

“मेरी मौत के बाद यह सब तुम्हीं को मिलेगा पर मैं अभी तुम्हें इसमें से कुछ नहीं दूँगा क्योंकि क्या पता कल को क्या हो जाये। मैंने देख लिया है कि तुम लोगों ने अपने बूढ़े पिता के साथ कैसा व्यवहार किया है जब उसके पास कुछ नहीं था।

मैं कहता हूँ कि यह सब तुम्हारा ही है पर इसके लिये इन्तजार करना पड़ेगा। जब मैं मर जाऊँ तब इसे ले लेना और मेरे कहे अनुसार आपस में बाँट लेना।

सो चारों भाई फिर उसकी सेवा करने लगे। अब वह बूढ़ा आराम से रहता था और घर में उसकी इज़्ज़त थी। अब वह अपनी मर्जी से रहता था और कुछ नहीं करता था।

इस तरह अब उस बूढ़े के साथ कोई दुर्व्यवहार नहीं करता था बल्कि वह अब उनके साथ बादशाह की तरह से अपने राज्य में रहता था। पर जैसे ही वह मर गया तुरन्त ही उसके बच्चे यह देखने के लिये दौड़े कि उस सन्दूकची में क्या था।

सबको बुलाया गया और सबने यह स्वीकार किया कि उन्होंने अपने पिता की बहुत अच्छी तरह से सेवा की थी। इसलिये यह तय किया गया कि सब उस धन को आपस में बराबर बाट लें।

सबसे पहले वह बूढ़े के शरीर को चर्च ले कर गये साथ में वे उस सन्दूकची को भी ले गये। उन्होंने उसे भगवान के बताये अनुसार दफ़नाया। उसके दफ़न पर उन्होंने एक बहुत शानदार दावत दी जिससे यह पता चले कि उन्हें अपने पिता के मरने का कितना दुख था। संक्षेप में वह एक शानदार दफ़न था।

जब पादरी मेज पर से उठा तो लोगों ने मेजबान को धन्यवाद देना शुरू किया। सबसे बड़े बेटे ने पादरी से मरे हुए आदमी की आत्मा की शान्ति के लिये चर्च में चालीस दिन की प्रार्थना कहने के लिये विनती की।

उसने कहा — "वह एक बहुत ही अच्छे आदमी थे। क्या ऐसा अच्छा आदमी कोई और भी था? मेहरबानी कर के उस प्रार्थना के लिये ये पैसे लीजिये।" इस तरह सबसे बड़ा बेटा अपने पिता के लिये इतना अधिक दुखी था। उसने पादरी को पैसे दिये। इसी तरह से दूसरे बेटे ने भी दिये। तीसरे और चौथे बेटे ने भी दिये।

वे रो कर बोले — "हम अपने पिता के लिये चर्च में प्रार्थना करेंगे चाहे हमारी आखिरी भेड़ भी क्यों न बिक जाये।"

जब सब कुछ खत्म हो गया तो वे जल्दी से पैसे के लिये घर लौटे। सन्दूकची को लाया गया। उन्होंने उसे हिलाया तो उसमें से खनखनाने की आवाज आ रही थी। हर एक ने उस सन्दूकची को अपने हाथ में ले कर हिला हिला कर देखा। वह उन्हें एक खजाने की तरह लग रही थी।

उन्होंने उसका ताला खोला सन्दूकची को खोला और उसमें रखा सामान पलट दिया। उसमें तो केवल शीशे के टुकड़े भरे हुए थे। उन्हें तो अपनी ऑखों पर विश्वास ही नहीं हुआ। उन्होंने उन शीशे के टुकड़ों में पैसे ढूँढने की कोशिश की पर उनमें उन्हें कोई पैसा नहीं मिला। यह एक बड़ा भयानक दृश्य था।

उन्होंने सोचा कि उनके पिता ने ओक के पेड़ के नीचे इसलिये तो नहीं खोदा होगा जिसमें कॉच के टुकड़े भरे हों। वे सब बोले — "हमारे पिता हमारे लिये कॉच के टुकड़े छोड़ कर क्यों गये।"

अगर वहॉ बहुत सारे लोग न होते तो उन्होंने एक दूसरे को मारना पीटना शुरू कर दिया होता। बूढ़े के बच्चों को अब पता चला कि उनके पिता ने उनका बेवकूफ बनाया।

सारे लोग उनके ऊपर हॅसने लगे — "अब तुम्हें पता चला कि अपने पिता को इस उम्र में स्कूल भेजने का क्या नतीजा निकला पर उसने तो स्कूल में कुछ सीख ही लिया। हालॉकि कुछ सीखने के

लिये वह काफी बड़ा था पर कभी न सीखने की बजाय देर से सीखना फिर भी अच्छा है।

अब हमें पता चला कि तुम लोगों ने उसे जरूर किसी अच्छे स्कूल में भेजा होगा। उन्होंने इस बात को सिखाने के लिये उसकी कितनी पिटायी की होगी। पर कोई बात नहीं तुम पैसा और सन्दूकची दोनों रख सकते हो।"

सब भाई बहुत दुखी और गुस्सा थे पर वे अब कर ही क्या सकते थे। उनका पिता तो पहले ही मर चुका था और दफ़नाया भी जा चुका था।

23 बेवकूफ इवान और सेंट पीटर की बाँसुरी[54]

एक बार की बात है कि एक आदमी था जिसके तीन बेटे थे जिनमें से दो तो अक्लमन्द थे पर तीसरा जिसका नाम इवान था वह थोड़ा बेवकूफ था। उनके पिता ने अपनी सारी सम्पत्ति उन तीनों में बाँट दी थी और मर गया था। अब तीनों भाई अपनी अपनी किस्मत आजमाने के लिये दुनियाँ में अकेले थे।

दोनों बड़े अक्लमन्द भाइयों ने अपनी सम्पत्ति अपने घर पर ही छोड़ दी थी पर बेवकूफ इवान ने जिसके हिस्से में केवल एक बड़ी चक्की ही आयी थी उसे अपने साथ ही ले लिया। वे चल दिये।

चलते चलते उन्हें रात हो गयी। अक्लमन्द भाइयों ने कहा — "चलो हम लोग इस ओक के पेड़ पर चढ़ कर अपनी रात गुजारते हैं इससे कोई चोर हम पर हमला नहीं कर पायेगा।"

पर उनमें से एक ने कहा — "पर यह बेवकूफ गधा अपनी चक्की के साथ क्या करेगा।" कह कर वे दोनों पेड़ पर चढ़ गये और एक मोटी सी डाल पर बैठ गये।

इवान बोला — "तुम अपना देखो क्योंकि मैं भी इसी पेड़ पर अपनी रात गुजारने वाला हूँ।" कह कर वह भी किसी तरह अपने को घसीट कर ऊपर चढ़ गया। वह चक्की को भी अपने साथ ही ले गया।

---

[54] Ivan the Fool and Peter's Fife. (Tale No 23)

वह भी अपने भाइयों की तरह पेड़ की चोटी तक पहुँच जाना चाहता था पर पतली पतली डालें उसके बोझ से टूटी जा रही थीं सो उसे उसके नीचे वाले हिस्से में मोटी मोटी डालों पर ही बैठ जाने से सन्तुष्ट होना पड़ा। उसने अपनी चक्की अपनी बाँहों में दबा रखी थी।

कुछ ही देर में वहाँ कुछ चोर आये। अपना काम करने के बाद उनके हाथ अभी भी खून से लाल हो रहे थे। उन्होंने भी अपनी रात उसी पेड़ के नीचे गुजारने का निश्चय किया सो उन्होंने अपने लिये कुछ लकड़ी काटी और उससे एक बहुत बड़े से बर्तन के नीचे बड़ी सी आग जलायी। इस बड़े बर्तन में उन्होंने अपना खाना उबालना शुरू किया और तब तक उबाला जब तक वह उबल कर तैयार हुआ।

फिर वे उस बड़े बर्तन के चारों तरफ बैठ गये और बड़े बड़े चमचे ले कर उनमें से खाने ही वाले थे। उसे ठंडा करने के लिये उसमें फूँक मार रहे थे कि इवान ने अपनी बड़ी चक्की उनके बड़े बर्तन में गिरा दी। इससे उनकी गर्म गर्म खिचड़ी उनकी ऑखों में उछल कर जा पड़ी।

चोर लोग इस बात से इतना डर गये कि वे वहाँ से तुरन्त ही उठ गये और जंगल में चारों तरफ भाग गये। वे अपना चोरी किया गया सामान वहीं भूल गये जिसे उन्होंने सौदागरों से चुराया था। तब

इवान पेड़ से उतर कर नीचे आया और भाइयों से कहा कि वे नीचे आ कर उसका बॅटवारा कर लें।

सो वे दोनों अक्लमन्द भाई उतर कर नीचे आये उनके सारे थैले उन्हीं के घोड़ों पर रखे और घर चले गये। इवान के हिस्से में केवल एक थैला अगरबत्ती का ही आया। इसे वह तुरन्त ही चर्च में ले गया उसे वहाँ एक कब्र पर रखा और उसे अपनी चक्की से पीसने लगा।

अचानक न जाने कहाँ से वहाँ सेंट पीटर प्रगट हो गये और बोले — "अरे भले आदमी यह तुम यहाँ क्या कर रहे हो?"

इवान बोला — "मैं इन अगरबत्तियों की रोटी बनाने के लिये इन्हें कूट रहा हूँ।"

सेंट पीटर बोले — "नहीं ओ भले आदमी। मैं तुम्हें इसके लिये इससे अच्छी सलाह देता हूँ। तुम मुझे ये अगरबत्तियाँ दे दो और इसके बदले में मुझसे जो चाहो माँग लो।"

बेवकूफ इवान बोला — "बहुत अच्छा सेंट पीटर। तो ओ सेंट पीटर आप मुझे एक छोटी सी बाँसुरी दे दीजिये। पर वह बाँसुरी ऐसी होनी चाहिये कि मैं उस पर कुछ भी बजाऊँ उस पर हर एक नाच उठे।"

सेंट पीटर ने पूछा — "पर क्या तुम बाँसुरी बजाना जानते हो?"

"नहीं। पर मैं जल्दी ही सीख लूँगा।"

सेंट पीटर ने अपनी छाती में से एक छोटी सी बाँसुरी निकाली और इवान को दे दी और इवान से उन्होंने अगरबत्तियाँ लीं और उन्हें ले कर चले गये। भगवान जाने कहाँ।

पर इवान उठा और आसमान की तरफ देखता हुआ बोला — “देखिये। अगर सेंट पीटर ने अभी तक मेरी अगरबत्तियाँ नहीं जलायी हैं और उनसे बड़ा सफेद बादल नहीं बनाया है जो मेरे सिर के ऊपर तैर रहा है।”

कह कर उसने अपनी बाँसुरी निकाली और उसे बजाना शुरू किया। जैसे ही उसने अपनी बाँसुरी बजानी शुरू की वैसे ही उसके चारों तरफ की सब चीज़ें नाचने लगीं – भेड़िये खरगोश लोमड़े भालू। केवल ये ही नहीं चिड़ियें भी नीचे बैठ गयीं और नाचने लगीं।

यह सब देख कर इवान हँसने लगा। वह हँसता जाता था और अपनी बाँसुरी बजाता जाता था। यहाँ तक कि जंगली भालू तो नाचते नाचते थक ही गये। तब उन्होंने अपने नाच को रोकने के लिये पेड़ों के तने पकड़ लिये पर उन्हें इसका कोई फायदा नहीं हुआ। वे नाचते ही रहे।

आखिर इवान खुद ही थक गया और आराम करने के लिये लेट गया। कुछ देर बाद वह फिर उठा और शहर चला गया। वहाँ बहुत सारे लोग बाजार में घूम रहे थे। कुछ खरीद रहे थे कुछ बेच रहे थे।

कुछ लोग पैनकेक खरीद रहे थे कुछ दूसरे लोग रंग बिरंगे अंडे खरीद रहे थे। दूसरे क्वास ड्रिंक[55] खरीद रहे थे।

बस इवान ने अपनी बाँसुरी बजानी शुरू कर दी और वहाँ सब नाचने लगे। एक आदमी जिसके सिर पर टोकरी भरे अंडे रखे थे वे सब नाचते नाचते टूट गये। वह आदमी खुद भी नाच रहा था। नाचते नाचते वह खुद ऐसा लगने लगा जैसे अंडे का पीला हिस्सा नाच रहा हो।

वे लोग जिनकी आँख लग गयी थी वे तुरन्त ही उठ कर नाचने लगे। कुछ बिना पैन्ट पहने नाचने लगे। कुछ बिना कमीज पहने ही नाचने लगे। और कुछ तो बिना कुछ पहने ही नाचने लगे। क्योंकि जब इवान अपनी बाँसुरी बजाता तो उन्हें नाचना ही पड़ रहा था। सारा शहर ऊपर नीचे हो रहा था — कुत्ते कुतिया मुर्गे मुर्गियाँ सभी जैसे ज़िन्दा हो उठे थे।

आखिर इवान यहाँ भी थक गया तो उसने अपनी बाँसुरी बजानी बन्द कर दी और शहर में नौकरी ढूँढने चला गया। वहाँ एक पादरी था जिसे वह बहुत अच्छा लगा।

उसने कहा — "ओ भले आदमी। क्या तुम मेरे पास काम करोगे?"

इवान बोला — "हाँ खुशी से करूँगा।"

[55] Kwas Drink – a special type of drink used in Ukraine and Russia.

पादरी ने पूछा — "तुम एक साल का क्या लोगे?"

इवान बोला — "मैं कोई मँहगा आदमी नहीं हूँ। केवल पाँच सिक्के साल के।"

पादरी बोला — "बहुत अच्छे। मैं तैयार हूँ।"

सो उसने इवान को अपने पास नौकर रख लिया। अगले दिन उसने उसे अपने जानवरों को मैदान में चरने के लिये ले जाने के लिये कहा। इवान उन्हें घास के मैदान में चरने के लिये ले गया। उन्हें तो उसने घास चरने के लिये छोड़ दिया और खुद वह एक भूसे के ढेर पर बैठ गया।

बैठे बैठे उसे आलस्य आने लगा तो उसने सोचा कि उसने बहुत दिनों से अपनी बाँसुरी नहीं बजायी है वह कुछ देर के लिये अपनी बाँसुरी बजा ले। सो उसने अपनी बाँसुरी बजानी शुरू कर दी। और लो वहाँ तो सारे जानवरों ने नाचना ही शुरू कर दिया।

न केवल उसके जानवर बल्कि भालू खरगोश लोमड़े भेड़िये सभी नाचने लगे। जो हैजेज़ में थे वे भी और जो गड्ढों में थे वे भी सभी नाचने लगे। वे जब तक नाचते रहे जब तक वे नाचते नाचते थक कर चूर नहीं हो गये।

शाम को इवान उन्हें घर हाँक लाया पर वे इतने भूखे थे कि वे जिन जिन झोंपड़ियों के पास से गुजरते आ रहे थे उन उनकी छतों के सड़े हुए तिनकों को खाते आ रहे थे। इसलिये उनको केवल

बहुत थोड़ा सा ही खाना मिल पाया। पर इवान अन्दर गया और अन्दर जा कर अपना खाना खाया और उसके बाद उसने आराम से अपनी रात गुजारी।

अगले दिन उसने फिर से जानवरों को लिया और उन्हें चराने ले चला। उधर उन्होंने अपना चरना शुरू किया ही था कि इधर इवान ने अपनी बाँसुरी फिर से बजानी शुरू कर दी।

उसका बाँसुरी बजाना था कि वे सब जानवर फिर से पागलों की तरह नाचने लगे। वह शाम तक अपनी बाँसुरी बजाता रहा। शाम को जब वह उन्हें घर ले कर आया तो वे सब फिर से बहुत भूखे थे और थकान से बस मरने वाले हो रहे थे।

पादरी अपने जानवरों को देख कर बहुत आश्चर्य में पड़ गया। वह सोचने लगा कि यह लड़का इन्हें किस घास के मैदान में चरा रहा था। उसने सोचा कि कल वह खुद उसके साथ उन्हें ले कर जायेगा और फिर देखता है कि वह उन्हें कहाँ ले जाता है और उनके साथ क्या करता है।

तीसरे दिन इवान उन्हें फिर से चराने के लिये ले कर चला तो इस बार पादरी उसके पीछे पीछे चला। मैदान में पहुँच कर वह एक हैज के पीछे छिप गया। उस हैज के पास ही इवान बैठा बैठा उन जानवरों को देख रहा था। पादरी वहीं बैठ गया और देखने लगा कि वह अब क्या करता है।

उसने देखा कि इवान एक भूसे के ढेर पर चढ़ कर बैठ गया और अपनी बाँसुरी बजाने लगा। तुरन्त ही सब नाचने लगे – जानवर भी हैज में छिपे जानवर भी गड्ढों में छिपे जानवर भी। हैज के पीछे छिपा पादरी भी नाचने लगा।

अब वह हैज काँटों वाले पौधों की हैज थी सो जैसे ही पादरी ने हैज के पीछे नाचना शुरू किया वैसे ही उसकी पोशाक उनमें फँस कर फटने लगी। कमीज भी ब्रीचेज़ भी और इन सबको फाड़ती हुई फिर वह खुजली उसकी खाल तक पहुँच गयी।

उसकी दाढ़ी के बाल भी उखड़ने लगे और वह ऐसी लगने लगी जैसे कि किसी ने उसकी दाढ़ी बुरी तरह से बनायी हो।

पर फिर भी पादरी उस काँटे वाली हैज के पास नाचता ही रहा नाचता ही रहा जब तक कि उसका शरीर खून से लहू लुहान नहीं हो गया।

तब पादरी की नजर अपने आप पर गयी तो उसने देखा कि बहुत बुरी शक्ल में था सो वह अपने जानवर चराने वाले पर चिल्लाया कि वह अपना बाँसुरी बजाना बन्द करे पर वह तो अपने संगीत में इतना मस्त था कि उसने कुछ सुना ही नहीं।

कई बार पुकारने पर आखिर उसने हैज की तरफ देखा और जब उसने बेचारे पादरी को पागलों की तरह नाचते देखा तब वह

रुका। पादरी वहाँ से जितनी जल्दी हो सका भाग गया। जब वह इस तरह सड़कों पर हो कर भाग रहा था तब क्या ही दृश्य था।

लोग उसे जानते नहीं थे पर कोई भी जो इस तरह से चिथड़ों में सड़क पर भाग रहा हो जिनमें उसका सारा शरीर दिखायी दे रहा हो उसकी तरफ देख देख कर वे सीटी बजा रहे थे। तब बेचारे ने बड़ी सड़क छोड़ कर गली ली और जंगल लिया और लम्बे लम्बे सरकंडों के जंगल पार कर के घर पहुँचा।

वह जिधर भी जा रहा था कुत्ते उसके पीछे पीछे भाग रहे थे। लोगों ने उसे चोर समझा और उस पर अपने कुत्ते छोड़ दिये। जब वह घर पहुँचा तो उसकी शक्ल देख कर उसकी पत्नी भी उसे नहीं पहचान सकी। उसने मजदूरों को बुलवाया और उनसे कहा — "इसे भगाओ। यह चोर कहाँ से आ गया।"

वे तुरन्त ही डंडिया और लोहे के डंडे ले कर आये पर पादरी उनसे बात करने लगा तब कहीं जा कर उन्होंने उसे पहचाना। तब उसकी पत्नी उसे घर में ले कर गयी। पादरी ने उसे इवान की सारी कहानी उसे बतायी। उसकी कहानी सुन कर उसकी पत्नी को बहुत आश्चर्य हुआ और उसे विश्वास ही नहीं हुआ।

शाम को इवान जानवर ले कर घर लौटा। उसने उनको उनकी जगह बाँधा उन्हें खाने के लिये भूसा दिया और अपने खाने के लिये घर में आया।

पादरी ने कहा — “आओ इवान आओ। जब तुम खा पी कर थोड़ा आराम कर लो तब मेरी पत्नी के लिये अपनी बाँसुरी पर एक छोटा सा गीत बजाना।”

लेकिन पादरी ने उसके बाँसुरी बजाने से पहले अपना ध्यान रखा कि उसने अपने आपको एक खम्भे से बाँध लिया जो उसके घर की छत को सँभालने के लिये लगाया गया था। तब इवान घर की देहरी पर बैठ गया और अपनी बाँसुरी बजानी शुरू कर दी।

जब इवान ने अपनी बाँसुरी बजानी शुरू की तो पादरी की पत्नी उसे सुनने के लिये एक बैन्च पर बैठ गयी पर बाँसुरी की आवाज सुनते ही वह बैन्च से कूद कर उठ गयी और उसने नाचना शुरू कर दिया।

वह तो इतने उत्साह और ज़ोर से नाच रही थी कि वहाँ की बड़ी जगह भी उसे नाचने के लिये छोटी पड़ रही थी। उसका असर बिल्ली पर भी हुआ क्योंकि वह भी स्टोव के नीचे से निकल आयी और नाचने कूदने लगी।

पर पादरी को तो सब मालूम था सो वह कोशिश कर के अपने खम्भे से चिपका खड़ा रहा। पर उसकी सब कोशिशें बेकार गयीं। उसकी चिपके रहने की ताकत खत्म हो गयी और उसने अपने हाथों से ही रस्सी खोल दी और वह भी खम्भे के चारों तरफ नाचने लगा।

पर वह बहुत देर तक नहीं नाच सका और उसने इवान को उसकी बाँसुरी रोक देने के लिये कहा। उसने कहा — "तेरे अन्दर शैतान है।"

इवान ने तब अपना बाँसुरी बजाना रोक दिया। अपनी बाँसुरी अपनी छाती वाली जेब में रख ली और सोने चला गया परन्तु पादरी ने अपनी पत्नी से कहा — "कल हमें इस इवान को यहाँ से भगा देना चाहिये क्योंकि यह हमें और हमारे जानवरों को मार ही डालेगा।"

जो कुछ पादरी ने अपनी पत्नी से कहा उसे इवान ने सुन लिया। वह सुबह जल्दी उठ कर पादरी के पास गया और उससे कहा — "मुझे सौ सिक्के दे दीजिये मैं चला जाऊँगा। पर अगर आप मुझे यह नहीं देंगे तो मैं तब तक बाँसुरी बजाता रहूँगा जब तक आप दोनों नाचते नाचते मर नहीं जायेंगे। फिर मैं आपकी जगह ले लूँगा और अपनी मरजी से रहूँगा।"

पादरी ने अपने कानों के पीछे खुजलाया, कुछ हिचकिचाया पर सोचा कि वही अच्छा रहेगा कि वह उसे उसका माँगा हुआ पैसा उसे दे दे और उससे छुटकारा पा सके। सो उसने अपनी थैली से सौ सिक्के निकाले और इवान को दे दिये।

तब इवान ने उनके लिये तब तक एक विदाई गीत बजाया जब तक वे हाँफते हुए जमीन पर नीचे नहीं गिर पड़े।

फिर उसने अपनी बाँसुरी अपनी छाती वाली जेब में रखी और वहाँ से दुनियाँ में घूमने चला गया।

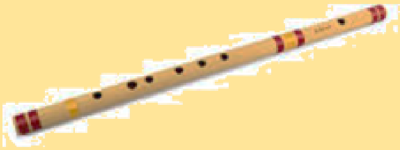

24 जादुई अंडा[56]

एक बार की बात है कि लवा चिड़ा[57] सारी चिड़ियों का ज़ार था। उसने एक चुहिया को शादी कर के अपनी ज़ारित्सा[58] बना लिया था। दोनों के पास अपना एक बहुत बड़ा खेत था जिसमें उन्होंने गेहूँ बोया। जब गेहूँ बड़ा हो गया तो दोनों ने उसे आपस में बाँट लिया। बाँटने के बाद उन्होंने देखा कि एक गेहूँ का दाना ज़्यादा था।

चुहिया बोली — "यह दाना मुझे दे दो।"

पर लवा बोला "नहीं यह दाना मेरा है।"

अब क्या किया जाये। वे इस मामले में किसी की सहायता लेना चाहते थे पर उनका कोई माता पिता या सम्बन्धी नहीं था जिससे वे सहायता ले सकते।

आखिर चुहिया बोली — "पर कम से कम तुम मुझे इसे पहली बार तो कुतरने दो।"

लवा ज़ार तैयार हो गया पर चुहिया ने उस दाने में अपने दाँत गड़ाये और उसे अपने बिल में ले गयी और वहाँ ले जा कर उसे सारा खा लिया। इस पर लवा बहुत गुस्सा हो गया। उसने आसमान की सारी चिड़ियों को ज़ारित्सा चुहिया से लड़ने के लिये बुलाया तो

---

[56] The Magic Egg. (Tale No 24)
[57] Translated for the word "Lark"
[58] Tzaritsa means "The Wife of Tzar"

उधर ज़ारित्सा चुहिया ने सारे जानवरों को अपनी रक्षा के लिये बुला लिया। इस तरह दोनों में लड़ाई शुरू हो गयी।

जब भी कभी जानवर चिड़ियों से लड़ने जाते चिड़ियें उड़ कर पेड़ों पर बैठ जातीं और कुछ चिड़ियें हवा में उड़ कर जानवरों को जहाँ भी उनको मौका मिलता अपनी चोंचों से नोचतीं।

इस तरह से दोनों में सारा दिन लड़ाई होती रही। शाम को वे सब आराम करने के लिये लेट गये। ज़ारित्सा चुहिया ने अपने चारों तरफ अपनी सेना को देखा तो देखा कि चींटी तो इस लड़ाई में हिस्सा ही नहीं ले रही थी।

वह तुरन्त ही उठी और चींटी के पास गयी और उससे कहा कि वह शाम तक लड़ाई के मैदान में उपस्थित रहे। जब वह आयी तो उसने उससे कहा कि वह अपने सब सम्बन्धियों के साथ पेड़ पर चढ़े और पक्षियों के पंखों को कुतरे।

अगले दिन जब देखने लायक काफी रोशनी हो गयी तो ज़ारित्सा चुहिया बोली "उठो उठो मेरे योद्धाओं।" इस आवाज से चिड़ियें भी जाग गयीं। वे भी उड़ने के लिये उठीं पर यह क्या वे तो नीचे गिर गयीं और नीचे जानवरों ने उनको मार डाला। इस तरह से ज़ारित्सा चुहिया ज़ार से जीत गयी।

पर एक गरुड़ को लगा कि कहीं कुछ गलत था इसलिये उसने उड़ने की कोशिश नहीं की बल्कि वहीं पेड़ पर ही बैठा रहा। उसी

समय वहाँ एक शिकारी आया तो उसने एक गरुड़ को पेड़ पर बैठे देखा तो उसका निशाना साधा।

यह देख कर गरुड़ बहुत ही दीनता भरे शब्दों में रो कर बोला — "मेहरबानी कर के मुझे मत मारो मैं तुम्हारे बहुत काम आऊँगा।"

शिकारी ने उसके ऊपर दोबारा निशाना साधा पर गरुड़ ने दोबारा भी उससे विनती की कि "तुम मुझे नीचे उतार लो और अपने पास रख लो। तुम देखोगे कि यह तुम्हारे फायदे के लिये ही होगा।"

पर शिकारी ने तीसरी बार उसके ऊपर निशाना साधा तो गरुड़ ने उससे और अधिक दीनता भरे शब्दों में विनती की — "नहीं नहीं। मुझे मत मारो। तुम फायदे में रहोगे। यह केवल तुम्हारे फायदे के लिये ही होगा।"

शिकारी ने उसकी बात पर विश्वास कर लिया। वह पेड़ पर चढ़ा और चिड़िया को नीचे उतार लाया। वह उसे घर ले गया तो गरुड़ ने कहा — "मुझे एक झोंपड़ी में रख दो और तब तक मुझे माँस खिलाते रहो जब तक मेरे नये पंख नहीं उग आते।"

शिकारी के पास दो गायें थीं और एक बैल था। उसने तुरन्त ही उनमें से एक गाय गरुड़ के लिये काट दी। गरुड़ उस गाय को एक साल तक खाता रहा। उसके बाद उसने शिकारी से कहा — "अब तुम मुझे जाने दो ताकि मैं उड़ सकूँ। मैं देख पा रहा हूँ कि

मेरे पंख अब उग आये हैं।" यह सुन कर शिकारी ने उसे उड़ने के लिये छोड़ दिया।

गरुड़ उड़ा और आधे दिन तक उड़ता रहा और फिर शिकारी के पास वापस आ गया और बोला — "मुझे लग रहा है कि मेरे अन्दर अभी काफी ताकत नहीं है। मेरे लिये एक गाय और काट दो।" शिकारी ने उसकी बात मानी और उसके लिये एक और गाय काट दी। गरुड़ उस गाय पर एक साल तक और रहा।

गरुड़ फिर उड़ा। अबकी बार वह सारा दिन के लिये उड़ा पर जब वापस लौटा तो उसने फिर कहा — "मैं पहले से काफी अधिक ताकतवर हो गया हूँ पर अभी तक मुझे पूरी ताकत नहीं आयी है मेरे लिये यह बचा हुआ बैल भी काट दो।"

शिकारी ने सोचा "अब मैं क्या करूँ? क्या मैं इसके लिये अपना बैल काटूँ या फिर नहीं काटूँ?" आखिर उसने सोचा कि "मैं पहले से ही इसके लिये इससे ज़्यादा त्याग कर चुका हूँ सो मैं इसे भी काट ही देता हूँ।" सो उसने अपना बैल भी गरुड़ के लिये काट दिया। गरुड़ फिर उसके ऊपर एक साल और रहा।

एक साल के बाद वह फिर से बाहर उड़ गया और अबकी बार वह बादलों तक उड़ा। उसके बाद वह नीचे उतरा और शिकारी से कहा — "ओ शिकारी तुम्हें बहुत बहुत धन्यवाद कि तुमने बचा लिया। अब तुम यहाँ आओ और मेरे ऊपर बैठ जाओ।"

शिकारी ने पूछा — "अगर मेरे साथ कुछ बुरा हो गया तो।"

गरुड़ चिल्लाया — "मैं कहता हूँ बैठो मेरे ऊपर।"

सो शिकारी गरुड़ के ऊपर बैठ गया।

गरुड़ उसे ले कर इतना ऊँचा उड़ गया जितने बादल और फिर उसे नीचे गिरा दिया। शिकारी तो नीचे गिरने लगा पर गरुड़ ने उसे नीचे जमीन पर नहीं गिरने दिया बल्कि तेज़ी से उसके नीचे आया और उसे सँभाल लिया।

फिर उसने उससे पूछा — "तुम्हें कैसा लग रहा है?"

शिकारी बोला — "मुझे तो ऐसा लग रहा है जैसे मेरे अन्दर जान ही न रह गयी हो।"

तब गरुड़ बोला — "बिल्कुल ऐसा ही मुझे तब महसूस हुआ था जब तुमने मेरी तरफ पहली बार अपना निशाना साधा था। अब तुम दोबारा मेरी पीठ पर बैठ जाओ।"

शिकारी दोबारा उसकी पीठ पर बैठना नहीं चाहता था परन्तु वह कर क्या सकता था। उसको बैठना ही पड़ा। गरुड़ उसे ले कर फिर से बादलों की ऊँचाई तक ले उड़ा और फिर उसे नीचे गिरा दिया।

वह फिर नीचे गिरने लगा और जब तक गिरा जब तक कि वह जमीन से दो फ़ैथम दूर नहीं रह गया कि गरुड़ फिर से उसके नीचे उड़ा और उसे सँभाल लिया।

गरुड़ ने फिर से पूछा — "अबकी बार तुम्हें कैसा लगा?"

शिकारी बोला — "अबकी बार मुझे ऐसा लगा जैसे मेरे शरीर की सारी हड्डियाँ टूट गयी हों।"

गरुड़ बोला — "ऐसा मुझे तब लगा था जब तुमने मेरी तरफ दूसरी बार निशाना साधा था। आओ अब फिर मेरे ऊपर बैठो।"

शिकारी फिर उसके ऊपर बैठ गया। गरुड़ फिर से शिकारी को ले कर उड़ चला बादलों के पार। वहाँ से उसने उसे फिर से झटका दिया और गिरा दिया। अबकी बार उसे उसने जमीन तक गिरा दिया बस वह केवल एक हाथ की दूरी तक रह गया कि वह फिर से उसके नीचे आया और उसे सँभाल लिया।

गरुड़ ने उससे पूछा — "अब तुम्हें कैसा लग रहा है?"

शिकारी बोला — "अबकी बार मुझे ऐसा लगा जैसे मैं इस दुनियाँ का हूँ ही नहीं।"

गरुड़ बोला — "ऐसा मुझे तब लगा था जब तुमने मेरी तरफ तीसरी बार निशाना साधा था। पर अब तुम दोषमुक्त हो गये हो। अब हम दोस्त हैं। अब मैं तुम्हारा कर्जदार बिल्कुल भी नहीं हूँ। अब तुम फिर से मेरी पीठ पर बैठ जाओ और मैं तुम्हें अपने मालिक के पास ले चलता हूँ।"

वे फिर उड़ चले। वे उड़ते रहे उड़ते रहे। उड़ कर वे गरुड़ के चाचा के पास आये। गरुड़ ने शिकारी से कहा — "तुम मेरे घर जाओ और जब वे तुमसे पूछें कि "क्या तुमने हमारे बच्चे को कहीं देखा है?"

तो उनसे कहना "मुझे जादुई अंडा दो और मैं तुम्हारे बच्चे को तुम्हारे सामने ला देता हूँ।"

सो वह घर के अन्दर चला गया। वहाँ उन्होंने उससे पूछा — "क्या तुमने हमारे बच्चे को अपने कानों से सुना है या अपनी आँखों से देखा है और तुम यहाँ अपनी इच्छा से आये हो या फिर जबरदस्ती भेजे गये हो?"

शिकारी बोला — "मैं यहाँ अपनी इच्छा से आया हूँ।"

उन्होंने पूछा — "क्या तुमने हमारे बच्चे की खुशबू सूँघी है? क्योंकि तीन साल बीत चुके हैं पर न तो हमने उसे देखा है न उसकी आवाज सुनी है।"

शिकारी बोला — "आप मुझे जादुई अंडा दे दीजिये मैं उसे आपके सामने ले आऊँगा।"

वे बोले — "अच्छा है कि हम उसे देखें ही नहीं बजाय इसके कि हम तुम्हें जादुई अंडा दें।"

शिकारी वापस गरुड़ के पास गया और उसे जा कर वह बताया जो उन्होंने कहा था "अच्छा है कि हम उसे देखें ही नहीं बजाय इसके कि हम तुम्हें जादुई अंडा दें।"

गरुड़ बोला — "चलो फिर और आगे चलते हैं।"

वे फिर और आगे बढ़े तो वे गरुड़ के भाई के घर आये। शिकारी ने वहाँ भी वही कहा जो उसने गरुड़ के चाचा से कहा था पर यहाँ भी उसे अंडा नहीं मिला।

तब वे गरुड़ के पिता के पास पहुँचे। गरुड़ ने शिकारी से कहा — "तुम मेरी झोंपड़ी तक जाओ और अगर वे मेरे बारे में पूछें तो उनसे कहना कि "तुमने मुझे देखा है और तुम मुझे उनके सामने ले आओगे।"

शिकारी गरुड़ की झोंपड़ी में गया तो उन्होंने उससे कहा — "ओ ज़ारेविच। हम अपने कानों से सुन सकते हैं और अपनी आँखों से देख सकते हैं पर क्या तुम अपनी इच्छा से यहाँ आये हो या फिर किसी दूसरे की इच्छा से।"

शिकारी बोला — "मैं यहाँ अपनी इच्छा से आया हूँ।"

उन्होंने पूछा — "क्या तुमने हमारे बेटे को देखा है। चार साल से हमें उसकी कोई खबर नहीं है। वह लड़ाई के लिये चला गया था हो सकता है कि वह वहाँ मर गया हो।"

शिकारी बोला — "मैंने उसे देखा है। अगर आप मुझे जादुई अंडा दे दें मैं उसे आपके सामने ले आऊँगा।"

गरुड़ के पिता ने कहा — "वह तुम्हारे लिये कोई क्या भला काम करेगा। हम तुम्हें "लकी पैनी" देते हैं।"

शिकारी बोला — "नहीं मुझे लकी पैनी नहीं चाहिये मुझे तो केवल जादुई अंडा ही चाहिये।"

वह बोला — "तब तुम यहाँ आओ। तुम्हें जादुई अंडा मिल जायेगा।"

सो वह झोंपड़ी के अन्दर गया। गरुड़ के पिता ने बहुत खुशियाँ मनायीं और उसे अंडा दे कर कहा — "ध्यान रखना इसे सड़क पर कहीं मत तोड़ना। जब तुम घर पहुँच जाओ इसके चारों तरफ एक मजबूत बाड़ बनाना और यह तुम्हारा भला करेगा।"

अंडा ले कर वह घर चला गया।

वह चलता गया चलता गया। चलते चलते उसे प्यास लग आयी सो जो उसे सबसे पहली नदी मिली वह वहीं रुक गया। जैसे ही वह पानी पीने के लिये नीचे झुका तो वह लड़खड़ा गया और उसका वह जादुई अंडा टूट गया।

उसने देखा कि उसमें से एक बैल निकला और लुढ़कने लगा। वह बैल के पीछे भागा। जब वह उसकी एक तरफ के पास आता तो उसकी दूसरी तरफ उससे दूर पहुँच जाती। यह देख कर वह चिल्लाया — "मुझे लगता है कि मैं इसके साथ कुछ नहीं कर सकता।"

उसके कहने के साथ ही वहाँ एक मादा ड्रैगन प्रगट हुई और शिकारी से बोली — "ओ आदमी। तुम मुझे क्या दोगे अगर मैं इस बैल को इस अंडे में फिर से घुसा दूँ तो?"

शिकारी बोला — "मैं तुम्हें क्या दे सकता हूँ?"

मादा ड्रैगन बोली — "जो कुछ तुम्हारी इच्छा और बुद्धि के बिना तुम्हारे पास तुम्हारे घर में है तुम मुझे वह दे देना।"

शिकारी बोला — "ठीक है दे दूँगा।"

मादा ड्रैगन बैल के पीछे बड़ी तेज़ी से भागी और उसे अंडे के अन्दर घुसा दिया उसे ठीक किया और शिकारी के हाथ में दे दिया। शिकारी अंडा ले कर चला। जब वह घर पहुँचा तो उसने देखा कि उसके एक बेटा हुआ है।

उसके बेटे ने पूछा — "पिता जी आपको मुझे उस मादा ड्रैगन को क्यों देना है? पर कोई बात नहीं आप चिन्ता न करें। मैं उसके पास भी रह लूँगा।"

पिता कुछ देर के लिये तो बहुत दुखी हुआ पर वह कर ही क्या सकता था। शिकारी के इस बेटे का नाम इवान था। इवान तुरन्त ही मादा ड्रैगन के पास चला गया। मादा ड्रैगन ने उससे कहा — "तुम मेरे घर जाओ और वहाँ से मेरे लिये तीन काम कर के लाओ। अगर तुमने ये काम नहीं किये तो मैं तुम्हें मार दूँगी।"

मादा ड्रैगन के घर के चारों तरफ इतना बड़ा घास का मैदान था कि जहाँ तक नजर जाती थी वह मैदान ही मैदान नजर आता था।

मादा ड्रैगन ने उससे कहा कि एक रात में वह उस मैदान की जंगली घास निकाल दे और उसमें गेहूँ बो दे काट दे और उसे भंडारघर में सँभाल कर रख दे। इसके अलावा उसी गेहूँ की उसके लिये रोटी बेक कर दे। वह रोटी उसे उसकी नाश्ते की मेज पर सुबह सुबह ही चाहिये।

इवान ने रेलिंग पर से झाँका तो देख कर अपने दिल में बहुत दुखी हुआ। इत्तफाक से उसके पास ही एक छोटा सा घर था जिसमें

मादा ड्रैगन की एक बहुत सुन्दर बेटी रहती थी। सो जब वह लड़का वहाँ आया तो उस मैदान को देख कर रो पड़ा

उसको रोते देख कर उस लड़की ने उससे पूछा — "तुम क्यों रोते हो?"

लड़का बोला — "मैं कैसे न रोऊँ। मादा ड्रैगन ने मुझसे यह करने के लिये कहा है और मैं यह कभी नहीं कर सकता। इसके अलावा उसने मुझसे यह सब केवल एक रात में करने के लिये कहा है नहीं तो वह मुझे मार डालेगी।"

मादा ड्रैगन की बेटी ने पूछा — "और वह क्या है जो उसने तुमसे करने के लिये कहा है?" तब लड़के ने उसे सब बताया।

लड़की बोली — "हर पेड़ पर कोई फल थोड़े ही लगते हैं। तुम मेरे साथ शादी करने का वायदा करो तो मैं वह सब कर दूँगी जो उसने तुमसे करने के लिये कहा है।"

इवान ने वायदा कर दिया तो वह बोली — "तुम जाओ और आराम से सोओ पर ध्यान रखना कि सुबह को तुम जल्दी उठ कर उसके लिये उसकी रोटी ले जाना।"

इतना कह कर वह मैदान में गयी और एक सीटी बजने से भी पहले उस मैदान की जंगली घास को साफ कर दिया जोत दिया और उसमें गेहूँ बो दिया। सुबह तक उसने गेहूँ काट दिया और उसकी गर्म गर्म रोटी बेक कर दी। वह उसे इवान के पास ले गयी ताकि वह उसे उसकी माँ की नाश्ते की मेज पर रख सके।

सुबह को मादा ड्रैगन उठी और दरवाजे पर आयी तो मैदान को देख कर आश्चर्यचकित रह गयी। वह तो सारा उजड़ा पड़ा था क्योंकि उसमें से सारा गेहूँ काट लिया गया था।

उसने इवान से कहा — "तुमने यह काम तो कर दिया पर अब देखते हैं कि तुम मेरा दूसरा काम भी कर सकते हो या नहीं।"

तब उसने उसे अपना दूसरा काम बताया — "वह जो सामने तुम्हें पहाड़ दिखायी दे रहा है उस पहाड़ को खोद दो और उस जगह पर नीपर[59] नदी को बहने दो।

फिर वहाँ एक भंडारघर बनाओ जिसमें उस गेहूँ को भरो जो तुमने कल काटा था। फिर उस गेहूँ को उन्हें बेच दो जो उस नदी में व्यापार करने के लिये आयें। यह सब काम तब तक हो जाना चाहिये जब तक मैं सुबह उठूँ।"

इवान फिर से बाड़ के पास गया और रोने लगा। लड़की ने उसे रोते देखा तो उससे पूछा — "आज तुम क्यों रोते हो?"

इवान ने उसे सब बता दिया जो कुछ मादा ड्रैगन ने उससे करने के लिये कहा था। वह बोली — "बहुत सारी झाड़ियाँ हैं पर फल कहाँ हैं। तुम अभी जाओ और आराम से सोओ। मैं तुम्हारे लिये सब कुछ कर दूँगी।"

इसके बाद उसने एक सीटी बजायी तो वह पहाड़ सपाट हो गया और वहाँ नीपर नदी बहने लगी। उसके किनारे पर एक

---

[59] Knieper River

भंडारघर बन गया जिसमें कल वाला गेहूँ भी इकट्ठा हो गया। तब वह सुबह को वह इवान के पास आयी और उससे कहा कि वह अब वहाँ जा कर गेंहूँ उन सौदागरों को बेच सकता था जो उस रास्ते से जा रहे थे।

जब सुबह को मादा ड्रैगन उठी तो देख कर फिर आश्चर्य में पड़ गयी कि उसका बताया सारा काम हो चुका था। उसके बाद उसने उसे तीसरा काम बताया — "इस रात तुम्हें सुनहरा खरगोश पकड़ना है और उसे मेरे पास सुबह तक ले कर आना है।"

वह फिर से बाड़ के पास गया और रोने लगा तो लड़की ने उससे फिर पूछा — "आज क्या बात है आज क्यों रो रहे हो?"

इवान ने उसे बताया कि अब इस रात में मादा ड्रैगन ने उसे सुनहरा खरगोश पकड़ने के लिये कहा है जो मुझे उसे सुबह देना है।

मादा ड्रैगन की बेटी बोली — "ओहो। फल पक रहे हैं। केवल मेरे पिता ही जानते है कि सुनहरा खरगोश कैसे पकड़ा जा सकता है। फिर भी मैं उस चट्टानी जगह जाऊँगी जिसे मैं जानती हूँ हो सकता है कि हम उसे पकड़ पायें।"

सो वे दोनों एक साथ उस जगह गये। लड़की ने इवान से कहा कि वह खरगोश के बिल के पास खड़ा हो जाये और वह खुद जा कर उसे बिल से बाहर निकालने की कोशिश करती है। जैसे ही वह बाहर निकले वह उसे पकड़ ले। पर ध्यान रहे कि जो कुछ भी बिल

के बाहर निकले वह उसे पकड़ ले क्योंकि वह सुनहरा खरगोश ही होगा।

सो वह बिल के पास गयी और वहाँ जा कर उसे पीटने लगी। तुरन्त ही उसमें से एक साँप निकल कर भागा तो इवान ने उसे जाने दिया। तभी लड़की बिल में से निकल कर बाहर आयी और उससे पूछा — "क्या कोई चीज़ बाहर नहीं निकली?"

इवान बोला — "नहीं कुछ भी तो नहीं सिवाय एक साँप के। और मैं उसे पकड़ने के लिये डर गया था कि कहीं वह मुझे काट न ले इसलिये मैंने उसे जाने दिया।"

लड़की चिल्लायी — "अरे वही तो सुनहरा खरगोश था। देखो। अब मैं फिर जाती हूँ और अगर कोई तुमसे आ कर यह कहे कि यहाँ कोई सुनहरा खरगोश नहीं रहता तो तुम उसका विश्वास बिल्कुल मत करना और उसे कस कर पकड़ लेना।"

सो वह बिल में फिर से घुस गयी और वहाँ खरगोश के लिये पीटना शुरू किया तो उसमें से एक बुढ़िया निकल कर आयी और इवान से पूछा — "तुम यहाँ क्यों घूम रहे हो?"

इवान बोला — "मैं यहाँ सुनहरा खरगोश पकड़ने आया हूँ।"

वह बोली — "पर सुनहरा खरगोश तो यहाँ नहीं है। यह तो साँप का बिल है। वह यहाँ रहता है।" यह कहने के बाद वह वहाँ से चली गयी।

उसी समय लड़की फिर से निकली और उससे पूछा — “क्या हुआ क्या अभी भी सुनहरा खरगोश नहीं निकला?”

इवान बोला — “नहीं खरगोश तो नहीं निकला हॉ एक बुढ़िया निकली थी जिसने मुझसे पूछा कि मैं यहॉ क्या ढूँढ रहा था। मैंने उससे कहा कि मैं सुनहरा खरगोश ढूँढ रहा था। पर उसने कहा कि यहॉ कोई सुनहरा खरगोश नहीं रहता तो मैंने उसे जाने दिया।”

लड़की बोली — “उफ़ तुमने उसे जाने ही क्यों दिया उसे पकड़ा क्यों नहीं। वह खुद ही सुनहरा खरगोश थी। अब तुम सुनहरा खरगोश कभी नहीं पकड़ पाओगे जब तक कि मैं खुद ही सुनहरा खरगोश न बन जाऊँ और तुम मुझे ले जा कर मेरी मॉ के हाथ में रख दो और चले जाओ क्योंकि अगर उन्हें पता चल गया तो वह तुम्हारे काट पीट कर टुकड़े टुकड़े कर देगी।”

सो लड़की ने अपने आपको सुनहरे खरगोश में बदला और इवान उसे ले कर लड़की की मॉ के पास पहुँचा उसे उसकी मेज पर रखा और बोला — “लीजिये यह आपका सुनहरा खरगोश है। अब मुझे जाने दीजिये।”

मादा ड्रैगन बोली — “ठीक है। तुम जा सकते हो।”

यह सुन कर वह वहॉ से भाग लिया और इतनी तेज़ भागा जितनी तेज़ वह भाग सकता था। बहुत जल्दी ही उसको पता चल गया कि वह सुनहरा खरगोश नहीं था बल्कि उसकी अपनी बेटी थी।

अब वह उस लड़के के पीछे भाग ली ताकि वह उन दोनों को मार सके क्योंकि इस बीच उसकी बेटी भी इवान से मिलने के लिये वहाँ से भाग निकली थी।

पर क्योंकि मादा ड्रैगन खुद नहीं भाग सकती थी सो उसने अपने पति को बुलाया और वह उनके पीछे भाग गया। इवान और लड़की को भी पता चल गया कि लड़की का पिता उनके पीछे आ रहा है क्योंकि उनके पास की जमीन उसके कदमों के जोर से काँप रही थी।

तब मादा ड्रैगन की बेटी ने इवान से कहा — "मैं अपने पिता को अपने पीछे भागता सुन सकती हूँ। मैं यहाँ गेहूँ का खेत बन कर खड़ी हो जाती हूँ और तुम एक बूढ़े का रूप ले कर मेरी रखवाली करो।

अगर वह तुमसे पूछे कि क्या तुमने किसी लड़के और लड़की को यहाँ से भागते देखा है तो उससे कहना कि "हाँ जब मैं इस खेत में गेहूँ बो रहा था तब मैंने उन्हें इस रास्ते से जाते देखा है।"

कुछ देर बाद ही मादा ड्रैगन का पति वहाँ आ गया और उस पहरेदार से पूछा कि "क्या कोई लड़का और लड़की यहाँ से गुजरे हैं?"

बूढ़ा बोला — "हाँ वे गये तो हैं।"

मादा ड्रैगन के पति ने उससे फिर पूछा — "क्या काफी समय पहले?"

बूढ़ा बोला — "यह जब की बात है जब मैं इसमें गेहूँ बो रहा था।"

ड्रैगन ने सोचा "यह गेहूँ तो अभी कटने को तैयार है तो वे लोग कल तो नहीं गये होंगे।" यह सोच कर वह वापस चला गया।

तब मादा ड्रैगन ने अपने आपको लड़की में बदला और बूढ़े को इवान में बदला और वे वहाँ से फिर चल दिये। जब ड्रैगन घर लौटा तो मादा ड्रैगन ने उससे पूछा — "अरे क्या तुमने उन्हें पकड़ा नहीं या फिर वे सड़क पर मिले नहीं।"

वह बोला — "नहीं मुझे वे नहीं मिले। हालाँकि रास्ते में मुझे एक गेहूँ का खेत मिला था और एक बूढ़ा उसकी रखवाली कर रहा था। मैंने उस बूढ़े से पूछा था कि उसने किसी लड़के और लड़की को वहाँ से जाते देखा है तो उसने जवाब दिया कि जब वह गेहूँ बो रहा था तब उसने उन्हें जाते देखा था।

पर गेहूँ तो बिल्कुल पका हुआ था इसलिये मुझे लगा कि यह सब तो काफी पहले हुआ होगा सो मैं लौट आया।"

मादा ड्रैगन चिल्लायी — "तुमने उस बूढ़े को क्यों नहीं चीर दिया। और तुमने गेहूँ के टुकड़े टुकड़े क्यों नहीं कर डाले। वे वही लोग थे। अब जाओ और अबकी बार ध्यान रखना कि तुम उन्हें चीर कर ही आओ।"

सो ड्रैगन फिर से उनके पीछे चल दिया। उन्होंने अबकी बार भी उसके आने की आवाज दूर से पहचान ली क्योंकि उनके नीचे की जमीन हिल रही थी।

लड़की इवान से बोली — “वह फिर हमारे पीछे आ रहा है। मैं उसे सुन सकती हूँ। मैं एक मोनैस्टरी में बदल जाती हूँ – एक इतनी पुरानी मोनैस्टरी जो बस गिरने गिरने को हो रही हो और तुम एक बूढ़े काले साधु का रूप रख लो।

अगर वह तुमसे पूछे कि क्या तुमने किसी लड़के और लड़की को यहाँ से भागते देखा है तो उससे कहना कि “हाँ मैंने उन्हें देखा तो है पर जब देखा था जब यह मोनैस्टरी बन रही थी। तब मैंने उन्हें इस रास्ते से जाते देखा है।”

कुछ देर बाद ही मादा ड्रैगन का पति वहाँ आ गया और उस पहरेदार से पूछा कि “क्या कोई लड़का और लड़की यहाँ से गुजरे हैं?”

बूढ़ा बोला — “हाँ वे गये तो हैं।”

मादा ड्रैगन के पति ने उससे फिर पूछा — “क्या काफी समय पहले?”

बूढ़ा बोला — “यह जब की बात है जब होली फादर्स यह मोनैस्टरी बनवा रहे थे। तब मैंने उन्हें इस रास्ते से जाते देखा है।”

ड्रैगन ने सोचा "यह मोनैस्टरी कम से कम सौ साल पुरानी तो होगी तो इसका मतलब है कि इन्होंने उन्हें कल जाते नहीं देखा।" और वह घर वापस चला गया।

जब ड्रैगन घर लौटा तो मादा ड्रैगन ने उससे पूछा — "अरे क्या तुमने उन्हें पकड़ा नहीं या फिर वे सड़क पर मिले नहीं।"

वह बोला — "नहीं मुझे वे नहीं मिले। हालाँकि रास्ते में मुझे एक बहुत पुरानी मोनैस्टरी मिली थी और उसके दरवाजे पर एक बूढ़ा काला साधु उसकी रखवाली कर रहा था।

मैंने उस बूढ़े से पूछा था कि उसने किसी लड़के और लड़की को वहाँ से जाते देखा है तो उसने जवाब दिया कि जब वह मोनैस्टरी बनवायी जा रही थी तब उसने उन्हें जाते देखा था।

पर क्योंकि मोनैस्टरी तो बहुत पुरानी थी, हो सकता है सौ साल पुरानी, इसलिये मुझे लगा कि यह सब तो काफी पहले हुआ होगा कल नहीं सो मैं लौट आया।"

मादा ड्रैगन चिल्लायी — "तुमने उस बूढ़े को क्यों नहीं चीर दिया। और तुमने उस मोनैस्टरी को क्यों नहीं गिरा दिया। वे वही लोग थे। उनके पीछे अब मैं जाती हूँ। तुम किसी काम के नहीं।"

सो अबकी बार वह खुद उनके पीछे भागी। इसके आने का भी उन्हें पता चल गया क्योंकि उनके नीचे धरती काँप रही थी। लड़की ने इवान से कहा — "मुझे डर है कि बस अब सब खत्म। क्योंकि

अबकी बार मेरी माँ खुद आ रही है। पर देखो। अबकी बार तुम नदी बन जाओ और मैं मछली बन जाती हूँ।"

जैसे ही उसकी माँ आयी तो उसने मछली से पूछा — "सो तू मुझसे भागने चली है।"

तुरन्त ही उसने अपने आपको एक पाइक मछली में बदल लिया और छोटी मछली का पीछा करना शुरू कर दिया पर जब भी वह उसके पास पहुँचती वह छोटी मछली अपने काँटे वाले पंख उसके सामने कर देती इससे वह उसे पकड़ ही नहीं पाती।

सो वह उसे पकड़ने के लिये उसका पीछा करती रही करती रही पर फिर यह देख कर कि वह उसे नहीं पकड़ सकती उसने नदी को पीने की कोशिश की। उसने इतना पानी पिया इतना पानी पिया कि वह खुद ही फट गयी।

तब उस लड़की ने जो मछली बन गयी थी इवान से कहा जो नदी बन गया था — "अब क्योंकि हम ज़िन्दा हैं और मरे नहीं हैं तो अब तुम अपने पिता के घर जाओ और जा कर उनसे मिलो उन्हें चूमो पर ध्यान रखना कि अपने चाचा की लड़की को मत चूमना। क्योंकि अगर तुम उसे चूमोगे तो मुझे भूल जाओगे और मैं "कहीं नहीं" जगह चली जाऊँगी।"

सो वह घर चला गया। वहाँ पहुँच कर उसने सबको नमस्ते की तो उसने सोचा कि "जिस तरह से मैंने और सबको नमस्ते की उस

तरीके से मैं अपने चाचा की लड़की से क्यों नहीं मिल सकता। अगर मैं उससे नहीं मिलूँगा तो मेरे घर वाले मुझे अधार्मिक समझेंगे।"

सो उसने उसे भी चूम लिया और लो उसको चूमते ही वह मादा ड्रैगन की बेटी को भूल गया।

वह वहाँ छह महीने रहा फिर उसे लगा कि अब उसे शादी कर लेनी चाहिये। सो उन लोगों ने उसके लिये एक सुन्दर सी लड़की देखी और उसके साथ उसकी शादी तय कर दी।

इवान ने भी उसे स्वीकार कर लिया और उस लड़की को भूल गया जिसने उसे मादा ड्रैगन से बचाया था हालाँकि वह खुद भी मादा ड्रैगन की बेटी ही थी।

शादी से पहले दिन की शाम को कोई लड़की सड़कों पर "शिश्की"[60] चिल्लाती हुई पायी गयी। उन लोगों ने उस नौजवान लड़की को वहाँ से चले जाने के लिये कहा। या यह पूछा कि "यह कौन है?" तो कोई उसे नहीं जानता था।

पर वह लड़की बोलती ही नहीं थी बल्कि वह और ज़्यादा केक का आटा बनाती रही और उनसे नर फाख्ता और मादा फाख्ता बनाती रही और उन्हें जमीन पर रखती रही। जमीन पर रखते ही वे ज़िन्दा हो जाती थीं।

मादा फाख्ता ने नर फाख्ता से कहा — "क्या तुम भूल गये कि किस तरह से मैंने तुम्हारे लिये खेत साफ किया किस तरह से गेहूँ

[60] Shishki = means "Wedding Cakes"

बोया और फिर कैसे तुमने मादा ड्रैगन के लिये उसकी रोटी बनायी?"

नर फाख्ता बोला – "भूल गया भूल गया।"

मादा फाख्ता फिर बोली – "क्या तुम भूल गये कि किस तरह मैं तुम्हारे लिये पहाड़ खोदा कैसे नीपर नदी वहाँ से बहायी फिर कैसे वहाँ एक भंडारघर बनाया ताकि व्यापारी लोग वहाँ आ कर तुम्हारा गेहूँ खरीद सकें?"

पर नर फाख्ता ने फिर वही जवाब दिया – "भूल गया भूल गया।"

मादा फाख्ता फिर बोली – "क्या तुम भूल गये कि हम दोनों कैसे सुनहरा खरगोश ढूँढने एक साथ गये थे? क्या तुम मुझे बिल्कुल ही भूल गये?"

पर नर फाख्ता ने फिर वही जवाब दिया – "भूल गया भूल गया।"

तब इवान ने सोचा कि "यह लड़की कौन है जो फाख्ताऐं बना रही है।" फिर उसने उसे अपनी बाँहों में ले लिया और उसे अपनी पत्नी बना लिया। उसके बाद वे हमेशा खुशी खुशी रहे।

25 इकतालीसवें भाई की कहानी[61]

एक बार की बात है कि एक बूढ़ा था जिसके इकतालीस बेटे थे। जब यह बूढ़ा मरने लगा तो जो कुछ उसके पास था वह सब उसने अपने बेटों में बाँट दिया। उसके पास चालीस घोड़े थे और एक घोड़े का बच्चा था। तो चालीस घोड़े तो बूढ़े ने अपने चालीस बड़े बेटों को दे दिये और बच्चा घोड़ा उसने अपने सबसे छोटे बेटे को दे दिया।

जब उनका पिता मर गया तो भाइयों ने कहा "चलो हम फ्राईडे[62] के पास चलते हैं और शादी कर के आते हैं।"

सबसे बड़ा भाई बोला — "नहीं फ्राईडे के तो केवल चालीस ही बेटियाँ हैं तो हममें से एक बिना पत्नी के ही रह जायेगा।"

दूसरा भाई बोला — "तो चलो वैडनैस्डे[63] के पास चलते हैं। वैडनैस्डे के इकतालीस बेटियाँ हैं सो हम सब उसकी इकतालीस बेटियों से शादी कर लेंगे।"

वे सब वैडनैस्डे के घर चले गये और हर एक ने अपनी अपनी पत्नी चुन ली। सबसे बड़े भाई ने सबसे बड़ी बेटी चुन ली और सबसे छोटे भाई ने सबसे छोटी। बाकी सबने भी अपने अपने लिये

---

[61] The Story of the Forty-first Brother. (Tale No 25)

[62] Friday – the name of a person

[63] Wednesday – the name of a person

लड़कियाँ चुन लीं। सबसे छोटे भाई ने कहा कि वह तो उस लड़की को लेगा जो कोने में रूमाल लिये स्टोव के ऊपर बैठी हुई थी।

और फिर उन्होंने इस मौके को मनाने के लिये खूब शराब पी। उसके बाद इकतालीस दुलहे अपनी अपनी इकतालीस दुलहिनों को ले कर सोने गये। पर सबसे छोटे भाई ने सोचा कि वह अपना घोड़े का बच्चा अन्दर ले कर आयेगा सो वह उसे घर के अन्दर ले आया और उसे भी वहीं सुला लिया।

उसकी पत्नी सोते में भी अपना रूमाल लिये हुए थी। पर उसके दुलहे को उसका वह रूमाल बहुत अच्छा लगा तो उसने उससे उसे माँगा। बहुत विनती करने पर वह उसे देना ही पड़ा।

अब वैडनैस्डे ने यह सोचा कि अब सब सो गये होंगे तो वह अपनी तलवार तेज़ करने के लिये बाहर आँगन में गया। तो घोड़े का बच्चा चिल्लाया — "ओ मालिक। यहाँ आओ यहाँ आओ।"

वह बाहर गया तो उसने मालिक से कहा कि वह इकतालीस दुलहों के रात के सोने के कपड़े उतार ले और उन्हें इकतालीस सोती हुई दुलहिनों को पहना दे क्योंकि बहुत बड़ी मुसीबत आने वाली है। उसने वैसा ही किया।

जब वैडनैस्डे ने अपनी तलवार तेज़ कर ली तो उसने दुलहों की सोने वाली पोशाकों के खड़े खड़े कौलरों को महसूस करना शुरू किया और तुरन्त ही उन कौलरों के ऊपर की चालीस गर्दनें काट दीं।

उन सबको उसने इकट्ठा किया और वहाँ से ले गया फिर वह जा कर सो गया। उसे यह पता ही नहीं चला कि वह दुलहों की बजाय अपनी ही बेटियों के सिर काट लाया था।

घोड़े के बच्चे ने अपने मालिक से कहा — "ओ मेरे छोटे मालिक। अब आप सब दुलहों को उठायें और यहाँ से भाग चलें।"

सो सबसे छोटे बेटे ने अपने सब भाइयों को उठाया और उन्हें वहाँ से जाने के लिये कहा। उनके पीछे पीछे उसने अपने घोड़े के बच्चे को भेजा और उसके पीछे वह खुद चल दिया।

वे चलते रहे चलते रहे। चलते चलते घोड़े के बच्चे ने कहा — "मालिक। ज़रा पीछे मुड़ कर देख लीजिये कि वैडनैस्डे कहीं आपका पीछा तो नहीं कर रहा।"

उसने पीछे मुड़ कर देखा तो देखा कि वैडनैस्डे तो उसका सचमुच में पीछा कर रहा था। उसने घोड़े के बच्चे से कहा — "अरे हाँ मेरे छोटे भाई। वैडनैस्डे तो हमारा पीछा कर रहा है।"

घोड़े का बच्चा बोला — "अपना रूमाल उसकी तरफ हिला दीजिये।" उसने ऐसा ही किया तो उन दोनों के बीच एक बहुत बड़ा समुद्र बन गया।

वे फिर से आगे बढ़ते गये। कुछ दूर चलने के बाद घोड़े के बच्चे ने अपने मालिक से फिर कहा — "मालिक। ज़रा पीछे मुड़ कर देख लीजिये कि वैडनैस्डे कहीं आपका पीछा तो नहीं कर रहा।"

उसने पीछे मुड़ कर देखा तो देखा कि वैडनैस्डे तो उसका सचमुच में पीछा कर रहा था। उसने घोड़े के बच्चे से कहा — "अरे हॉ मेरे छोटे भाई। वैडनैस्डे तो हमारा फिर से पीछा कर रहा है।"

घोड़े का बच्चा बोला — "अपना रूमाल अपनी बॉयी तरफ हिला दो।" उसने वैसा ही किया तो दोनों के बीच में एक बहुत बड़ा और घना जंगल पैदा हो गया – इतना घना कि उसमें कोई छोटी सी चुहिया भी नहीं गुजर सकती थी।

वे फिर से आगे बढ़ते गये कि थोड़ी देर बाद घोड़े के बच्चे ने अपने मालिक से फिर कहा — "मालिक। ज़रा पीछे मुड़ कर देख लीजिये कि वैडनैस्डे कहीं आपका पीछा तो नहीं कर रहा।"

उसने पीछे मुड़ कर देखा तो देखा कि वैडनैस्डे तो उसका सचमुच में पीछा कर रहा था। उसने घोड़े के बच्चे से कहा — "अरे हॉ मेरे छोटे भाई। वैडनैस्डे तो फिर से हमारे पीछे आ रहा है। और अब तो वह हमारे बहुत पीछे नहीं है।"

घोड़े का बच्चा बोला — "आप अपना रूमाल अपनी दॉयी तरफ हिला दीजिये।" उसने वैसा ही किया तो उन दोनों के बीच में एक बहुत ऊँचा और चिकना पहाड़ खड़ा हो गया।

वे फिर से आगे बढ़ते गये कि थोड़ी देर बाद घोड़े के बच्चे ने अपने मालिक से फिर कहा — "मालिक। ज़रा पीछे मुड़ कर फिर से देख लीजिये कि वैडनैस्डे कहीं आपका पीछा तो नहीं कर रहा।"

उसने पीछे मुड़ कर देखा तो देखा कि वैडनैस्डे अब उसका पीछा नहीं कर रहा था। उसने घोड़े के बच्चे से कहा — "नहीं मेरे छोटे भाई। वैडनैस्डे अब हमारे पीछे नहीं आ रहा।"

वे फिर चल दिये और जल्दी ही अपने घर के पास आ गये।

सबसे छोटे भाई ने कहा — "तुम लोग घर जाओ मैं अपने लिये दुलहिन खोजने जा रहा हूँ।" कह कर वह चल दिया। चलते चलते वह एक जगह आया जहाँ एक ज़ार चिड़िया[64] का पंख पड़ा हुआ था।

लड़का चिल्लाया — "देखो मुझे क्या मिला?"

घोड़े ने कहा — "इसे मत उठाना क्योंकि यह तुम्हारे अच्छाई के साथ साथ तुम्हारे लिये मुसीबत भी लायेगा।"

पर उसके मालिक ने कहा — "क्या मैं इतना बेवकूफ हूँ कि मैं ऐसा पंख नहीं उठाऊँगा।" सो वह पीछे मुड़ा और उस पंख को उठा लिया और फिर आगे चल दिया।

चलते चलते वह एक मिट्टी की झोंपड़ी के पास आया। वह उस झोंपड़ी में गया तो वहाँ एक बुढ़िया बैठी हुई थी। उसने उससे कहा — "दादी माँ। मुझे रात को सोने की जगह दे दो।"

बुढ़िया ने कहा — "न तो मेरे पास सोने के लिये बिस्तर है और न रोशनी है।"

[64] Zhar bird

फिर भी वह अन्दर चला गया और अपना पंख कोने की एक खिड़की में रख दिया तो उसकी रोशनी से पूरी झोंपड़ी चमक गयी। वह सोने चला गया।

पर वह बुढ़िया ज़ार[65] के पास भागी गयी और उससे जा कर कहा — "मेरे घर में एक आदमी आया है जिसके पास एक पंख है जिसे उसने खिड़की पर रखा तो मेरी सारी झोंपड़ी में उजाला हो गया।"

यह सुन कर ज़ार को लगा कि जरूर ही यह ज़ार चिड़िया का पंख होगा। तुरन्त ही उसने अपने सिपाहियों को बुढ़िया के घर भेजा कि वे उस आदमी को उसके पास ले कर आयें। जब वह आ गया तो ज़ार ने उससे पूछा — "क्या तुम मेरी नौकरी करोगे?"

लड़का बोला — "हाँ पर आपको मुझे अपनी सारी चाभियाँ देनी होंगी।" ज़ार ने उसे अपनी सारी चाभियाँ दे दीं और साथ में उसे रहने के लिये एक झोंपड़ी भी दे दी।

एक दिन ज़ार ने अपने नौकरों से कहा — "मेरे लिये एक टब[66] दूध गर्म कर दो।"

जब उन्होंने उसके लिये एक टब दूध गर्म कर दिया तो उसने अपनी अँगूठी उस दूध में डाल दी और उस लड़के से कहा —

---

[65] Tzar or Tsar was the title of king in Russia before 1917.

[66] Translated for the word "Vat"

"तुम्हारे पास तो ज़ार चिड़िया का पंख है अब तुम इस गर्म दूध के टब में से मेरी अँगूठी भी निकाल कर दो।"

उसने कहा — "मेरा वफादार घोड़ा ला कर दो ताकि वह अपने मालिक को उबलते हुए दूध में कूदते हुए और मरते हुए देखे।"

सो वे लोग उसका घोड़ा ले आये। फिर उसने अपने कपड़े उतारे और उस उबलते हुए दूध के टब में कूद गया। जैसे ही वह उस टब में कूदा तभी उसका घोड़ा इतनी ज़ोर से हिला कि उस टब का सारा गर्म दूध बाहर निकल पड़ा। लड़के ने अँगूठी उठा ली और ज़ार को दे दी।

ज़ार ने जब देखा कि यह लड़का तो गर्म उबलते हुए दूध में से और भी सुन्दर और जवान हो कर निकल आया है तो सोचा "मैं भी इसी तरीके से गर्म उबलते हुए दूध में से अपनी अँगूठी निकाल कर लाऊँगा। सो उसने फिर से अपनी अँगूठी गर्म उबलते दूध के टब में डाल दी और उसको निकालने के लिये उसमें कूद गया।

लोग उसका इन्तजार करते रहे करते रहे कि उसे बाहर निकलने में इतनी देर क्यों हो रही थी। आखिर उन्होंने टब का सारा दूध बिखेर दिया तो देखा तो ज़ार नीचे था और उसका शरीर लाल हो रहा था।

तब लड़के ने कहा — "अब ज़ारित्सा[67] मेरी है और मैं ज़ारित्सा का हूँ।" और फिर वे बहुत दिनों तक खुशी खुशी रहे।

---

[67] Tzaritsa means the "Wife of Tzar".

26 बुरे दिनों की कहानी[68]

एक बार घास के मैदान[69] के किनारे पर बसे हुए एक गाँव के आखिरी छोर पर दो भाई रहते थे। जिनमें से एक गरीब था और दूसरा अमीर था।

एक दिन गरीब भाई अमीर भाई के पास आया और उसकी खाने की मेज पर जा कर बैठ गया पर अमीर भाई ने उसे यह कहते हुए बाहर निकाल दिया — "तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई मेरी मेज पर बैठने की। जाओ यहाँ से। तुम्हारी ठीक जगह तो खेत में है जहाँ तुम कौओं को डरा कर उड़ाते हो।"

सो गरीब भाई बेचारा कौए भगाने के लिये वहाँ से अपने खेतों में चला गया। कौओं ने जब उसे आते देखा तो वे वहाँ से उड़ गये।

पर उनमें से एक रैवन था जो उड़ जाने के बाद वापस आ गया और उससे बोला — "ओ आदमी। तुम इस गाँव में कभी नहीं रह पाओगे क्योंकि तुम्हारे लिये न तो यहाँ अच्छी किस्मत है और न कोई खुशी। तुम किसी दूसरे गाँव में चले जाओ वहाँ तुम खुशी से रह सकोगे।"

---

[68] The Story of the Unlucky Days. (Tale No 26)

[69] Translated for the word "Steppe". Steppes are very large grass fields in North of Russia and in Ukraine too.

यह सुन कर गरीब भाई घर गया और अपनी पत्नी और बच्चों को बुलाया। उन सबने अपने अपने कपड़े इकट्ठा किये और उन्हें ले कर दूसरे गाँव चले गये।

एक पानी का थैला उसके कन्धों पर था। वे सड़क के किनारे किनारे चलते गये पर उसकी बदकिस्मती उसका पीछा नहीं छोड़ रही थी।

उन्होंने कहा — "तुम हमें अपने साथ क्यों नहीं ले चलते। हम तुम्हें नहीं छोड़ेंगे क्योंकि तुम हमारे हो।"

चलते चलते वे एक नदी के पास आ पहुँचे। आदमी बहुत प्यासा था सो वह पानी पीने के लिये नदी के किनारे जा पहुँचा। उसने अपना पानी का थैला उतारा। बुरे दिन उसके पीछे थे सो उनकी प्रेरणा से वह उस नदी में घुसा फिर से उसे कस कर बाँधा और उसे नदी के किनारे रेत में रख दिया।

वे फिर आगे चलते रहे और चलते चलते एक दूसरे गाँव में आ पहुँचे। उस गाँव के आखीर में एक खाली झोंपड़ी थी। उस झोंपड़ी में जो लोग रहते थे वह भूख से मर गये थे। सो वह पूरा परिवार रहने के लिये उसी खाली झोंपड़ी में चला गया और वहीं रहने लगा।

एक दिन वे सब बैठे हुए थे कि उन्होंने कुछ आवाज सुनी जैसे पहाड़ में कोई चिल्ला रहा हो "पकड़ लो उसे पकड़ लो उसे पकड़

लो उसे।” वह आदमी तुरन्त ही अपने घोड़े रखने की जगह गया घोड़े की लगाम सँभाली और पहाड़ की तरफ चल दिया।

जब वह जा रहा था तो चारों तरफ देखता जा रहा था कि उसने रास्ते में एक बूढ़ा बकरा देखा जिसके दो बहुत बड़े बड़े सींग थे। वह शैतान खुद था पर उसे इस बात का पता नहीं था।

सो उसने अपनी लगाम का एक फन्दा बनाया और उसे बूढ़े बकरे के चारों तरफ फेंका और उसे कोमलता से पहाड़ से नीचे की तरफ घसीटा। वह उसे अपने अनाज रखने की जगह तक घसीट लाया पर यह क्या कि वह बकरा तो गायब हो गया और उसकी छत से सोने के सिक्के ही सिक्के ही बरस पड़े। उसने उन सबको इकट्ठा कर लिया जिनसे उसके दो बड़े बक्से भर गये।

उसने इन पैसों का बहुत अच्छे से इस्तेमाल किया जिससे कुछ ही दिनों में वह बहुत अमीर बन गया। तब उसने अपने कुछ आदमी अपने बड़े भाई के पास भेजे और उनसे यह कहलवाया कि वे लोग कुछ दिन के लिये उसके पास आ कर रहें।

अमीर भाई ने कुछ देर सोचा “हो सकता है कि उसके पास खाने के लिये कुछ न हो इसी लिये शायद उसने मुझे बुलाया है।” सो उसने उसके लिये बहुत सारे मोटे मोटे पैनकेक बनवाये और उसके पास चल दिया।

रास्ते में उसने सुना कि उसका भाई तो बहुत अमीर हो गया है। और जैसे जैसे वह आगे बढ़ता गया वह उसकी अमीरी के किस्से और ज़्यादा सुनता गया।

यह सब सुन कर उसे पछतावा हुआ कि वह बेकार ही उसके लिये इतने सारे पैनकेक ले कर आया सो उसने उन्हें एक गड्ढे में फेंक दिया।

आखिर वह अपने भाई के पास आया तो उसके भाई ने सबसे पहले उसे सिक्कों से भरा एक बक्सा दिखाया फिर दूसरा बक्सा दिखाया। यह देख कर अमीर भाई उससे ईर्ष्या करने लगा। उसके चेहरे पर गुस्सा झलकने लगा।

पर उसके भाई ने कहा — "मैंने बहुत सारा पैसा पानी के थैले में भर कर नदी के पास छिपाया है। तुम चाहो तो तुम उसे खोद कर निकाल लेना और उन पैसों को जैसे चाहो वैसे इस्तेमाल कर लेना। क्योंकि मेरे पास तो यहाँ भी बहुत पैसा है।"

अमीर भाई को दोबारा कहने की जरूरत ही नहीं पड़ी तुरन्त ही वह नदी के किनारे पहुँचा और सीधे पानी वाला थैला खोदने लगा। उसने उसे लालची और काँपते हाथों से खोला तो उसमें बन्द सब बुरे दिन कूद कर बाहर आ गये और "तुम हमारे हो। तुम हमारे हो।" कहते हुए उससे चिपक गये।

दुखी हो कर वह घर चला गया और जब वह घर पहुँचा तो उसने देखा कि उसकी सारी धन सम्पत्ति नष्ट हो चुकी है। उसके

घर की जगह अब एक राख का ढेर पड़ा है। फिर वह वहाँ चला गया जहाँ उसक भाई रहता था। बुरे दिन फिर उसके साथ हमेशा के लिये रह गये।

27 इवान गोलिक और साँपों की आश्चर्यजनक कहानी[70]

कहीं, कहीं नहीं, एक दूसरे साम्राज्य में, तीसवें साम्राज्य में, या तो एक ज़ार और ज़ारित्सा या फिर एक राजकुमार और राजकुमारी रहते थे, मुझे मालूम नहीं, पर उनके दो बेटे थे।

एक दिन राजकुमार ने अपने दोनों बेटों से कहा — "चलो समुद्र के किनारे चलते हैं और वहाँ के लोगों का संगीत सुनते हैं।" सो वे चले गये। वहाँ जा कर राजकुमार ने अपने दोनों बेटों की बुद्धि को परखना चाहा।

असल में वह यह जानना चाहता था कि उसके दोनों बेटों में से उसका कौन सा बेटा राज करने लायक है और कौन सा बेटा जनता को अच्छा बनाने लायक है।

सो वे चलते गये और वहाँ आ कर रुके जहाँ तीन ओक के पेड़ एक लाइन में खड़े हुए थे। राजकुमार ने उन पेड़ों को देखा और अपने बड़े बेटे से कहा — "बेटे। तुम इन पेड़ों का क्या करोगे?"

"मैं इनका क्या करूँगा पिता जी? मैं इनके बहुत बढ़िया अनाजघर और भंडारघर बनवाऊँगा। मैं इन्हें कटवा दूँगा और इनके

[70] The Wondrous Story of Ivan Golik and Serpents. (Tale No 27)

चिकने चिकने तख्ते बनवा कर उनसे वे अनाजघर और भंडारघर बनवाऊँगा।"

राजकुमार बोला — "बहुत अच्छे मेरे बेटे बहुत अच्छे। तुम बहुत ही अच्छे घर की देखभाल करने वाले बनोगे।"

उसके बाद उसने अपने छोटे बेटे से पूछा — "और तुम मेरे बेटे इन पेड़ों का क्या करोगे?"

छोटा बेटा बोला — "अगर पिता जी मेरे वश में हुआ तो मैं इनमें से बीच वाला ओक का पेड़ कटवा दूँगा और उसे उसके बराबर वाले पेड़ों पर रखवा कर उस पर दुनियाँ के हर राजकुमार और कुलीन आदमी को लटकवा दूँगा।"

यह सुन कर राजकुमार ने अपना सिर लटका लिया और चुप हो गया। उसके बाद वे समुद्र के किनारे आ गये। तीनों वहाँ खड़े हो कर शान्ति से समुद्र को देखने लगे। वहाँ कुछ मछलियाँ खेल रही थीं उन्हें देखने लगे।

कि अचानक राजकुमार ने अपने छोटे बेटे को पकड़ लिया और उसे समुद्र में उछाल दिया — "तुम नष्ट हो जाओ क्योंकि तुम्हारे नष्ट होने का यही तरीका ठीक है।"

जैसे ही पिता ने अपने छोटे बेटे को समुद्र में फेंका कि एक बहुत बड़ी व्हेल मछली उधर आ रही थी उसने उसे निगल लिया। वह उसके पेट में चला गया।

वहाँ उसे घोड़ागाड़ी और बैल मिले जिन्हें मछली ने तभी तभी निगला था। सो वह उन घोड़ागाड़ियों को देखने में लग गया कि उनमें क्या भरा था।

उसने देखा कि एक गाड़ी में तो तम्बाकू और तम्बाकू के पाइप और चकमक पत्थर और लोहा भरे हुए थे। सो उसने एक पाइप उठाया, उसे तम्बाकू से भरा, जलाया और उसे पीने लगा।

पहले उसने एक पाइप पिया। फिर उसने दूसरा पाइप भरा और दूसरा पिया फिर उसने तीसरा पाइप भरा और उसे पीने लगा।

इसी से व्हेल के अन्दर इतना धुआँ भर गया कि उसे बेचैनी होने लगी। उसने अपना मुँह खोल दिया, किनारे की तरफ तैर आयी और रेत पर आ कर सो गयी।

तभी कुछ शिकारी वहाँ से गुजर रहे थे। उनमें से एक ने व्हेल को वहाँ लेटे देखा तो अपने साथियों से कहा — "देखो भाइयो। हम लोग अब तक जे और कौए जैसी चिड़ियों का शिकार करते रहे थे और देखो समुद्र के किनारे पर तो कितनी बड़ी मछली पड़ी है। चलो चल कर इसे मारते हैं।"

सो उस पर उन्होंने कई वार किये और फिर कुल्हाड़ी से उसे काटने लगे। वे उसे काट रहे थे कि अचानक उन्हें कोई आवाज सुनायी पड़ी — "मेरे दोस्तों। तुम इस मछली को काटो तो काटो पर तुम उस माँस को मत काटो जिसमें एक ईसाई का खून है।"

यह सुन कर वे डर के मारे जमीन पर गिर पड़े पर राजकुमार का छोटा बेटा व्हेल में बनाये गये छेद में से बाहर निकल आया जिसे शिकारियों ने बनाया था।

वहाँ से निकल कर वह किनारे की तरफ चला गया और जा कर वहाँ बैठ गया। वह वहाँ बिल्कुल नंगा बैठा था क्योंकि उसके कपड़े मछली के अन्दर सड़ चुके थे और उसी के अन्दर गिर गये थे।

हो सकता है कि वह मछली के अन्दर बिना जाने एक साल तक रहा हो या फिर उससे भी ज़्यादा। वह सोचने लगा कि "अब मैं इतनी बड़ी दुनियाँ में कैसे रहूँगा।"

इस बीच बड़ा भाई अब एक कुलीन आदमी बन चुका था। उसका पिता मर गया था और वह अब उसकी सारी सम्पत्ति का मालिक बन गया था।

और जैसा कि राजकुमारों को जरूरत होती है उसने अपने सभासदों और नौकरों की एक मीटिंग बुलायी। उन सबने उसे सलाह दी कि वह अब शादी कर ले। सो वह अपने लिये दुलहिन देखने के लिये बाहर निकला। उसके साथ उसके बहुत सारे दरबारी और नौकर चाकर भी गये।

चलते चलते वे एक ऐसी जगह आये जहाँ एक नंगा आदमी बैठा हुआ था। राजकुमार ने अपने एक नौकर से कहा कि वह वहाँ जा कर देखे कि वह किस किस्म का आदमी था।

सो नौकर वहाँ गया और उससे बोला "नमस्ते।"

उसने भी उसे जवाब दिया "तुमको भी नमस्ते।"

नौकर ने पूछा — "तुम कौन हो?"

छोटे बेटे ने जवाब दिया — "मेरा नाम इवान गोलिक[71] है। तुम कौन हो?"

"हम फलाने फलाने देश से आये हैं। हम अपने राजकुमार के साथ उनके लिये दुलहिन देखने के लिये जा रहे हैं।"

इवान बोला — "जाओ अपने राजकुमार से कह दो कि वह अपने साथ मुझे भी ले चले क्योंकि मेरे बिना उसे अच्छी दुलहिन नहीं मिलेगी।"

सो नौकर बड़े बेटे के पास लौटा और उस आदमी का जवाब उसे बताया। तो उसने नौकर से कहा कि वह उसके बक्से में एक कमीज एक पतलून और उसके पहनने लायक कपड़े निकाल कर उसे तैयार करे और फिर उसे उसके पास ले कर आये।

इस पर इवान पानी में जा कर नहाया कपड़े पहने तैयार हुआ फिर नौकर उसे ले कर राजकुमार के पास आये।

इवान ने राजकुमार से कहा — "अगर आप मुझे अपने साथ ले चलेंगे तो आप सबको मेरा कहा मानना पड़ेगा। अगर आप लोग मेरी बात सुनेंगे तब तो आप लोग रूस देश में रहेंगे पर अगर नहीं सुनेंगे तो आप सब नष्ट हो जायेंगे।"

---

[71] Ivan Golik means "Ivan the Naked"

राजकुमार बोला — "ठीक है।" और उसने अपने सब लोगों से उसका कहना मानने के लिये कह दिया।

अब वे आगे बढ़े तो उन्हें बहुत सारे चूहे मिले। राजकुमार उनके शिकार के लिये जाना चाहता था पर इवान गोलिक ने कहा — "नहीं। बल्कि तुम एक तरफ को हट जाओ और उन्हें जाने दो। उनमें से किसी एक का भी बाल भी बॉका नहीं होना चाहिये।"

सो वे सब एक तरफ को हट गये और सब चूहे वहाँ से चले गये। पर सबसे आखीर वाला चूहा वापस लौटा और बोला — "इवान गोलिक तुम्हारा बहुत बहुत धन्यवाद। तुमने मेरे लोगों की जान बचायी समय आने पर मैं तुम्हारी भी जान बचाऊँगा।"

फिर वे और आगे चले तो लो एक मच्छर अपनी टोली को लिये चला जा रहा था। उसकी वह टोली इतनी बड़ी थी एक ऑख के घेरे में तो वह आ ही नहीं सकती थी।

तभी मच्छरों का लैफ्टीनैन्ट जनरल उड़ता हुआ आया और बोला — "ओ इवान गोलिक। मेरे मच्छरों को अपना खून पीने दो। अगर तुम तैयार हो तो यह तुम्हारे फायदे के लिये ही होगा। पर अगर तुम अपना खून नहीं पीने दोगे तो तुम रूस देश में नहीं रह पाओगे।"

इवान गोलिक ने तुरन्त ही अपनी कमीज उतारी और उससे उसे बॉधने के लिये कहा ताकि वह किसी एक मच्छर को भी न मार सके। मच्छरों ने पेट भर उसका खून पिया और उड़ गये।

समुद्र के किनारे किनारे वे फिर आगे चले तो उन्हें एक आदमी दिखायी दिया जिसने दो पाइक मछली पकड़ रखी थीं।

तो इवान गोलिक ने राजकुमार से कहा — "तुम इन दोनों मछलियों को खरीद लो और उन्हें फिर से समुद्र में छोड़ दो।"

"लेकिन क्यों?"

"बस यह मत पूछो क्यों।"

सो उन्होंने वे दोनों मछलियाँ खरीद लीं और उन्हें फिर से समुद्र में फेंक दिया। दोनों मछलियाँ वापस घूमीं और बोलीं — "बहुत बहुत धन्यवाद इवान गोलिक कि तुमने हमें मरने नहीं दिया। यह तुम्हारे लिये बहुत फायदेमन्द होगा।"

वे फिर तेज़ी से आगे चल दिये। पर कहानी और तेज़ी से आगे बढ़ती है। वे चलते रहे चलते रहे, शायद एक महीना चले होंगे। वे एक दूसरे देश में आ पहुँचे एक दूसरे ज़ार के राज्य में आ पहुँचे – तीसवें राज्य में।

ज़ार के इस राज्य का ज़ार था एक साँप। उसके महल बहुत बड़े बड़े थे। उसके आँगन के चारों तरफ लोहे की रेलिंग लगी थी। उस रेलिंग पर बहुत सारे योद्धाओं के सिर लगे हुए थे। केवल फाटक के सामने वाले बीस बड़े खम्भों पर कोई सिर नहीं लगा हुआ था।

जब वे उसके पास पहुँचे तो राजकुमार दिल ही दिल में डर गया। उसने इवान से कहा — "इवान देखो। वे सामने वाले खम्भे हमारे सिरों के लिये हैं।"

इवान गोलिक बोला — "अभी यह देखना बाकी है।"

पहले तो साँप ने उनका बड़े प्रेम से स्वागत किया जैसे मेहमानों का किया जाता है। उन सबको अन्दर बुलाया गया और खुशियाँ मनायी गयीं। पर राजकुमार को वह अपने महल में ले गया। वहाँ दोनों ने साथ बैठ कर खाया पिया। दोनों दिल से बहुत खुश थे।

इस साँप के इक्कीस बेटियाँ थीं। वह उन सबको राजकुमार के सामने लाया और उसका पहले सबसे बड़ी बेटी से परिचय करवाया फिर उससे छोटी से फिर उससे छोटी से और आखीर में सबसे छोटी बेटी से मिलवाया।

पर राजकुमार को उन सब में उसकी सबसे छोटी बेटी पसन्द आयी तो वे दोनों शाम तक के लिये अलग चले गये। रात को वे सोने के लिये जाने लगे तो साँप ने राजकुमार से पूछा — "तुम क्या सोचते हो इनमें से तुम्हें कौन सी बेटी सबसे ज़्यादा प्यारी लगी?"

राजकुमार बोला — "मुझे आपकी सबसे छोटी वाली बेटी सबसे ज़्यादा अच्छी लगी मैं उसी से शादी करना चाहूँगा।"

साँप बोला — "ठीक है। पर मैं तुम्हें अपनी बेटी से तब तक शादी नहीं करने दूँगा जब तक तुम मेरे कहे काम नहीं करोगे। अगर तुम मेरे कहे काम कर दोगे तभी तुम मेरी बेटी से शादी कर सकते

हो और अगर तुम उन्हें नहीं कर पाये तो तुम्हारा सिर काट लिया जायेगा और जितने लोग तुम्हारे साथ यहाँ आये हैं वे सब भी मारे जायेंगे।"

तब उसने राजकुमार को उसका पहला काम बताया।

उसने कहा — "मेरे अनाजघर में अनाज के तीन सौ गट्ठर रखे हुए हैं। कल सुबह होने तक उन्हें पीट कर उन्हें छान कर उनकी डंडियाँ अलग रखनी हैं उसका भूसा अलग रखना है और उसका अनाज अलग रखना है।"

यह सुन कर राजकुमार सोने के लिये अपनी जगह चला गया और बहुत ज़ोर ज़ोर से रोने लगा। पर इवान गोलिक ने देख लिया कि वह रो रहा था सो उसने उससे पूछा — "तुम इतनी ज़ोर ज़ोर से क्यों रो रहे हो?"

"मैं कैसे न रोऊँ। यह काम जो मुझे साँप ने दिया है इसे देख कर तो कोई भी कहेगा कि यह काम तो असम्भव है।"

इवान गोलिक बोला — "नहीं रोओ नहीं मेरे राजकुमार। तुम लेटो और सो जाओ। सुबह सवेरे तक यह काम हो जायेगा।"

इतना कह कर इवान गोलिक वहाँ से चला गया और जाने के तुरन्त बाद ही वह बाहर गया और सीटी बजा कर चूहों को बुलाया। चूहे भी तुरन्त ही वहाँ आ कर उसके चारों तरफ इकट्ठा हो गये। उन्होंने पूछा — "तुमने सीटी क्यों बजायी ओ इवान गोलिक और तुम्हें हमसे क्या चाहिये?"

"मैं सीटी क्यों न बजाऊँ जबकि साँप ने हमें कल सुबह तक तीन सौ गट्ठरों को पीटने छानने और दाना अलग करने का काम दे रखा है।"

जैसे ही चूहों ने यह सुना तो वे सब अनाजघर के चारों तरफ इकट्ठा हो गये। वे सब इतने सारे थे कि वहाँ उनको खुद को कहीं हिलने की जगह नहीं थी। वे पक्के इरादे से काम करने आये थे सो सुबह होने से पहले पहले ही उनका काम खत्म हो चुका था।

तब वे इवान गोलिक को उठाने के लिये गये। इवान गोलिक वहाँ और उसने देखा कि साँप का बताया सारा काम खत्म हो चुका था। डंडियाँ अलग थीं भूसा अलग था और दाना अलग था। दाने का कोई भी भुट्टा वहाँ नहीं बचा था।

काम कर के वे सब वहाँ से यह कह कर चले गये कि "विदा इवान गोलिक हमने अब तुम्हारे ऐहसान का बदला चुका दिया है।" और अब वहाँ पर किसी भी जगह कोई भी चूहा मौजूद नहीं था।

अगली सुबह जब राजकुमार इवान गोलिक से मिलने आया तो उसे यह देख कर बड़ा आश्चर्य हुआ कि उसका सारा काम पूरा हो चुका था। उसने इवान गोलिक को धन्यवाद दिया और साँप को यह खबर देने चला गया।

तब साँप और राजकुमार दोनों ही उस जगह को देखने के लिये गये तो साँप भी वहाँ अपना काम खत्म हुआ देख कर आश्चर्यचकित रह गया। उसने अपनी इक्कीसों बेटियों को बुलाया

और उनसे कहा कि वह देखें कि कहीं किसी अनाज के भुट्टे में कोई दाना तो लगा नहीं रह गया पर वहाँ किसी भी भुट्टे में कोई भी दाना नहीं था।

सॉप बोला — "ठीक है अब चलते हैं। शाम तक हम लोग खायेंगे पियेंगे मौज उड़ायेंगे और फिर रात होने से पहले मैं तुम्हें तुम्हारा दूसरा काम बताऊँगा।" सो शाम तक सबने खूब खाया पिया और आनन्द किया।

शाम को वह बोला — "आज सुबह मेरी सबसे छोटी बेटी समुद्र में नहाने गयी थी तो उसकी अँगूठी वहाँ खो गयी। उसने उसे वहाँ बहुत ढूँढा पर वह उसे कहीं नहीं मिली।

अगर तुम उसे कल तक ढूँढ पाये और उसे यहाँ ले आये जहाँ हम खाना खाने के लिये बैठे हैं तब तो तुम ज़िन्दा रहोगे नहीं तो तुम्हारा सब कुछ खत्म।"

राजकुमार फिर अपने लोगों के पास लौटा और रोने लगा। इवान गोलिक ने देखा तो उससे पूछा — "अब तुम क्यों रोते हो?"

राजकुमार बोला — "मैं इसलिये रोता हूँ।" कह कर उसने सॉप का दूसरा काम उसे बता दिया। "क्या तुमको नहीं लगता कि मैं बिल्कुल बर्बाद हो गया हूँ?"

इवान गोलिक बोला — "सॉप झूठ बोलता है। उसने खुद ने अपनी बेटी की अँगूठी ले ली है और इसी सुबह वह समुद्र के ऊपर

उड़ गया और उसे पानी में फेंक दी। कल मैं खुद समुद्र में जाऊँगा और उसे ढूँढ कर लाऊँगा।"

सो अगले दिन सुबह सवेरे ही वह बड़ी ऊँची आवाज में चिल्लाया और ऊँची आवाज में सीटी बजायी जिससे सारे समुद्र में तूफान आ गया।

उसके साथ ही उसने वे दो पाइक मछलियाँ भी बाहर फेंक दीं जिन्हें पहले उसने बचाया था। वे किनारे पर आ कर बोलीं — "तुमने हमें क्यों पुकारा ओ इवान गोलिक?"

इवान गोलिक बोला — "मैं तुम्हें क्यों न पुकारूँ। साँप कल सवेरे समुद्र के ऊपर से उड़ा और उसने अपनी बेटी की अँगूठी पानी में फेंक दी। उसे हर जगह ढूँढो। अगर वह तुम्हें मिल जायेगी तब तो मैं ज़िन्दा रहूँगा पर अगर वह तुम्हें नहीं मिली तो बस समझ लो कि साँप मुझे धरती से ही हटा देगा।"

तब वे तैर गयीं। उन्होंने उसे समुद्र के हर कोने में ढूँढा पर वह उन्हें कहीं दिखायी नहीं दी। आखिर वे अपनी माँ के पास गयीं और उन्हें बताया कि उनके ऊपर कैसी मुसीबत पड़ने वाली थी।

उनकी माँ ने कहा कि वह अँगूठी तो उसके पास थी। मुझे उसके लिये बहुत दुख है और उससे भी ज़्यादा दुख तुम्हारे लिये है। पर लो अब यह तुम ले लो।"

कह कर उसने अँगूठी निकाली और उन्हें दे दी। वे भी इवान गोलिक के पास चली गयीं और उसे अगूठी दे कर बोलीं कि "अब

हम तुम्हारी सेवा से मुक्त हो गये हैं। हमने इसे पा लिया है पर यह एक मुश्किल काम था।"

इवान गोलिक ने मछलियों को धन्यवाद दिया और अपने रास्ते चला गया। जब वह राजकुमार के पास आया तो उसे रोता हुआ पाया। साँप उसे दो बार बुला चुका था और उसके पास अभी तक अँगूठी नहीं थी। सो जैसे ही उसने इवान गोलिक को देखा तो उससे तुरन्त ही पूछा — "क्या तुम्हें अँगूठी मिल गयी?"

"हाँ यह रही अँगूठी। मगर देखो साँप तो खुद ही इधर आ रहा है।"

"आने दो उसे।"

जैसे ही राजकुमार बाहर निकल रहा था तो साँप उसकी देहरी पर था सो उन दोनों के माथे आपस में टकरा गये। साँप गुस्सा हो गया। उसने पूछा — "अँगूठी कहाँ है?"

राजकुमार बोला — "यह रही अँगूठी। पर यह मैं तुम्हें नहीं दूँगा यह मैं उसी को दूँगा जिससे तुमने ली थी।"

साँप हँसा — "बहुत अच्छे। पर चलो अब खाना खाने चलते हैं क्योंकि मेरे घर में कई मेहमान हैं और हम तुम्हारे लिये बहुत देर से इन्तजार कर रहे हैं।" सो वे खाना खाने चले गये।

राजकुमार महल में पहुँचा तो उसने देखा कि ग्यारह साँप खाने की मेज पर बैठे हुए थे। उसने उन्हें नमस्ते की और लड़कियों के

पास चला गया। वहाँ उसने अँगूठी निकाली और पूछा — "तुम सबमें से यह किसकी अँगूठी है?"

सबसे छोटी लड़की शर्मा कर बोली "यह मेरी है।"

"अगर यह तुम्हारी है तो इसे तुम ले लो क्योंकि मैं इसे ढूँढने के लिये समुद्र की गहराइयों तक गया था।" बाकी सब लड़कियाँ तो हँस पड़ीं पर उसने उसे धन्यवाद दिया।

फिर वे सब खाना खाने चले गये। खाना खाने के बाद साँप ने अपने सब मेहमानों के सामने कहा — "जब तुम खाना खा लो और आराम कर लो तो तुम अपने अगले काम पर लग जाओ। मेरे पास एक धनुष है जो सौ पूड[72] भारी है। अगर तुम सबके सामने इस धनुष पर डोरी चढ़ा सकते हो तो तुम मेरी बेटी से शादी कर सकते हो।"

खाना खा कर सब आराम करने चले गये पर राजकुमार तुरन्त ही भागा हुआ इवान गोलिक के पास गया और बोला — "बस अब हमारा सब कुछ खत्म क्योंकि उसने मुझे यह काम दिया है।" कह कर उसने उसे साँप का बताया काम बता दिया।

इवान गोलिक बोला — "अरे यह तो बहुत ही आसान काम है। जब वे उस धनुष को ले कर आयें तो तुम साँप से कहना "यह काम करना तो मेरे लिये बड़ा ही शर्मनाक काम है। इसे तो मेरा छोटे से छोटा नौकर कर सकता है।" फिर तुम मुझे आवाज लगाना और

[72] 1 Pood = 40 pounds. 100 Poods = 40x100 = 4000 Pounds

फिर मैं उस पर कुछ इस तरह डोरी चढ़ा दूँगा कि फिर उस पर कोई दूसरा डोरी चढ़ा ही नहीं सकेगा।"

यह सुन कर राजकुमार फिर से साँप के पास गया। साँप ने उस धनुष को मँगवाया और एक बाण मँगवाया जो पचास पूड का था। जब राजकुमार ने उसे देखा तो वह तो डर के मारे मर ही गया पर उन्होंने उसे ला कर आँगन के बीच में रख दिया।

सारे मेहमान उसे देखने के लिये निकल कर बाहर आ गये। राजकुमार ने भी उस धनुष के एक दो चक्कर लगाये और बोला — "मैं तो ऐसे धनुष को छू भी नहीं सकता क्योंकि कि ऐसे धनुष पर तो कोई भी डोरी चढ़ा सकता है। इसके लिये तो मैं अपने किसी नौकर को बुलाता हूँ वही इस पर डोरी चढ़ा देगा।"

साँप ने एक के बाद एक उसके नौकरों की तरफ देखा और कहा — "ठीक है। उन्हीं में से किसी को इसे मोड़ कर देखने दो।"

राजकुमार ने आवाज लगायी — "इवान गोलिक तुम आगे आओ।"

और जब वह आगे आ गया तो उसने उससे कहा — "मुझे वहाँ ले चलो और धनुष पर डोरी चढ़ा दो।"

इवान गोलिक ने धनुष को उठाया बाण को उसके ऊपर रखा और उसकी डोरी खींच दी जिससे बाण के बारह टुकड़े हो गये और धनुष टूट गया।

राजकुमार बोला — "क्या मैंने तुमसे नहीं कहा था? क्या मेरे लिये ऐसे धनुष को तोड़ना शर्म की बात नहीं होती जिसे मेरा एक नौकर तोड़ सकता हो?"

इसके बाद इवान गोलिक अपने नौकरों के पास चला आया और धनुष के टूटे हुए टुकड़ों को अपने टॉग के पीछे रख लिया। राजकुमार वापस सॉपों के पास मेहमानों वाले कमरे में लौट गया।

सब लोगों ने उसके काम पूरा करने की बहुत खुशियॉ मनायीं क्योंकि उसने उसे दिया हुआ काम पूरा कर लिया था। पर सॉप ने अपनी सबसे छोटी बेटी के कान में कुछ फुसफुसाया वह बाहर चली गयी और सॉप उसके पीछे पीछे चला गया।

वे दोनों बाहर बहुत देर तक रहे। फिर सॉप अन्दर आया और राजकुमार से कहा — "आज का दिन किसी और काम के लिये है ही नहीं। पर कल हम फिर शुरू करेंगे। मेरे पास एक घोड़ा है जो बारह दरवाजों के पीछे बन्द है। अगर तुम उस पर चढ़ सकते हो तो तुम्हें मेरी बेटी मिल जायेगी।"

वे लोग शाम तक फिर आनन्द मनाते रहे और फिर सोने चले गये पर राजकुमार फिर से इवान गोलिक के पास चला गया और जा कर उससे सॉप की शर्त बतायी।

इवान गोलिक ने उसकी बात सुनी और बोला — "अब शायद तुम्हें पता चल गया होगा कि मैंने ये धनुष के टूटे टुकड़े क्यों उठाये थे क्योंकि मैं जान गया था कि आगे क्या होने वाला है।

जब वे लोग उस घोड़े को तुम्हारे सामने ले कर आयें उसकी तरफ देखना और कहना “मेरे लिये इस घोड़े पर चढ़ना बहुत शर्म की बात होगी। इस घोड़े पर मेरे लिये चढ़ना वैसा ही होगा जैसा मेरे लिये उस धनुष के ऊपर डोरी चढ़ाना था। इसके ऊपर तो मेरा कोई नौकर ही चढ़ जायेगा।”

वास्तव में वह घोड़ा नहीं है बल्कि वह उसकी सबसे छोटी बेटी है। तुम्हें उसके ऊपर नहीं बैठना चाहिये। मैं उसे सँभाल लूँगा।”

अगले दिन सब सुबह सवेरे ही उठ गये। राजकुमार साँप के घर उन सबको नमस्ते करने गया तो उसने वहाँ केवल साँप की बीस बेटियों को ही देखा तो फिर इक्कीसवीं कहाँ थी। तब साँप उठा और बोला — “तो चलो राजकुमार आँगन में चलो। वे वहीं घोड़ा ले कर आयेंगे। तो देखते हैं कि तुम उस पर कैसे चढ़ते हो।”

कह कर वे दोनों बाहर चले गये। दो साँप उस घोड़े को ले कर आ गये। वह घोड़ा इतना मजबूत और भयानक था कि वे दो साँप भी उस पर मुश्किल से काबू पा रहे थे। वे उसे बाहर ले कर आये।

राजकुमार ने उसके चारों तरफ चक्कर काटा और बोला — “यह क्या है। क्या तुमने नहीं कहा था कि तुम्हारे पास एक घोड़ा है पर यह तो घोड़ा नहीं है यह तो घोड़ी है। मैं इस घोड़ी पर नहीं बैठ सकता क्योंकि यह मेरे लिये बड़े शर्म की बात होगी। मैं अपने एक नौकर को बुलाता हूँ वही इस घोड़ी पर बैठेगा।”

साँप बोला —“ठीक है। उसी को कोशिश करने दो।”

सो राजकुमार ने इवान गोलिक को बुलाया और उससे घोड़ी पर चढ़ने के लिये कहा। इवान घोड़ी पर बैठा तो दोनों साँपों ने उसे छोड़ दिया। और घोड़ी उसे ऊपर और ऊपर उड़ा कर बादलों के उस पार ले गयी। वहाँ से फिर वह जमीन पर उतरी।

जमीन उसके खुर पड़ते ही काँपने लगी। इवान गोलिक ने टूटे हुए धनुष का एक टुकड़ा लिया जो पचास पाउंड भारी था और उससे उसे धीरे से मारा।

वह आगे हुई पीछे गयी और फिर उसे ले कर इधर उधर घूमने लगी पर वह उसके कानों के बीच में बिना रुके मारता रहा। जब घोड़ी ने देखा कि उसका नाचना बिल्कुल बेकार जा रहा था तो वह इवान गोलिक से विनती करने लगी कि "इवान गोलिक इवान गोलिक। तुम मुझे और मत मारो। मैं वही करूँगी जो तुम चाहोगे।"

वह बोला — "मेरा तुझसे कोई लेना देना नहीं है पर जब तू राजकुमार के पास पहुँचे उसके सामने गिर जाना और अपने पैर उसकी तरफ फैला देना।"

इस पर वह काफी देर तक सोचती रही। आखिर वह बोली — "ठीक है। मैं ऐसा ही करूँगी। मैं तुम्हारे सामने कुछ ऐसा वैसा कर ही नहीं सकती।"

सो वह उसे आँगन में घुमाता रहा। फिर वह राजकुमार के सामने गिर गयी और उसके सामने अपनी टाँगें फैला दीं। राजकुमार

बोला — "अब तुम्हें पता चला कि यह कितने दुख की चीज़ है और तुम मुझे इस घोड़ी पर चढ़ने के लिये कह रहे थे।"

यह सुन कर साँप को बहुत शर्म आयी पर अब न कुछ किया जा सकता था और न कुछ कहा जा सकता था। वे सब फिर बागीचे में चले गये और वहाँ खाना खाने बैठ गये।

सबसे छोटी बेटी वहाँ आयी और सबने वहाँ उसे नमस्ते की। राजकुमार उसकी तरफ देखे बिना न रह सका। वह अब पहले से भी बहुत ज़्यादा सुन्दर लग रही थी। सब बैठ गये और खाना खाने लगे।

जब खाना खत्म हो गया तो साँप ने कहा — "राजकुमार अब मैं तुम्हारे सामने अपनी इक्कीसों बेटियों को लाऊँगा तुम उनमें से सबसे छोटी बेटी को पहचान लेना और फिर वह तुम्हारी।"

सो खाना खाने के बाद उसने अपनी सभी बेटियों को अन्दर भेज दिया और उनसे तैयार हो कर आने के लिये कहा। पर राजकुमार ने इवान गोलिक की सलाह मानी। इवान गोलिक ने सीटी बजायी तो तुरन्त ही एक मच्छर उड़ता हुआ वहाँ आया।

इवान गोलिक ने उसे सारा मामला समझाया तो मच्छर बोला — "तुमने मेरी सहायता की थी अब मैं तुम्हारी सहायता करूँगा। जब साँप अपनी सब बेटियों को ले कर यहाँ आयेगा तो राजकुमार से कहना कि वह अपनी आँखें खुली रखे क्योंकि मैं उस लड़की के सिर

पर उड़ता रहूँगा। उसे भी उनका एक चक्कर काटने के लिये कहना और मैं भी उनका एक चक्कर काटूँगा।

फिर उससे कहना कि वह उनका दूसरा चक्कर काटे मैं भी उनका दूसरा चक्कर काटूँगा। तब उसे उनका तीसरा चक्कर काटने देना फिर मैं उसकी नाक पर बैठ जाऊँगा। वह मेरा काटा सह नहीं पायेगी और मुझे अपने दाँये हाथ से मारेगी। इससे वह उसे पहचान लेगा।" यह कह कर मच्छर वहाँ से उड़ गया।

कुछ देर बाद ही साँप ने राजकुमार को बुला भेजा।

वह अन्दर गया तो आँगन में साँप की इक्कीस बेटियाँ खड़ी हुई थीं। वे सब मटर की तरह से एक सी लग रही थीं – चेहरे से बालों से और जो कुछ वे पहने हुए थीं उनसे भी। उसने देखा और देखा पर वह साँप की सबसे छोटी बेटी को पहचान नहीं सका।

उसने उनके चारों ओर पहला चक्कर काटा पर वहाँ मच्छर का कोई पता नहीं था। फिर उसने दूसरा चक्कर काटा तब मच्छर वहाँ आया और उसके सिर पर बैठ गया। उसके बाद उसने मच्छर पर से फिर अपनी आँख नहीं हटायी।

और जब उसने उन इक्कीसों लड़कियों का तीसरी बार चक्कर काटना शुरू किया तो वह मच्छर साँप की सबसे छोटी बेटी की नाक पर बैठ गया और काटने लगा। उसने उसे अपने दाँये हाथ से उड़ाने की कोशिश की कि तभी राजकुमार बोल पड़ा — "यह है मेरी दुलहिन।" और उसे साँप के पास ले गया।

साँप यह देख कर आश्चर्य में पड़ गया कि राजकुमार ने अपनी दुलहिन को पहचाना कैसे पर फिर बोला — "अब क्योंकि तुमने अपनी दुलहिन को पहचान लिया है तो आज हम तुम्हारी शादी कर देते हैं। तुम लोग खुश रहो।"

सो उस दिन उनकी शादी हो गयी और शाम को ही नौजवान जोड़े को उनके दुलहा दुलहिन वाले ताज मिल गये। बहुत अच्छी दावत दी गयी और बन्दूकें छोड़ी गयीं। और उन्होंने और क्या क्या नहीं किया यानी सब कुछ किया।

पर रात को इवान गुलिक राजकुमार को एक ओर को ले गया और बोला — "देखो राजकुमार कल हम लोग यहाँ से घर जा रहे हैं क्योंकि ये अब हमारे किसी काम के नहीं हैं।

और अब मेरी एक बात और सुनो। मैं तुमसे विनती करता हूँ कि तुम अपनी पत्नी को सात साल तक इन सब बातों का सच नहीं बताना। वह तुमसे कितना भी प्यार से पूछे तुम उसे सच नहीं जानने दोगे। क्योंकि अगर तुमने उससे सच कह दिया तो बस समझ लो कि हम दोनों ही मारे जायेंगे।"

राजकुमार बोला — "ठीक है। मैं अपनी पत्नी को चाहे जो हो जाये सच बिल्कुल नहीं बताऊँगा।"

अगले दिन सुबह को वह उठा और साँप के पास गया। वहाँ पहुँच कर उसने अपने ससुर से विदा माँगी कि वह अब घर जाना चाहता है। साँप ने पूछा — "अरे इतनी जल्दी। क्यों?"

"कोई खास बात नहीं। पर बस अब मुझे जाना चाहिये।"

सो साँप ने राजकुमार को एक दावत दी। वे सब बैठे खाया पिया और आनन्द किया। उसके बाद राजकुमार अपने ज़ार के राज्य की ओर चल दिया। राजकुमार ने इवान गोलिक को जो कुछ उसने उसके लिये किया था उसके लिये उसे बहुत बहुत धन्यवाद दिया और उसे अपना सलाहकारों का सरदार बना लिया।

अब इवान गोलिक जो कुछ कहता वही राज्य भर में माना जाता जबकि ज़ार अपने सिंहासन पर बैठा रहता और कुछ नहीं करता। इस तरह राजकुमार ने अपनी पत्नी के साथ एक दो साल आनन्द के साथ बिताये। तीसरे साल में उनके एक बेटा हुआ। उसे पा कर राजकुमार बहुत खुश हुआ।

एक दिन उसने अपने बेटे को गोद में लिया और बोला — "क्या इतनी बड़ी दुनियाँ में कोई ऐसा और है जिसे मैं अपने बेटे से भी अधिक प्यार करता हूँ?"

जब राजकुमार की पत्नी ने यह सुना तो उसे लगा कि राजकुमार का दिल उस समय बड़ा कोमल था तो वह उसको चूमने लगी और सहलाने लगी और उसे उन दिनों की याद दिलाने लगी जब उनकी शादी हुई ही थी। उसने उससे पूछा कि उसने उसके पिता की कही हुई शर्तें उसने कैसे पूरी कीं।

राजकुमार ने उससे कहा — "मैं तो अपना सिर तुम्हारे पिता के महल के खम्भों पर मार मार के मर गया होता अगर मेरे साथ इवान गुलिक न होता तो। क्योंकि उसी ने सब कुछ किया मैंने नहीं।"

यह सुन कर वह बहुत गुस्सा हो गयी पर उसने उसे चेहरे पर नहीं लाया और कुछ देर में वह वहाँ से चली गयी।

इवान गोलिक अपने घर में आराम से रह रहा था कि राजकुमारी उसके पास दौड़ी दौड़ी आयी और उसने जमीन से एक सुनहरे बौर्डर वाला रूमाल खींच कर बाहर निकाला और जैसे ही उस साँप वाले रूमाल को हिलाया तो इवान के शरीर के दो टुकड़े हो गये।

उसकी टाँगें तो वहीं पड़ी रह गयीं पर उसका धड़ और उसका सिर छत फाड़ कर निकल गया और उसके घर से सात मील दूर जा कर पड़ा।

जैसे ही वह वहाँ गिरा वह चिल्लाया — "ओ शापित। क्या मैंने तुझसे यह नहीं कहा था कि तू उससे इस बात को सात साल तक मत कहना। अब देख मैं नष्ट हो गया हूँ और तू भी हो जायेगा।"

उसने अपने आपको उठाया तो देखा कि वह एक जंगल में है और बिना बाँह वाला एक आदमी एक खरगोश का पीछा कर रहा है। वह उसके पीछे दौड़ा और उसने उसे पकड़ भी लिया फिर भी वह उसे न पकड़ सका क्योंकि उसकी बाँहें ही नहीं थीं।

तब इवान गोलिक ने खरगोश को पकड़ दिया तो दोनों ही उस पर गिर पड़े। बिना बॉह वाला बोला — "यह खरगोश मेरा है।"

इवान गुलिक बोला — "नहीं यह खरगोश मेरा है।"

दोनों उसके ऊपर लड़ने लगे पर क्योंकि एक के टॉग नहीं थी और दूसरे की बॉह नहीं थीं सो वे एक दूसरे को कोई नुकसान नहीं पहुँचा सका।

आखिर बिना बॉह वाले ने कहा — "हमारे लड़ने से क्या फायदा। चलो उस ओक के पेड़ को नीचे गिराते हैं और फिर जो कोई उसे ज़्यादा दूर फेंक पायेगा यह खरगोश उसी का होगा।"

बिना टॉग वाले ने कहा — "ठीक है।"

तब बिना बॉह वाले ने बिना टॉग वाले को ओक के पेड़ तक ठोकर मारी और बिना टॉग वाले ने उसे बिना बॉह वाले को दे दिया। बिना बॉह वाला जमीन पर लेट गया और उसने अपने पैरों से ओक के पेड़ को तीन मील दूर फेंक दिया पर बिना टॉग वाले ने उसे सात मील दूर फेंक दिया।

तब बिना बॉह वाले ने कहा — "ठीक है तुम खरगोश ले लो और मेरे बड़े भाई बन जाओ।"

सो वे एक दूसरे के भाई बन गये। उन्होंने एक गाड़ी[73] बना ली और उसमें रस्सी बॉध ली। बिना बॉह वाला उसे खींचने लगा और बिना टॉग वाला उसमें बैठ गया।

[73] Translated for the word "Wagon"

चलते चलते वे एक एक ऐसे शहर में आये जिसमें एक ज़ार रहता था। वहाँ वे एक चर्च तक गये और जा कर भिखारियों की लाइन में बैठ गये। वहाँ वे तब तक इन्तजार करते रहे जब तक ज़ारेवना[74] वहाँ आयी।

ज़ारेवना ने अपने दरबार की एक स्त्री से कहा — "लो यह पैसा लो और उन दोनों अपंगों को दे दो।"

वह स्त्री उन लोगों को पैसा देने ही वाली थी कि बिना टाँग वाले ने कहा — "नहीं। तुम नहीं। ज़ारेवना अपने हाथ से हमें पैसा देंगी।" ज़ारेवना ने पैसे उससे वापस लिये और उन्हें बिना टाँग वाले को दे दिये।

बिना टाँग वाले ने कहा — "मेहरबानी कर के आप गुस्सा न हों पर क्या आप मुझे यह बतायेंगी कि आप इतनी पीली क्यों है।"

वह बोली — "भगवान ने मुझे ऐसा ही बनाया है।" कह कर उसने एक लम्बी साँस ली।

बिना टाँग वाले ने कहा — "नहीं यह सच नहीं है। पर मैं जानता हूँ कि आप इतनी पीली क्यों हैं। पर मैं आपको फिर से वैसा ही बना सकता हूँ जैसा भगवान ने आपको पहले बनाया था।"

ज़ार ने उनकी बातों को सुन लिया तो बिना टाँग वाले के शब्द उसे हिला गये। उसने उन दोनों को अपने पास बुलाया और उनसे कहा — "मेहरबानी कर के जो कुछ तुम कर सकते हो करो।"

---

[74] Tzarevna means "the Daughter of the Tzar". Tzar was the title of the king in Russia before 1917.

बिना टाँग वाले ने कहा — "ज़ार। आप ज़ारेवना से कहें कि वह सच बोलें और मुझे बतायें कि वह पीली कैसे पड़ीं।"

तब ज़ार अपने बेटी की तरफ घूमा और उससे सच बोलने के लिये कहा कि वह उसे बताये कि वह पीली कैसे पड़ी। उसने बताया कि एक साँप उसके ऊपर से उड़ा और उसकी छाती से खून खींच कर ले गया। उन्होंने पूछा कि वह कब उसके ऊपर से उड़ कर गया था।

ज़ारेवना बोली — "सुबह होने से बस थोड़ी देर पहले जब पहरेदार सो रहे थे। वह मेरी चिमनी से उड़ता हुआ नीचे आया और आ कर वह मेरे काउच के गद्दे के नीचे लेट गया।"

बिना टाँग वाला बोला — "रुको। हम तुम्हारे कमरे में भूसे में छिप जायेंगे। जब वह साँप आये तो तुम हमें खाँस कर उठा लेना।" सो उन लोगों ने उन दोनों अपंगों को ज़ारेवना के कमरे में छिपा दिया।

जैसे ही पहरेदारों ने दरवाजे पर खटखटाना बन्द किया भूसे की छत के नीचे एक चिनगारी से जली और ज़ारेवना खाँसी। वे उसकी तरफ भागे तो उन्होंने देखा कि साँप उसके काउच के गद्दे के नीचे कुंडली मार कर बैठ रहा था।

यह देख कर ज़ारेवना अपने काउच से कूद पड़ी पर बिना बाँहों वाला फर्श पर ही पड़ा रहा। उसने बिना पैरों वाले को ठोकर मारी

तो वह काउच के पास जा गिरा। उसने साँप को अपनी गोद में ले लिया और उसे मरोड़ने लगा।

साँप गिड़गिड़ाया — "मुझे छोड़ दो। मुझे छोड़ दो। मैं यहाँ फिर कभी उड़ कर नहीं आऊँगा। मैं अपने दाँत भी निकाल दूँगा।"

बिना टाँग वाले ने कहा — "यह तो बहुत छोटी सी बात है। तुम हमें इलाज करने वाले पानी के पास ले चलो ताकि मैं अपनी टाँगें वापस पा सकूँ और मेरा यह भाई अपनी बाँहें वापस पा सके।"

साँप बोला — "ठीक है। तुम मुझे पकड़ लो। मैं तुम्हें वहाँ ले चलूँगा बस तुम मुझे और परेशान मत करो।"

सो बिना टाँगों वाले ने उसे अपनी बाँहों से पकड़ लिया और बिना बाँहों वाले ने उसे अपने पैरों से पकड़ लिया। साँप उन दोनों को ले कर उड़ चला और एक नाले के पास आया।

वहाँ आ कर वह बोला — "लो यह रहा तुम्हारा इलाज का पानी।"

बिना बाँह वाला सीधा उसी नाले में कूदना चाहता था पर बिना टाँग वाला चिल्लाया — "भाई रुको। साँप को अपने पैरों से कस कर पकड़े रहो जबकि मैं एक सूखी डंडी इस नाले में डुबोता हूँ। इससे हम पता लगा पायेंगे कि यह सचमुच में इलाज का पानी है या नहीं।"

सो उसने एक सूखी डंडी नाले में डाली तो वह उस पानी को छूते ही जल गयी। गुस्से में आ कर वे दोनों उस नकली साँप के ऊपर गिर पड़े और उसे करीब करीब मार ही डाला। वे उसे तब तक मारते रहे जब तक वह उनसे दया की भीख नहीं माँगने लगा।

वह फिर बोला — "मुझे मत मारो। इलाज करने वाला नाला यहाँ से बहुत दूर नहीं है। मैं तुम्हें वहाँ ले चलता हूँ।" उसके बाद वह उन्हें एक दूसरे नाले पर ले गया। यहाँ भी उन्होंने एक सूखी लकड़ी उस पानी में डाली तो वह तो फूल बन गयी।

तब बिना बाँहों वाला उस पानी में कूदा तो उसकी बाँहें उग आयीं और जब बिना टाँगों वाला उस पानी में कूदा तो उसकी टाँगें उग आयीं।

उसके बाद उन्होंने साँप से यह वायदा ले कर उसे छोड़ दिया कि वह अब ज़ारेवना के ऊपर से फिर कभी नहीं उड़ेगा। इवान गोलिक और उस बिना बाँह वाले आदमी दोनों ने एक दूसरे की दोस्ती के लिये धन्यवाद दिया और अपने रास्ते चले गये।

अब इवान गोलिक यह देखने के लिये अपने भाई राजकुमार के पास पहुँचा कि उसका क्या हुआ। उसने सोचा "पता नहीं राजकुमारी ने राजकुमार का क्या हाल किया होगा।"

सो वह उस ज़ार के राज्य में चल दिया कि तभी उसने सड़क के किनारे एक सूअर पालने वाले को सूअरों के एक झुंड के साथ जाते देखा।

वह सूअरों की देखभाल कर रहा था पर वह खुद एक कब्र पर बैठा हुआ था। इवान गोलिक ने सोचा "मैं चल कर उससे पूछता हूँ कि वह वहाँ बैठा क्या कर रहा है।"

सो वह उस सूअरों की देखभाल करने वाले के पास पहुँचा और सीधी उसकी आँखों में आँखें डाल कर देखा तो उसने अपने भाई को पहचान लिया। उसने भी जब इवान गोलिक की आँखों में देखा तो इवान गोलिक को पहचान लिया।

वहाँ वे एक दूसरे की आँखों में देखते हुए बहुत देर तक खड़े रहे पर उनमें से कोई भी एक भी शब्द नहीं बोला। आखिर इवान गोलिक बोला — "ओ राजकुमार। क्या यह तुम हो जो सूअरों की देखभाल कर रहे हो? तुम्हारा यही हाल होना था। क्या मैंने तुमसे यह नहीं कहा था कि तुम सात साल तक अपना भेद नहीं खोलना?"

यह सुन कर राजकुमार इवान गोलिक के पैरों पर गिर पड़ा और दया की भीख माँगने लगा — "ओ इवान गोलिक। मुझे माफ कर दो। मेरे ऊपर दया करो।"

तब इवान गोलिक ने उसके कन्धे पकड़ कर उसे उठाया और उससे कहा — "यह अच्छा है कि तुम भगवान की इस सुन्दर दुनियाँ में अभी भी ज़िन्दा हो। फिर भी तुम कुछ देर इन्तजार करो तुम फिर से ज़ार बन जाओगे।"

तब राजकुमार ने उससे पूछा कि उसे अपनी टाँगें वापस कैसे मिलीं क्योंकि राजकुमारी ने उसे बता दिया था कि उसने इवान

गोलिक को उसने दो हिस्सों में काट दिया था। उस समय इवान गोलिक ने उसे बताया कि वह राजकुमार का छोटा भाई था और फिर उसे अपनी ज़िन्दगी की सारी कहानी बतायी।

तब उन दोनों ने एक दूसरे को गले लगाया और चूमा। राजकुमार बोला — "अब इन सूअरों को घर ले जाने का समय आ गया है क्योंकि राजकुमारी को चाय के समय इन्तजार करना पसन्द नहीं है।"

इवान गोलिक बोला — "हम दोनों एक साथ इन्हें घर ले कर चलेंगे।"

राजकुमार बोला — "मेरे भाई। सबसे बुरी बात तो यह है कि क्या तुम उस शापित सूअर को देख रहे हो जो सबके आगे आगे चल रहा है। यह केवल सूअरखाने के दरवाजे तक ही जायेगा। वहाँ पहुँच कर यह ऐसे खड़ा हो जायेगा जैसे वहाँ पहुँच कर यह जम गया हो।

और फिर वहाँ से जब तक नहीं हिलेगा जब तक मैं उसके बालों को नहीं चूमूँगा। इतनी देर तक राजकुमारी और दूसरे साँप बरामदे में चाय के लिये बैठे रहेंगे और मुझ पर हँसते रहेंगे।"

इवान गोलिक बोला — "तुम बस इसे आज तो चूमना पर कल से तुम उसे नहीं चूमोगे।"

उसके बाद वे दोनों सूअरों को घर के दरवाजे तक ले कर आये। इवान गोलिक देखने लगा कि "देखें अब क्या होता है।"

उसने देखा कि राजकुमारी छह दूसरे साँपों के साथ बरामदे में चाय पीने के लिये बैठी हुई है। घर के अन्दर घुसते समय वह शापित सूअर दरवाजे पर जम सा गया। उसने अपनी टाँगें फैला दीं और वह अन्दर नहीं जाये।

राजकुमारी ने उसे देखा और बोली — "देखो वह मेरा बेवकूफ किस तरह से सूअरों को ले कर आ रहा है और अब वह उस बड़े सूअर को चूमने वाला है।"

राजकुमार ने जब उसके बाल चूमे तब कहीं जा कर वह चिंघाड़ता हुआ अन्दर घुसा और फिर उसके पीछे पीछे दूसरे सूअर अन्दर घुसे। राजकुमारी बोली — "लगता है इस बेवकूफ ने कहीं से अपने लिये कोई सहायक ढूँढ लिया है।"

राजकुमार और इवान गोलिक दोनों उन सूअरों को अन्दर ले आये। तब इवान गोलिक ने कहा — "भैया। मुझे 20 पूड रुई और 20 पूड तारकोल ला कर दो और उन्हें बागीचे में ले कर आओ।" राजकुमार ने दोनों चीज़ें ला कर उसे बागीचे में दे दीं।

वहाँ इवान गोलिक ने दोनों को मिला कर एक बहुत बड़ा कोड़ा बनाया। पहले उसने एक पूड रुई लपेटी उसके बाद उसने उसके ऊपर एक पूड तारकोल लपेटा फिर एक पूड रुई लपेटी और फिर उसके ऊपर एक पूड तारकोल लपेटा।

इस तरह उसने वह सारी रुई और सारा तारकोल लपेट लिया। आधी रात तक उसका यह काम खत्म हो गया था सो वह सोने के

लिये लेट गया। राजकुमार पहले ही सूअरों के तबेले में जा कर सो गया था।

अगले दिन सुबह सवेरे ही जब वे सो कर उठे तो इवान गोलिक ने राजकुमार से कहा — "आज तक तो तुम सूअरों की देखभाल करने वाले थे। आज के बाद तुम फिर से राजकुमार हो जाओगे लेकिन पहले हम इन सूअरों को बाहर ले चलें।"

राजकुमार बोला — "नहीं। लेकिन राजकुमारी अभी तक साँपों के साथ चाय के लिये बरामदे में नहीं आयी है और उसने मुझे उस सूअर को बाहर ले जाने के लिये चूमते हुए नहीं देखा है जैसा कि उसका हुक्म है।"

इवान गोलिक बोला — "हम लोग सूअरों को बाहर ले तो जायेंगे पर इस बार तुम नहीं बल्कि मैं सूअर के बाल चूमूँगा।"

राजकुमार बोला — "ठीक है।"

और अब समय आ गया जब सूअरों को बाहर ले जाना था। राजकुमारी चाय पीने के लिये बाहर बरामदे में आयी।

उन्होंने सूअरों को उनके तबेले से बाहर निकाला। अब सूअर आगे आगे थे और ये दोनों भाई उनके पीछे पीछे। जब वे दरवाजे पर पहुँचे तो सबसे आगे वाला सूअर वहाँ चिपक गया और वहाँ से एक इंच भी आगे नहीं चले।

राजकुमारी और साँप यह देख कर मुस्कुरा दिये और उधर देखते रहे। इधर इवान गोलिक ने अपना कोड़ा उठाया और उससे

उस आगे वाले सूअर को इतने ज़ोर से मारा कि वह उड़ कर टुकड़ों में बिखर गया।

यह देख कर साँप वहाँ से जितनी जल्दी हो सकते थे भाग गये पर राजकुमारी बिल्कुल नहीं डरी। उसने इवान गोलिक को उसके सिर के बालों से पकड़ लिया तो इवान गोलिक ने भी राजकुमारी के लम्बे बाल पकड़ लिये और उसे अपने कोड़े से इतना मारा जब तक कि उसने अपने अन्दर से साँपों का सारा खून उलट नहीं दिया और वह एक सामान्य आदमी की तरह से नहीं चलने लगी।

अब उसने अपना साँपों वाला स्वभाव छोड़ दिया था और अपने पति के साथ खुशी खुशी रहने लगी। यही इस काज़्का[75] का अन्त है।

[75] Kazka means "Story"

Classic Books of Russian Folktales
Translated in Hindi by Sushma Gupta

1857 **Russian Popular Tales.** Translated from the German version by Anton Dietrich. London : Chapman and Hall. 17 tales. The same 17 stories are published in English in **"The Russian Garland"** edited by Robert Steele in 1916.

1889 **Russian Folk-Tales.** By Alexander Nikolayevich Afanasief Translated by Leonard Arthur Magnus. 64 tales.

1903 **Folk Tales from the Russian.** By Verra de Blumenthal. 9 tales.

1916 **The Russian Garland : being Russian Folk Tales.** Ed by Robert Steele. Tales taken from the sources of **1860**. 17 tales. Same tales as given in **"Russian Popular Tales"**

Some More Books of Russian Folktales in Hindi

1 Roos Ki Lok Kathayen-1 / by Sushma Gupta
2 Roos Ki Lok Kathayen-2 / by Sushma Gupta
3 Roosi Lok Kathayen. New Delhi: Peoples Publishing House (Pvt) Limited.
Hindi Translation Pragati Prakashan, 1960. 160 p. Available at the Web Site : https://www.scribd.com/doc/110410668/roosi-lok-kathayein-Russian-Folk-Tales-Hindi
5 Heere Moti – Soviet Bhoomi Ki Jatiyon Ki Lok Kathayen.
New Delhi: Peoples Publishing House (Pvt) Limited. 2010. 143 p.
Available at the Web Site :
https://archive.org/details/HeereMoti-Hindi-CollationOfSovietFolkTales

देश विदेश की लोक कथाओं की सीरीज़ में प्रकाशित पुस्तकें —

इस सीरीज़ में 100 से अधिक पुस्तकें उपलब्ध हैं।
पूरे सूचीपत्र के लिये इस पते पर लिखें ः hindifolktales@gmail.com

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हिन्दी ब्रेल में संसार भर में उन सबको निःशुल्क उपलब्ध है जो हिन्दी ब्रेल पढ़ सकते हैं।

1 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–1
2 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–2
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1
4 रैवन की लोक कथाऐं–1

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हार्ड कापी में बाजार में उपलब्ध हैं।

1 रैवन की लोक कथाऐं–1 — भोपाल, इन्द्रा पब्लिशिंग हाउस, 2016
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–2 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
4 शीबा की रानी मकेडा — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 160 पृष्ठ
5 राजा सोलोमन ः सोलोमन और सैटर्न के साथ — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 144 पृष्ठ
6 रैवन की लोक कथाऐं — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2020, 176 पृष्ठ
7 बंगाल की लोक कथाऐं — देहली, नेशनल बुक ट्रस्ट, 2020, 213 पृष्ठ

Facebook Group
https://www.facebook.com/groups/hindifolktales/?ref=bookmarks

Updated in 2022

लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें हिन्दी में
हिन्दी अनुवाद सुषमा गुप्ता

1. Zanzibar Tales: told by the Natives of the East Coast of Africa.
Translated by George W Bateman. Chicago, AC McClurg. **1901**. 10 tales.
ज़ंज़ीबार की लोक कथाऐं। अनुवाद – जौर्ज डबल्यू बेटमैन। **2022**

2. Serbian Folklore.
Translated by Madam Csedomille Mijatovies. London, W Isbister. **1874.** 26 tales.
सरबिया की लोक कथाऐं। अंग्रेजी अनुवाद – मैम ज़ीडोमिले मीजाटोवीज़। **2022**

"Hero Tales and Legends of the Serbians". By Woislav M Petrovich. London : George and Harry. 1914 (1916, 1921). it contains 20 folktales out of 26 tales of "Serbian Folklore: popular tales"

3. The King Solomon: Solomon and Saturn
राजा सोलोमन : सोलोमन और सैटर्न। हिन्दी अनुवाद – सुषमा गुप्ता – प्रभात प्रकाशन। जनवरी **2019**

4. Folktales of Bengal.
By Rev Lal Behari Dey. **1889**. 22 tales.
बंगाल की लोक कथाऐं — लाल बिहारी डे। हिन्दी अनुवाद – सुषमा गुप्ता – नेशनल बुक ट्रस्ट।। **2020**

5. Russian Folk-Tales.
By Alexander Nikolayevich Afanasief. **1889**. 64 tales. Translated by Leonard Arthur Magnus. 1916.
रूसी लोक कथाऐं – अलैक्ज़ैन्डर निकोलायेविच अफ़ानासीव। **2022**। तीन भाग

6. Folk Tales from the Russian.
By Verra de Blumenthal. **1903**. 9 tales.
रूसी लोगों की लोक कथाऐं – वीरा डी ब्लूमैन्थल। **2022**

7. Nelson Mandela's Favorite African Folktales.
Collected and Edited by Nelson Mandela. **2002**. 32 tales
नेलसन मन्डेला की अफ्रीका की प्रिय लोक कथाऐं। **2022**

8. Fourteen Hundred Cowries.
By Fuja Abayomi. Ibadan: OUP. **1962**. 31 tales.
चौदह सौ कौड़ियाँ – फूजा अबायोमी। **2022**

9. Il Pentamerone.
By Giambattista Basile. **1634**. 50 tales.
इल पैन्टामिरोन – जियामबतिस्ता बासिले। **2022**। **3** भाग

10. Tales of the Punjab.
By Flora Annie Steel. **1894**. 43 tales.
पंजाब की लोक कथाऐं – फ्लोरा ऐनी स्टील। **2022**। **2** भाग

11. Folk-tales of Kashmir.
By James Hinton Knowles. **1887**. 64 tales.
काश्मीर की लोक कथाऐं – जेम्स हिन्टन नोलिस। **2022**। **4** भाग

12. African Folktales.
By Alessandro Ceni. Barnes & Nobles. **1998**. 18 tales.
अफ्रीका की लोक कथाऐं – अलेसान्ड्रो सैनी। **2022**। **2022**

13. Orphan Girl and Other Stories.
By Offodile Buchi. **2001**. 41 tales
लावारिस लड़की और दूसरी कहानियाँ – ओफ़ोडिल बूची। **2022**

14. The Cow-tail Switch and Other West African Stories.
By Harold Courlander and George Herzog. NY: Henry Holt and Company. **1947**. 143 p.
गाय की पूँछ की छड़ी – हैरल्ड कूरलैन्डर और जौर्ज हरज़ौग। **2022**

15. Folktales of Southern Nigeria.
By Elphinston Dayrell. London : Longmans Green & Co. **1910**. 40 tales.
दक्षिणी नाइजीरिया की लोक कथाऐं – ऐलफिन्स्टन डैरैल। **2019**

16. Folk-lore and Legends : Oriental.
By Charles John Tibbitts. London, WW Gibbins. **1889**. 13 Folktales.
अरब की लोक कथाऐं – चार्ल्स जौन टिबिट्स। **2022**

17. The Oriental Story Book.
By Wilhelm Hauff. Tr by GP Quackenbos. NY : D Appleton. **1855**. 7 long Oriental folktales.
ओरिऐन्ट की कहानियों की किताब – विलहैल्म हौफ़। **2022**

18. Georgian Folk Tales.
Translated by Marjorie Wardrop. London: David Nutt. **1894**. 35 tales. Its Part I was published in 1891, Part II in 1880 and Part III was published in 1884.
जियोर्जिया की लोक कथाऐं – मरजोरी वारड्रौप। **2022**। **2** भाग

19. Tales of the Sun, OR Folklore of South India.
By Mrs Howard Kingscote and Pandit Natesa Sastri. London : WH Allen. **1890**. 26 Tales
सूरज की कहानियाँ या दक्षिण की लोक कथाऐं — मिसेज़ हावर्ड किंग्सकोटे और पंडित नतीसा सास्त्री। **2022**।

20. West African Tales.
By William J Barker and Cecilia Sinclair. **1917**. 35 tales. Available in English at :
पश्चिमी अफ्रीका की लोक कथाऐं — विलियम जे बार्कर और सिसीलिया सिन्क्लेयर। **2022**

21. Nights of Straparola.
By Giovanni Francesco Straparola. **1550, 1553**. 2 vols. First Tr: HG Waters. London: Lawrence and Bullen. **1894**.
स्ट्रापरोला की रातें — जियोवानी फ्रान्सैस्को स्ट्रापरोला। **2022**

22. Deccan Nursery Tales.
By CA Kincaid. **1914**. 20 Tales
दक्कन की नर्सरी की कहानियाँ – सी ए किनकैड। **2022**

23. Old Deccan Days.
By Mary Frere. **1868 (5th ed in 1898)** 24 Tales.
पुराने दक्कन के दिन – मैरी फ्रैरे। **2022**

24. Tales of Four Dervesh.
By Amir Khusro. **Early 14th century**. 5 tales. Available in English at :
किस्सये चहार दरवेश — अंग्रेजी अनुवाद – डंकन फोर्ब्स। **2022**

25. The Adventures of Hatim Tai : a romance (Qissaye Hatim Tai).
Translated by Duncan Forbes. London : Oriental Translation Fund. **1830.** 330p.
किस्सये हातिम ताई — अंग्रेजी अनुवाद – डंकन फोर्ब्स। **2022**।

26. Russian Garland : being Russian folktales.
Edited by Robert Steele. NY : Robert McBride. **1916**. 17 tales.
रूसी लोक कथा माला — अंग्रेजी अनुवाद – ऐडीटर रोबर्ट स्टीले। **2022**

27. Italian Popular Tales.
By Thomas Frederick Crane. Boston : Houghton. **1885**. 109 tales.
इटली की लोकप्रिय कहानियाँ — थोमस फ्रैडैरिक केन। **2022**

28. Indian Fairy Tales
By Joseph Jacobs. London : David Nutt. 1892. 29 tales.
भारतीय परियों की कहानियाँ — जोसेफ जेकब्स। **2022**

29. Shuk Saptati.
By Unknown. Translated in English by B Hale Wortham. London : Luzac & Co. 1911.
Under the Title "The Enchanted Parrot".
शुक सप्तति — । **2022**

30. Indian Fairy Tales
By MSH Stokes. London : Ellis & White. **1880.** 30 tales.
भारतीय परियों की कहानियॉ — ऐम ऐस ऐच स्टोक्स। **2022**

31. Romantic Tales of the Panjab
By Charles Swynnerton. Westminster : Archibald. **1903**. 422 p. 7 Tales
पंजाब की प्रेम कहानियॉ — चार्ल्स स्विनरटन। **2022**

32. Indian Nights' Entertainment
By Charles Swynnerton. London : Elliot Stock. **1892**. 426 p. 52/85 Tales.
भारत की रातों का मनोरंजन — चार्ल्स स्विनरटन। **2022**

33. Il Decamerone
By Giovanni Boccaccio
इल डैकामिरोन — जिओवानी बोकाकिओ। **1353**

34. Indian Antiquary 1872
A collection of scattered folktales in this journal. 1872.

35. Short Tales of Panjab
By Charles Swynnerton – a collection of short tales given in his two books – "Romantic Tales of the Panjab" and "Indian Nights' Entertainment" given above – No 31 and 32. 1903.

36. Cossack Fairy Tales and Folk Tales.
Translated in English By R Nisbet Bain. George G Harrp & Co. **c 1894**. 27 Tales.
कोज़ैक की परियों की कहानियॉ — अनुवादक आर निस्बत बैन। **2022**

Facebook Group :
https://www.facebook.com/groups/hindifolktales/?ref=bookmarks

Updated in 2022

लेखिका के बारे में

सुषमा गुप्ता का जन्म उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ शहर में सन् **1943** में हुआ था। इन्होंने आगरा विश्वविद्यालय से समाज शास्त्र और अर्थ शास्त्र में ऐम ए किया और फिर मेरठ विश्वविद्यालय से बी ऐड किया। **1976** में ये नाइजीरिया चली गयीं। वहाँ इन्होंने यूनिवर्सिटी औफ़ इबादान से लाइब्रेरी साइन्स में ऐम ऐल ऐस किया और एक थियोलोजीकल कौलिज में **10** वर्षों तक लाइब्रेरियन का कार्य किया।

वहाँ से फिर ये इथियोपिया चली गयीं और वहाँ एडिस अबाबा यूनिवर्सिटी के इन्स्टीट्यूट औफ़ इथियोपियन स्टडीज़ की लाइब्रेरी में **3** साल कार्य किया। तत्पश्चात इनको दक्षिणी अफ्रीका के एक देश लिसोठो के विश्वविद्यालय में इन्स्टीट्यूट औफ़ सदर्न अफ्रीकन स्टडीज़ में **1** साल कार्य करने का अवसर मिला। वहाँ से **1993** में ये यू ऐस ए आ गयीं जहाँ इन्होंने फिर से मास्टर औफ़ लाइब्रेरी ऐंड इनफौर्मेशन साइन्स किया। फिर **4** साल ओटोमोटिव इन्डस्ट्री एक्शन ग्रुप के पुस्तकालय में कार्य किया।

1998 में इन्होंने सेवा निवृत्ति ले ली और अपनी एक वेब साइट बनायी – www.sushmajee.com। तब से ये उसी वेब साइट पर काम कर रहीं हैं। उस वेब साइट में हिन्दू धर्म के साथ साथ बच्चों के लिये भी काफी सामग्री है।

भिन्न भिन्न देशों में रहने से इनको अपने कार्यकाल में वहाँ की बहुत सारी लोक कथाओं को जानने का अवसर मिला – कुछ पढ़ने से, कुछ लोगों से सुनने से और कुछ ऐसे साधनों से जो केवल इन्हीं को उपलब्ध थे। उन सबको देख कर इनको ऐसा लगा कि ये लोक कथाऐं हिन्दी जानने वाले बच्चों और हिन्दी में रिसर्च करने वालों को तो कभी उपलब्ध ही नहीं हो पायेंगी – हिन्दी की तो बात ही अलग है अंग्रेजी में भी नहीं मिल पायेंगीं।

इसलिये इन्होंने न्यूनतम हिन्दी पढ़ने वालों को ध्यान में रखते हुए उन लोक कथाओं को हिन्दी में लिखना प्रारम्भ किया। सन **2021** तक इनकी **2500** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी हैं। इनको "देश विदेश की लोक कथाऐं" और "लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें" क्रम में प्रकाशित करने का प्रयास किया है।

आशा है कि इस प्रकाशन के माध्यम से हम इन लोक कथाओं को जन जन तक पहुँचा सकेंगे।

विंडसर, कैनेडा
2023